CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection ,Equipment, Heritage Foundation, Jalgaon

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

12-3

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानंद सरस्वती स्मृति-ग्रंथ

प्रथम भाग

संपादक

त्रिवेणी शर्मा 'सुधाकर'

प्रकाशक

स्वामी सहजानंद विचार-मंच

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रथम संस्करण
जून, १९८२

सम्पादक
त्रिवेणी शर्मा सुधाकर

प्रकाशक
स्वामी सहजानंद विचार-मंच

मुद्रक
घनश्याम प्रेस
नवीन कोठी, पटना-४

मूल्य—१२ रुपये

प्राप्ति स्थान :—(१) पिपुल्स बुक हाउस
पटना-४
(२) ज्ञान गेह
राजेन्द्र पथ, गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भूमिका

आधुनिक भारत के इतिहास में हमें ऐसे तीन आध्यात्मिक ऐश्वर्य-संपन्न महापुरुषों के दर्शन होते हैं, जो "स्वामी" और "संन्यासी" जैसे आस्थामूलक शब्दों से विभूषित होने के बावजूद अपने आस-पास के लोगों के प्रति कभी उदासीन नहीं रहे और जिन्होंने इस बात का अथक प्रयास किया कि आध्यात्मिक ज्ञान भौतिक विकास के मार्ग में बाधक सिद्ध न हो। ये तीन महापुरुष हैं : स्वामी दयानंद, स्वामी विवेकानंद और स्वामी सहजानंद। इन सभी महापुरुषों के कार्यक्षेत्र अलग-अलग थे। स्वामी दयानंद ने अपने देश में एक प्रकार से जर्मनी के विद्रोही धार्मिक नेता मार्टिन लूथर की भूमिका का निर्वाह किया। जिस तरह लूथर ने पोंगापंथी पोपों के विरुद्ध बगावत का झंडा उठा लिया और एक नयी जर्मन राष्ट्रीयता को जन्म दिया, उसी तरह दयानंद ने धर्माडंबरों की धज्जियाँ उड़ाते हुए आर्य जाति के नवजागरण का शंखनाद किया तथा लोगों को भौतिक अनुसंधानों से लाभ उठाने की सलाह दी। स्वामी विवेकानंद ने एक निर्भीक धार्मिक योद्धा की भाँति अपने देश के शोषित-पीड़ित जनगण के प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट की और खुले हृदय से भौतिक विचार-धारा का स्वागत किया। लेकिन स्वामी सहजानंद सरस्वती ने एक भिन्न मार्ग अपनाया और उन्होंने आम जनता के भौतिक उत्थान में गतिरोध उत्पन्न करने वाले सभी तत्वों का क्रियात्मक विरोध करते हुए, एक क्रांतिकारी जननेता की भाँति राजनीतिक संघर्ष का मार्ग प्रशस्त किया।

स्वामी सहजानंद सरस्वती के जीवन के पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध खंडों की अलग-लग भूमिकाएँ हैं। अपने जीवन के पूर्वार्द्ध काल में वे आध्यात्मिक और सामाजिक कार्य व्यापारों के एक संकीर्ण दायरे में बंधे रहे लेकिन शीघ्र ही वे उस घेरे मुक्त होकर अपने जीवन के उत्तरार्द्ध काल में भारत के राजनीतिक मंच पर क जुझारू जननायक के रूप में प्रकट हो गये।

स्वामीजी अपने राजनीतिक जीवन के पहले दौर में महात्मा गाँधी और कांग्रेस प्रभावित रहे, लेकिन उनका मोह भंग होने में अधिक समय नहीं लगा और न्होंने समझ लिया कि भारत को राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक गुलामी बंधनों से तभी छुटकारा मिल सकता है, जबकि भारत के राजनीतिक नेता जीवाद की जड़ों को मजबूत करनेवाले समझौतावादी मार्ग का परित्याग कर म जनता की मूलभूत समस्याओं का समाधान करनेवाले समाजवादी मार्ग का नुसरण करेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी भारत के उन प्रखर प्रतिभाशाली जननेताओं में अग्रगण्य थे, जिन्होंने साम्राज्यवाद-विरोधी और फासिस्टवाद-विरोधी संघर्ष में सफलता प्राप्त करने के लिए संयुक्त मोर्चे की राजनीति को स्वीकार करने पर जोर दिया और यही कारण था कि वे मजदूरों और किसानों की एकता के प्रबल समर्थक थे। भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान और स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद भी वे इस एकता को सुदृढ़ करने के लिए अथक प्रयत्न करते रहे।

यह कौन नहीं जानता है कि भारत की सर्वोच्च राजनीतिक शक्ति के रूप में कांग्रेस "कृषि-प्रधान देश", भारत के असंख्य किसानों की दुर्दशा पर आंसू तो बहाती थी, लेकिन उन्हें एक सूत्र में आबद्ध करने से बराबर परहेज भी करती थी; क्योंकि कांग्रेसी नेताओं को भय था कि मजदूरों और किसानों की शक्ति सुदृढ़ होने से पूँजीपतियों और सामंतों की छत्रछाया में रहनेवाली कांग्रेस की शक्ति क्षीण हो जाएगी। संख्यात्मक दृष्टि से सर्वाधिक शक्तिशाली और आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से सर्वाधिक शोषित-पीड़ित भारतीय किसान-समुदाय को अखिल भारतीय स्तर पर एक संगठन में आबद्ध करने में स्वामीजी ने भारत के दो-चार इने-गिने क्रांत-दर्शी जन-नेताओं के साथ मिलकर अपनी विशिष्ट भूमिका का निर्वाह किया। वास्तव में, वे किसान-आन्दोलन के एक महान प्रवर्त्तक थे और अपने जीवन की अंतिम सांस तक राजनीतिक तथा आर्थिक शोषण-उत्पीड़न, सामाजिक भेदभाव, सांस्कृतिक पिछड़ेपन और वर्गाधारित परावलंबन से भारत के किसानों को मुक्त करने, उनकी मजदूरवर्गीय चेतना को भलीभाँति जाग्रत करने तथा अंतर-राष्ट्रीय मजदूरवर्ग के साथ उनकी एकता को सुदृढ़ करने के लिए सचेष्ट रहे।

यह खेद की बात है कि स्वामीजी के महाप्रयाण के लगभग बत्तीस साल गुजर जाने के बाद भी अभी तक हमने उनके कार्यों का सही ऐतिहासिक संदर्भ में मूल्यांकन नहीं किया है, लेकिन यह भी कम प्रसन्नता और संतोष की बात नहीं है कि स्वामीजी के परम निष्ठावान शिष्य और लोकप्रिय किसान नेता श्री त्रिवेणी शर्मा 'सुधाकर' अपने सीमित साधनों के बावजूद इस दिशा में क्रियाशील हैं। प्रस्तुत 'स्वामी सहजानंद स्मृति-ग्रंथ' का प्रथम भाग उनके ही सत्प्रयास का सुफल है। इस ग्रंथ में संकलित लेखों और संस्मरणों के माध्यम से न केवल स्वामीजी के व्यक्तित्व के भिन्न-भिन्न पक्षों पर प्रकाश डाला गया है बल्कि भारतीय स्वाधीनता-आन्दोलन के अंतिम अध्याय के कठोर संघर्षों और भारतीय स्वाधीनता के उषः-काल के रक्ताभ बिंबों को भी उजागर किया गया है।

आशा है, भारतीय राजनीति-विज्ञान के अध्येताओं, स्वामीजी के प्रशंसकों और जीवनी-साहित्य के प्रेमियों के लिए यह ग्रंथ उपयोगी सिद्ध होगा।

—कन्हैया

२६ जून, १९८२
लंगरटोली, पटना—४

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दो शब्द

स्वामी सहजानन्द स्मृति ग्रंथ का प्रथम खण्ड पाठकों के हाथ में उपस्थित करते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। खेद है कि इसके प्रकाशन में काफी विलम्ब हुआ है। आर्थिक कठिनाइयों के बीच पुस्तक के सम्पादन और प्रकाशन की व्यवस्था में बाधाएँ आती रही हैं। मुझे विश्वास है कि दूसरे खण्ड के प्रकाशन में विलम्ब नहीं होगा।

हम उन लेखकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं जिनकी रचनाएँ इस प्रथम खण्ड में संकलित की गई हैं।

कविवर कन्हैया ने इस खण्ड की भूमिका लिखकर और श्री उमेश्वर ने पाण्डुलिपियों के मुद्रण में संशोधन का काम कर इस ग्रंथ के प्रकाशन में जो सहयोग किया है उसके लिए हम उन्हें धन्यवाद से अधिक दे ही क्या सकते हैं!

लक्ष्मी पुस्तकालय के अध्यक्ष श्री परमेश्वर प्रसाद और व्यवस्थापक श्री जनार्दन प्रसाद सिंह के भी सहयोग को हम भुला नहीं सकते।

वामपक्षी-जनवादी चेतना के क्रांतिकारी नेता, भारतीय किसान आन्दोलन के प्रणेता, जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती के जीवन से सम्बन्धित इस ग्रंथ की उपयोगिता का निर्णय सुहृदय पाठकों पर ही छोड़ना श्रेयष्कर है।

२६ जून, '८२ —त्रिवेणी शर्मा सुधाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विषय-सूची

१. युग पुरुष स्वामी सहजानंद सरस्वती की जीवन झाँकी	—त्रिवेणी शर्मा सुधाकर	....	१
२. जननायक स्वामी सहजानंद सरस्वती : एक संस्मरण	—रामावतार शास्त्री	....	१४
३. नये भारत के नये नेता : स्वामी सहजानन्द सरस्वती	—महापंडित राहुल सांकृत्यायन	....	२३
४. स्वामी सहजानन्द सरस्वती— एक संस्मरण	—सी० राजेश्वर राव	....	२६
५. स्वामी सहजानंद—एक क्रांतिकारी संदेशवाहक	—जगन्नाथ सरकार	....	२९
६. किसान संघर्ष की राजनीति और स्वामी सहजानंद	—डा० खगेन्द्र ठाकुर	....	५६
७. स्वामी सहजानंद— एक संस्मरण	—रतन राय	....	६४
८. किसानों के लोकप्रिय नेता स्वामी सहजानंद	—भोगेन्द्र झा	....	६७
९. स्वामीजी की विरासत	—योगीन्द्र शर्मा	....	७०
१०. किसानों का सच्चा नेता— स्वामी सहजानंद	—किशोरी प्रसन्न सिंह	....	७२
११. विचारक, लेखक एवं पत्रकार—सहजानंद	—राजनंदन सिंह राजन	....	७७
१२. जब स्वामीजीने साम्यवाद अपनाया	—पं० कामेश्वर शर्मा 'नयन'	....	१०२
१३. संन्यासी की जीवन-यात्रा	—ब्रजकिशोर सिंह	....	१०६
१४. स्वामी सहजानंद और किसान	—पशुपति सिंह	....	११२
१५. वैज्ञानिक समाजवादी स्वामी सहजानंद	—शीलभद्र याजी	....	११७
१६. किसानों की वाणी : स्वामीजी	—डा० रामसुभग सिंह	....	१२०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१७. गरीबों के नेता स्वामीजी	—चंद्रिका राम	....	१२३
१८. वह आणविक व्यक्तित्व	—मथुरा प्रसाद मिश्र	....	१२५
१९. स्वामीजी के व्यक्तित्व की एक झांकी	—अवधेश्वर प्रसाद सिंह	....	१२८ए
२०. अंत के वे चिरस्मरणीय दिन स्वामीसहजानंद के साथ	—आचार्य श्रुतिदेव शास्त्री	....	१३३
२१. स्वामीजी की याद में	—गंगाधर दास	....	१४०
२२. क्रांति और संयुक्त मोर्चा	—सुरेन्द्र चौधरी	....	१४७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस खंड के लेखक

श्री त्रिवेणी शर्मा सुधाकर : श्री सुधाकर का बचपन से ही स्वामी सहजानन्द सरस्वती का सानिध्य प्राप्त था। सम्प्रति स्वामी सहजानन्द विचार मंच के महासचिव और अखिल भारतीय किसान सभा की परिषद के सदस्य।

श्री रामावतार शास्त्री : संसद सदस्य, जननेता और प्रमुख लेखक-पत्रकार।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन : अंतरराष्ट्रीय ख्याति के लेखक; स्वामी सहजानन्द के सहयोगी और किसान आन्दोलन के एक प्रमुख योद्धा।

श्री सी॰ राजेश्वर राव : भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव।

श्री जगन्नाथ सरकार : भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी की राष्ट्रीय परिषद के सचिवमंडल के सदस्य।

डा॰ खगेन्द्र ठाकुर : बिहार प्रगतिशील लेखक संघ के महासचिव।

श्री रतन राय : ट्रेड यूनियन के प्रसिद्ध नेता।

श्री भोगेन्द्र झा : अखिल भारतीय किसान सभा के उपाध्यक्ष और संसद सदस्य।

श्री योगीन्द्र शर्मा : 'मुक्तिसंघर्ष' साप्ताहिक और कम्युनिष्ट मासिक के संपादक।

श्री किशोरी प्रसन्न सिंह : सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और स्वामी सहजानंद के अन्यतम सहयोगी।

श्री राजनन्दन सिंह राजन : कवि; लेखक और पत्रकार।

पं॰ कामेश्वर शर्मा 'नयन' : स्वामी सहजानन्द के एक प्रमुख शिष्य, कवि और लेखक।

श्री व्रज किशोर सिंह : राज्य सभा के भूतपूर्व सदस्य।

श्री पशुपति सिंह : गया जिला किसान सभा के उपाध्यक्ष।

श्री शीलभद्र याजी : सुप्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी और स्वामी सहजानन्द के अन्यतम सहयोगी।

डा॰ राम सुभग सिंह : भारत सरकार के भूतपूर्व कृषि मंत्री।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री चंद्रिका राम : सुप्रसिद्ध हरिजन नेता।

श्री मथुरा प्रसाद मिश्र : १९४०-४१ में बिहार राज्य किसान सभा के सचिव, भूतपूर्व संसद सदस्य।

श्री अवधेश्वर प्रसाद सिंह : १९३५-३६ में बिहार किसान सभा के सचिव, भूतपूर्व संसद सदस्य, स्वामीजी के निकटतम सहयोगी।

आचार्य श्रुतिदेव शास्त्री : स्वामी सहजानन्द के एक प्रमुख अनुयायी, संस्कृत और हिन्दी के विद्वान और लेखक।

श्री गंगाधर दास : दैनिक जनशक्ति के सम्पादक और प्रमुख कम्युनिस्ट नेता।

डा० सुरेन्द्र चौधरी : हिन्दी आलोचना साहित्य के प्रमुख लेखक, विद्वान और गया महाविद्यालय के हिन्दी विभाग के प्राध्यापक।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

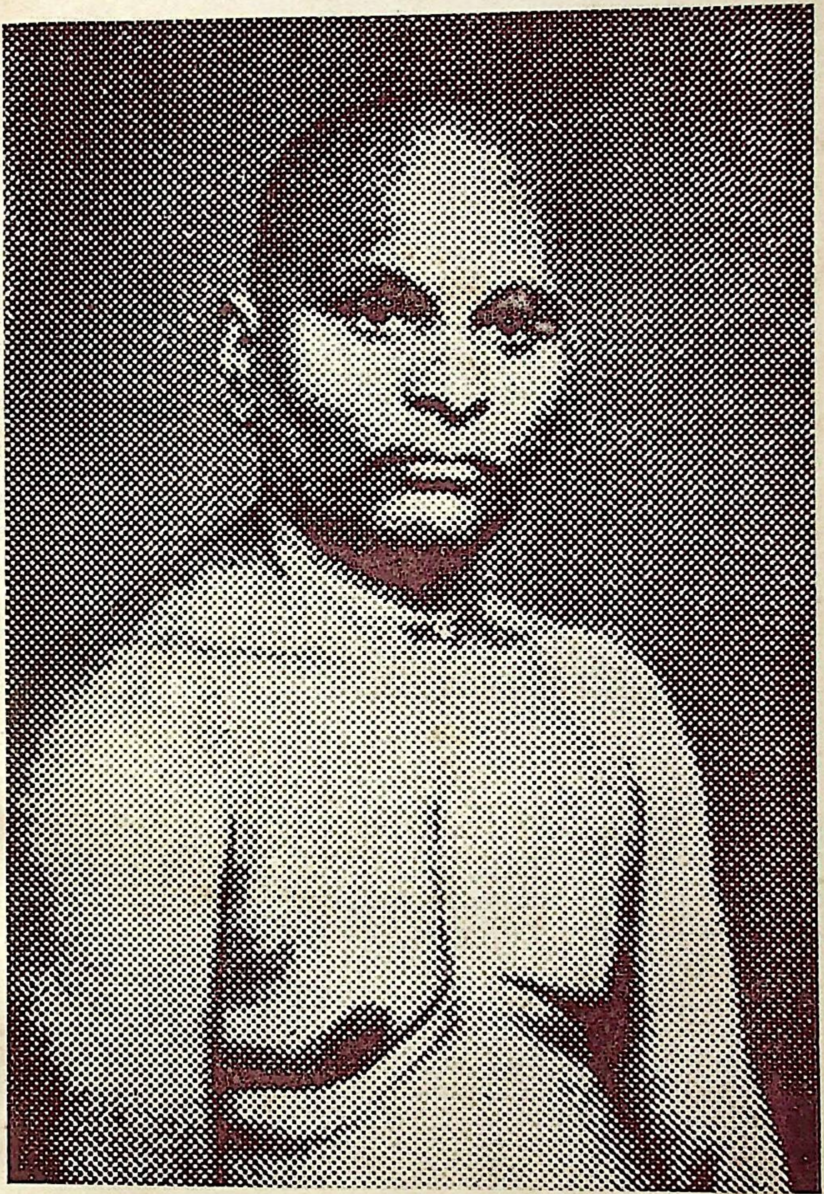

वामपक्षी जनवादी चेतना के क्रान्तिकारी नेता—स्वामी सहजानन्द सरस्वती, १९४७

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

युग पुरुष स्वामी सहजानन्द सरस्वती की जीवन झांकी

—त्रिवेणी शर्मा सुधाकर

स्वामी सहजानन्द सरस्वती एक युग पुरुष थे। दमन, शोषण एवं पराधीनता से मुक्त नवयुग का नवनिर्माण ही उनका लक्ष्य था। स्थिर स्वार्थ एवं प्रतिगामी शक्तियों से सतत् संघर्ष, समता, स्वतंत्रता एवं सामाजिक न्याय पर आधारित नये समाज के निर्माण में सक्रिय योगदान तथा नयी पीढ़ी का चारित्रिक और बौद्धिक विकास एवं मार्गदर्शन उनका जीवन ध्येय था। सत्य, शील, निष्ठा, कर्त्तव्यपरायणता, राष्ट्रसेवा, विश्वभावना, आत्मसंयम, सन्तुलित क्रान्तिकारिता एवं सुसंस्कृत सादा जीवन जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती के सद्गुण थे। ब्रिटिश साम्राज्यशाही से स्वतंत्रता के लिए तथा किसानों के शोषण के विरुद्ध उनका सम्पूर्ण जीवन संघर्ष-रत रहा।

जन्म और शिक्षा

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में दूल्लहपुर स्टेशन के निकट देवा गाँव में महाशिवरात्रि पर्व के अवसर पर १८८९ में हुआ था। उनके पिता का नाम था बेनी राय। बेनी राय एक खाते-पीते अच्छे किसान थे। स्वामी सहजानन्द के बचपन का नाम है—नौरंग राय। नौरंग राय बचपन से ही बड़ा होनहार थे। गाँव में स्कूल न था। पास के गाँव जलालाबाद में प्राइमरी स्कूल था। दस साल की उम्र तक नौरंग का काम चरवाही करना था। १८९९ के प्रारम्भ में जलालाबाद स्कूल में नौरंग का नाम लिखाया गया। नौरंग ने अपनी मेधा का परिचय देना शुरू किया। प्रति वर्ष वह दो-दो दर्जा पास करते और वर्ग में सदा प्रथम होते। १९०२ तक तीन वर्ष के भीतर छः वर्ष की पढ़ाई समाप्त कर दी। अपर प्राइमरी पास किया और छात्रवृत्ति मिली। १९०४ में नौरंग ने हिन्दी में मिड्ल पास किया। सारे उत्तर प्रदेश में नौरंग का नम्बर सातवाँ आया। फिर छात्रवृत्ति मिली। मिड्ल पास करने के बाद गाजीपुर जर्मन मिशन हाई स्कूल में नौरंग का नाम लिखवाया गया।

संन्यास और सामाजिक सेवा

लड़कपन से नौरंग धार्मिक प्रवृत्ति का था। रामायण और गीता पढ़ने का उसे बहुत शौक था। गाजीपुर में नौरंग की धार्मिक प्रवृत्ति और बढ़ गई। यहाँ नौरंग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को सनातन धर्म और आर्य समाज के व्याख्यान सुनने को मिले। नौरंग आर्य समाजी नहीं बना। सनातनी रंग पक्का हो गया। धर्म पर श्रद्धा और जम गई। रोज नियमपूर्वक स्नान, शंकरजी को वेलपत्र और गंगाजल चढ़ाना नौरंग राय का काम था। नौरंग का पूजा-पाठ घरवालों को पसन्द न था। मायामय शृंखला में बाँधने के लिए सोलह वर्ष की अवस्था में, १९०५ में नौरंग राय की शादी कर दी गई। किन्तु पत्नी अपने पति के रास्ते में बाधक नहीं बनना चाहती थी; एक ही वर्ष बाद वह चल बसी। परिवार वालों के द्वारा दूसरी जंजीर गढ़ी जाने की तैयारी हो गई। बालक नौरंग को यह समझते देर न लगी। अब उसकी उम्र १८ वर्ष की थी। वह हाईस्कूल की आखिरी कक्षा का विद्यार्थी था। सन् १९०७ के फरवरी माह में शिवरात्रि पर्व के अवसर पर बनारस भाग कर नौरंग राय स्वामी सच्चिदानन्द गिरि से गिरिनामा संन्यासी बने। नौरंग राय को संन्यास जीवन और उससे भी अधिक योग-समाधि का शौक था। वैराग्य और वेदान्त की सच्ची धुन थी।

महात्मा बुद्ध ने जिस प्रकार अपनी हृदयस्थ विरक्ति-भावना की झलक दुनिया को बचपन में ही दिखलायी थी, उसी प्रकार नौरंग ने भी अपना परिचय देना प्रारम्भ किया। नौरंग सच्चे योगी और ईश्वर की खोज में निकल पड़े। गंगा के किनारे-किनारे पैदल ही पश्चिम की ओर चल पड़े। हिमालय की गुफाओं में भटके, जंगलों में धूनी रमाई। कहीं सच्चे योगी न मिले। ईश्वर के दर्शन न हुए। अब नौरंग को ग्रन्थों में ईश्वर को खोजने की धुन समायी। १९०९ में बनारस में संस्कृत पढ़ने लगे। साधु-संन्यासियों की संगति में रहना, एक साथ दो-दो, चार-चार विद्यालयों में पढ़ना, यही नौरंग राय का काम था। काशी और मिथिला में संस्कृत साहित्य, व्याकरण, न्याय, मीमांसा एवं दर्शन का अध्ययन किया। अपनी तीव्र मेधा-शक्ति से कुछ ही दिनों में स्वाध्याय के बल पर लिखित प्रमाण पत्र के अभाव में भी वह एक उद्भट विद्वान बन गये। अभी भी योग और दिव्य-शक्ति पर से उनका विश्वास नहीं उठा था। घूमते-घूमते एक दिन इनकी नजर एक बूढ़े दंडी संन्यासी पर पड़ी; जो स्वप्नावस्था में भी अपने हाथ का माला फेर रहे थे। उनकी यह सिद्धि नौरंग राय को अलौकिक जान पड़ी।

स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती, यही दंडी स्वामी का नाम था। सीधे-सादे साधु थे, कुछ पढ़े-लिखे भी थे। भक्ति भाव वाले थे। भक्ति प्रसंगों को सुनते समय उनकी आँखों से आंसू की धारा बह चलती। नौरंग राय अभी तक गिरिनामा संन्यासी थे। अब इन्होंने स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती का शिष्य स्वामी सहजानंद सरस्वती बन दंड धारण किया! संन्यासियों में दंडी सिर्फ ब्राह्मण ही हो सकते हैं, क्षत्रिय, वैश्य आदि किसी दूसरी जाति के लोग दंडी संन्यासी नहीं बन सकता। काशी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संन्यासियों में एक सुगबुगाहट उठी। स्वामी अच्युतानन्द जी ने ब्राह्मणेतर एक भूमिहार के लड़के को दंड धारण करवा दिया है, यह धर्म विरुद्ध है। उन्हें पंक्तिच्युत कर देना चाहिए। जब इसकी भनक स्वामी सहजानन्द के कानों में पड़ी तो इस अपमान से वे तिलमिला उठे। काशी के पंडितों की सभा हुई। कई दिन तक शास्त्रार्थ हुए। अन्त में इन्होंने सिद्ध कर दिया कि भूमिहार भी ब्राह्मण हैं।

स्वामी सहजानद अन्याय और अत्याचार के विरुद्ध जोरदार आवाज बुलन्द करने वालों में से थे। चाहे वह अत्याचार जाति विशेष का हो, वर्ग विशेष का हो या राष्ट्र विशेष का। ब्राह्मणत्व के ठीकेदारों से शास्त्रार्थ करना और उन्हें पछाड़ना, भारतीय समाज में भूमिहार ब्राह्मणों का स्थान और उनको हीन बनाने में दूसरे ब्राह्मणों की चाल, बस ये ही बातें स्वामी सहजानन्द सरस्वती की आँखों में नाचती रहती थी। प्रयाग के ब्राह्मण-पंडे भूमिहार ब्राह्मणों से शादी-ब्याह करते हैं, अमुक जगह में भूमिहार पुरोहिती करते हैं। खोजों से इस तरह की चीजें मिलने लगीं। १९१५ में भूमिहार ब्राह्मण परिचय लिखा और खोज के बाद बहुत-सी ज्ञातव्य बातों से पूर्ण "ब्रह्मर्षि-वंश-विस्तार" के नाम से विशाल ग्रन्थ बन गया।

स्वामी सहजानन्द ने 'ब्राह्मण समाज की स्थिति', झूठा भय और मिथ्याभिमान, कर्मकलाप आदि पुस्तकों की रचना की। अंध विश्वास और रूढ़ियों की शृंखला टूट गयी। भूमिहार ब्राह्मणों को अन्य ब्राह्मणों के पाशविक सामाजिक अत्याचार से मुक्ति मिली। स्वामी जी के जीवन का यह चक्कर १९२० तक वैसे ही चलता रहा।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम में

अब आया सन् १९२०-२१ का जमाना। देश-प्रेम का तूफान, मातृभूमि की भक्ति की लहर। स्वामी सहजानन्द सरस्वती देश की राजनीतिक परिस्थिति से परिचित थे। उनके हृदय की विद्रोहाग्नि भड़क उठी। ५ दिसम्बर १९२० को पटने में मौलाना मजहरुलहक के मकान पर स्वामी सहजानन्द को महात्मा गांधी से प्रथम वार्तालाप हुई।

स्वामी जी ने निश्चय किया—'देश की सेवा बड़ी चीज है, मैं मुल्क की सेवा करूँगा।' स्वामी जी ने नागपुर कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया। वहाँ से लौट कर बक्सर चले गये और वहीं काम करना शुरू किया। कांग्रेस ने कौंसिलों के बायकाट का निश्चय किया। हथुआ के महाराजा (जो स्वयं भूमिहार ब्राह्मण थे) कौंसिल के लिए खड़े हुए। कांग्रेस ने एक अनपढ़ धोबी को उनके खिलाफ खड़ा किया। स्वामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहजानंद ने कांग्रेस उम्मीदवार के समर्थन में सभा में बोलते हुए कहा था—"राजा-महाराजा से हमारा धोबी कहीं अच्छा है।" धोबी की जीत हुई। तिलक स्वराज फंड में चंदा जमा करने में स्वामी जी ने काफी सहायता की। कुछ लोगों ने तिलक स्वराज फंड का रुपया गड़बड़ कर दिया, जिसके कारण स्वामी जी रंज होकर विहार से कांग्रेस का काम करने गाजीपुर चले गये।

अहमदाबाद कांग्रेस अधिवेशन से लौटने पर १९२१ में स्वामी सहजानन्द गिरफ्तार कर लिये गये। स्वामी जी पर राजद्रोह का मुकदमा चलाया गया। सजा पाकर गाजीपुर, बनारस, फैजाबाद, लखनऊ आदि जेलों में हवा खाते रहे। जेल-जीवन में गाँधी-शिष्यों की काली करतूतों को देखकर स्वामी सहजानन्द की देह में आग लग गई। गाँधी-शिष्यों की कथनी और करनी में असामंजस्य देखकर योग-साधन, पवित्र जीवन, और मोक्ष प्राप्ति के लिए दर-दर की ठोकर खाने वाले आदर्शवादी स्वामी को तिलमिला उठना स्वाभाविक था।

जनवरी १९२३ में स्वामी जी जेल से छूटकर गाजीपुर लौट आये और कांग्रेस का काम करते रहे। अब आन्दोलन शिथिल हो चला था। गाँधी जी के विश्वसनीय भक्तों के व्यवहार से भी वे रुष्ट थे। १९२४ में शाहाबाद जिले के सिमरी गाँव में चले आये।

१९२६-२७ में सिमरी से स्वामी जी बिहटा श्री सीता राम आश्रम में रहने लगे। वहीं उन्होंने पहले पहल १९२७ के अन्त में पश्चिम पटना किसान सभा का संगठन किया। ४ मार्च १९२८ में एक पैसा सदस्यता के आधार पर नियम-कायदे के साथ बाकायदा पश्चिम पटना किसान सभा का संगठन बनाया। घूम-घूम कर गाँवों में किसानों के हित में स्वामी जी व्याख्यान देने लगे। सामन्तों और जमींदारों की मनोवृत्ति को भीतर से देखकर स्वामी जी की आँखें खुलने लगीं। किसान दरिद्र थे, लाचार थे। उन पर भिन्न-भिन्न तरह की ज्यादतियाँ होती थीं। सदियों की सत्यानाशी भावली, मनमानी दानाबन्दी, कड़ी नकदी, सैकड़ों गैर-कानूनी अत्याचार, नजर-तहरीर, बैठ-बेगारी, दण्ड-जुर्माना, जमींदारों द्वारा जमीन से बेदखली आदि मनमानी लूट ने किसानों की कमर तोड़ डाली थी। इन विवशताओं के चलते किसानों को विविध अमानुषिक अत्याचार तक सहना पड़ता था।

सन् १९२९ की बात है। बिहार व्यवस्थापिका सभा में कास्तकारी बिल के नाम पर एक बिल पेश होने वाला था। जमींदारों ने षड्यन्त्र कर इसे पास कराना चाहा। यह बिल किसानों के हित पर जबर्दस्त कुठाराघात करने वाला था। पास हो जाने पर किसानों के लिए भविष्य कितना अन्धकारपूर्ण हो जायेगा, यह सोचकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता भी किंकर्तव्यविमूढ़ थे। तत्कालीन कांग्रेसी नेता बाबू रामदयालु सिंह ने स्वामी जी के पास आकर कहा कि किसान सभा का काम जोरों से होना चाहिए और सारे बिहार के किसानों का संगठन करना चाहिए। स्वामी जी ने काश्तकारी बिल के षड्यन्त्र की पोल खोली और उसका खूब विरोध किया। सोनपुर मेले में १७ नवम्बर १९२९ को बिहार प्रान्तीय किसान सम्मेलन हुआ।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने बिहार प्रान्तीय किसान सम्मेलन की अध्यक्षता की। प्रस्ताव आया, बिहार के किसानों का एक मजबूत संगठन बनाया जाय। प्रस्ताव स्वीकृत हो गया और बिहार प्रान्तीय किसान सभा का पहला चुनाव हुआ। स्वामी जी अध्यक्ष और श्री कृष्ण सिंह मंत्री निर्वाचित हुए। डॉक्टर राजेन्द्र प्रसाद, श्री अनुग्रह नारायाण सिंह, श्री रामदयालु सिंह आदि कई कांग्रेस प्रमुख नेता सदस्य निर्वाचित हुए। बिहार प्रांतीय व्यवस्थापिका सभा में सरकारी सदस्य यह बात कहते हुए उक्त तथाकथित काश्तकारी बिल को वापिस ले लिया कि किसान सभा इसका विरोध कर रही है। अपने जन्म काल में ही किसान सभा की यह बड़ी विजय थी।

राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान लोगों ने अपने अनुभव से देखा कि राष्ट्रीय आंदोलन तब तक सुदृढ़ नहीं होता जब तक ब्रिटिश साम्राज्यवाद के देशी दलाल सामन्तों के खिलाफ किसानों को संगठित नहीं किया जाता। इसीलिए किसान सभा के संगठन का समर्थन तमाम राष्ट्रीय विचारधारा के लोगों ने प्रारम्भ में किया।

लाहौर कॉंग्रेस अधिवेशन के पहले बिहार में सरदार वल्लभ भाई पटेल आये। जगह-जगह किसानों की बड़ी-बड़ी सभाएँ हुई। स्वामी सहजानन्द जी अपने व्याख्यान से किसानों में नया जोश भर रहे थे। सरदार वल्लभ भाई पटेल भी उसी सभा में किसानों को उत्साहित कर रहे थे।

पंडित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में लाहौर में रावी के रमणीय तट पर कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ। यहाँ के अधिवेशन में एक निश्चित अवधि तक औपनिवेशिक स्वराज्य की माँग न पूरी होने पर पूर्ण स्वराज की माँग रखी गई। ३१ दिसम्बर तक समय दिया गया था, लेकिन अंगरेजी सल्तनत के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगी थी। रावी के पवित्र तट पर यह स्पष्ट घोषणा की गई थी कि २६ जनवरी १९३० को सम्पूर्ण देश में पूर्ण स्वतंत्रता का प्रसिद्ध घोषणा-पत्र की प्रतिज्ञा दुहराई जाय। नमक कानून तोड़ा जाय और सविनय अवज्ञा आंदोलन छेड़ा जाय। स्वामी जी औपनिवेशिक स्वराज्य की अपेक्षा पूर्ण स्वराज्य के पक्षधर थे। देश भर में नमक सत्याग्रह छिड़ा। स्वामी जी बिहटा के पास अम्हारा ग्राम में नमक कानून तोड़ रहे थे। वहीं से कैद कर लिए गये। ६ महीने की सजा पाकर हजारीबाग जेल में बन्द कर दिये गये। गांधी-भक्त नेताओं की कमजोरियाँ पहली जेल-यात्रा में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही स्वामी जी देख चुके थे। दूसरी जेल यात्रा में उन्हें और भी घोर निराशा हुई। चरित्रहीन और पतित लोग कैसे स्वराज्य लेंगे ? यह प्रश्न स्वामी जी के माथे में चक्कर काटने लगा। अभी भी राजनीति में स्वामी जी गांधीवादी थे। गाँधीवाद से अब उदास होने लगे।

१९३१ में बिहार में किसानों की दुर्दशा की कांग्रेस की ओर से जांच हुई। नेताओं ने लम्बे-लम्बे व्याख्यान दिये। बिहारी कांग्रेसी नेता जो कि खुद जमींदार वर्ग के थे, जांच का कोई नतीजा नहीं निकलने दिया। स्वामी जी अब ४८ साल के थे। अब उनका ज्ञान और अनुभव बहुत विस्तृत था। घर छोड़ते समय उनके सामने जो आदर्श थे, उनका स्थान एक दूसरे उच्चतर आदर्श ने ले लिया था। वैयक्तिक मोक्ष की जगह वे अब सारे देश और मेहनतकश जनता को मुक्त देखना चाहते थे। गरीबी और अत्याचार से अत्यन्त पीड़ित किसान ही उनके हृदय में सबसे अधिक स्थान रखते थे। वे किसानों के बीच बैठकर किसानों का हित-चिन्तन करते थे। वे गांवों में घूमते, जहाँ कोई किसान आकर कहता—"स्वामी जी हमारे खेत में चलते हल-बैलों को जमींदार के आदमी ने बकाश्त, जिरात या खुद काश्त जोतने में जबर्दस्ती लगा दिया।" कोई कहता—"हम नाजायज नजराना और सलामी के साथ हर साल मालगुजारी बेबाक करते हैं; लेकिन जमींदार रसीद नहीं देता, हमारे ऊपर सूद और तलवाना के साथ चार-चार साल की बाकी मालगुजारी की डिग्री करवाकर हमको तबाह कर रहा है।" किसी से सुनते कि गाय-भैंस न रहने के कारण मुफ्त में दही दूध न दे सकने के अपराध में जमींदार ने अपने आदमी से किसान की स्त्री का दूध निकलवाया। कोई किसान यह कह बैठता कि किसानों की बहू-बेटियों की इज्जत जमींदारों के हाथ लुटते देखकर भी कानून कुछ भी मदद करने में असमर्थ है। हरी, बेगारी, नोचा, सामाजिक जुल्म की तरह-तरह की कहानी स्वामी सहजानन्द जी रोज सुनते। उनका हृदय आर्त्तनाद सुनकर व्यथित हो उठता और वैराग्य के पथ के राही विद्रोह का क्रांतिकारी संदेश देने लगता।

१९३२ के आंदोलन में स्वामी जी शामिल नहीं हुए। जेल जीवन में अनेक भावुक हृदय ने जो दृश्य देखा था, उसे वह भूल नहीं सके थे। इसी बीच दूसरी परिस्थिति उत्पन्न हुई। १९३३ की जनवरी के मध्य में कुछ अवसरवादी लोगों ने एक नकली किसान सभा बनाई। किसानों के कुछ स्वयंभू नेता कौंसिल में इस नकली किसान सभा की मदद से फिर कोई कानून पास करवा लेना चाहते थे। जमींदार इस कानून के पास करने के लिए बहुत उत्सुक थे; क्योंकि उसमें जमींदारों को १०० एकड़ पर १० एकड़ अपनी जमींदारी में जिरात (सीर) बनाने का अधिकार दिया गया था। स्वामी जी ने बहुत आश्चर्य से इस समाचार को पत्रों में पढ़ा। इस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समय कौंसिल के कांग्रेसी सदस्य जेलों में बन्द थे। गया जिले के किसान नेता डाक्टर युगलकिशोर सिंह स्वामी जी के पास दौड़े-दौड़े पहुँचे और खतरे की खबर देकर आगे आने के लिए कहा। गुलजारबाग में (पटना) उक्त सभा की तैयारी थी। किसानों की उक्त नकली सभा में राजा सुरुजपुरा और श्री सच्चिदानन्द सिंह जैसों को देखकर स्वामी जी का माथा ठनका। जमींदारों और सरकार के स्नेह भाजक श्री गुरुसहाय लाल और श्री शिवशंकर झा ने किसानों को समझाकर बिल पास कराने की कोशिश की। किन्तु स्वामी सहजानन्द सरस्वती और उनके प्रचार के सामने कौन टिकता! स्वामी जी ववंडर की तरह बिहार में घूमते हुए किसानों के दिलों में आग लगा रहे थे और बतला रहे थे कि कैसे पीठ-पीछे छूरा भोंकने की कोशिश की जा रही है। लोग स्वामी जी के प्रभाव, उनके तर्क और भाषण-शक्ति को जानते थे और यह भी जानते थे कि स्वामी जी के विरोध करने पर कोई भी प्रस्ताव पास नहीं हो सकता। आखिर आंदोलन का यह फल हुआ कि सैकड़े १० जिरात वाली बात निकाल देनी पड़ी। संशोधित कानून पास हुआ और कुछ छोटे-मोटे अधिकार किसानों को मिले। सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि किसानों को भ्रम में नहीं डाला जा सका। स्वामी सहजानन्द और किसान सभा की यह दूसरी सफलता थी।

गांधीवाद को आखिरी सलाम

१९३४ में बिहार में भूकम्प आया। कांग्रेसी नेता जेलों से छूटकर बाहर चले आये। सभी भूकम्प-पीड़ितों की सहायता कार्य में लग गये। स्वामी सहजानन्द भी भूकम्प-पीड़ितों की सहायता में कूद पड़े। इस अवसर पर गांधी जी भी पटना आये थे। स्वामी जी और गांधी जी में कुछ राजनीतिक बातें हुईं। गांधी जी का उत्तर स्वामी सहजानन्द को इतना असन्तोषजनक लगा कि उन्होंने वहीं गांधी जी के सामने ही गांधीवाद को आखिरी सलाम किया।

अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना

१९२७ में पश्चिम पटना जिला किसान सभा का जन्म हुआ। १९२९ में बिहार के पैमाने पर किसान सभा संगठित हो गई। बिहार के बड़े-बड़े कांग्रेसी नेताओं का भी उसे सहयोग मिला। अब इस बीच में उसका जो रूप स्पष्ट होता जा रहा था, उससे जमींदार कांग्रेसी सशंकित होने लगे।

किसानों में जो भाव स्वामी सहजानन्द ने जगाया, उससे जुल्म के खिलाफ तथा अपने हक के लिए संगठित तौर पर आवाज़ उठाने को हिम्मत किसानों में पैदा हुई।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसान गाने लगे—"अब न सहब हम जुलुमियाँ हो राजा, तोर जमींदरिया"। किसान जाग उठा; सूखी हड्डियों वाला किसान तनकर खड़ा हो गया। उसके दिल की आग फूट निकली—'राजा आग लगे तोर जमीदरिया में'। उसने अपना अरमान प्रकट किया—'जमींदारी प्रथा नाश हो' के नारे में।

१९३५ के नवम्बर में हाजीपुर के प्रान्तीय किसान सम्मेलन में स्वामी जी ने खुद जमींदारी हटा देने के लिए प्रस्ताव स्वीकृत कराया। स्वामी सहजानन्द के गतिमान व्यक्तित्व ने ऐसी हलचल पैदा की, जिसकी लू में जमींदार प्रथा सदा-सदा के लिए जलकर राख हो गई। १९३६ में लखनऊ कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर किसान आंदोलन में दिलचस्पी रखनेवाले लोगों का एक अखिल भारतीय सम्मेलन हुआ। स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता की। इसी सम्मेलन में विभिन्न प्रांतीय किसान संगठनों को अखिल भारतीय किसान सभा में एकजुट करने की बुनियाद पड़ी। यहीं किसानों का मांग-पत्र तैयार हुआ। इस मांग पत्र का फैजपुर कांग्रेस के प्रस्ताव पर प्रभावशाली असर पड़ा।

१९३७ में फैजपुर कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर अखिल भारतीय किसान सभा का दूसरा अधिवेशन हुआ। स्वामी सहजानन्द किसान सभा के जेनरल सेक्रेटरी हुए। तब से स्वामी जी अखिल भारतीय किसान सभा के जेनरल सेक्रेटरी या सभापति १९४४ तक बराबर बनते रहे। भारत में किसान आन्दोलन स्वामी सहजानन्द के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया।

किसानों की स्थिति की जांच का सवाल कांग्रेस अधिवेशन में स्वामी सहजानन्द ने पेश किया। सामन्ती मनोवृत्ति के कितने ही लोग विरोध कर रहे थे। पण्डित जवाहर लाल नेहरू ने कहा—'किसानों की स्थिति की जाँच अवश्य होनी चाहिए, हम इसके लिए स्वामीजी को धन्यवाद देते हैं।' लखनऊ में किसान, जाँच समिति का प्रस्ताव पास हुआ। उसके अनुसार कितने ही प्रान्तों में जांच हुई।

१९३८ के कांग्रेस अधिवेशन से अलग स्वतन्त्र रूप में अखिल भारतीय किसान सभा का सम्मेलन आयोजित होने लगा। कोमिल्ला (अब बंगलादेश) में १३, १४, १५ मई १९३८ को स्वामी सहजानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में अखिल भारतीय किसान सभा का तृतीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

१९३९ के ९, १० अप्रैल को आचार्य नरेन्द्र देव की अध्यक्षता में अखिल भारतीय किसान सभा का चतुर्थ अधिवेशन गया में हुआ। १९४० में पलासा में पांचवां

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९४२ में बिहार में छठा, १९४३ में भखना में सातवां और १९४४ में बेजवाड़ा में आठवां अखिल भारतीय किसान सम्मेलन हुआ।

अखिल भारतीय किसान सभा का आठवां अधिवेशन १४, १५ मार्च १९४४ में स्वामी सहजानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में आन्ध्र के बेजवाड़ा मे सम्पन्न हुआ। इस प्रकार लखनऊ (१९३६) कोमिल्ला (१९३८) और बेजवाड़ा (१९४४) तीन अखिल भारतीय किसान सम्मेलन का स्वामी जी ने सभापतित्व किया।

कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट और कांग्रेसजन समेत दूसरे वामपक्षी किसान सभा के मंच पर संयुक्त मोर्चा के रूप में वहुत दिनों तक मिलकर काम करते रहे। संयुक्त कार्यवाहियों के दौरान न सिर्फ किसान सभा के सगठन का विकास हुआ, बल्कि किसानों क वीरतापूर्वक संघर्ष भी हुए। १९३७ में कांग्रेसी मंत्रिमण्डलों के बन जाने के बाद, कांग्रेसी सरकारों के दमन का भी मुकाबला किसान सभा को करना पड़ा। कांग्रेसी मंत्रिमडल की स्थापना के एक वर्ष बाद जब वह सरकार किसानों के लिए कुछ न कर सकी तो स्वामी जी से न रहा गया। पटने में किसानों की विराट रैली हुई। स्वामी जी ने किसानों का घोषणापत्र पेश किया। बिहार विधान सभा भवन के सामने शानदार प्रदर्शन हुआ। बिहार में व्यापक किसान संघर्ष छिड़ गये। बड़हिया टाल, रेवड़ा, मझियावां, अमवारी आदि सभी जगह, जहाँ कहीं भी किसानों के सघर्ष होते, स्वामी जी सभी जगह पहुँचकर किसानों का उत्साह बढ़ाते। उनकी रण-गर्जना को सुनकर किसानों के दिल बल्लियों उछलने लगते। स्वामीजी का देश भर में किसानों के बीच अनवरत तूफानी दौरा होता रहता। कभी हिमालय की तराइयों में, कभी नर्मदा और ताप्ती के अंचलों में, कभी गंगा के समतल मैदान में, कभी दक्षिण की पहाड़ी और जंगली भागों में, सम्पूर्ण भारत में जन-नायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती के दौरे का चक्र चलता रहता। स्वामी जी भारतीय किसानों के एक लोकप्रिय नेता के रूप में सर्वत्र आदर पाते थे।

समझौता विरोधी सम्मेलन

दूसरे महायुद्ध की चिनगारी फैल गई। स्वामी जी ने साम्राज्यवादी युद्ध के बारे में हर तरह के समझौते का विरोध किया। इधर जब देखा कि समझौते की मनोवृत्ति कांग्रेसी नेताओं में धीरे-धीरे बढ़ हो रही है और आजादी का संग्राम वे अब न छेड़ेंगे, तो सुभाषचन्द्र बोस से मिलकर स्वामी जी ने यह तय किया कि रामगढ़ में कांग्रेस अधिवेशन के समय एक अखिल भारतीय समझौता विरोधी सम्मेलन हो। फलतः उसकी जोरदार तैयारी हुई। स्वामी जी स्वागत समिति के अध्यक्ष बने और सुभाष बाबू सम्मेलन के अध्यक्ष। १९, २० मार्च १९४० में शानदार सम्मेलन हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खुला अधिवेशन जम के हुआ; जहाँ लाखों लोग जमा थे। स्वामी जी और सुभाष बाबू के ओजस्वी भाषण हुए। स्वामी जी ने अपने भाषण में स्पष्ट ही कहा—अंग्रेजों को न एक पाई, न एक भाई। रामगढ़ में दिये व्याख्यान के लिए स्वामी सहजानन्द पर मुकदमा चला और तीन साल की सजा हुई। हजारीबाग केन्द्रीय कारा में स्वामी जी अपनी सजा काटते रहे और वहाँ 'क्रान्ति और संयुक्त मोर्चा' 'जीता हृदय' 'किसान सभा के संस्मरण ! मेरा जीवन संघर्ष,' 'किसान कैसे लड़ते हैं', 'झारखंड के किसान', 'किसान क्या करें' और 'खेत मजदूर' आदि लगभग एक दर्जन पुस्तकों की रचना करते रहे। स्वामी जी एक लेखक के रूप में अपनी रचनाओं में सदा जीवित रहेंगे।

सोवियत संघ के महान मित्र

स्वामी जी सोवियत संघ के बड़े समर्थक थे। किसानों की कोई भी सभा सोवियत रूस की व्यवस्था की प्रशंसा के बिना कभी समाप्त ही नहीं होती। स्वामी जी से ही मैंने १९३९ में अपने गाँव मझियावाँ में एक सभा में सुना था—"दुनियाँ में एक ऐसा देश है, जहाँ जमींदार नहीं हैं पूँजीपति नहीं हैं। कमाने वालों का राज है। उनकी कमाई का कोई शोषण नहीं करता। वह देश है सोवियत रूस।"

२२ जून १९४१ को हिटलर ने सोवियत रूस पर हमला किया। सोवियत पर आक्रमण होने का समाचार पाते ही स्वामी सहजानन्द के दिल पर भारी धक्का लगा। किसान और शोषित पीड़ित जनता के हित की दृष्टि से देखने वाले सहजानन्द सरस्वती को यह समझने में देर नहीं हुई कि अब युद्ध का स्वरूप बदल गया है। फासिज्म और नाजीवाद की विजय किसानों और मजदूरों के लिए बड़ा नुकसानदेह होगा।

मार्च १९४२ में स्वामी जी हजारीबाग जेल से रिहा हुए। अब स्वामी जी का कार्यक्रम फासिस्ट और नात्सी शक्तियों के खिलाफ जनता को सचेत करना तथा किसानों के मौलिक अधिकारों के लिए संघर्ष करना मुख्य रूप से था।

१९४२ की अगस्त क्रांति में साम्राज्यवाद ने राष्ट्रीय आन्दोलन पर भरपूर हमला किया। स्वामी जी ने जनता पर हुए दमन की घोर भर्त्सना की। तमाम लोग जेल में बन्द थे। स्वामी जी ने नेताओं को छुड़ाने के लिए, अन्न और वस्त्र का संकट हल करने के लिए और राष्ट्रीय सरकार बनाने के लिए किसान सभा के मंच से आन्दोलन चलाया।

दूसरा विश्व युद्ध समाप्त हुआ। आजाद हिन्द फौज की रिहाई का आन्दोलन चल पड़ा। युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति में परिवर्त्तन और राष्ट्रीय उभाड़

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के बीच १५ अगस्त १९४७ को भारत आजाद हुआ। स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने भारत विभाजन का जोरदार विरोध किया। अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बैठक में स्वामी सहजानन्द सरस्वती, डॉक्टर राममनोहर लोहिया, पुरुषोत्तम दास टंडन आदि ने कांग्रेस कार्यकारिणी के प्रस्ताव का जोरदार विरोध किया।

वामपक्षी एकता के लिए प्रयास

स्वामी सहजानन्द सरस्वती राष्ट्रीय आन्दोलन में वामपक्ष के नेता कांग्रेस के भीतर माने जाते थे। इन्होंने वामपक्षी शक्तियों को एकबद्ध करने का कई बार प्रयास किया। त्रिपुरी और रामगढ़ कांग्रेस के अवसर पर नेता जी सुभाषचन्द्र बोस को स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने पूर्ण समर्थन दिया।

१५ अगस्त १९४७ के बाद इन्होंने एक लेख लिखा जिसका शीर्षक था 'अब क्या हो' ? उस लेख में देश की समाजवादी विचारधारा और वामपक्षी शक्तियों को एकजुट होने की सलाह दी। पटने में १९४८ को संभवतः फरवरी माह में देश के वामपक्षी दलों के प्रतिविधियों की एक बैठक भी हुई। सोशलिस्ट पार्टी को छोड़कर १८ दलों के लोग शामिल हुए। भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी की ओर से का० सोमनाथ लाहिड़ी इसमें उपस्थित थे। मार्च, १९४८ में पार्टी की दूसरी कांग्रेस में अपनायी गई नीतियों के कारण कम्युनिस्ट पार्टी कुछ कर नहीं सकी और वह मोर्चा चल नहीं सका।

२८, २९, ३० अक्टूबर १९४९ को नेताजी भवन, कलकत्ते में देश के वामपक्षियों का एक सम्मेलन फिर बुलाया गया। एक समिति भी बनी। किन्तु राष्ट्रीय जनतांत्रिक वामपक्षी शक्तियों को एकबद्ध, संगठित करने और राष्ट्रीय जनवादी क्रान्ति को पूरा करने का कर्त्तव्य अभी भी अधूरा है। यह खुशी की बात है कि भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी ने इस कर्त्तव्य को अपने हाथ में लिया है।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने संयुक्त मोर्चा बनाने के लिए कई बार प्रयास किया। किसान मजदूर राज्य स्थापित करने का सपना उनके जीवन में साकार नहीं हो सका।

महा प्रयाण

२६ जून १९५० में किसानों का वह प्यारा नेता चल बसा। यद्यपि मृत्यु के समय स्वामी जी ६१ वर्ष के थे, फिर भी उनमें युवकोचित शक्ति एवं उत्साह भरा था। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के वह वीर योद्धा थे। स्वामी जी का अंतः-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करण एक आदर्शवादी व्यक्ति का था। मृत्यु पर्यन्त वे किसानों की सेवा में लगे रहे। क्रियात्मक राजनीति ने स्वामी जी को मार्क्सवाद के पास पहुँचाया था। उनकी एक ही इच्छा थी—शोषक और कामचोर सदा के लिए मिटा दिये जायँ। वे देश से व्यक्तिगत सम्पत्ति का खात्मा चाहते थे और चाहते थे कि कृषि, खनिज, उद्योग-धंधे, रेल, बैंक तथा दूसरी सारी सम्पत्ति विशाल भारतीय जनता की सामूहिक सम्पत्ति बना दी जाय। उनका कहना था कि सारी समस्याओं का एक ही हल है—'साम्यवाद ही एकमात्र रास्ता है'।

हमें विश्वास है कि भारतीय जनता साम्यवाद की शीतल छाया का अनुभव एक दिन अवश्य करेगी। भारत की आने वाली पीढ़ियाँ उस दिन स्वामी सहजानन्द को गौरव के साथ स्मरण करेगी। बिहार के किसान तो स्वामी सहजानन्द सरस्वती को भूल नहीं सकते।

मार्च १९४९ की बात है, देश भर में कम्युनिस्टों का दमन हो रहा था। स्वामी जी ने शाहाबाद जिले के ढकाईच में १२, १३ मार्च १९४९ को किसानों के एक सम्मेलन में भाषण देते हुए कहा था कि "हम कम्युनिस्टों के वकील नहीं। वे अपनी वकालत खुद करते हैं। किन्तु उन पर जो दमनचक्र चल रहा है, उसे देख कर जी चाहता है कि कम्युनिस्टों को गले लगालें।"

स्वामी जी जमीन की हदवन्दी के पक्षधर थे। उन्होंने पहले हदबन्दी और उसके बाद चकबन्दी लागू करने की सिफारिश की है। 'किसानों के दावे और कार्यक्रम का खरीता' पुस्तिका में उन्होंने स्पष्ट यही लिखा है।

साम्यवाद के समर्थन में स्वामी जी ने अपने ढकाइच (शाहाबाद) के लिखित भाषण में कहा है कि—'साम्यवाद कोई दूसरी चीज नहीं है, सिवाय विशुद्ध किसान-मजदूर राज्य के।'

"साम्यवाद होने पर हरेक आदमी से उतना ही काम लिया जायगा, जिसे वह जितना कर सके। लेकिन बदले में उसकी सभी आवश्यकतायें पूरी की जायगी, यही साम्यवाद कहलाता है। साम्यवाद धर्म को मिटाता है, यह तो उसके शत्रुओं का झूठा प्रचार है। सोवियत रूस में धर्म को मिटाने का नाम भी वहाँ की सरकार कहाँ करती है? वहाँ तो हर एक को आजादी है कि धर्म माने या न माने। हाँ, साम्यवादी सरकार धर्म की घूंटी किसी को नहीं पिलाती और न उसके पक्ष-विपक्ष में प्रचार करती है, जो ठीक ही है। साम्यवाद में अमीर-गरीब नाम की कोई चीज नहीं होती। सभी सुखी होते हैं यह सुन्दर बात है। सभी नागरिकों को समान रूप से पूरा अवसर मिलता है—सर्वांगीन समुन्नति का। फिर उसका विरोध कैसा?"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साधारण कद, मांसल शरीर, गेहुआँ रंग, मुंडित मस्तक, गेरुआ वस्त्र धारी अपने स्वाभाविक चाल में भी स्वामी सहजानन्द डबल मार्च करते नजर आते थे। युगों से उत्पीड़ित किसान का सारा क्रोध, सारी घृणा उनकी भौं पर लदी थी। वह दिन-रात, महीना-बरस, सोते-जागते सिर्फ किसान और देश की चिन्ता करते थे। स्वामी जी का नारा था—

"जो अन्न-वस्त्र उपजायेगा, अब सो कानून बनायेगा।
भारतवर्ष उसीका है, अब शासन वही चलायेगा।"

२६ जून १९७६ को जवाहर टाउन हौल गया में स्वामी सहजानन्द स्मृति समारोह में भाषण करते हुए—श्री त्रिवेणी शर्मा सुधाकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जननायक स्वामी सहजानंद सरस्वती
—एक संस्मरण

—रामावतार शास्त्री

बात सन् १९३६ की है। लखनऊ में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी का महाधिवेशन होनेवाला था। पंडित जवाहरलाल नेहरू उसके अध्यक्ष चुने गये थे। मुझे भी काशी विद्यापीठ, बनारस के अन्य छात्रों के साथ महाधिवेशन में स्वयंसेवक का कार्य करने का सुअवसर मिला था।

लखनऊ-कांग्रेस में वामपक्षियों का बड़ा जोर था। सन् १९३४ में पटने में आचार्य नरेन्द्रदेव की अध्यक्षता में अखिल भारतीय कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना हो चुकी थी। इस प्रकार वहाँ समाजवाद में विश्वास रखनेवालों की एक भारी टोली जमा थी। सभी इस बात के लिए संघर्ष कर रहे थे कि, यह स्पष्ट निर्णय कर लिया जाय कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद शासन का स्वरूप क्या होगा? नये समाज में किसानों, मजदूरों एवं मेहनत करनेवाले अन्य लोगों की स्थिति क्या होगी? शासन की वागडोर किनके हाथों में रहेगी? ऐसे, स्पष्ट दिशा-निर्देश की बातें पहले से ही उठ रही थीं, पर लखनऊ कांग्रेस में यह प्रश्न उभड़कर सामने आ गया। पंडित जवाहरलाल नेहरू के कांग्रेस के अध्यक्ष चुने जाने के कारण इस प्रश्न को बल ही मिला।

किसान-मजदूर राज्य की स्थापना की कल्पना लेकर लखनऊ-कांग्रेस से पूर्व भी विभिन्न प्रदेशों में किसानों के आन्दोलन प्रारम्भ हो चुके थे। उनके आन्दोलन राष्ट्रीय आन्दोलन के पूरक के रूप में विकसित हो रहे थे। अंगरेजी साम्राज्य के अन्त के साथ-साथ जमींदारी प्रथा एवं जमींदारों के पाशविक जुल्मों का अन्त करना किसानों का आम नारा बन गया था। इस प्रकार के आन्दोलन विशेष रूप से बिहार, बंगाल, उत्तर प्रदेश आदि जमींदारी प्रथा वाले राज्यों में विकसित हो रहे थे।

विभिन्न प्रदेशों में विकसित होनेवाले किसान आन्दोलनों को एक सूत्र में बाँधकर संचालित करने के उद्देश्य से लखनऊ कांग्रेस के अवसर पर अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना की गयी। किसान सभा की नींव डालनेवालों में स्वामी सहजानंद सरस्वती, इन्दु लाल याज्ञिक, प्रो० ए० जी० रंगा, महापंडित राहुल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सांकृत्यायन, बंकिम मुखर्जी, पं० कार्यानंद शर्मा, पं० यदुनंदन शर्मा, आचार्य नरेन्द्रदेव, जयप्रकाश नारायण, पी० सी० जोशी, किशोरी प्रसन्न सिंह, मोहन लाल गौतम, डा० जेड० ए० अहमद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। ऐसे, स्वामी जी का नाम मैंने पहले से ही सुन रखा था, परन्तु उनका दर्शन करने का प्रथम अवसर लखनऊ कांग्रेस में ही मिला। स्वामी जी को देखते ही मेरे मन पर असर पड़ा कि, किसानों के उस फकीर में किसान-संगठन का अपार कौशल छिपा पड़ा है जिसका परिचय भारतीय किसान आन्दोलन को आने वाले दिनों में मिला।

अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना के साथ ही लखनऊ कांग्रेस में उपस्थित समाजवादियों तथा किसान नेताओं ने इस बात की पुरजोर कोशिश की कि, कांग्रेस के नेता सामूहिक प्रतिनिधित्व के सिद्धांत को स्वीकार कर लें ताकि किसान सभा एव अन्य जन-संगठनों के सदस्यों को कांग्रेस का सदस्य मान लिया जाय और इसके आधार पर उन्हें कांग्रेस में प्रतिनिधित्व दे दिया जाय। परन्तु, पंडित नेहरू को छोड़कर कांग्रेस के अन्य नेता इसके लिए तैयार नहीं हुए। उनका कहना था कि, जन-संगठनों के सदस्यों के लिए कांग्रेस का अलग से सदस्य बनना आवश्यक है। यह संघर्ष कांग्रेस में वर्षों तक चलता रहा। फिर भी, कांग्रेस नेतृत्व का विशाल बहुमत सामूहिक प्रतिनिधित्व के सिद्धान्त को स्वीकार करने के लिए सहमत नहीं हो सका। उन्हें डर था कि, ऐसा करने से कांग्रेस-संगठन पर समाजवादियों एवं प्रगतिशील कांग्रेसियों का आधिपत्य जम जायगा और दकियानूसी विचार वाले कांग्रेस से दरकिनारे कर दिये जायेंगे।

अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना होते ही स्वामी जी के कंधों पर संपूर्ण देश में इस संगठन को फैलाने का भार आ गया। प्रबल देशभक्ति के साथ-साथ स्वामी जी में अटूट किसान प्रेम था। उन्हें किसानों का दोहरा शोषण असह्य था। एक ओर अंगरेज किसानों का खून चूस रहे थे और दूसरी ओर क्रूर जमींदार। जमींदारों का जुल्म सीमा पार कर चुका था। अनाज पैदा करनेवाला किसान स्वयं भूखों मर रहा था। अंगरेजी राज में किसानों को सचमुच गुलामों के जीवन व्यतीत करना पड़ रहा था। स्वामी जी से किसानों पर यह अत्याचार देखा नहीं गया। उन्होंने दृढ़ निश्चय कर लिया कि, किसान सभा के झंडे के नीचे सभी किसानों को संगठित कर स्वतंत्रता प्राप्ति की लड़ाई के साथ-साथ जमींदारी प्रथा के नाश के लिए भी लड़ना होगा। इन भावनाओं से प्रेरित होकर ही गेरुआ वस्त्रधारी स्वामी सहजानंद सरस्वती दंडी लेकर किसानों में अलख जगाने के लिए पिल पड़े। उन्होंने किसान सभा को संगठित करने के उद्देश्य से सारे भारत का दौरा किया और जल्दी ही सभी प्रदेशों में किसान सभा संगठित हो गयी। वह किसानों से कहा करते कि, जमींदारों की लूट एवं अत्याचारों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का मुकाबला उन्हें लाठियों से करना चाहिए। उनके इस कथन से कांग्रेस कार्य-समिति में बावेला मच गया।

बिहार स्वामी जी का मुख्य कर्मस्थल रहा। उन दिनों बिहार में जमींदारों का दबदबा था। अँगरेजी सरकार की मदद से वे किसानों पर नाना प्रकार के जुल्म ढाते थे। जमींदारी-प्रथा के अन्तर्गत मालगुजारी की भावली प्रथा थी जिसके अनुसार जमींदार किसानों की अधिकांश फसल मालगुजारी के नाम पर हड़प लेते थे। किसान चूँ तक नहीं कर पाता था। साथ-ही बकाश्त के नाम पर जमींदारों ने अधिकांश भूमि पर कब्जा जमा रखा था। बैठ-बेगारी भी पराकाष्ठा पर थी। जमींदार ठीक गुलामों की तरह किसानों के साथ व्यवहार करते थे। किसान अपनी उपज का अधिकांश जमींदारों के घर पहुँचाया करते थे। छप्परों के कद्दू तक किसानों को मयस्सर नहीं होते थे। विरोध करने पर पाश-विक यातनाएँ भुगतनी पड़ती थीं।

स्वामी जी ने अँगरेजी राज और जमींदारों की मिलीभगत के विरोध में किसान-संघर्ष का बिगुल फूंक दिया। स्वामी जी, पं० कार्यानंद शर्मा, पं० यदुनंदन शर्मा, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, अवधेश्वर प्रसाद सिंह, किशोरी प्रसन्न सिंह, शीलभद्र याजी, रामचन्द्र शर्मा, यमुना कार्यी, श्यामनंदन सिंह, तुमड़िया बाबा जैसे किसान नेता देहातों में फैल गये और लगे किसानों को जमींदारी प्रथा के विरोध में संगठित करने। उनका नारा था—अँगरेजी राज का नाश हो, जमींदारी प्रथा का नाश हो, भावली को नकदी करो, बकाश्त जमीन पर कब्जा करो, बैठ-बेगारी बंद करो, अत्याचार बंद करो आदि। ये नारे संपूर्ण बिहार में बिजली की तरह फैल गये। इन नारों के प्रचार में श्री रामवृक्ष बेनीपुरी के सम्पादकत्व में प्रकाशित हो रहे बिहार सोशलिस्ट पार्टी के मुखपत्र "जनता" ने विशेष भूमिका अदा की। पटना के दरियापुर गोला नामक महल्ले के त्रिमुहाने पर अर्वाचीन जनता कार्यालय "राज्य के किसान एवं समाजवादी आन्दोलनों का केन्द्र-स्थल बना हुआ था। इस लेखक को वहाँ भी जननायक स्वामी सहजानंद सरस्वती तथा अन्य किसान नेताओं का उपदेश सुनने का सुअवसर मिला करता था।

सन् १९३७ में बिहार में डॉ० श्रीकृष्ण सिंह के नेतृत्व में कांग्रेस की सरकार बन चुकी थी। लोकप्रिय सरकार बनते ही किसानों एवं उनके नेताओं में आशा जागना स्वाभाविक था कि, किसानों के भाग्य जगेंगे, उनकी समस्याओं का समाधान होगा तथा उनके दुर्दिन का अंत होगा। परन्तु, सरकार किसानों की समस्याओं का समाधान नहीं निकाल सकी। फलतः स्वामी जी के नेतृत्व में किसानों ने आन्दोलन का सहारा लिया। बिहार के कोने-कोने में किसानों का संघर्ष ठन गया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९३८ में किसानों ने बकाश्त जमीन पर कब्जा करने के लिए राज्यभर में सत्याग्रह आन्दोलन छेड़ दिया। गया जिले के रेवड़ा में पं० यदुनन्दन शर्मा और तुमड़िया बाबा, मुंगेर जिले के बड़हिया टाल में पं० कार्यानन्द शर्मा और सारन जिले के अमवारी में महा पंडित राहुल सांकृत्यायन के नेतृत्व में किसानों का सत्याग्रह आन्दोलन चल निकला। किसानों के आन्दोलन को दबाने की सरकार ने पूरी कोशिश की। अमवारी में राहुल सांकृत्यायन का लाठी चार्ज करके सर फोड़ा गया और उन्हें गिरफ्तार कर कमर में रस्सा बांध कर तथा हाथ में हथकड़ी लगाकर जेल भेजा गया। उनके सिर से खून बहते देखकर किसी कवि ने कहा था—"राहुल के सिर से खून गिरे, फिर क्यों न वह खून पुकार उठे....." रेवड़ा और बड़हिया में भी किसानों पर अमानवीय जुल्म ढाये गये। सैंकड़ों गिरफ्तार कर जेलों में डाल दिये गये। फिर भी, सरकार किसानों के आन्दोलनों को दबा नहीं सकी। स्वामी जी की कर्मठता और दृढ़ संकल्प के सामने जमींदारों और सरकार को हार माननी पड़ी। किसान विजयी हुए।

बिहार में स्वामी जी के नेतृत्व मे भावली को नकदी करने का आन्दोलन भी चल निकला। कोई जिला ऐसा नहीं था जहाँ इस आन्दोलन का जोर न हो। किसानों ने बेठ-बेगारी बन्द करने के लिए भी संघर्ष किया। जमींदारी प्रथा के अन्त का नारा भी सम्पूर्ण बिहार में गूंजता रहा। किसानों के आन्दोलनों ने यह स्पष्ट कर दिया कि, स्वतन्त्रता-संग्राम में किसानों की भूमिका क्या हो सकती है। इस आन्दोलन में स्वामी जी की भूमिका ने यह स्पष्ट कर दिया कि, ऐसा ही नेता जननायक बन सकता है। और इसीलिए किसानों ने उन्हें जननायक की पदवी से विभूषित किया। स्वामी जी सचमुच जननायक थे क्योंकि उन्होंने शोषितों-पीड़ितों को जगाने के लिए अथक परिश्रम किया था। उन्होंने अपनी सारी जिन्दगी किसानों की सेवा में लगा दी। वह जीवन-पर्यन्त जुल्म और अत्याचार के विरुद्ध लड़ते और लड़ाते रहे। स्वामी जी किसी प्रतिक्रियावादी या फासिस्ट आन्दोलन का नेतृत्व करके जननायक नहीं बने थे। उनका नेतृत्व जन संघर्षों की आग में तपकर निखरा था। वह कोई पोंगापन्थी नेता नहीं अपितु किसानों एवं आम जनता के जुझारू रहनुमा थे।

स्वामी जी अपने धुन के पक्के थे। जरूरत पड़ने पर वह कांग्रेस से भी लड़ लेते थे। उदाहरण मौजूद है। एक बार उन्होंने दानापुर प्रमण्डल से कांग्रेस के उम्मीदवार श्री ललित मोहन सिंह के विरुद्ध अमहरा के श्री रामचन्द्र शर्मा को लड़ा दिया। पर उस चुनाव में वह हार गये।

सन् १९३९ में द्वितीय महायुद्ध का श्रीगणेश हुआ। साम्राज्यवादी मुल्क आपस में भिड़ गये। स्वामी जी ने किसानों का आह्वान किया कि, वे अंगरेजी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राज को लड़ाई के लिए न एक पाई दें और न एक भाई। किसानों में स्वामी जी का यह संदेश बिजली की तरह फैल गया। किसान स्वतंत्रता-संग्राम के सिपाही बन गये। बस क्या था, अंगरेजी सरकार ने स्वामी जी को गिरफ्तार कर जेल में बन्द कर दिया। फिर भी किसान मायूस नहीं हुए और स्वाधीनता-संग्राम में उनका योगदान जारी रहा।

२१ जून १९४१ को हिटलर की फासिस्ट फौज ने विश्व के प्रथम समाजवादी मुल्क सोवियत रूस पर विश्वासघाती हमला बोल दिया। उसने चाहा कि दुनिया के शोषितों-पीड़ितों की एकमात्र आशा सोवियत रूस की समाजवादी सरकार को समाप्त कर दें। परन्तु, दुनिया का मजदूर वर्ग एवं शोषित पीड़ित तबका इसे कैसे बर्दाश्त कर सकते थे। संपूर्ण विश्व का मजदूर वर्ग उसकी मदद में लामबन्द हो गया। भारत के किसान-मजदूर भी उसकी सहायता में खड़े हो गये। साम्राज्यवादी युद्ध लोक युद्ध में बदल गया। स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने भी सोवियत संघ पर हिटलर के हमले की निंदा की और किसानों का आह्वान किया कि, वे किसानों-मजदूरों के राज्य की रक्षा के लिए जुट जायँ। उनके नेतृत्व में अखिल भारतीय किसान सभा ने भी इसी आशय का निर्णय लिया। अखिल भारतीय किसान कौंसिल के नामपर अधिवेशन का यह निर्णय ऐतिहासिक बन गया।

स्वामी जी जेल से बाहर आ चुके थे। भारत सरकार ने मुझे भी उत्तर प्रदेश से निष्कासित कर बिहार में नजरबन्द कर दिया था। बनारस जेल से पटना जेल में मुझे लाकर रिहा कर दिया गया। एक दिन स्वामी जी का दर्शन करने के लिए मैं पटना स्टूडेन्ट्स यूनियन के अध्यक्ष श्री हरिकिशोर ठाकुर के साथ सीता राम आश्रम, बिहटा पहुँचा। वह आश्रम उन दिनों किसान आन्दोलन का केन्द्र-स्थल था। देश के दूरदराज से लोग वहाँ स्वामी जी से किसान आन्दोलन के बारे में आदेश-निर्देश लेने के लिए पहुँचा करते थे। इस प्रकार स्वामी जी का बिहटा आश्रम किसानों के लिए तीर्थस्थान बना हुआ था। बड़े से बड़े किसान नेता भी वहाँ स्वामी जी के साथ मंत्रणा करने के लिए आया-जाया करते थे। बिहार के किसान नेताओं के लिए तो आश्रम शिविर ही बना हुआ था जहाँ से स्वतन्त्रता-संग्राम और किसान आन्दोलन को नेतृत्व प्रदान किया जाता था।

अखिल भारतीय किसान कौंसिल के नागपुर अधिवेशन द्वारा पारित लोक-युद्ध का प्रस्ताव किसान सभा में विवाद का प्रश्न बना हुआ था। कुछ लोग सोवियत संघ पर फासिस्टी हमले के बावजूद लोक-युद्ध के प्रस्ताव के प्रबल विरोधी थे। इस विवाद का हल निकालने के लिए सन् १९४२ के अप्रैल में बिहटा में अखिल भारतीय किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। स्वामी जी फासिस्ट

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विरोधी युद्ध के प्रबल समर्थक थे। उनका कहना था कि फासिस्ट दरिन्दों से प्रथम समाजवादी राज सोवियत संघ की हर प्रकार से रक्षा करना प्रत्येक समाजवादी एवं किसान तथा जनतंत्र प्रेमी व्यक्ति का पुनीत कर्त्तव्य है। इस विचार से प्रेरित होकर ही बिहटा में उन्होंने किसान सम्मेलन का आयोजन किया। आचार्य एन० जी० रंगा उसके अध्यक्ष थे। प्रखर वादविवाद के बाद लोक-युद्ध सम्बन्धी प्रस्ताव विशाल बहुमत से पारित हुआ। जो लोग उस प्रस्ताव के विरोधी थे वे सम्मेलन से निकल आये और उन लोगों ने सम्मेलन में हुरबोंग मचाने की कोशिश की। कुछ मारपीट भी हो गयी। परन्तु, उन्हें सम्मेलन के तोड़फोड़ में सफलता नहीं मिली। स्वामी जी उनकी हरकतों से बड़े क्रुद्ध थे।

सोवियत संघ एवं जनतांत्रिक शक्तियों के समर्थन तथा हिटलरी दरिन्दों के विरुद्ध किसानों को जत्थेबन्द करने के उद्देश्य से स्वामी जी ने बिहटा किसान सम्मेलन के बाद साप्ताहिक "हुंकार" नामक पत्र का पटने से प्रकाशन प्रारम्भ किया। स्वामी जी स्वयं उसके सम्पादक बने और गोविन्द मित्र रोड स्थित स्वर्गीय यमुना कार्यी के प्रेस से वह छपने लगा। अखिल भारतीय किसान सभा के वर्त्तमान महा सचिव इन्द्रदीप सिंह और अपने सहपाठी कृष्ण चन्द्र शास्त्री के साथ मुझे भी "हुंकार" के सम्पादक मण्डल में काम करने का गौरव प्राप्त हुआ। स्वामी जी और बाद में महापंडित राहुल सांकृत्यायन के सम्पादकत्व में मुझे कई वर्षों तक हुंकार में काम करने का अवसर मिला। प्रारम्भ में स्वामी जी ही हुंकार में सम्पादकीय लेख लिखा करते थे। उनकी भाषा सरल, सुबोध और प्रभावशाली थी। उनकी भाषा और राजनीति किसानों को बरबस अपनी ओर खींच लेती थी। बाद में स्वामी जी कुछ खास सवालों पर ही सम्पादकीय लेख लिखा करते थे। अधिकांश सम्पादकीय लेख श्री इन्द्रदीप सिंह ही लिखा करते थे।

किसान तथा फासिस्ट विरोधी आंदोलनों में व्यस्त रहने के कारण बाद में स्वामी जी ने हुंकार के सम्पादक का काम महापंडित राहुल सांकृत्यायन को सुपुर्द कर दिया। उनके साथ भी मुझे महीनों काम करने का मौका मिला। इस प्रकार 'हुंकार' ने स्वामी जी की देख-रेख में उन दिनों फासिस्ट विरोधी आंदोलन में अपनी प्रभावकारी एवं विशिष्ट भूमिका अदा की।

हुंकार के माध्यम से स्वामी जी ने फासिस्ट विरोधी लड़ाई का समर्थन तो अवश्य किया, पर साथ ही वह किसान सभा के अपने साथियों के साथ राष्ट्रीय आंदोलन को दबाने के अंगरेजी सरकार की दमन-नीति का सदा विरोध करते रहे। लड़ाई-संचालन के साम्राज्यवादी तौर-तरीकों का समर्थन उन्होंने कभी नहीं किया। वह सर्वदा मांग करते रहे कि, राष्ट्रीय नेताओं के नेतृत्व में गठित राष्ट्री सरकार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ही फासिस्ट दरिन्दों से देश की रक्षा तथा देशवासियों को इसके लिए प्रेरित कर सकती थी। परन्तु, अँगरेजी सरकार इसके लिए तैयार नहीं हुई और उसने नौ अगस्त १९४२ को राष्ट्रीय नेताओं को गिरफ्तार कर जेलों में बन्द कर दिया। सम्पूर्ण देश में राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचलने के लिए ब्रिटिश सरकार ने क्रूर दमन का सहारा लिया। स्वामी जी ने सरकार की दमन की नीति का डट कर विरोध किया गो कि वह यह भी कहते रहे कि, देशवासियों को फासिस्ट युद्ध का विरोध जारी रखना चाहिये।

सन् १९४५ में द्वितीय युद्ध का अंत हुआ। सोवियत रूस के नेतृत्व में जनतांत्रिक शक्तियों की विजय और फासिस्टों की पराजय हुई। इसका प्रभाव भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर भी पड़ा। अँगरेजी राज के विरोध में जहाजी बेड़े के जवानों ने भी विद्रोह कर दिया। अतः ब्रिटिश सरकार को विवश होकर महात्मा गाँधी एवं अन्य राष्ट्रीय नेताओं को जेलों से रिहा करना पड़ा। बाद में १५ अगस्त, १९४७ को आधी रात में अँगरेजों ने शासन की बागडोर राष्ट्रीय नेताओं के हाथ सुपुर्द कर विगत दो सौ साल से चली आ रही अँगरेजी राज की समाप्ति की घोषणा की।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारतीय शासन की बागडोर कांग्रेस नेताओं के हाथों में आ गयी। स्वामी जी तथा अखिल भारतीय किसान सभा के आह्वान पर जमींदारी प्रथा की समाप्ति कर आन्दोलन और तेज हो गया। जिन राज्यों में जमींदारी प्रथा कायम थी उसके अन्त के लिए कानून बनाये गये। किसानों की अन्य माँगों को भी राज्य सरकारों को मंजूर करना पड़ा। इस प्रकार स्वामी जी के कुशल नेतृत्व में किसान आन्दोलन का एक अध्याय समाप्त हुआ। परन्तु किसानों के आन्दोलनों का अन्त नहीं हुआ। आन्दोलन के स्वरूप और उनकी माँगें अवश्य बदल गयीं। इस प्रकार जन-नायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती अपने जीवन के अन्तिम क्षण तक वास्तविक आजादी, समाजवाद एवं किसान-मजदूर राज्य की स्थापना के लिए संघर्ष रत रहे। उनके काम और नाम किसानों में अमर हैं। स्वतन्त्रता और किसान आन्दोलनों में उनकी भूमिका भारत के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखी जायगी।

स्वामी जी जितने ही दृढ़-प्रतिज्ञ व्यक्ति थे वह उतने ही विनोदी भी थे। समय-समय पर वह अपने सहयोगियों को हँसाया भी करते थे। इस सम्बन्ध में एक उदाहरण काफी होगा। बात संभवतः सन् १९४३ की है। बिहटा का अखिल भारतीय किसान सम्मेलन समाप्त हो चुका था। उस समय के कम्युनिस्ट नेता श्री अली अशरफ को बिहार प्रान्तीय किसान सभा का संयुक्त मंत्री बनाया गया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

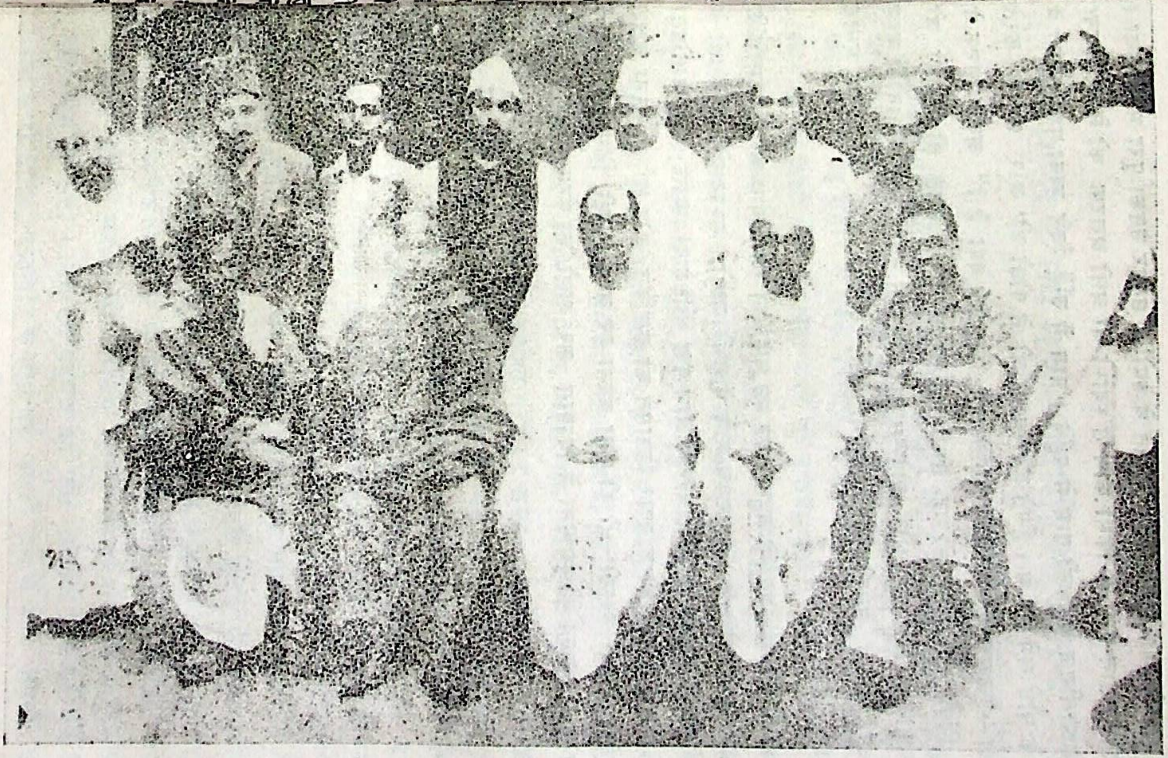

बाँयें से बैठे —श्री किशोरी प्रसन्न सिंह, जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, आचार्य एन० जी० रंगा, सोलाबाटली वाला।

बाँयें से खड़े—अशर्फुदीन अहमद चौधरी, कुसमली मियाँ अकबर शाह, सोमनाथ लाहिड़ी, रामकृष्ण खत्री, लाला शंकर लाल, अन्नपूर्णाजी, श्री शीलभद्रयाजी, पंडित पद्मकान्त मालवीय, हरिविष्णु कामथ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था। स्वामी जी उन्हें बेहद मानते थे क्योंकि उनपर उनका पूरा भरोसा था। एक दिन किसान सभा के किसी काम से स्वामी जी अली अशरफ को लेकर पटना जिले के पालीगंज के किसी ग्राम में पहुंचे। ग्राम में उन्हें पैदल जाना पड़ा। खेतों में तीसी के पौधे लगे हुए थे। हंसते हुए स्वामी जी ने पौधों की ओर इशारा करते हुए पूछा—"अशरफ क्या तुम जानते हो कि, यह क्या है?" अली अशरफ ने जवाब दिया "हाँ स्वामी जी यह तीसी का दरख्त है।" सुनते ही स्वामी जी खिलखिलाकर हँस पड़े और बोले—"सुनो किसान नेता, जब किसानों में काम करने आये हो तो उनकी फसलों को पहचानों, दरख्तों और पौधों का अन्तर जानो।"

स्वामी जी जातीयता से बहुत ऊपर उठ चुके थे। जातिवाद को वह समाज के लिए अभिशाप मानते थे। वह सच्चे माने में सभी जातों, सम्प्रदायों एवं धर्मों के किसानों के सच्चे रहनुमा थे। परन्तु आज कुछ जातिवादी व्यक्ति उन्हें जातीयता के घेरे में कैद कर उनकी शानदार विरासत को कलंकित और धूमिल करना चाहते हैं। ऐसे तत्वों से स्वामी जी की रक्षा करना हर जनतंत्र प्रेमी, किसान-प्रेमी तथा किसान-मजदूर राज्य की स्थापना में विश्वास करनेवालों का परम कर्त्तव्य है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नये भारत के नये नेता—स्वामी सहजानन्द सरस्वती

—महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

होश सँभालते ही जिसे योग, वैराग्य और वेदांत ने अपनी ओर खींचा, जिसे मायामय संसार छोड़ अद्वैत ब्रह्म में लीन होने की एक समय बड़ी साध थी, किसको पता था कि वह संसार के सबसे उपेक्षित, शिक्षा-संस्कृति में सबसे पिछड़े भारतीय किसानों को अपने पैरों पर खड़ा करने की प्रतिज्ञा लेगा। वह मेधावी बालक के तौर पर शिक्षा के जिस रास्ते पर जा रहा था, उससे वह विश्वविद्यालय का एक सम्मानित स्नातक बनता, कानून पेशा वकील, सरकारी नौकर या प्रोफेसर बनता; मगर रास्ता एका-एक मुड़ा, और वह दूसरे—भारतीय प्राचीन विद्या के—रास्ते पर चला गया। वह विद्वान संन्यासी के तौर पर अपनी प्रौढ़ प्रतिभा और व्यापक ज्ञान से एक सर्वमान्य संन्यासी सैकड़ों छात्रों और शिष्यों का गुरु होता; मगर ब्राह्मणों के मिथ्याभिमान ने व्यक्ति नहीं, एक गौरवपूर्ण जाति को अपमानित करना चाहा; और वह उसे बर्दाश्त नहीं कर सका। उसने अपने दंड को उठाया और कुछ ही सालों में भूमिहारों में वह भाव भर दिया कि ब्राह्मणों को अपनी शेखी छोड़नी पड़ी। लेकिन समय आया, जब उसकी तीक्ष्ण प्रतिभा ने बतलाया कि उसका कार्य-क्षेत्र इतना संकुचित नहीं होना चाहिए, भूमिहार या ब्राह्मणों के मानने या न मानने से देश के आत्म-सम्मान का सवाल हल नहीं हो सकता और उसने असहयोग आन्दोलन में पड़कर एक व्यापक क्षेत्र में अपनी शक्ति लगा दी। फिर एक समय आया; जब कि राजनीति के भीतर भी जात-पांत के नाम पर एक जाति ने दूसरी जाति को दबाना चाहा, उसके हृदय में भूमिहारों के लिए किए अपने काम की स्मृति से कुछ लोगों ने नाजायज फायदा उठाया, और एक बार फिर उसी संकीर्ण क्षेत्र में वह जाता दिखाई पड़ा। लेकिन, उसका हृदय पीड़ित, गरीब जनता की मार्मिक व्यथा को सबसे पहले अनुभव करता और विचलित हो जाता। उसे इस षड्यंत्र का पता लगते देर न लगी कि किस तरह सत्ताधारी धनिक, जात-पाँत के नाम पर, उसको भ्रम में डाल अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं। वह फिर विस्तृत क्षेत्र में आया, फिर जेल गया। वहां पक्के गाँधी-शिष्यों की करतूतों को देखकर उसके देह में आग लग गई।

राजनीतिक आन्दोलन में उसे कोई भी आशा नहीं रह गई। जिसने योग-साधन, पवित्र जीवन और मोक्ष-प्राप्ति के लिए दर-दर ठोकरें खाईं, वर्षों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तकलीफें सहीं, उसके मन में इस तरह का भाव आना जरूरी था। वह सब को संत के रूप में देखने की आशा तो नहीं रखता था, मगर यह आशा जरूर रखता था कि गांधी जी के विश्वसनीय भक्त कुछ ज्यादा ईमानदार होंगे। उसने अपने जानते राजनीति से सदा के लिए सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। वह नहीं जानता था कि उसके दिल में एक भारी कमजोरी है; वह गरीबों के ऊपर होते अत्याचार को सहन करने की शक्ति नहीं रखता। हुआ वही, और तब वह नाव को डुबोकर पहले पार उतर गया। भारत के किसान-आंदोलन को उठाने और आगे बढ़ाने में जो काम उसने किया है, वह सदा स्मरणीय रहेगा। वह व्यक्ति है—स्वामी सहजानन्द।

('नये भारत के नये नेता' से साभार)

एकाएक यह खबर पाकर मैं सन्न रह गया कि २६ जून को स्वामी सहजानन्द का देहान्त हो गया। उनके शरीर और रोम-रोम की कर्मठता देखकर मुझे कभी ख्याल भी नहीं हो सकता था कि वह इतना जल्दी जवाब दे देंगे। पता लगा, उनको रक्तदाब की बीमारी थी। मुजफ्फरपुर जिले में मोटर से कहीं जा रहे थे। रास्ते में दाब हद से अधिक बढ़ा और उनको लकवा मार गया। अस्पताल पहुँचाना बेकार हुआ। मजदूर-किसान राज्य की स्थापना का निर्भय-स्वप्न-द्रष्टा, शोषितों-पीड़ितों का अदम्य नेता चल बसा। अभी इसी मार्च को तो वह प्रयाग में मिले थे, और आगे की कितनी ही योजनाएँ बना रहे थे। अपने स्नेह के कारण ही तो उस दिन प्रयाग में कितनी जगहों पर ढूँढते-ढूँढते आखिर उन्होंने मुझे पकड़ निकाला था। कम्युनिस्ट पार्टी की वर्त्तमान नीति से उनको मतभेद था। लेकिन पार्टी के वह अनन्य हितचिन्तक ही नहीं बल्कि भक्त थे। कहते थे; तपे हुए ईमानदार कार्यकर्त्ता यहीं हैं। यहीं वह तरुण और प्रौढ़ हैं, जो अपने काम को सीखने के लिए पूरी मेहनत करते, खूब पढ़ते, खूब सोचते हैं। ये भ्रष्टाचार में नहीं पड़ सकते। पार्टी ही हमारे देश के भविष्य की एक मात्र आशा है। उस समय पार्टी के कुछ नेता तुरन्त क्रान्ति के लिए काम करना चाहते थे। स्वामी जी उस समय को अनुकूल नहीं मानते थे। कहते थे—हमें भी समझाएँ, छलांग मारने से हम भी बाज नहीं आएँगे। पर ऐसा तो तभी होना चाहिए, जब देश की प्रबुद्ध तरुण-मानवता का बहुत बड़ा भाग इस छलांग में साथ देने के लिए तैयार हों, तभी कुछ बन सकता है।

स्वामी जी मेरे जिले (आजमगढ़) के पड़ोसी गाजीपुर जिले में पैदा हुए थे; यह कहना पर्याप्त नहीं है, मेरे पितृग्राम से उनका जन्म ग्राम कुछ ही कोसों पर था। सबसे पहले उनका नाम असहयोग के दिनों में सुना था, लेकिन उस समय मैं बिहार में काम करता था; और वह युक्त-प्रान्त में। पहली

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुलाकात १९२५ ई० में छपरा में हुई थी। वहाँ भूमिहार ब्राह्मण सम्मेलन हो रहा था। आरम्भिक सार्वजनिक जीवन में स्वामी जी ने भूमिहारों के उत्थान का बीड़ा उठाया था। यह जाति गिरी हुई नहीं थी। पूर्वी युक्त प्रान्त और विहार में ही भूमिहार रहते हैं। वहाँ के वड़े-वड़े जमींदारों की अधिक संख्या भूमिहार थी। किसान होने पर भी वह अच्छी हालत में थे, जिसका अर्थ यह नहीं कि भूमिहारों की अधिक संख्या भूख-प्यास की पहुँच से बाहर है। यह बात कुछ समय बाद स्वामी जी समझ पाए। उस समय स्वामी जी के चरण धोने के लिए सचमुच ही वड़े-वड़े भूमिहार महाराजा और महाराजा वहादुर तैयार थे। सम्मान की सुवर्ण जंजीर से वाहर निकलना आदमी के लिए बहुत मुश्किल होता है। लेकिन, उस सच्चे और निर्भीक-हृदय पुरुष को अपने ध्येय से कोई शक्ति नहीं रोक सकती थी। भूमिहार सम्मेलन में छपरा में उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। किन्तु यह देखकर दुःख भी हुआ कि वह जात-पाँत के हितों के समर्थक हो रहे हैं। १९२६ में काँग्रेस ने कौंसिलों के चुनाव में सीधे भाग लेने का निश्चय किया। वाबू जलेश्वर प्रसाद काँग्रेस की तरफ से उम्मीदवार खड़े हुए थे, और उनके प्रतिद्वन्दी काँग्रेस के ही दूसरे कार्यकर्त्ता वाबू श्री नन्दन प्रसाद नारायण सिंह थे। श्री नन्दन वाबू को काँग्रेस कर्मियों का वहुत अधिक सहयोग मिला था, जिले के काँग्रेस कर्मी उन्हीं को खड़ा करना चाहते थे। पर जब जलेश्वर बाबू को काँग्रेस ने खड़ा कर दिया, तो मेरे लिए उनका समर्थन करने के सिवा कोई रास्ता नहीं था। जलेश्वर बाबू मेरे घनिष्ठ मित्र थे, यह कारण नहीं था, बल्कि श्रीनन्दन बावू का स्नेह और सम्मान भी मेरे प्रति कम नहीं था। इस समय चुनाव क्षेत्र में स्वामी जी और मैं आमने-सामने थे। जलेश्वर वाबू का सारथी मैं था, और श्री नन्दन बाबू के स्वामी जी। मैं सिर्फ छपरा जिले में ही सबसे अधिक चुनाव-प्रचार का काम करता था, और स्वामी जी कई जिलों में घूम रहे थे। हाँ, चुनाव के दिन जरूर हम दोनों उन स्थानों में डटे हुए थे, जहाँ के वोट निर्णायक थे। दो दलों के अगुवा होकर वैयक्तिक स्नेह और सम्मान कैसे अटूट रह सकता है, इसका पता मुझे यहीं लगा।

स्वामी जी के ऊपर व्यक्तिगत आक्षेप सुनने के लिए मैं तैयार नहीं था, और वही बात उनके मन में भी थी। १९३१ में हम अपने उद्देश्यों में एक हो गए, और तब से १९ वर्ष बीत गए, हम एक दूसरे से अत्यन्त समीप रहे—आध्यात्मिक शरीर में हम अभिन्न हो गए। उनसे कितनी आशाएँ बँधी हुई थी, उनके शरीर को तीन ही महीने पहले कार्यक्षम देख चुका था। ऐसे पुरुष का एकाएक हमेशा के लिए विछोह क्यों न असह्य होता।

("मेरी जीवन यात्रा" से साभार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द सरस्वतीः एक संस्मरण

—सी० राजेश्वर राव

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का संस्मरण लिखते हुए मैं अपने को गौरवान्वित अनुभव करता हूं। स्वामीजी केवल एक उदीप्त स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं थे, बल्कि वे लाखों दलित किसान-जनमानस के नेता भी थे।

उन्होंने जमीन्दारों के जुल्म के खिलाफ जुझारू संघर्ष करते हुए बिहार में किसानों का नेतृत्व किया। बाद में उन्होंने इण्डियन नेशनल कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन के समय ही १९३६ में बंकिम मुखर्जी, इन्दूलाल यगनिक, मुजफ्फर अहमद, बाबा सोहन सिंह भखना, राहुल सांकृत्यायन, आचार्य नरेन्द्र देव और प्रो० एन० जी० रंगा जैसे अपने उत्साही साथियों के साथ अखिल भारतीय किसान सभा की स्थापना की। इस तरह किसानों को उनके अपने जनसंगठन के अन्दर ही संगठित करने के भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के प्रयास बहुत लाभकारी सिद्ध हुए इसके लिये स्वामीजी और अखिल भारतीय किसान सभा के अन्य संस्थापक सदस्यों को उस राष्ट्रीय कांग्रेस के नेतृत्व के खिलाफ तगड़ी लड़ाई लड़नी पड़ी, जो यह कहा करता था कि अलग किसान सभा की स्थापना से स्वतंत्रता आन्दोलन में फूट पैदा हो जायेगी, और इसलिये स्वतंत्रता की प्राप्ति के बाद किसानों की सारी समस्याओं को हल कर लिया जायेगा। इस तरह स्वामीजी सामंतों के शोषण की समाप्ति और राष्ट्रीय स्वतंत्रता आन्दोलन दोनों को एक साथ संगठित कर पाये और उन्होंने इन आन्दोलनों को शक्ति प्रदान की।

सर्वप्रथम स्वामीजी से मेरी भेंट १९४४ में विजयवाड़ा में हुई, जहाँ वे अखिल भारतीय किसान सभा के ऐतिहासिक आठवें सम्मेलन जिसमें २५,००० महिलाओं सहित एक लाख किसानों ने भाग लिया था, की अध्यक्षता करने आये थे। दृढ़ता और सच्चाई प्रवाहित उनके चिकुड़न भरे तथा गेरुआ वस्त्र आच्छादित चेहरे ने मेरे युवा-हृदय को अपनी ओर आकर्षित कर लिया। उस समय मैं किसान-सभा अधिवशन के जनसेवादल का कप्तान था।

मुझे वह घटना अच्छी तरह याद है, जो उस समय घटी। एक धनी हमदर्द द्वारा प्रदत्त अच्छे मकान में मैंने बड़े किसान-नेताओं के ठहरने का प्रबन्ध किया। अकेले उन्होंने ही वहाँ ठहरने से इन्कार कर दिया जबकि अन्य नेतागण वहाँ ठहरने में राजी हो गये। उन्होंने कहा," किसान गरीब हैं, और किसानों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

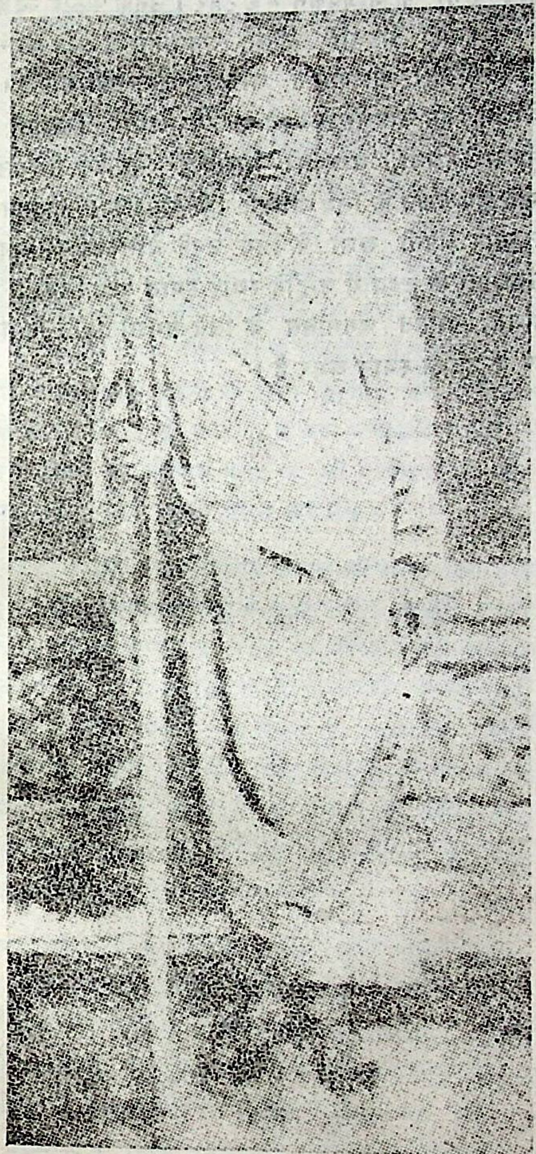

किसानों के प्राण— जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती, १९३८ ई०

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के नेता होने के नाते मैं ऐसे भव्य भवन में ठहरना पसन्द नहीं करूँगा।" इसलिये हमलोगों को उनके लिये बगीचे में एक कुटिया बनानी पड़ी थी, जहाँ वे किसान सभा के अधिवेशन भर ठहरे। उनके कठोर व्यवहार और तीखी वाणी के बावजूद, इनकी सच्चाई, दलित जनमानस के प्रति लगन और दुश्मनों के समक्ष उनकी निर्भीकता के कारण लोग इसे बुरा नहीं मानते। स्वामी जी हमें छोड़ चुके हैं, लेकिन जिन कारणों के लिये वे लड़े अर्थात् किसानों को उत्पीड़ित करनेवाली जमीन्दारी प्रथा, आज भी मौजूद हैं और देश ने स्वतंत्रता प्राप्त कर लीं है। लेकिन वे इसे देखने के लिये जीवित नहीं रह सके। किसान समुदाय कभी भी उनकी सेवा और अपनी खुशी के लिये उनके बलिदान को भुला नहीं सकता। हमारे देश के किसानों के हृदय में उन्होंने स्थाई स्थान बना लिया है। और हमारे हृदय में भी दलित, पीड़ित जनमानस के लिये समझौताहीन सिपाही और लड़ाकू देश-भक्त के रूप में उनका स्थान अमर है।

☆

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द—एक क्रांतिकारी संदेशवाहक

—जगन्नाथ सरकार

स्वामी सहजानन्दजी एक अद्भुत् व्यक्तित्व थे। ये एक उत्साही देशभक्त, निर्भीक क्रांतिकारी, शक्ति, दृढ़निश्चय एवं साहसवाले नेता और भारतीय राजनीति में एक क्रांतिकारी संदेशवाहक थे। जब कभी भी उनके मार्ग में कोई बाधा या विरोध आया तो उसने इनको सिर्फ उत्साहपूर्वक लड़ने के लिए तैयार किया। एक दृढ़ निश्चय वाले व्यक्ति होने के नाते वे हमेशा इस बात के लिए तैयार रहते थे। जो उनके हृदय में निहित था। फिर भी वे रुढ़िवाद से पूर्णतः मुक्त थे। जब कभी अनुभव और बुद्धि ने आवश्यक समझा ये पुराने विश्वास को त्यागकर नये विचार स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाते। वे एक परिश्रमी आत्मा थे, जो सदा एक ऐसे कारगर रास्ते खोजने की कोशिश करते थे जो मानव जाति को नीचता और अप्रतिष्ठा से ऊपर उठा सुन्दर उद्देश्य प्राप्त कर सके।

बाल्यकाल से ही इन्होंने एक संघर्षमय जीवन को पसन्द किया। सत्य की खोज में संघर्ष के दौरान इनकी विचारधारायें बदलती रहीं। इन्होंने अपनी किशोरावस्था में संन्यासी बनने के उद्देश्य से घर का त्याग कर दिया। यही मानव-मुक्ति का एक-मात्र मार्ग उन्होंने अनुभव किया। फिर भी इससे इनको संतोष नहीं हुआ। इनकी निरन्तर खोज ने इनको राष्ट्रीय आन्दोलन के भंवर तक पहुँचा दिया। अब वे उत्पीड़ित जनमानस के उदीप्त चैम्पियन और किसानों के एक पराक्रमी संगठनकर्त्ता बन गये। इतना ही नहीं, अन्त में वे मार्क्स और लेनिन के प्रशंसक भी बन गये। सचमुच, इनका सम्पूर्ण जीवन मानवता के उत्थान के लिये अदम्य संघर्ष करनेवाले व्यक्ति के लिए एक उत्तेजक कहानी है।

प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञ, निहित स्वार्थी लोग और संकीर्ण मस्तिष्कवाले जातिवादियों ने अपने निकृष्ट उद्देश्य के लिये इनका उपयोग करने की चेष्टा की। उनके स्वार्थों के आगे जब कभी ये समर्पित नहीं हो सके तो इनलोगों ने काफी बाधाएँ पहुँचाईं। अपने सम्पूर्ण जीवन में ये इनलोगों से लड़ते रहे। इनकी मृत्यु के बाद, उनलोगों में से कुछ इनकी क्रांतिकारी भूमिका को मिश कर इन्हें देवत्व प्रदान करने में व्यस्त हैं। उनके जीवन की क्रांतिकारी भावनाओं को बर्बाद करके स्वामीजी के चरित्र को प्रतिक्रियावाद की सेवा में तोड़-मरोड कर ये लोग पेश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करना चाहते हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि स्वामीजी के यथार्थ जीवन को इत्पीड़ित जनमानस के समक्ष उसी रूप में प्रस्तुत किया जाय ताकि उनके भावी संघर्ष के लिये उन्हें प्रेरणा मिल सके।

स्वामी जी का जन्म गाजीपुर जिले के एक छोटे-से गांव के मध्यम कृषक परिवार में हुआ था। एक बच्चे के रूप में ये असाधारण प्रतिभाशाली थे। इनके परिवार ने, जिसमें कोई भी सदस्य शिक्षित नहीं था, इनकी प्रतिभा को देखकर इन्हें स्कूल भेजने का निर्णय किया। उनकी असाधारण योग्यता इस तथ्य से प्रमाणित हो गई कि उच्च प्राथमिक विद्यालय में उन्होंने तीन ही वर्ष में छः वर्ष की पढ़ाई पूरी कर ली। अर्थात् प्रतिवर्ष दो-दो वर्ग इन्होंने पास किया। अन्तिम परीक्षा में इन्होंने कुल 20 अंक में 13 अंक प्राप्त किये। 1904 में इन्होंने हिन्दी माध्यमिक परीक्षा पास की तथा सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश के छात्रों में इनका सातवाँ स्थान रहा। जब ये अँगरेजी शिक्षा के लिए जर्मन मिशन स्कूल में प्रविष्ट हुए तो दो वर्गों की पढ़ाई एक ही वर्ष में इन्होंने पूरी कर ली। ताकि विश्वविद्यालय की छात्रवृत्ति परीक्षा में इनकी अधिक उम्र के कारण, बैठने से वंचित नहीं किया जा सके और इन्होंने विश्वविद्यालय की छात्रवृत्ति परीक्षा में पाँचवाँ स्थान प्राप्त किया। अपने बाल्य काल से ही इन्होंने अपनी विद्रोही भावनाओं का प्रदर्शन किया। एक जर्मन शिक्षक ने बाइबिल पढ़ाते समय हिन्दूवाद की आलोचना कर दी। सभी छात्रों ने तो इस अपमान का सहन कर लिया, किन्तु स्वामी जी खड़े हो गये और विरोध किया कि विद्यालय धर्म की आलोचना करने का स्थान नहीं है। जर्मन शिक्षक हक्का-बक्का हो गया। इनके शिक्षकों को यह विश्वास था कि यह प्रतिभाशाली छात्र माध्यमिक परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर लेगा। इन्हें 1907 में परीक्षा में सम्मिलित होना था। लेकिन ऐसा नहीं हो सका। माध्यमिक परीक्षा के कुछ महीने पूर्व ही ये घर छोड़कर संन्यासी बन गये। यह आसानी से समझा जा सकता है कि इस घटना से इनके परिवार को कितना बड़ा सदमा पहुँचा होगा। अपने उदीयमान बेटे के समृद्ध जीवन की इनकी ऊँची-ऊँची अभिलाषाएँ चूर-चूर हो गईं। धर्म की ओर इस बालक का झुकाव देखकर इनके माता-पिता ने इनकी शादी कर देना चाहा ताकि ये परिवार के एक सदस्य के रूप में एक सुखी जीवन बिता सकें। लेकिन ये दूसरे आदर्श की ओर खिंचे जा रहे थे। ये जानते थे कि अगर उनका विवाह हो गया तो ये अपने लक्षित मार्ग की ओर चल नहीं सकते। इसलिए, इन्होंने अपने परिवार के विरुद्ध बगावत कर दी और संन्यासी होने के लिए बनारस की ओर चल पड़े। बचपन मे भी स्वामी जी का ऐसा ही विद्रोह था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकिन वह एक साधारण संन्यासी नहीं थे। वह किसी भी गलत, झूठी या पाखंड चीज को बर्दाश्त नहीं कर सकते थे, भले ही वह धर्म के नाम पर ही क्यों न हो। वह किसी भी ऐसी चीज को स्वीकार नहीं करते जो तर्कसंगत नहीं हों। वह सभी प्रकार के अंधविश्वास और रूढ़िवाद के कट्टर दुश्मन थे, भले ही इनको बड़े विख्यात साधुओं, संन्यासियों और गुरुओं का समर्थन क्यों न प्राप्त हो। गुरुमुख की खिल्ली उड़ाने की उनकी स्पष्टवादिता, धार्मिक लोगों के द्वारा कट्टर समर्थन के बावजूद अंधविश्वास के प्रति उनके तिरस्कार को परिलक्षित करती है। उन्हीं के शब्दों को पढ़ना अत्यन्त रोचक होगा, जिसमें उन्होंने कहा है :—

"देहातों में, और शहरों में भी, यह परिपाटी है कि सभी स्त्री-पुरुष गुरुमुख होना जरूरी समझते हैं। गुरुमुख का अर्थ है कि कुछ साधारण विधि व्यवहार के बाद एकान्त में भावी गुरुजी का अपने तथा भावी शिष्य के सिर पर एक ही कपड़ा डालकर उसी की ओट में कान में मंत्र के नाम से कोई वाक्य कह देना। इसे ही कान फुंकवाना, कनफुकिया या मंत्र लेना, भी कहते हैं। प्रायः उपनयन या विवाह के समय ही यह बात की जाती है। नहीं तो तीर्थ-यात्रा के समय तो अवश्य ही। लोगों का ख्याल है कि बिना इसके धर्म का काम सफल नहीं होता, व्यर्थ जाता है। इसीलिए कहा करते हैं कि निगुरा (जो गुरुमुख न हो) का छुआ पानी नहीं पीना चाहिए। बिना गुरुमुख हुए कोई भवसागर से पार होई नहीं सकता, यह जबर्दस्त धारणा है और 'बिनु गुरु भवनिधि तरै न कोई, जो विरंचि शंकुर सम होई' जैसा महाप्रमाण इसमें पेश किया जाता है। यह भी कहते हैं कि निगुरा जिस भूमि पर बैठे, वह नापाक हो जाती है। इसीलिए अन्ततोगत्वा मरने के पहले गुरुमुख हो जाना अनिवार्य है। गुरुलोगों की दशा यह है कि संस्कृत के सही या गलत श्लोक, वाक्य या पद-समूह से लेकर हिन्दी, कैथी, गुरुमुखी या रद्दी-से-रद्दी और निरर्थक शब्दावली तक गुरुमंत्र के नाम पर चेले के कान में कह देते हैं। और उसे वह वेदवाक्य से बड़ा मानता है। रीति यह है कि वह गुरुमंत्र किसी को बताया नहीं जाता। इसकी सख्त मनाही है। शायद भण्डाफोर हो जाने के डर से ही यह बन्दिश की गई है। चेलों का धर्म होता है कि उस गुरुमंत्र को रोज जपे, हालाँकि विरले ही ऐसा करते हैं।"

"यह गुरुमुख होने की प्रथा कुछ ऐसी रूढ है कि इसे छोड़ने की हिम्मत लोगों को नहीं होती। ये गुरु लोग खानदानी होते हैं। बाप के मरने पर उसका उत्तराधिकारी पुत्र और साधु के मरने से उनका चेला या उत्तराधिकारी हो गुरु हो सकता है और उसी से (मंत्र) होना जरूरी माना जाता है। एक ग्रेजुएट ब्राह्मण ने, जो पीछे डिप्टी मजिस्ट्रेट हो गये, मुझे लिखा कि क्या गुरुमुख होना जरूरी है; सो भी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खानदानी गुरु से ही ? मैंने उत्तर दिया कि यूनिवर्सिटी का डिप्लोमा पढ़कर लिया था या चोरी से ? पढ़ने से तो अक्ल होती है और नादानी की ये बातें छूट जातीं। मेरा यह मतलब हैं कि रूढ़ि इतनी प्रबल है कि तीक्ष्ण बुद्धि अँगरेजी पढ़े-लिखे लोग भी इससे बाहर जाने की हिम्मत नहीं करते और इस बेवकूफी के शिकार बन जाते हैं। इस वंश-परम्परागत गुरुवाई ने इन गुरुओं को निरक्षर और दुराचारी बना डाला है। क्योंकि उनकी पूजा, प्रतिष्ठा और आमदनी तो रुकनेवाला नहीं, फिर वे पढ़ने या सच्चरित्रता की परवा क्यों करने लगे ? नादान चेलों को उतनी भी सूझ नहीं कि जो गुरुनामधारी स्वयं निरक्षर और पापी हैं, फलतः नरक जाने से बच नहीं सकता, जो भवसागर में डूबेगा ही वही उन्हें क्यों कर नरक से बचा सकता या भवसागर में तार सकता है।

मैंने यह देखा है कि मर्द तो मर्द, औरतें भी इन्हीं गुरुओं से मंतर लेती हैं। मर्द शायद चूक भी जायँ, मगर ये नहीं चूकती हैं। कितना पतन है। हिन्दुओं के पोथी-पुराण में तो स्त्री के लिए पति ही गुरु हैं और वही तुलसीदास कहते हैं कि 'सपनेहु आनपुरुष जग नाहीं'। लेकिन कौन मानता है ? असल में स्त्रियाँ खूब कपड़ा-लत्ता, गुरुवानी के लिए साड़ी वगैरह तथा (पूजा) रुपया देती है। इसीलिए उन्हें जानबूझ कर फँसाया गया है। मैंने बचपन में आँखों देखा कि जब गुरुजी या उनके पुत्र आते थे तो उन्हें खाट पर बैठाकर गांव-घर की बड़ी बूढ़ी औरतें एक थाल में जल लाती थीं। उसी जल से गुरु महाराज के दोनों पाँव पखारे जाते थे। उसी थाल में ही और वह घर, आँगन में चारों ओर छिड़का जाता था सभी चीजों को पवित्र करने के लिए। गुरुजी चाहे जूते पहन कर आयें या नंगे पाँव गदी चीजें तलवे में लगाये हुए; मगर यह विधान हर हालत में जरूरी था। उसके बाद फिर दूसरा पानी उसी थाल में लाया जाकर पुनरपि वह चरण उसमें धुलता था और वह जल सभी स्त्री, पुरुष, चेले, चेलियाँ, चिल्लू में लेकर पान कर जातीं और सिर पर छिड़क लेतीं थीं। कितनी गन्दी और नादानी की बात है। उसके बाद गुरुजी के भोजन के अनन्तर उनके जूठन की लूट होती थी। उसे प्रसाद कहते थे और अब भी कहते हैं। गुरुजी की और सेवाएँ तो मामूली बात हैं। जब वे लोग चलने लगते तो सभी लोग (हर व्यक्ति) कुछ न कुछ द्रव्य उनके चरण पर रखते थे, जिसे पहले भी और आज भी (पूजा) कहते हैं। यह अजीब बात है कि रुपये-पैसे को (पूजा) नाम दे डाला। गुरुजी प्रायः हर साल चक्कर लगाया करते हैं जिसे रामत भी कहा जाता है। हाँ, जब चेलों की संख्या बहुत हो जाती है तो सालाना (रामत) नहीं हो सकती। हर रामत में चेलों का धर्म है पूजा चढ़ाना और कपड़ा-लत्ता देना। यदि बीच में विवाह हुआ तब तो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और भी ज्यादा पूजा के हकदार गुरुजी हो जाते हैं। इस प्रकार उन्हें अपार आमदनी होती है। यह सबसे आसान और साथ ही सबसे ज्यादा आमदनी का जरिया है। पूजा-सत्कार भी खूब ही होता है। इसलिए दुनिया में यह गुरुवाई ही सबसे अच्छा पेशा है। यही कारण है कि बड़े-बड़े विवेकी और पंडित भी, जो विचार-दृष्टि से इसका समर्थन कभी नहीं कर सकते, इसमें लोभवश फँस जाते और हजारों चेले बना छोड़ते हैं।

"मेरे ये विचार तो बेहद पीछे हुए, बहुत पीछे, सभी बातों का अनुभव होने पर, जबकि मैं इस 'गुरुडम' के नग्नरूप को देख सका हूँ। लेकिन न जाने, क्यों अत्यन्त अल्पावस्था से ही या यों कहिये कि शुरू से ही मेरी अनास्था और अप्रवृत्ति इस ओर स्वभावतः रही है।"

संन्यासी होने के बाद वह पहाड़ियों और जंगलों में एक स्थान से दूसरे स्थान तक एक ऐसे सच्चे योगी की खोज में भटकते रहे जो उन्हें आध्यात्मिक मोक्ष का मार्ग दिखला सके। वह कहते हैं—"एक वर्ष के भीतर ही हमने पैदल ही न जाने कितना फासला तय कर लिया और कितना अमूल्य अनुभव प्राप्त कर लिया। इतना ही नहीं, योगी के मिलने और योगाभ्यास करने की हमारी आशा पर पानी भी फिर गया। हम उससे एक प्रकार से निराश हो गये।"

वह ऐसे निष्कर्ष पर कैसे पहुँचे, वह उनकी लम्बी यात्रा के दौरान मिले साधुओं और संन्यासियों के अनुभव से स्पष्ट हो जाता है। उन्होंने पाया कि वे सिर्फ अज्ञान, खोखला और अन्धविश्वासी ही नहीं हैं, बल्कि पाप और व्यभिचार के सभी तरीकों में वेतुके हैं। साधुओं और संन्यासियों के प्रति उनके विराग उनके अनुभव से ही स्पष्ट हो जाते हैं, जिनकी व्याख्या उन्होंने निम्नलिखित रूप में की है—

"वर्षा का समय और रात में बाहर टिकना। यह ठीक न समझ हमने कामद गिरि की परिक्रमा में उसकी चारों ओर बने वैष्णव साधु नामधारियों के मंदिरों और मठों के द्वार खटखटाते कि वे रात में ठहरने दें। मगर एक स्वर से सभी ने नाहीं की। हालाँकि, यह जानकर हमारे क्रोध और घृणा की सीमा न रही कि सभी मठों में न जाने कितनी ही माई-दाइयाँ रहा करती हैं। फिर तो बाबा लोगों के चरित्र का खुदा ही हाफिज। हार कर किसी टूटे-फूटे लावारिस स्थान में जैसे-तैसे रात गुजारी।

"जब हम अनुसूया गये तो हमें पता लगा कि वहाँ जो एक पुराना वैष्णव साधु रहता था, उसके पास सोलह या बीस हजार रुपये जमा थे। वह अकेला ही था। लोभ के मारे किसी को पास न रखता था कि खर्च होगा। लोगों को बताता भी न था कि पैसे पास में हैं। उस समय वह मर चुका था। चोरों को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसी प्रकार पता चल गया कि उसके पास पैसे हैं। असल में, उनलोगों को रुपये की महक मिलती है। फिर क्या था, एक रात को धीरे से दो-चार चोर वहाँ पहुँचे और कुटिया की छत पर, जहाँ वैरागी बाबा रहते थे, चढ़ गये। बाबा को जगाकर खजाने का पता पूछा और लेकर चल देना चाहा। मगर वह तो नाहीनुकुर करते ही रहे कि वच्चा साधुओं के पास पैसे कहाँ ? फिर भी, इन जैसे साधुओं को तो वे लोग खूब पहचानते हैं। फलतः आखिरकार उन्हें मारकर छत से नीचे गिरा दिया और सभी रुपये लेकर चलते बने। उन्होंने शायद सोचा कि जिन्दा रहने पर चिल्लायेगा और पीछे पुलिस को खवर देगा। इसलिए—रहे न वांस न बाजे वांसुरी। ऐसे रुपयों का तो कुछ ऐसा ही अन्त होना चाहिए। साधु लोग भी इस प्रकार पैसे रखते हैं और इस प्रकार भ्रष्ट होते हैं, यह बात अनुसूया और कामदगिरि के मठों की बातें जानकर मुझे पहले-पहल ज्ञात हुई।

ओंकारेश्वर जी के दर्शन के वाद हमें वाबा कमल भारती जी के दर्शन की चिन्ता हुई। वह वहीं पर नर्मदा के उत्तर तट पर जंगलों में कुटी वनाकर रहते और योगाभ्यास करते थे। ऐसा हमें वताया गया था। परन्तु वहाँ पूछने से पता चला कि वे योगी योगी न थे। उन्होंने तो केवल औषधियों और संयम के वल से कायाकल्प मात्र किया था। इससे तगड़े एवं हृष्ट-पुष्ट हो गये। इसीसे उनके भक्तों ने उनके योगी होने की घोषणा कर डाली थी। लेकिन गांव पर और पास-पड़ोस के लोग तो आदमियों या वस्तुओं का पूरा आदर नहीं करते हैं यह समझ हमने पूछा कि उनके शिष्य कोई हैं या नहीं। वताया गया कि एक नागा नौजवान खूब खाक रमानेवाले उनके उत्तराधिकारी हैं। बस, हमारे लिए यह काफी था और हम उस कुटिया पर गये। पता लगा कि नागा महाराज गुफा में बन्द हैं, पीछे निकलेंगे, शाम को या रात में। हमने समझा कि योगाभ्यास करने गये होंगे। अतः रात में वहीं ठहरना पड़ा। जब निकले तो उनसे बातें होने पर वे कोरे साबित हुए। हमें पता लगा कि कमल भारती वाली गुफा में घुसकर वे खूब सोते और आराम करते हैं। इसे ही सीधे-सादे भक्तजन मानते हैं कि योगाभ्यास करते हैं। वस, इतने से उनकी पूजा-प्रतिष्ठा होती रहती है।

"वहाँ हमें जो निराशा हुई वह वर्णनातीत है। जिस बात के लिए इतनी खा छानी और अपार कष्ट झेले वह बेवुनियाद सिद्ध हुई। लेकिन बस था ही क्या हमने देखा है कि यों ही योगी और सिद्ध महात्मा होने की प्रसिद्धि कराके धार्मि और अंधविश्वासी आसानी से संसार में ठगा जाता है। फिर भी इस पहले ध से हमारा विश्वास सच्चे योगियों के अस्तित्व से न डिगा और हमने आगे ब की ठानी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"लेकिन ऋषिकेश में जो संसार हमने देखा और साधुओं की जो बदनामी सुनी, उससे उब गये। पंजाब से और दूसरे प्रांतों से श्रीमान् स्त्री-पुरुष वहाँ झुंड-के-झुंड आते और धर्म के नाम पर साधुओं को खूब हलवा, पूड़ी, मेवे चभाते थे, वहीं सत्संग भी होता। मगर आखिर इन सबका नतीजा क्या दूसरा होता था? यह भी पता लगा कि खान-पान का खूब आराम और सब तरह का मजा देखकर बहुत-से लोग खेती-गृहस्थी मे फुर्सत पाते ही गर्मियों में गेरुआ वस्त्र धारण कर साधु वेष में उस झाड़ी को हर साल आबाद करते, वर्षा आने के पहले ही खा-पी के तगड़े हो जाते और कुछ पैसे भी भक्तों और भक्तिनों से पा जाते थे। फिर घर चले जाते। पता नहीं अब क्या हालत है।

"हम झाड़ी से दूर तक जंगल में लक्ष्मण झूले के ऊपर तक योगियों और साधुओं की तलाश में चले जाते और लौट आते थे। जंगली जड़ी-बूटियाँ ज्ञात हो जायं तो खाने-पीने की रोज की फिक्र से बचें यह भी ख्याल था। मगर न तो ऐसी बूटियाँ ही मिलीं और न योगी ही। हमने सोचा कि अच्छा तो बदरी-नाथ बाबा का दर्शन ही कर आयें और शायद कहीं उधर ही योगी मिलें।"

"महन्त श्री शिवप्रसादगिरि के एक चेले थे जो काशी से वेदान्त पढ़ आये थे। सयाने थे। उनका एक चेला था श्री रामचन्द्र गिरि। वह लड़का ही था। थोड़ा-बहुत पढ़ता था। महन्तजी काफी धनवाले थे। वे बार-बार कहते थे कि मैंने लोगों को बहुत ही ऋण दिया है और छत्तीस हजार रुपये केवल सूद के नाम पर वसूल किये हैं। गांव के सभी गृहस्थ उनके शिष्य (चेले) थे और कर्जदार भी थे। सभी के खेत उनके पास रेहन थे। मगर जोतते वही लोग थे। महन्तजी रुपयों के ब्याज लेते थे। इतने रुपये ऋण पर दिए। मगर वसूल तहसील की कोई चुस्त व्यवस्था न थी कि ताकीद की जाय। फलतः गृहस्थ लोग लापरवाही से उनके रुपये शीघ्र चुका न सकते और सूद दरसूद में बचे-खुचे खेतों को धीरे-धीरे उनके हवाले करते जाते। महन्तजी फायदे में थे। गृहस्थ लोग पामाल थे। मुझे देखकर बड़ा क्षोभ हुआ। खाता-पीता था तो मैं मठ में ही। फिर भी मौका पाकर गृहस्थों को चेतावनी देता था कि संभल जायें और उनसे संसर्ग छोड़ें या कम करें, नहीं तो नमक के बर्तन की तरह गल जायेंगे। मेरी पक्की धारणा थी कि संन्यासी का बाना धारण कर धन जमा करना पाप है और वह पाप का धन जहाँ जायगा उसे गला देगा। इसीलिए उन्हें समझाता था। चेला बनने से भी रोकता था। मगर सुनता कौन?

"मगर वर्षा बीतने के बाद मेरे विचार बदले और आगे जाने के बजाय काशी जाकर दर्शन, व्याकरण, वेदादि के अध्ययन की धारणा हो आई। सोचा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि जंगल, पहाड़ों की खाक खूब ही छानी। योगी तपस्वी का भी पता लगाया। भटके भी काफी, मगर हाथ कुछ न आया। भगवान तो अभी दूर के दूर ही रहे। इसलिए चलो शास्त्रों का मंथन करें और देखें उनमें क्या है। ऋषिकेश (कैलाश) वाले वृद्ध महात्मा की बात भी याद हो आई।

"वहाँ दंडी संन्यासियों का एक अच्छा मठ है। वहाँ गये तो बाहरी ढोंग बहुत देखा। मगर प्रायः सबके सब 'लिख लोढ़ा पढ़ पत्थर' थे। आदर सत्कार होता है और अच्छा खाना-कपड़ा मिलता ही है। फिर पढ़े-लिखें कौन बेवकूफ ? विपरीत इसके दूसरे साधु और गुरुवाधारी पढ़े-लिखे के अच्छे-अच्छे पंडित होते हैं। कारण, बिना पढ़े उन्हें पूछे कौन ? जहाँ पहले समय में श्री मधुसूदन सरस्वती आदि जैसे अकाट्य विद्वान होते थे जिनने वेदान्त आदि के सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थों को तैयार किया, तहाँ आज दंडियों में प्रायः मूर्खों की ही मंडली है। उनका काम मैंने जगह-जगह यही पाया कि मठ में जमा होने पर किस क्षेत्र में क्या भोजन आज मिला, किसका कौन गोत्र है आदि व्यर्थ बातों में ही समय गुजारते हैं। एक मठ के अध्यक्ष दंडी ने काशी में मुझसे कहा कि एक बार एक दंडी ने उनसे शिकायत की कि अमुक स्वामी तो नाक टेढ़ी करके हमें चिढ़ाते हैं। इस पर मैंने कहा कि तुम हाथ-चमकाकर उन्हें चिढ़ा दो। यह तो हालत है। मठ बने हैं। खाने के लिए क्षेत्र भी पहले से ही है। इसलिए घर में काम-काज के योग्य न रह जाने पर जाकर दंडी बाबा बन जाते हैं। सिद्धपुर में भी यही पाया। मेरे दंड से एक दंडी जी का खूंटी पर टंगा वस्त्र (सोला) अचानक छू गया तो बिगड़ उठे। मैंने उत्तर दिया कि बिगड़ना तो मुझे चाहिए कि दंड जिसे विष्णु मानते हैं, आपकी नापाक धोती से छू गया। उल्टे आप ही जामे से बाहर हो गये ? यही तो उनका धरम-करम रह गया है।

जो दाढ़ीवाले ब्रह्मचारी बाबा मुझे सिद्धपुर में मिले उस तरह के ब्रह्मचारी प्रदेश में बहुत रहते हैं। यह एक पंथ जैसा हो गया है। एक खासा दल उनका पाया जाता है। कुछ तो पढ़े-लिखे भी होते हैं। मगर अधिकांश वही (पूजा-पाठ) करनेवाले और जनता की प्रवंचना में प्रवीण। खाना-पीना खूब मिलता हैं। पैसे भी काफी आते रहते हैं। इन महाशयों में अधिकांश के चरित्र भी भयंकर होते हैं। उस प्रदेश में वेदान्त और ब्रह्मज्ञान का बाहुल्य होने के साथ ही पर्दे के अभाव में स्त्री-पुरुषों के मिलन में रुकावट न होने के कारण ऐसा होना ठीक ही है। उसके बाद तो मुझे भी कई ऐसे ही ब्रह्मचारी मिले। फलतः एक बार तो मैंने यहां तक सोचा कि ऐसे चालीस ब्रह्मचारियों के पता लगा कर 'ब्रह्मचारी चालीसा' लिखूं। मगर यह ख्याल ही रह गया।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सच्चे योगी, जो उन्हें मोक्ष के मार्ग को बता सके, की खोजसे निराश होकर उन्होंने स्वयं अपने को धर्मग्रंथों के अध्ययन में लगाने का निर्णय किया। वह कहते हैं :—

"मगर वर्षा बीतने के बाद मेरे विचार बदले और आगे जाने के बजाय काशी जाकर दर्शन, व्याकरण, वेदादि के अध्ययन की धारणा हो आई। सोचा कि जंगल, पहाड़ों की खाक खूब ही छानी। योगी तपस्वी का भी पता लगाया। भटके भी काफी। मगर हाथ कुछ न आया। भगवान तो अभी दूर के दूर ही रहे। इसलिए चलो शास्त्रों का मंथन करें और देखें उनमें क्या है। ऋषिकेश (कैलाश) वाले वृद्ध महात्मा की बात भी याद हो आई।"

लेकिन इस दिशा में भी इनका अनुभव सुखद नहीं रहा। निम्नलिखित रूप में वह अपने अनुभव का वर्णन करते हैं :—

'संन्यासियों की दो पाठशालायें थीं—एक अपारनाथ में और दूसरी टेढ़ी नीम महल्ले वेद में। उनके दो दलों की प्रतिद्वंद्विता से ही यह बात हुई थी। असल में दसनामी संन्यासियों में, जो दंडी नहीं होते हैं, यह प्रणाली है कि कुछ लोग पढ़े-लिखे के एकदल कुछ साधुओं और पंडितों का बना लेते हैं और अपने आप उसके अधिष्ठाता बनके जहाँ-तहाँ घूमते अथा पूजवाते फिरते हैं। उस दल को मंडली और उन्हें मंडलीश्वर कहते हैं। ऐसे दो मंडलीश्वर बन गये थे। उनकी आपस में होड़ चली थी। इसी से दो पाठशालायें थीं। उनमें उनका अपना-अपना आधिपत्य चलता था। वहाँ रहने और पढ़नेवालों को भी कभी-कभी उनके पास जाकर विधिवत् अभिवादन आदि करना पड़ता था।

"मैं पहले एक में, पीछे दूसरी में पढ़ता रहा। लेकिन यह सब शिष्टाचार मुझसे निभ नहीं सकता था। मैं क्यों ऐसा करने लगा? उन मण्डलीश्वर को तो मैं एक प्रकार से पतित और प्रथभ्रष्ट समझता। संन्यासी बनकर इस प्रपंच और धन-संग्रह से; इस ठाटबाट से क्या मतलब? फलस्वरूप, पहले अपारनाथ में बाधा आई तो उसे छोड़ा। पीछे दूसरी में भी, जो पीछे से खुली थी, बाधा देख उसे भी त्यागा। फिर तो यों ही पंडितों के घर जा जाकर पढ़ा करता था।"

सात वर्षों के अपने भ्रमण और संन्यासी के रूप में तपस्या के बाद जब वह संकट और असारता की अनुभूति के मार्ग से गुजर रहे थे तब एक ऐसी घटना हुई जब उनके जीवन को एक नये सत्य के दर्शन हुए। १९१४ के दिसम्बर में भूमिहार महासभा के सम्मेलन को सम्बोधित करने के लिए उन्हें आमंत्रित किया गया। उस समय तक स्वामी जी सभी प्रकार के सामाजिक और राजनीतिक जीवन से अलग-थलग थे। अभी भी आध्यात्मवाद में तल्लीन स्वामी जी ने सभा को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्बोधित करते हुए खेद प्रकट किया कि भारत के ब्राह्मण अपने प्राचीन धार्मिक ग्रन्थों को भूल गये हैं। उन्होंने कहा कि जर्मन विद्वान मेक्समूलर ने ही हमको भूले हुए वेदों को याद कराया। इस तरह एक जर्मन विद्वान की उस समय प्रशंसा ने, जबकि ब्रिटिश सरकार जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में व्यस्त थी, भूमिहार महासभा पर प्रभुत्व वाले वफादार सामंतों को सावधान कर दिया। स्वामी जी को इस बात से काफी दुःख हुआ कि उनके सच्चे बयान से राजा महाराजा और सामन्त लोग कैसे चिढ़ गये। सामन्तों की इस चाटुकार मानसिकता ने उनको चकित कर दिया। स्वामी जी का कहना है कि यह उनका प्रथम राजनीतिक अनुभव था। उन्होंने अनुभव किया कि भूमिहार वैसे ब्राह्मण थे जिन्होंने अपनी पैतृक सम्पत्ति गंवा दी थी, जो अपने अधःपतन और चाटुकारिता की स्थिति तक पहुँच गये थे। उन्होंने अनुभव किया कि उन्हें कौम के उत्थान के लिए प्रयत्न करना चाहिए। इस काम ने उनकी चेतना को इतना तल्लीन कर दिया कि उन्होंने अपने जीवन को संन्यासी की उपासना से अलग कर लिया। वे कहते हैं—"मेरे भीतर महाभारत मचा।" उनके जीवन में एक नया मोड़ आया। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि जनता की सेवा ही भगवान की असली पूजा है। इस समय के अपने विचार को उन्होंने निम्नलिखित शब्दों में अभिव्यक्त किया :—

"इस प्रकार देखा जाय तो मैं कहाँ से कहाँ जा निकला। योगी की धुन, प्राणायाम और समाधि की चाट को छोड़ परिस्थितिवश शास्त्र-मंथन में लगा कि ब्रह्मज्ञान में मस्त रहूँगा। लेकिन शास्त्र-मंथन समाप्त होते न होते जन-सेवा की ओर जा झुका। अभी आगे बहुत कुछ होना था। यह तो श्रीगणेश मात्र था—ईब्तदाये इश्क मात्र था। मेरा यह भी स्वभाव है कि जिस काम में पड़ता हूँ उसमें सारी शक्ति लगाकर पड़ता हूँ। "आधा तीतर आधा बटेर" मुझे पसन्द नहीं।

"यह भी जान लेना चाहिए कि यह जो जन-सेवा की बात मेरे दिल में उठी वह पहले-पहल जन-साधारण की सेवा न थी। मैंने तो यही सोचा कि चलो एक भूमिहार ब्राह्मण समाज का उद्धार कर दो। फिर, अपने पठन-पाठन और ब्रह्म ज्ञान का मजा उठायेंगे। यह तो एक प्रकार का मनफेर मात्र था। लेकिन किसे मालूम था कि यह मनफेर स्थाई हो जायेगा और शास्त्राभ्यास का मजा फिर न मिल सकेगा? "यह ईब्तदाये इश्क है" यह बात किसे मालूम थी? असल में सिर्फ सेवाभाव और कर्त्तव्य बुद्धि से ही इस काम में परिस्थितिवश खिंच गया, न कि किसी और मतलब से। इसी लिए स्वभावतः आगे बढ़ना ही पड़ा। यदि राग-द्वेष, किसी तुच्छ स्वार्थ या नीच मनोवृत्ति से इसमें पड़ा होता तो शायद ही आगे बढ़ पाता, ऐसी मेरी दृढ़ धारणा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"बहुतों का यह कहना कि संन्यासी होकर जाति-पांत के काम में पड़ना ठीक न था, मेरी समझ में नहीं आया। उनके इस कथन के लिये गुंजाइश रह ही कहाँ जाती है? जिन घटनाओं का मैंने उल्लेख किया है उन पर मेरा वश ही क्या था। वह तो आकस्मिक थी और उन्होंने मुझे धर दबाया। क्या पहले से कोई तैयारी करके मैं इस काम में पड़ा? यदि कोई ऐसा समझता हो तो वह भूलता है। मैंने तो दिखलाया है कि कहाँ से कहाँ खिंच गया। लेकिन कहा जा सकता है कि यों ही आकस्मिक तौर पर किसी बुरे काम में खिंच जाने से मनुष्य निर्दोष नहीं हो सकता है। बात तो सही है। लेकिन इसका उत्तर भी दे ही चुका हूँ।"

"मैं तो किसी और मतलब से उसमें पड़ा न था। एक बहुत बड़े समाज को—एक उच्च और कुलीन ब्राह्मण समाज को—मैंने औरों से पददलित पाया और देखा कि वह तिलमिला रहा है, अपमानित हो रहा है। मगर कुछ कर नहीं पाता। अपमानित होता है बुरी तरह, मगर उसका प्रतिकार नहीं कर पाता। मेरा दिल तड़प उठा और मैंने उसे उठाया। उठाने की कोशिश की और अपमानित करनेवालों को ठीक-ठीक उत्तर दे दिया, उनके होश ठिकाने कर दिये। इसमें क्या अपराध हुआ? क्या बुराई हुई? आखिर सारे मुल्क को भी तो ऊँचा उठाना ही है। आजादी की लड़ाई का आखिर मतलब ही क्या, अगर मुल्क को उठाना नहीं है? जिसका हक छीना जाय या छीना गया हो उसे तैयार करके उसका हक उसे वापस दिलाना यही तो मेरे जानते आजादी की लड़ाई और असली समाज-सेवा का रहस्य है।

"समष्टि रूप में समस्त समाज को ऊँचा उठाने को ही मैं समाज-सेवा और सामाजिक कार्य मानता हूँ और यही मैंने शुरू में किया। इसीलिए तो पीछे छोटे-से समाज को छोड़ समस्त देश के काम में खिंच गया या कूद पड़ा। हाँ, यदि उस समाज-सेवा में कोई राजनीतिक दाव-पेंच या औरों को दबाने की मनोवृत्ति रहती तो वह अवश्य ही निन्दित और बुरी होती। मगर यह बात मैंने सपने में भी न सोची।"

स्वामी जी के इस बिन्दु से आगे के जीवन का अध्ययन बहुत ही रोचक है। एक ने, जो अपने मोक्ष के लिए जीवन की उपासना, और चिन्तन के पीछे पड़ा हुआ था, अनुभव किया कि जनता की सेवा ही भगवान की असली पूजा है। इस विचार से उद्वेलित होकर वे एकान्त के जीवन से अलग हो गये और राजनीतिक एवं सामाजिक आन्दोलन में कूद पड़े। इस काम में उन्होंने अथक एवं अटूट क्रान्तिकारी शक्ति के साथ एक सन्त की दृढ़ भक्ति को जोड़ दिया। मानव के उत्थान के लिए उनका यह धर्म-युद्ध नये से नये क्षेत्रों एवं नई-नई

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समस्याओं तक इन्हें ले गया। लेकिन ये उनमें से किसी एक से भी नहीं हटे। उनकी विचारधारा तेजी से बदलती गई। उन्होंने नई विचारधारा ग्रहण की, नई समस्याओं का अध्ययन किया तथा स्वयं अपने को जनमानस के उत्थान हेतु नवीनतम युद्धों के लिए उन्हें संगठित करने में निश्चित किया।

सामाजिक आन्दोलन के साथ उनका प्रथम अनुभव भूमिहार ब्राह्मणों के सम्बन्ध में था। यह भाग्यवश हो गया। उन्होंने भूमिहार जाति का उत्थान करने का निर्णय लिया जो अपनी सामाजिक निकृष्टता एवं चापलूसी की भावना से पीड़ित थी। उन्होंने ढूँढ़ निकाला कि भूमिहार महासभा के वे नेता, जिनमें अधिकांश सामंत थे, वे सामाजिक उत्थान के आन्दोलन के खिलाफ थे। इसके वे ही भक्त थे, जो अपनी गुलाम एवं पतित जिन्दगी को ब्रिटिश हुकूमत को समर्पित कर चुके थे और अपने को सामाजिक तौर पर ब्राह्मणों से नीच की स्थिति वालों से मेल-मिलाप कर करा लिये थे। प्राकृतिक रूप से जन्मजात विद्रोही होने के नाते सर गणेश दत्त सिंह और भूमिहार महासभा के अन्य सामंत एवं प्रतिक्रियावादी नेताओं के साथ इनका तीव्र मतभेद हो गया। इन नेताओं से लड़ने के लिए इन्होंने भूमिहार किसानों की शक्ति इकट्ठी की। इस अनुभव के एक ही साथ देश की आजादी के लिए कांग्रेस के नेतृत्व में जाग रहे विशाल देश-भक्त जनता और सामंत भूस्वामियों के द्वारा सताये हुए किसानों के साथ इनका सम्पर्क हुआ। उन किसानों से भी इनका सम्पर्क हुआ जो एक विशेष जाति के उत्थान जैसी संकीर्ण भावनाओं से ग्रसित थे। उन्होंने अपने को आजादी के लिए संघर्षरत अपनी तमाम जनता के साथ मिला लिया और सामंती जुल्मों के खिलाफ सभी किसानों के नेता एवं संगठनकर्त्ता के रूप में अपने को प्रस्तुत किया।

इस सम्बन्ध में इस जगह एक प्रचलित गलत विचार को स्पष्ट कर देना चाहिए जिसको संकीर्ण जातिवादी तत्वों ने बड़े पैमाने पर फैलाया था। उनका कहना था कि स्वामी जी भूमिहार थे और भूमिहार जातिवादियों के नेता थे। लेकिन स्वामी जी ने स्वयं कहा है—"मेरा वंश जुझौतिया ब्राह्मणों का है— कान्यकुब्ज ब्राह्मणों की एक शाखा जुझौतिया कहाती है।" उन्होंने यह भी कहा—

"इधर मैंने कई बार ये गप्पें सुनीं कि 'मेरे दंडी बनने में सरयू पारीण या कान्य-कुब्ज ब्राह्मणों ने बड़ी बाधायें पहुँचाईं और कहा कि भूमिहार ब्राह्मणों को दंडी होने का अधिकार नहीं। फलतः जब शास्त्रार्थ में मैंने उन्हें हराया, तब कहीं दंडी बन सका। इसी चिढ़ से तो भूमिहार ब्राह्मणों में पौरोहित्य आदि का आन्दोलन पीछे चलकर मैंने चलाया, आदि आदि। लेकिन ये सारी बातें सोलहों आने निराधार हैं। मेरे सामने तो कोई ऐसा मौका कभी आया ही नहीं। यह ठीक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है कि मेरे वंश वाले भूमिहार ब्राह्मणों से अब विवाह शादी आदि के द्वारा सम्बन्धित हो गये हैं। फिर भी मैं तो जुझौतिया ब्राह्मण हूँ जैसा कि पहले ही बता चुका हूं। फिर झगड़ा कैसा? भूमिहार ब्राह्मणों से तो विवाह आदि के द्वारा मैथिल, कान्य-कुब्ज और सरयू-पारीण ब्राह्मण भी मिले ही हैं।"

वे लोग जो स्वामी जी को भूमिहार जातिवादी नेता के रूप में बुरा मानते हैं वे इस तथ्य की उपेक्षा करते हैं कि भूमिहार, भूस्वामियों एवं प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञों से जीवन भर वे लड़ते रहे। इससे भी अधिक वे इस तथ्य को आसानी से उपेक्षा कर देते हैं कि कुछ ही समय के लिए सही, उन्होंने भूमिहार महासभा में काम किया और उसका पुनर्निर्माण किया। यह स्वामी जी ही थे, जिन्होंने इसको नीचे खींच लाया। जब स्वामीजी राष्ट्रीय आन्दोलन और किसान आन्दोलन में आ गये तब भूमिहार महासभा की उन्होंने कोई आवश्यकता नहीं समझी। लेकिन कांग्रेस नेताओं ने, जो भूस्वामियों के साथ समझौतावादी नीतियों में विश्वास करते थे इसको (भूमिहार महासभा को) अपने संकीर्ण प्रतिक्रियावादी उद्देश्यों के लिए इसको (भूमिहार महासभा) पुनर्जीवित करने की कोशिश की। श्रीकृष्ण सिंह और श्री रामचरित्र सिंह जैसे भूमिहार कांग्रेसी नेताओं ने 1929 में भूमिहार महासभा का सम्मेलन बुलाया और उस सत्र के लिए सर गणेश दत्त सिंह को अध्यक्ष मनोनीत किया। स्वामी जी को यह जानकर दुख हुआ कि उन कांग्रेस नेताओं ने सर गणेश दत्त सिंह जैसे सामन्त को अध्यक्ष चुना। उन्होंने मुंगेर में आयोजित सम्मेलन में भाग लेने का निर्णय किया। यहाँ स्वामी जी द्वारा लिखित उद्देश्यों को देखना जरूरी है, जो भूमिहार महासभा को पुनर्जीवित करनेवाले प्रतिक्रियावादी कांग्रेसी नेताओं के प्रयत्न का पर्दाफाश करता है। उन्होंने इसका निम्नलिखित प्रकार से उल्लेख किया—

"अब तो मुंगेर पहुँचते ही हो-हल्ला मच गया। ऐसी सनसनी फैली कि सभी लोग बेचैन थे। लोगों को यह तो निश्चय होई गया कि मैं विरोध करूँगा ही और उसके वोट लेने पर सर गणेश दत्त सिंह कदापि सभापति चुने न जायेंगे। लोग दल के दल मुझे समझाने आये। मगर निरुत्तर होके चले गये। अब हमारे दोस्तों और लीडरों को, रामचरित्र बाबू को और श्री कृष्ण बाबू को, यह फिक्र हुई कि उनके जिले में आकर यदि सर गणेश दत्त सिंह की छीछालेदर हुई तो समाज में उनकी बदनामी होगी। मगर इसका अपराधी कौन? उन्होंने ऐसा होने ही क्यों दिया? वे लोग समझाने आये तो मैंने साफ कह दिया कि मुझे तो यह कहके बदनाम किया गया कि मैं कांग्रेस विरोधी और सर गणेश दत्त का पिट्ठू हूँ। मगर आप जो कांग्रेस के लीडर हैं। फिर यह उलटी बात क्यों? मैं सर गणेश दत्त का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विरोध करूँ और आप लोग उससे हैरान हों ? आप उनके समर्थक हों ? अनजान में उनका समर्थन किया और जान लेने पर आज उनका पक्का विरोधी मगर आपलोग जानकर क्यों उनके साथी बनते हैं ? दुनिया आपको क्या कहेगी इसका उत्तर वे लोग क्या देते ? मैंने उनसे साफ कह दिया कि इतना ही चुनाव में वे जहाँ खड़े होंगे मैं उनका विरोध सारी ताकत लगाके करूँगा देखूँगा कि मिनिस्टर बनके वे आगे सरकार-परस्ती कैसे करते हैं। इस पर वे चले गये। फिर बाबू राम दयालु सिंह को मेरे पास भेजा। क्योंकि जानते थे उनकी बात मैं शायद मान सकूँ।

"श्री राम दयालु सिंह मेरे पास आये। देर तक बातें होती रहीं। आखिर मैंने यह कहा कि सभा में जाने पर तो मैं उनके सभापतित्व का विरोध करूँ क्योंकि यह बात कह चुका हूँ। उसे टाल नहीं सकता। पर यदि आपलोगों यही मर्जी है कि वे सभापति बने ही, तो लीजिये मैं सभा में जाऊँगा ही आप लोग सँभालें और करें। वह खुश हुए। यह जानकर औरों की चिन्ता मगर सभा में जब लोग खचाखच भर गये और मुझे न पाया तो कानाफूसी लगी कि स्वामी जी क्यों नहीं आये। सर गणेश दत्त सभापति तो बन चुके थे। किसी ने उनसे पूछा कि स्वामी जी यहाँ आके भी सभा में क्यों नहीं आये उनका जैसा स्वभाव है, रज होके कह दिया कि स्वामी जी की बात मैं क्या जानूँ आप उनसे पूछिये। फिर क्या था, कोई इधर उठा, कोई उधर और सवाल लगे। आवाज आई कि स्वामी जी को बुलाकर लाया जाय। बराबर लोगों कहा। उन्होंने कहा कि स्वामी जी के बिना सभा का काम रुक नहीं सकता। पर और गड़बड़ी मची और मेरे बूढ़े गुरु भाई स्वामी परमानन्द सरस्वती ने कहा कि स्वामी जी ने समाज को जगाया, और उन्हीं के बिना काम नहीं रुकेगा आप ही काम चलाइयेगा। और क्रोध से सभापति की ओर बढ़े। फिर तो गड़बड़ी मची कि सर गणेशदत्त को अपने ऊपर खतरा मालूम पड़ा। फलतः भंग कर दी और पुलिस पुकार के उठ खड़े हुए। किसी प्रकार लोगों ने धर कर उन्हें बचाया और डेरे पर पहुँचाया।

"इस प्रकार भूमिहार ब्राह्मण महासभा भंग हो गई। हालाँकि, मैं बाहर था। मेरे पास दौड़े-दौड़े एक सज्जन पहुँचे कि सभा में तूफान है, चलिये कीजिये। मैं समझ न सका। पीछे उसने कहा कि मैं जल्दी में चला आया हूँ। सर गणेश पिट गये। हालत नाजुक है। इस पर मैं दौड़ कर सभा में पहुँचा हंगामा देखा। मुझे देखते ही लोग ठंढे हो गये। लोग यही तो चाहते थे आऊँ। खैर, मैंने समझा-बुझा कर शान्त किया और न आने का कारण बता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ड़बड़ी करने वालों को फटकारा भी, लेकिन यह तो ठीक ही है कि सभा सदा के लिए भंग हो गई। अच्छा ही हुआ। उससे भलाई तो कुछ होती न थी। हाँ, लड़ाई जरूर हो जाया करती। अब इधर सुना हैं, दस वर्षों के बाद उसे फिर चलाने का यत्न हो रहा है। नहीं जानता कि वह सफल होगा या नहीं। दस वर्षों तक तो मेरे डर से सभा का नाम लेने की किसी को हिम्मत होती न थी। लोग जानते थे कि यदि उन्होंने सभा की तो मैं जाकर उसमें विरोध करूँगा और उनकी एक न चलने दूँगा। इस प्रकार उसे फिर भंग कर दूँगा। मगर अब जब लोगों को पता लग गया है कि मुझे उससे अब कोई वास्ता नहीं है और उसमें जाऊँगा ही नहीं, तब शायद हिम्मत बंध रही है।

1920 के दिसम्बर में स्वामी जी गाँधी जी से मिले, यद्यपि वे उनकी बातचीत से पूर्णतः प्रभावित नहीं हुए। जैसा कि उन्होंने कहा :—

"बातचीत के बाद मेरे दिल पर यही प्रभाव पड़ा कि मुझे राजनीति में फौरन कूद पड़ना चाहिए। इसलिए नहीं कि देश का उपकार होगा, बल्कि इसलिए कि तभी मैं सच्चा संन्यासी बन सकूँगा।"

स्वामी जी ने कहा कि यह सौभाग्य था कि वे तब काँग्रेस में शामिल हुए जब बड़े पैमाने पर असहयोग आन्दोलन की तैयारी चल रही थी। उन्होंने कहा—

"यही परिस्थिति और यही वायुमंडल मेरे स्वभाव के अनुकूल था भी। संन्यासी होते हुए भी 'भिक्षा देहि' का तो मैं सदा से विरोधी रहा हूँ।"

गांधीवादी की तरह स्वामी जी काँग्रेस में शामिल हुए। लेकिन अपने अनुभव के आधार पर वे गाँधीवाद और काँग्रेस पार्टी के दक्षिणपंथी नेतृत्व के बराबर आलोचक रहे। वे मौलिक पक्ष और वामपक्ष की ओर आकृष्ट हुए तथा अन्ततोगत्वा गाँधीवाद और काँग्रेस नेतृत्व का इनका भ्रम पूर्णतः दूर हो गया। काँग्रेस पार्टी के दक्षिणपंथी नेताओं के साथ इनका भ्रम इनके कड़वे अनुभव के द्वारा ही दूर हो पाया। जन-आन्दोलन की उपेक्षा करके ब्रिटिश सामाज्यवाद के साथ इनका समझौता-परस्त रुझान, किसानों एवं श्रमिकों के हित को त्याग कर स्वामियों तथा पूँजीपतियों के साथ इनका समझौतापरस्त रुझान बेनकाब होकर स्वामी जी के सामने आया। अपने कड़वे अनुभव के कारण ही ये वामपक्ष की ओर मुड़े। यह पढ़ना पाठकों के लिए लाभदायक होगा, जैसा कि स्वामीजी ने उन अनुभवों की व्याख्या की—

"लखनऊ में एक प्रस्ताव के द्वारा कांग्रेस ने प्रान्तीय काँग्रेस कमिटियों को हिदायत की थी कि अपने-अपने सूबे में किसानों की दशा की जाँच करके सिफारिशें ऑल इंडिया कांग्रेस को लिख भेजें, ताकि उसी के अनुसार कोई कार्यक्रम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत भर के लिए तैयार किया जाय। यह लखनऊ कांग्रेस में हमारी ला और वहाँ पर ऑल इंडिया किसान सभा करने का ही फल था और इंडिया सभा की यह पहली जीत थी। उसके अनुसार बिहार प्रान्त में जांच कमिटी बनी भी थी। और उसने हर जिले में जांच भी की थी। मगर उ रिपोर्ट नहीं छापी गई थी।"

"खैर, लखनऊ के बाद पटने में बिहार कांग्रेस की कार्यकारिणी की मीटिंग और लखनऊ के प्रस्ताव के अनुसार किसानों के सम्बन्ध में जाँच कमिटी का का प्रस्ताव तय पाया, कमिटी में कौन-कौन मेम्बर रहें, अब यह बात आई स्वभावतः किसानों के दृष्टिकोण से मैं ही रह सकता था। मैं कार्यकारिणी मेम्बर तो था ही, मगर मेम्बर होना तो जरूरी था भी नहीं। इस पर रा बाबू ने कहा और बाकी लोगों ने उसी की हामी भरी कि आपके रहने से सकता है कमिटी की रिपोर्ट सर्वसम्मत न हो और हम चाहते हैं कि वह हो सम्मत। ताकि उसकी कीमत हो, उसका वजन हो। एक बात और। आ रहने से जमींदारों की ओर सरकार की भी चिल्लाहट होगी कि यह रिपोर्ट किसान सभा की है। अतः आप न रहें तो अच्छा हो।"

"राजेन्द्र बाबू की अध्यक्षता में नौ सज्जनों की जाँच कमिटी बनी।"

"आखिर नहीं ही छपी। इस प्रकार लगातार दो कांग्रेसों के प्रस्तावों पांव तले बेमुरव्वती से रौंदा। फिर भी गैरों को कांग्रेस के बागी कहने हिम्मत करते हैं।"

"बात असल यह है कि उनलोगों ने एक वार सन् 1931 में भी तो की थी, मगर रिपोर्ट न छापी, क्यों? कहा गया कि सत्याग्रह छिड़ गया रिपोर्ट छापने का मौका ही न लगा। क्योंकि बीच में ही पुलिस सब का पत्र उठा ले गई जो फिर वापस न मिली। और जब दोबारा कांग्रेस के प्रस के अनुसार जाँच हुई तब? तब तो पुलिस का बहाना था नहीं। फिर क्या थी? बात तो बहुत बड़ी थी और है। बिहार के काँग्रेसी लीडर जमी और जमींदारों के पक्के आदमी हैं। एक-एक के बारे में गिन-गिन के कहा सकता है और वे आखिर रिपोर्ट लिखते भी क्या? जमींदारी प्रथा के जमींदारों ने इतने पाप और अत्याचार किसानों पर किये हैं और अभी भी हैं कि इंसान का कलेजा थर्रा जाता और मनुष्यता पनाह माँगती है। अब वे सारी बातें लिखी जातीं तो अपनी, अपने सम्बन्धियों की और अपने दोस्तों छीछालेदर करनी पड़ती। फलतः अपने ही मुँह में कालिख पोतना हो अगर ये बातें न लिखते तो किसानों में और बाहरी दुनिया में मुँह दि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असम्भव हो जाता। साथ ही असेम्बली के चुनाव में कांग्रेस के वोट भी किसान नहीं ही देते। फिर मंत्रिमंडल कैसे बनता? यही दोनों ओर की आफत थी जिसने उनकी कलई खोल दी।

"एक बात और भी थी। यों कांग्रेस ने निश्चय नहीं किया था, फिर भी भीतर ही भीतर मंत्रिमंडल बनाने की सारी तैयारी हो चुकी थी। ऐसी दशा में यदि उस रिपोर्ट में यह साफ सिफारिश होती कि किसानों के लिए क्या-क्या किया जाना चाहिए तो वे लोग बंधन में पड़ जाते। क्योंकि अगर केवल छोटी-छोटी सिफारिशें रखते तो किसान लोग उस रिपोर्ट को उठाकर लीडरों के मुँह पर ही बेमुरव्वती से फेंक देते और अगर किसानों की मनचाही सिफारिशें करते तो किसान तो खुश होते और वोट भी देते। मगर पहले से ही भावी मंत्रियों का हाथ बँध जाता। फिर तो वह सभी बातें पूरा किये बिना गुजर न होती।

"लेकिन ऐसी दशा में 'किसान-जमीन्दार' समझौता के नाम से जमीन्दारों से इन नेताओं की गुटबंदी और गँठजोड़ कैसे होता? इसीलिए सोचा गया कि कुछ मत लिखो। सारी चीजें गोल-मटोल रखो। चुनाव की घोषणा में राजबंदियों की रिहाई की बात साफ लिखने के कारण ही तो इस्तीफे की नौबत आ गई। किसानों की बातों को लेकर तो प्रलय ही मच जाती। किसानों से जो वोट लेना था सो काम तो चुनाव के पहले जाँच करने से होई गया। अब रिपोर्ट छाप कर नादानी क्यों की जाती?

"भूकम्प के बाद मुझे ऐसे मौके मिले जब निराश्रय गरीबों को देहातों में सहायता देने के समय कुछ जमींदार ऐसा कहते पाये गये कि यदि इन्हें खाना मिल जायगा तो वे हमारा काम न करेंगे। उनका मतलब था नाममात्र का कुछ देकर सारे दिन उन्हें खटाने से, और भूकम्प ने उन्हें इसका अच्छा मौका दिया था। सिर्फ हमी लोग इन निराश्रयों को सहायता देकर इन बाबुओं के इस रास्ते बाधक हो रहे थे।

"मैंने देखा कि लाखों किसान बर्बाद हैं, उनके झोपड़े और घर गिर गये हैं। घरों में पड़ा थोड़ा-बहुत अन्न जमीन की दरारों में घुस गया है। खेतों में बालू आने से वे खराब हो गये हैं। खलिहान में ही पडा गल्ला जमीन में धँस गया है। और खेत में ही खड़ा बालू के नीचे चौपट है। वे दाने-दाने को मुहताज हैं। फिर जमीन्दारों के द्वारा बेमुरव्वती से लगान की वसूली—बची बचाई लोटा, थाली, बकरी, मवेशी आदि बेंचवाकर और कर्ज लिवाकर जैसे हो, जारी है। यहाँ तक कि रिलीफ कमिटी से या सरकार के द्वारा खेतों से बालू हटाने के लिए जो पैसे किसानों को मिलते हैं वह फौरन ही उसी जगह जमींदारों के अमलों द्वारा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छीने जा रहे हैं। मैंने एक जमींदार का ऐसा ही हुक्मनामा पकड़कर उसे अख़ में छपवा दिया भी था। उसमें उसने अपने अमलों को लिखा था कि रि या बालू वाले कर्ज के मिलने पर किसानों से लगान वसूली का अच्छा है। उसे हरगिज गंवाया न जाय। झोपड़ों को फिर से छाने के लिए लकड़ी, फूस आदि किसानों को जमीन्दार लेने न देते थे। रोक देते थे। इसके लिए बड़ा हो-हल्ला मचाना पड़ा।

"इन सब बातों को देखकर मेरे दिल में ख्याल आया कि एक ओर तो दो-दस-बीस या कुछ ज्यादे रुपये से कम किसानों की सहायता देते हैं। दूसरी जमींदार उनकी जमीनें और पशु आदि घड़ाधड़ नीलाम करवा रहे हैं। सह के पैसे भी तो छीन ही लेते हैं। इसलिये यह तो धोखा है। फलतः जब तक किसानों की सभायें जगह-जगह करके धूम न मचायें तब तक उनकी खै नहीं। हम देख ही चुके थे कि आन्दोलन से ही वे लोग दबते हैं। मगर दि यह थी कि सभी लोग रिलीफ के काम में फँसे थे। फिर सभायें कौन करे। इस सोचा कि रिलीफ के कार्यकर्त्ताओं से मदद ली जाय तभी ठीक होगा। इसमें नेताओं की मंजूरी चाहिए और राजेन्द्र बाबू ने साफ कहा कि गाँधीजी आज्ञा के बिना यह हो ही नहीं सकता। इसलिए मैंने तय किया कि गाँधीजी बातें करके हुक्म ले लूँ। वे तो दरिद्रनारायण के सेवक ठहरे ही। अतः यह सहर्ष देंगे। बात करने की तारीख और समय भी ठीक हो गये। वह प ही बिहार रिलीफ कमिटी के ऑफिस, पीलोकोठी में ही इस समय ठहरे थे।

"आखिर, बातें हुईं और मुझे भयंकर निराशा हुई। जब मैंने सारी उनसे कह सुनाई तो बोले कि आर्डिनेन्स के चलते मीटिंग नहीं हो सकती उन्हें यह पता क्या था कि हमने गत दो वर्षों में मीटिंगों के द्वारा जमींदारे नाकोंदम कर दिया था। मैंने कहा कि हम करेंगे और सरकार रोकेगी देखेंगे। फिर बोले, चुपके से नहीं करना होगा। किन्तु नोटिसें बाँट के। मैंने जी हाँ, नोटिसें जरूर बटेंगी और खूब बटेंगी। तब कहने लगे कि सच्ची शि ही सामने लाई जायें। मैंने उत्तर दिया कि झूठी क्यों लायेंगे? सच्ची ही ज्यादा हैं कि सबको ऊपर कर नहीं सकते। कहने लगे, लेकिन हरेक शि की खूब जांच हो ले, तब कुछ कहा जाय। मैंने कहा, कार्यकर्त्ता जां बतायेंगे। तब कहने लगे कि वह गलती कर सकते हैं। मैंने इस पर सा दिया कि लाखों करोड़ों शिकायतें हैं। अगर सत्य की ऐसी फिक्र में हम प खुद जांचें तो असंभव है। ऐसी दशा में किसानों को फायदा पहुँचा नहीं स फलतः कार्यकर्त्ताओं पर तो विश्वास करना ही होगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"फिर उन्होंने कहा कि ये शिकायतें यदि महाराजा दरभंगा को मालूम हो जाय तो (क्योंकि मैंने उनका ही नाम लिया था) मुझे विश्वास है, वे जरूर इन्हें दूर करेंगे। श्री गिरीन्द्र मोहन मिश्र उनके मैनेजर हैं। वे कांग्रेसी हैं। मैंने कहा, "देखूँगा। मैं तो चाहता ही हूँ कि वह दूर कर दें।" फिर कह उठे कि गोल-गोल बातें न करके किस किसान को क्या कष्ट है यह नाम-ब-नाम बताना होगा। इस पर मैंने कह दिया कि मैं हर्गिज ऐसा कर नहीं सकता। क्योंकि दो चार किसानों के नाम मिलते ही है वह उनके कष्ट तो क्या दूर करेंगे, उल्टे उन्हें ऐसा दबायेंगे कि फिर कोई किसान शिकायतों का नाम भी न लेगा। मैं जमींदारों के हथकंडे और तरीके को खूब जानता हूँ। बस, बात यहीं पर खत्म हो गई।

"इस वार्त्तालाप से मुझे बड़ा धक्का लगा। इससे मेरी आँखें खुल गईं। उनके 'जमींदार-किसानों का कष्ट दूर करेंगे। उनके मैनेजर कांग्रेसी हैं। इसलिए कष्टों को जरूर हटा देंगे।' इत्यादि बातों से पता चला कि जमींदारी मशीनरी कैसे काम करती हैं इसका पता उन्हें कतई नहीं था। किसानों को वह कैसे रौंदती हैं वह जानते तक न थे। कांग्रेसी होकर क्या कोई मशीन को वदल देगा? वह तो उसका एक पुर्जा बनेगा, यह मोटी बात भी वह समझते न थे। हमने तो हजारों कांग्रेसियों को किसानों को बर्बाद करते देखा। मगर उन्हें यह मालूम ही नहीं। सत्य की फिक्र उन्हें इतनी कि उसके करते काम असम्भव हो जाने का उन्हें ख्याल तक नहीं। यदि जमींदार या उनके नौकर शिकायत करनेवालों का सुराग पा जायें तो उनपर झपट पड़ते हैं, यह मामूली बात भी वे नहीं जानते थे। जो किसानों को निर्दयता के साथ आज भी लूटता है और उन्हें भूखों मार के अपनी मोटर दौड़ाता है वही उसके दुख दूर करेगा, यह उनकी धारणा मुझे आश्चर्यचकित करनेवाली थी। मेरे दिल ने पुकारा कि क्या यही दरिद्रनारायण के सेवक हैं?

"मेरी धारणा हो गई कि ये चीजें गांधी जी जरा भी नहीं जानते, हालाँकि, जानकारी की बातें बहुत करते हैं। उस दिन की बात के बाद उन पर मेरी अश्रद्धा हो गई और उसी दिन से मैं सदा के लिए उनसे अलग हो गया। उस भूकम्प के बाद ही यह दूसरा मानसिक भूकम्प मुझ में हुआ। एक धक्का तो मुसलिम नेताओं के सम्बन्ध के पत्र के उनके उत्तर से लग चुका था। यह दूसरा और आखिरी धक्का था। पीछे पता लगा कि मधुबनी में जाने पर एक सभा में लोगों ने उनसे जब जमींदार महाराजा दरभंगा के अत्याचार की बात कही तो वही उत्तर उन्होंने दिया जो मुझे दिया था। खैर, अच्छा ही हुआ। प्रायः १४ वर्षों की बनी-बनाई गांधी-भक्ति आज खत्म हुई।

"सन् १९३७ के शुरू में ही नये विधान के अनुसार प्रान्तीय असेम्बलियों का चुनाव हुआ। बिहार में प्रान्तीय कांग्रेस की कार्यकारिणी के ही माथे कांग्रेसी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उम्मीदवारों को नामजद करने का काम था। मैं भी उसका एक सदस्य था फलतः उम्मीदवारों की नामजदगी और चुनाव में जो कटु अनुभव मुझे हुआ वह उल्लेखनीय है।

"हाँ, तो प्रान्तीय कार्यकारिणी जब कांग्रेसी उम्मीदवार चुनने लगी तो मैंने गजब का तमाशा देखा। मुझे पता ही न चला कि किस सिद्धान्त पर उम्मीदवार नामजद हो रहे हैं। कहीं तो खांटी कांग्रेसी, जो जेल गये और तबाह हुए, छोड़ दिये गये और बड़े जमींदार एवं उनके दोस्त ले लिये गये, जो न जेल गये और न कल तक खद्दर ही पहनते थे। कहीं ऐसे लोग लिये गये जो अपने जुल्म के लिए किसानों में मशहूर थे। कहीं जो खद्दर तक न पहनते थे एवं गवर्नर के स्वागत एवं दरबार में शामिल रहते थे तथा आगे भी रहे उनको भी लेने की सिरतोड़ कोशिश बड़े-बड़े नेता करते थे। कहीं ऐसी गुटबन्दी की गई कि वैसों के खिलाफ कोई उम्मीदवार मिलने न पाये, ताकि वही लिये जायँ"।

"मेरे सामने तो तीन कसौटियाँ थीं और तीनों पर खरे उतरने वाले ही मेरे लिए सबसे अच्छे थे। नहीं तो दो पर और अन्त में एक पर थी, मैं चाहता था कि उम्मीदवार लोग सबसे पहले तो कांग्रेस और देश के लिए जेल-जुर्माने की सजा आदि काफी भुगत चुके हों, गरीब हों या गरीबों के पूरे हिमायती और किसान सभावादी हों। यदि ये तीनों गुण न मिलें तो किसान सभावादी होना छोड़ देता और दो भी न मिलने पर गरीब होना भी छोड़ता था। जो मुल्क के लिए तबाह बर्बाद न हुआ हो उसे तो मैं देख भी न सकता था। मगर दिक्कत यही थी कि मैं अकेला ही इस विचार का था। फलतः बार-बार जहर के घूंट पीने पड़ते थे। सोचता था, कांग्रेस की प्रतिष्ठा की बात है। यदि कहीं विरोध करके इस झगड़े से अलग हो जाऊँ तो गड़बड़ हो सकती है। इसीलिए बर्दाश्त करता गया। लेकिन आते-आते जब अति हो गई तो मैंने साफ कह दिया कि अब नहीं चलने का। मामला यहीं बिगड़ेगा। 'आई हैभ रीच्ड हेयर दी ब्रेकिंग पोआयंट' फिर भी दोस्तों के गले के नीचे बात न उतरी और मैं इस्तीफा दे के कार्यकारिणी से अलग हो गया। उसमें साफ लिख दिया कि इसका मतलब यह नहीं कि मैं कांग्रेस का विरोध करूंगा या उसकी मदद न करूंगा। विरोध की तो बात ही नहीं। मदद भी करूंगा। मगर इन नामजदगियों की जवाबदेही नहीं ले सकता और जहाँ-जहाँ उचित समझूंगा वहीं मदद करूंगा। इस्तीफा देकर उत्कल चला गया। पुरी में उत्कल प्रान्तीय किसान सम्मेलन का सभापतित्व करना था। जब वहाँ से लौटा तो बाबू राजेन्द्र प्रसाद की सात पृष्ठ की चिट्ठी मिली। उसमें नामजदगियों को ठीक ठहराने की कोशिश के साथ ही मुझसे इस्तीफा वापस लेने का आग्रह किया गया था। मैंने कभी बहुत पहले उनसे कहा था कि इस साल आप प्रान्तीय कांग्रेस के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यक्ष बने तो हमारे साथ न्याय होने के साथ ही कांग्रेस की जीत की आशा भी हमें है। इसी बात की याद उन्होंने दिलाई और कहा कि आप ही के कहने से सभापति बना और आपने बीच में ही साथ छोड़ दिया, मैं बीमार हूँ। अब सोचिये; मुझपर क्या गुजरती होगी। इस इस्तीफे का असर बुरा होगा। मुझे यह भी पता लगा है कि जिस दिन मैंने इस्तीफा दिया उस दिन वे सारी रात सोये नहीं। फलतः मैंने उन्हें लिखा कि आपकी दलीलों का तो मुझे कोई असर नहीं हुआ। लेकिन यदि आप सोचते हैं कि मेरे इस्तीफे का असर कांग्रेस की सफलता पर जरूर पड़ेगा तो लीजिये उसे लौटाये लेता हूँ। और इस्तीफा वापस ले लिया।

"उसके बाद चुनाव में मैंने सारी ताकत लगा दी। जिन जमींदारों के विरुद्ध मैंने किसानों को काफी लड़ाया था और उन्हें उन जमींदारों के शत्रु बनाया था; जब उन्हीं जमींदारों को वोट दिलाने के लिए मैं स्वयं गया, क्योंकि अन्यथा हार जाने की नौबत थी, तो मेरे सामने पहेली खड़ी हो गई। विरोधियों के उकसाने से और स्वभावतः भी किसानों ने मुझसे पूछा कि इस जल्लाद को ही वोट दें, ऐसा आप कहते हैं? क्यों इसे भूल गये? जमींदारों के सामने ही ऐसा सुनाया। मैंने उन्हें बड़ी कठिनाई से समझा कर राजी किया। कहा कि बातें तो ठीक हैं। किसान सभा की दृष्टि भी वही है। मगर यहाँ तो कांग्रेस की बात है न? और कांग्रेस बड़ी है। वे मान गये और कहा कि आप की आज्ञा शिरोधार्य है।

"मैं आज सोचता हूँ कि मैंने ठीक किया था या उन्हें धोखा दिया; क्योंकि वह जमींदार आज तो कई गुना भयंकर बन गये हैं और वे किसान रो-रोकर मेरे पास आते हैं। लेकिन बात असल यह है कि हमें उस परिस्थिति से गुजरना बहुत जरूरी था। एक-न-एक दिन वैसी बात करनी ही पड़ती, चलो अच्छा हुआ और पहले ही वह बात गुजर गई। अब वैसा मौका नहीं ही आयेगा, यह ध्रुव सत्य है। फिर भी हमारी इतनी भूल तो जरूर थी कि हमने किसान सभा के कुछ गिने-चुने स्वतंत्र उम्मीदवार भी खड़े न किये।

"चुनाव खत्म होते ही सारण (राजेन्द्र बाबू के) जिले के मसरख में प्रान्तीय राजनीतिक सम्मेलन हुआ। उसमें एक प्रस्ताव था कि कीमत देकर जमींदारी खत्म की जाय। उस पर जो संशोधन किसान सभा वालों का था कि बिना कीमत दिये ही जमींदारी खत्म की जाय, वही पास हुआ। असली प्रस्ताव गिर गया। अजीब जोश था। लोग हमारा भाषण सुनने को आतुर थे। कुछ जमींदारों ने पुरानी पोथियों से जमींदारी सिद्ध करनी चाही। मैंने मुँहतोड़ उत्तर दिया। मगर नेता लोगों ने उस प्रस्ताव को अमल में ठुकरा दिया, यह भी देखा कि मंत्री बनने के पूर्व किसानों की सभाओं और कांफ्रेंसों में भावी मंत्री लोग जाते थे और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जमींदारी मिटाने का प्रस्ताव पास करवाते थे, हालांकि सभी जानते हैं कि दिल से वे लोग नहीं चाहते थे। पर, किसानों पर मोहनी डालने का यह अच्छा रास्ता था। लेकिन मंत्री होते ही जमींदारों से समझौते पर समझौते होने लगे। ऐसी पैंतरेबाजी ! ऐसी नटलीला !"

"चुनाव के बाद कुछ ही दिनों के लिए दूसरा मंत्रिमंडल बन पाया था। क्योंकि हमारे दोस्तों के लिए कुछ अड़चनें थीं, पीछे वे हट गईं और कांग्रेसी लोग गद्दी पर आ विराजे। पहले तो कांग्रेस का फैसला कुछ हुआ न था। इसीलिये सन् 1937 के मार्च में दिल्ली में ऑल इण्डिया कमिटी की मीटिंग हुई। वहीं इसका फैसला हो गया कि कांग्रेसी लोग मंत्री पद स्वीकार कर सकते हैं। उस बैठक में जो दलीलें मंत्रिपद के लिए दी जाती थीं उन्हें सुनके हँसी आती थी। खद्दर का खूब प्रचार होगा। सरकारी इमारतों पर राष्ट्रीय झण्डे उड़ेंगे। गोया, राजनीति और आजादी की लड़ाई का यही अर्थ है।" 'किसानों और मजदूरों को कानू- आदि के जरिए आराम देंगे। वह थक गये हैं। परिशान हैं। कुछ राहत उन्हें देना जरूरी है। हम यह काम बखूबी कर सकते हैं, आदि की लेक्चरबाजी खूब ही हुई। असल में थके तो थे लीडर लोग और उनके दोस्त। मगर किसानों के मत्थे पार हो गये। यही आसान बहाना जो था।

"लेकिन हुआ क्या ? सरकारी मकानों पर राष्ट्रीय झंडे उड़े। क्या गवर्नर के मकान, सेक्रेटारियट, असेम्बली के मकान और कचहरियों पर ये झंडे दीखे? और जगह तो, खास कर संयुक्त प्रान्तों में कॉलेजों पर ये झंडे उड़े भी। मगर बिहार में वह भी नहीं हुआ। कचहरियों आदि का तो कहना ही नहीं। प्राइवेट स्कूलों वगैरह की बात छोड़िये। वहाँ भी कहीं-कहीं उड़े। मगर पीछे तो खटाई में पड़ गये। कहा गया कि मैनेजिंग कमिटी चाहे तो तिरंगे झंडे लगा सकती है तो फिर कांग्रेसी मंत्रिमंडल को क्या करना था ? दिल्ली में तो भावी मंत्रि- ने ही यह बीड़ा उठाया था। अब मैनेजिंग कमिटी के मत्थे वह बला फेंकी गई। स- भी यदि लड़कों में मतभेद न हो तभी। सारांश यह है कि जितनी ज्यादा राष्ट्री- झंडे की अप्रतिष्ठा कांग्रेसी मंत्रियों के काल में हुई, उतनी कभी न हुई थी, जला- और पाँव तले रौंदे तक गये वही झंडे, जिनकी शान के लिए मुल्क ने पहले ब- से बड़ा त्याग किया था। कहीं-कहीं तो हमारे लीडरों ने अपने हाथों स्कूल- यह झंडा उतारा; जबकि और कोई तैयार न हुआ। इस तरह झण्डे वाली बात यों गई।

"रह गई किसानों और मजदूरों की बात। सो तो बम्बई और कानपुर गोली और आँसू लानेवाली बूँद के गैस के प्रयोग आदि ही बताते हैं कि मजदूरों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या पाया। उनकी हड़ताल को तोड़ने, विफल बनाने में बम्बई में सारी ताकत लगा दी गई। कानून भी ऐसा बना कि मजदूरों को उसका खुलेआम विरोध करना पड़ा और जब उन्होंने उसके विरोध में हड़ताल की तो कांग्रेसी सरकार और कांग्रेस की सारी ताकत उसे तोड़ने में लगी। हालांकि, फिर भी उनकी हड़ताल सफल हो के ही रही। जमशेदपुर, झरिया, डेहरी, बिहटा आदि के मिलों के मजदूर बिहार मंत्रिमंडल को क्या कभी भूलेंगे ?

"किसानों की सेवा की बात तो कुछ कहिये मत। मंत्रिमंडल की तारीफ के पुल तो बहुत बाँधे गये कि यह किया, वह किया। मगर इस सम्बन्ध में मैंने दो पुस्तिकाएँ अंगरेजी में लिखकर सारा पर्दाफाश कर दिया है। उनका हिन्दी अनुवाद भी प्रकाशित हुआ है। उनके नाम हैं—(1) दी अदर साइड आफ दी शील्ड (2) रेन्ट रीडक्शन इन बिहार : हाउ इट वर्क्स। दोनों में एक की भी एकाध बात का उत्तर न तो अब तक मंत्री लोग ही दे सके हैं और न उनके पृष्ठपोषक ही।

"जमींदारों से इस बीच में दो-दो बार गठबंधन करके किसानों के गले पर जो भोथी छुरी चलाई गई उसे कौन नहीं जानता ? खड़ी फसल की जब्ती को कानून के जरिए आसान करके किसानों को जो लाभ पहुँचाया गया उसे तो वे पुश्त दर पुश्त न भूलेंगे। लगान घटाने में जो गोलमाल मचा तथा सब मिलाकर अन्त में किसानों के हाथ कुछ भी न लगा, वह कभी भूलने का नहीं। जो भी कानून की एकाध बातें किसानों के फायदे की बनी, उनकी भी शब्दावली ऐसी बनी कि जमींदारों ने सब कुछ मिट्टी में मिला दिया। भावली जमीन की नकदी में आसानी की गई। मगर हजार चिल्लाने पर भी फसल के काटने की मजदूरी और दूसरी बातों का कोई निर्णय न करने से किसानों को लेने के देने पड़ गये।"

"मुँगेर जिला कांग्रेस कमिटी ने प्रस्ताव कर दिया कि कोई भी कांग्रेसी किसान सभा में भाग न ले। पीछे उसका समर्थन प्रान्त की कार्यकारिणी ने भी कर दिया।"

"सन् 1937 की फरवरी में चम्पारण जिला कांग्रेस कमिटी ने एक प्रस्ताव के द्वारा यह तय किया कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती का जो दौरा चम्पारण में होनेवाला है यह रोका जाय, उसमें कोई कांग्रेसी भाग न ले और स्वामी जी को लिखा जाय कि आपके दौरे से यहाँ के लोगों में 'बुद्धि भेद' पैदा होने का डर है।

"एक जरूरी बात, मेरे सामने एक भीषण समस्या इधर कुछ वर्षों से खड़ी थी। मैं समझने लगा था कि कांग्रेस के नेता अन्त में किसानों को धोखा देंगे। नतीजा होगा कि कांग्रेसी होने के नाते हम किसान सभा वालों पर भी किसानों का अविश्वास हो जायगा। फलतः इसका उपाय होना चाहिए। मगर रास्ता सूझता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

न था। यदि किसान सभा को कांग्रेस से अलग किसानों की खास संस्था कहते तो वे लोग खामखाह कांग्रेस की अपेक्षा सभा से ज्यादा प्रेम करते। फलतः कांग्रेस कमजोर होती। अगर ऐसा कुछ न कहते तो अन्त में गड़बड़ी का खतरा था। अजीब पहेली थी। मेरी परीशानी तथा मनोवेदना बेहद थी।

"इसी बीच सारण, चम्पारण और मुंगेर में उक्त घटनायें हुईं, जिन पर प्रान्तीय कांग्रेस ने एक प्रकार से मोहर लगा दी। फलतः कुछ रास्ता साफ हुआ। लेकिन मेरे ऊपर हिंसा का इलजाम लगाकर सन् १९३८ की फरवरी में जो मेरी और किसान सभा की निन्दा का प्रस्ताव प्रान्तीय कार्यकारिणी ने खास राजेन्द्र बाबू की अध्यक्षता में पास कर दिया, उससे मेरा रास्ता कतई साफ हो गया। उन लोगों ने ही किसान सभा को कांग्रेस से अलग सिद्ध कर दिया। इसका खूब प्रचार भी किया, उनके ही आदमी कहने लगे कि अमुक व्यक्ति किसान सभावाले हैं और अमुक कांग्रेसी। मैंने उस प्रस्ताव के बाद प्रान्तीय कार्यकारिणी से इस्तीफा दे दिया।

"अब जरा 'लठ हमारा जिन्दाबाद' या 'डंडा कल्ट' की बात सुनिये। वह मेरे संबंध में एक ऐतिहासिक चीज हो गई है। उसकी ओर न सिर्फ कार्यकारिणी के उक्त प्रस्ताव में इशारा था। प्रत्युत कानपुर में एक लम्बा वक्तव्य देकर स्वयं बाबू राजेन्द्र प्रसाद ने मेरे सम्बन्ध में उसका स्पष्ट उल्लेख किया था। कहा गया कि मैं किसानों से कहता फिरता था कि जमींदारों से साफ कह दें कि कैसे लोगे मालगुजारी, 'लठ हमारा जिन्दाबाद'। मगर मेरी सभी स्पीचों की शॉर्टहैंड रिपोर्ट तो बराबर दो सी० आई० डी० के इन्सपेक्टर लिखा करते थे। अतः मैंने ललकारा कि उसे पढ़कर यह चीज सिद्ध कीजिये तब जानूँ। श्री महादेव देसाई ने 'हरिजन' में इसी बारे में लम्बा लेख मेरे ही सम्बन्ध में लिखा था। मैंने उनका जवाब भी करारा दिया था। वह हरिपुरा कांग्रेस के समय अखबारों में निकला था। न जाने यह चीज कहाँ से और कैसे गढ़ी गई। मिथ्या प्रचार की हद की गई। वाह रे सत्य! धन्य रे अहिंसा!"

"लेकिन यह जरूर है कि मैं किसानों को आत्मरक्षार्थ लाठी या डंडा चलाने को कहता था। करता भी क्या? किसान थर्राते रहते, जमींदार के अमले जूतों तथा डंडों से उन्हें दुरुस्त करते और घर की चीजें लूट लेते थे। यहाँ तक कि बहू-बेटियों की इज्जत नहीं बच पाती थी। मैंने हजारों सभाओं में उन्हें समझाया सही कि यह गैरकानूनी काम है। इसे बन्द कीजिये, नहीं तो ठीक न होगा मगर सुने कौन? किसान तो मुकाबिला करेंगे नहीं। वे गरीब हैं, कमजोर हैं, इसीलिये केस में भी पार पायेंगे नहीं। फिर क्या परवा, यही वे सोचते थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"तब मैंने आत्मरक्षार्थ डंडे आदि का प्रयोग किसानों को खुलेआम बताना शुरू किया। जाप्ता फौजदारी कानून इसका समर्थन करता है यह भी उन्हें समझाया। फिर तो किसानों की आँखें खुलीं। दो एक जगह शैतानों को उन्होंने दुरुस्त किया। फलतः वह शैतानियत और वह आतंक राज्य सदा के लिए खत्म हुआ। यही है मेरा डंडावाद या डंडाकल्ट। इससे गाँधीवादी बिगड़े जरूर। यहां तक कि मेरे साथी लोग भी कांय-मांय करने लगे कि अब इसे बन्द करें। मगर मैंने साफ कह दिया कि यह उपदेश तो किसानों के लिए अमृत हैं। इसे क्यों छोड़ूँ। यह तो कानूनी हक है। फिर क्या बात? लोगों ने कहा, कांग्रेस इसे रोकती है। मैंने जवाब दिया कि वह अहिंसा केवल आजादी की लड़ाई के लिए ही हैं।

"मगर इधर कुछ ऐसा हो गया था कि सर्वत्र अहिंसा के नाम पर नामर्दी का पाठ पढ़ाया जाने लगा था कि कहीं मत बोलो। हालाँकि, गाँधीजी ने ही अहिंसा के नाम पर नामर्दी की अपेक्षा हिंसा को अच्छा कहा है, सो भी बार-बार। मगर सुनता कौन था? लेकिन खुशी है कि इसी १९४० में पुनः वर्किंग कमिटी ने साफ कह दिया है कि अहिंसा का प्रयोग सिर्फ आजादी के युद्ध के ही लिए है, न कि और जगह के लिए भी। आज हमारे आका लोग भी इसे पसन्द करते हैं। क्योंकि उन्हें जर्मनी के विरुद्ध सशस्त्र युद्ध की जरूरत है न?

"यही है मेरा डंडावाद और डंडाकल्ट। असल में मैं तो दंडी संन्यासी कहलाता ही हूँ। मेरे पास बांस का एक दंड सदा रहता है। मगर वह अब तक धार्मिक था। लेकिन अब वह राजनीतिक और आर्थिक हो गया। इसीलिए उसी बुद्धि से मैंने उसे अभी तक अपना रखा है। इस डंडावाद ने उसमें मेरा नया प्रेम और मेरे लिए नया महत्त्व पैदा कर दिया है। इसी के सम्बन्ध में शायद यह डंडावाद मेरे नाम से प्रसिद्ध होने को था।"

लड़ाकू किसान आन्दोलन के संगठनकर्त्ता के रूप में स्वामी जी की भूमिका और राष्ट्रीय आन्दोलन में मूलभूत वामपंथी नेता के रूप में सर्वविदित हैं। इसने स्वतंत्रता और समाजवाद के संघर्ष में एक स्वर्णिम अध्याय को निरूपित किया। इसका अध्ययन एक उच्चस्तरीय प्रेरणा है। लेकिन उस मार्गी को, जो स्वेच्छा-पूर्वक धार्मिक और घोर अध्यात्मवादी व्यक्ति होकर भी समाजवाद और साम्यवाद में विश्वास करे, यह बहुत ही आनन्ददायक विषय बन जाता है।

उन्होंने एक किसान सम्मेलन में धर्म के बारे में बोलते हुए कहा कि "मेरे जानते समाजवाद में धर्म का स्थान नहीं हो सकता। चाहे उसका विरोध वह भले ही न करे, धर्म का सम्मिश्रण होते ही उसमें गड़बड़ियाँ आयेंगी और अपने लक्ष्य से वह च्युत हो जायगा। भौतिक दर्शन जितने हैं, उनमें यही सबसे सही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मगर धर्म को उसमें स्थान न होने से मेरे जैसों के लिए उसमें जगह नहीं है।" उन्होंने कहा कि उस समय से मैंने कभी भी समाजवाद और मार्क्सवाद की आलोचना नहीं की। उन्होंने आगे कहा :—

"यह धर्म का प्रश्न इतना पेचीदा और खतरनाक है कि लोगों को इससे भ्रम हो सकता है। उस भाषण से कई लोग भ्रम में पड़े भी हैं, यह मैं जानता हूँ। इसलिए प्रसंगवश यहाँ उसके बारे में दो-चार शब्द कह देना चाहता हूँ। कहते हैं कि आत्मा की भूख की शान्ति के लिए धर्म का आविष्कार हुआ। फिर उसके दो आकार हुए—एक वैज्ञानिक और दूसरा व्यावहारिक। पहले में दर्शन और दार्शनिक विचार आ जाते हैं। उन्हीं विचारों को अमली जामा पहनाने के सिलसिले में बाहरी तथा व्यावहारिक पूजा-पाठ आदि आते हैं।

"चाहे, शुरू में इसका कुछ भी रूप क्यों न रहा हो, इसका उद्देश्य भी कितना ही पवित्र और ऊँचा क्यों न रखा गया हो और कुछ लोगों ने ठीक वैसा ही अमल भी क्यों न किया हो; लेकिन इन सब बातों का हमें आज कतई पता नहीं है। उन्हें न हमने देखा था, और न आज ही देखते हैं। प्रत्यक्ष तो यही देखते हैं कि धर्म में तर्क, दलील और विचार को स्थान नहीं है। यही उसका व्यावहारिक रूप है। पंडित, मौलवी और धर्माचार्य जो कहें, उसे आँख मूंद कर मानो। नहीं तो तुम्हारे विरुद्ध फतवा निकल जायगा। चीं-चपड़ मत करो। 'ऊँट बिलाई ले गई तो हांजी, हांजी कहना।' ये धर्माचार्य, गुरु, पंडित वगैरह भी कैसे कि अकल से उन्हें ताल्लुक ही नहीं। और ये चीजें पुश्तैनी हो जाने से उनके लिए पढ़ना-लिखना भी जरूरी नहीं। फलतः वे लोग प्रायः निरक्षर भट्टाचार्य ही होते हैं। मगर मंतर और दीक्षा देकर बैकुंठ भेजने का, बहिश्त पहुँचाने का दावा जरूर रखते हैं। यहाँ तक कि सर्वाधिकार संरक्षित। फलतः धर्म के नाम पर सबसे ज्यादा अँधेर खाता देखते हैं। वह व्यक्तिगत न होकर सामूहिक हो गया है। भेड़ों की ही तरह हिन्दू, मुस्लिम, क्रिस्तान आदि के समूह होते हैं। इस प्रकार धर्म दिल की चीज न होकर बाहरी और दिखावटी वस्तु हो गई है। हम शिखा और दाढ़ी से ही प्रायः हिन्दू और मुसलमान का परिचय करते हैं।

"मगर मैं इस धर्म को कतई नहीं मानता। बल्कि कह सकते हैं कि मैं ऐसे धर्म को समाज, देश और मानवता का शत्रु मानता हूँ। यह हमारी आजादी का भी बन्धक है। जहाँ विवेक को स्थान नहीं और फतवा या आदेश चले, मैं उस चीज को नहीं मानता। यदि बुद्धि ही कुंठित कर दी गई और विवेक को ही स्थान न रहा, तो फिर सब खत्म ही हो गया; मैं विवेक के ऊपर लगाम और जाब चढ़ाना बर्दाश्त नहीं कर सकता और जो बात बुद्धि में न समाये, विवेक में न

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आये, उसे धर्म के नाम पर मानने, मनवाने का मैं सख्त दुश्मन हूँ। इसीलिए बच्चों को धार्मिक शिक्षा—जिस मानी में आज धर्म कहा जाता है, उसकी शिक्षा—देने का विरोधी हूँ। धर्म तो मेरे विचार से सोलहों आने व्यक्तिगत वस्तु है, जैसे—अक्ल, दिल, आँख, नाक आदि। दो आदमियों की एक ही बुद्धि या आँख नहीं हो सकती। तो फिर धर्म कैसे दो आदमियों का एक होगा? और जैसे रोगग्रस्त शरीर में अन्न की भूख नहीं होती उसी तरह पराधीन तथा विवेक-हीन आत्मा में धर्म या अध्यात्म की भूख कहाँ, कि उसकी शान्ति का यत्न हो? इसीलिए मेरा धर्म विचित्र है। उसके सम्बन्ध में लोगों को भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए।"

ऊपर लिखित बातों को देखने से यह कहा जा सकता है कि स्वामीजी ने, जो गहरे रूप से धार्मिक व्यक्ति थे, यह अनुभव किया कि जन-सेवा ही धर्म का सर्वोत्तम रूप है। इसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने वर्ग-संघर्ष में प्रवेश किया, जमींदारों, पूँजीपतियों, प्रतिक्रियावादी राजनीतिज्ञों के खिलाफ लड़े और समाजवाद को अपना लक्ष्य माने। भगवान और धर्म में विश्वास को उन्होंने अपना व्यक्तिगत विषय माना और यह किसी भी तरह राजनीतिक और क्रांतिकारी कार्यकलापों में हस्तक्षेप नहीं कर सकता। समाजवादियों और कम्युनिस्टों के साथ बिलकुल घुल-मिलकर काम करने में उन्होंने कभी दिक्कत नहीं महसूस की। उन्होंने अक्टूबर क्रांति के अनुभवों, मार्क्स, एंगिल्स और लेनिन की शिक्षा और इनसे सम्बन्धित तमाम क्रांतिकारी आन्दोलन के अनुभवों का अध्ययन किया। ये उस सोवियत भूमि के बड़े प्रशंसक रहे, जिसने मानव के मानव द्वारा शोषण को दूर किया और इस धरती पर मानव जाति के लिए स्वर्ग का निर्माण किया। सिर्फ इतना ही नहीं, बल्कि इन्होंने वर्तमान धार्मिक अन्याय की वर्तमान कार्यविधि का कड़ा विरोध किया। इन्होंने इनको समाज, देश और मानव जाति का दुश्मन माना। स्वामी जी एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्होंने भौतिकवाद को स्वीकार नहीं किया, लेकिन मार्क्सवाद के भौतिकवादी दर्शन को आगे बढ़ाने वाली क्रांतिकारी प्रक्रियाओं का पूरा-पूरा समर्थन किया।

यद्यपि वे धर्म से जुड़े रहे लेकिन यह उनका व्यक्तिगत विश्वास था। आज व्यवहार में प्रचलित धर्म का उन्होंने कड़ा विरोध किया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसान संघर्ष की राजनीति और स्वामी सहजानन्द

—डॉ० खगेन्द्र ठाकुर

भारत की सामाजिक बनावट में किसानों का प्रमुख स्थान है, इसलिए देश के सामाजिक और राजनीतिक विकास में किसानों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। आज भी हमारे समाज में संख्या की दृष्टि से किसान आबादी का सबसे बड़ा तबका है। इतना ही नहीं, उत्पादन का भी बड़ा क्षेत्र यही है। आबादी और उत्पादन में किसानों की व्यापकता का अनुभव तब और होता है, जब हम जीवन तथा उत्पादन के दूसरे क्षेत्रों पर नजर डालते हैं और पाते हैं कि उनका आधार भी मुख्यतः किसान-जीवन और कृषि-व्यवस्था है। उदाहरण के लिए शहर के विभिन्न सरकारी—गैरसरकारी कार्यालयों में काम करने वाले कर्मियों पर गौर करें। उनमें बहुत कम हैं, जो मूलतः शहरी हों। वास्तविकता यह है कि इन कर्मियों का विशाल बहुमत, कम-से-कम पचहत्तर-अस्सी प्रतिशत गाँव के किसान परिवारों से आया है और गाँव के जीवन एवं आर्थिक प्रणाली से अब भी जुड़ा हुआ है। बहुतेरे ऊँचे पदाधिकारियों, डॉक्टरों, वकीलों, शिक्षकों की भी यही स्थिति है। इनमें से जो अधिक बचत कर लेते हैं, वे हाल-हाल तक अपने अतिरिक्त धन को जमीन खरीदने में लगाते रहे हैं। जब भूमि-मुक्ति-आन्दोलन तेज हुआ और भूमि हदबंदी कानून बने तो यह प्रक्रिया मंद पड़ी। औद्योगिक मजदूर-वर्ग पर गौर करें तो उसमें भी किसानों के बेटे ही भारी तादाद में मिलेंगे। यह अस्वाभाविक नहीं है कि भारत का मजदूर-वर्ग अनेक अवसरों पर किसानों की तरह रूढ़िवादी चेतना का परिचय दे बैठता है। मजदूरों के किसान-आधार के कारण ही उनमें मजदूर-वर्ग की विचार धारा का प्रचार करने में बेहद कठिनाई होती है। पुलिस-फौज आदि में भी अधिकतर किसानों के बेटे ही हैं। ग्रामीण-आधार या कृषि-आधार वाले वे विभिन्न श्रेणियों के कर्मचारी, मजदूर आदि अक्सर दुहरे चरित्र का इजहार करते हैं—एक तरफ अपनी सेवा-भक्ति की लड़ाई मजदूर और मेहनतकश के रूप में लड़ते हैं, दूसरी तरफ कभी-कभी अपने किसानी स्वार्थ और समाज के कारण मजदूर-वर्ग के दुश्मनों का भी साथ दे देते हैं।

पिछले दस-बारह वर्षों के राजनीतिक आन्दोलनों में शहर के मजदूरों, कर्मचारियों, शिक्षकों और छात्रों तथा गाँव के किसानों के बीच पारस्परिक प्रभाव की दुहरी प्रक्रिया देखने को मिली है। उसे यों कहा जा सकता है कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कभी किसानों के शहरी बेटों ने गांव में किसानों की राजनीति को प्रभावित किया है, तो कभी गांव के किसानों ने अपने परिवारों के शहरी लोगों को। १९६६-६७ के दौर में शहरी मध्य वर्ग और सरकार के बीच लगातार टकराव हुए। इस टकराव में सरकार के खिलाफ लड़ने में छात्रों की भी भूमिका थी। यह टकराव इतना गहरा हो गया कि १९६७ का भव्य चुनाव आते-आते ग्रामीण आबादी का अच्छा खासा हिस्सा इस टकराव से प्रभावित हो गया और कांग्रेस नौ राज्यों में हार गयी। १९७४ के सम्पूर्ण क्रान्ति आन्दोलन में शहरी मध्यवर्ग के विपरीत गाँव के मेहनतकशों ने सम्पूर्ण क्रान्ति के प्रतिक्रियावादी आन्दोलन का प्रतिरोध किया और उसे पीछे ढकेल भी दिया। फिर १९७६-७७ आते-आते शहरी और ग्रामीण आबादी की चेतना लगभग एक हो गयी, जिससे औचट ही जनता पार्टी गद्दी पर पहुँच गयी।

इस अनुभव को और पीछे जाकर राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में भी देखा जा सकता है। हमारे स्वाधीनता-संग्राम का आधार तभी मजबूत होता है, जब उसमें किसानों के हित का सवाल शामिल होता है। १९१७ में गांधी जी ने चम्पारण की यात्रा की और नील-उत्पादक किसानों के दुःख-दर्द की कथा उन्होंने सिर्फ सुनी। लेकिन यही एक उल्लेखनीय घटना बन गयी। १९२१ के असहयोग-आन्दोलन के दरम्यान बारदोली सत्याग्रह का मुख्य मुद्दा किसानों पर लादे गये कर-भार का विरोध था। उसने पहली बार किसानों को स्वाधीनता-संग्राम की ओर प्रेरित किया। गांधी जी की योजना के विपरीत किसान आन्दोलन कई राज्यों में उत्तर से दक्षिण तक फैल गया। उत्तर प्रदेश का चौरी-चौरा कांड और आन्ध्र प्रदेश का गुंटूर-कांड मशहूर है। उसके बाद तो किसान-जागरण का सिलसिला दिखायी पड़ता है, जिसके साथ स्वाधीनता-संग्राम अधिकाधिक व्यापक, गहन और तीव्र होता चलता है।

किसान जागरण और राष्ट्रीय स्वाधीनता-संग्राम के घनिष्ठ सम्बन्ध के अध्ययन-प्रसंग में ही स्वामी सहजानन्द सरस्वती का व्यक्तित्व उभरता है। स्वामी जी १९२० से ही कांग्रेस के जरिये राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने लगे थे। इसी दौर में उनका ध्यान भूमिहारों के उत्थान की ओर गया। उन्होंने १९२७ में बिहटा में अपने आश्रम की स्थापना की, जिसका उद्देश्य था मुख्य रूप से भूमिहारों के बच्चों को संस्कृत पढ़ाना। लेकिन बिहटा में रहते हुए स्वामी सहजानन्द को किसानों की दयनीय स्थिति की जानकारी हुई। उन्होंने देखा कि किसानों का भयंकर शोषण हो रहा है। उनसे जबर्दस्ती काम लिया जाता था। मालगुजारी या टैक्स मुद्रा के बदले अनाज के रूप में वसूल किया जाता था। उन्होंने सोचा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि किसानों की दशा में सुधार का उपाय करना चाहिए। उन्होंने १९२८ में पश्चिमी पटना किसान-सभा की स्थापना की। इस संगठन के जरिये किसानों को जगाने और हक के लिए एकजुट करने का प्रयत्न शुरू हुआ। इसी क्रम में भूमिहार जमींदारों से स्वामी सहजानन्द का टकराव शुरू हो गया। उस समय उन्होंने किसानों को संघर्ष का जो रूप बताया, वह नियम-कानून के दायरे के भीतर ही था, फिर भी जमींदारों और प्रशासन से टकराव हुए। "मेरा जीवन संघर्ष" में स्वामी जी लिखते हैं—"हमारे मस्तिष्क में जो बात थी, वह यह कि सांविधानिक दबावों के द्वारा किसानों का कुछ भला किया जाए, तथा उनकी शिकायतें दूर की जाएँ।" स्वामी जी का उद्देश्य किसानों को राहत दिलाना था और इसके लिए 'सांविधानिक दबाव' देना ही काफी होगा, यह समझ उस समय उनकी थी, हालाँकि आगे चलकर संघर्ष के अनुभवों ने उनकी समझ को बिलकुल बदल दिया।

स्वामीजी ने जो संघर्ष छेड़े, उनकी ओर राज्य के दूसरे हिस्सों का और राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाले दूसरे लोगों का भी ध्यान गया। उपर्युक्त संघर्षों के दौर में ही १९२९ में बिहार प्रान्तीय किसान सभा की स्थापना की गयी। स्वामी सहजानन्द इसके प्रथम अध्यक्ष बनाये गये और श्रीकृष्ण सिंह सचिव बनाये गये। यही श्रीकृष्ण सिंह आगे चल कर बिहार के मुख्य मंत्री बने। जब बिहार में किसान सभा की स्थापना हो रही थी, तब पूरे देश में नये सिरे से राष्ट्रीय आन्दोलन छिड़ रहा था। कांग्रेस ने पूर्ण स्वाधीनता का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया था। इस तरफ वामपंथी विचारधारा वालों का प्रभाव बढ़ रहा था। पिछले दिनों बिहार में और दूसरे राज्यों में जो किसान-संघर्ष हुए थे, उनका अच्छा फल यह हुआ कि स्वाधीनता-संग्राम में किसान भी पहले से ज्यादा संख्या में दूर-दूर तक शामिल हुए, जिससे राष्ट्रीय आन्दोलन का जनाधार विस्तृत हो गया। मजदूर तो लगातार कार्रवाई में थे ही। १९३१ में जो आन्दोलन छिड़ा उसमें नमक-कर के साथ किसानों के भूमि-कर का सवाल भी शामिल था। स्वामीजी लिखते हैं—"सन् १९३० के सत्याग्रह ने किसानों में अभूतपूर्व जागृति भर दी थी। इसके परिणाम से किसानों की समस्या भी मुख्य रूप से उभर कर सामने आयी।" १९३० में बम्बई में जो कांग्रेस का अधिवेशन हुआ उसमें स्वीकृत प्रस्ताव में आजादी के आर्थिक पहलू को भी स्वीकार किया गया। उसमें कहा गया—"भारतीय साधारण जन की दरिद्रता का कारण मात्र विदेशी शोषण नहीं, वरन समाज का वर्त्तमान सामाजिक तथा आर्थिक ढांचा है।" १९३१ के कराँची अधिवेशन का प्रस्ताव तो अपनी प्रगतिशीलता के लिए प्रसिद्ध ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन सब के बावजूद यह सही है कि कांग्रेस वर्ग-संघर्ष को स्वीकार करने को तैयार नहीं थी, बल्कि वह वर्ग-संघर्ष का विरोध करती थी। इसलिए स्वामीजी तथा उस समय वामपंथी चेतना-सम्पन्न युवक संघर्ष के लिए नये राजनीतिक मंच की तलाश में थे। इसी क्रम में १९३१ में ही कराँची अधिवेशन के बाद बिहार सोशलिस्ट पार्टी की स्थापना की गयी। उधर जमीन्दार भी सचेत थे। उन्होंने युनाइटेड पार्टी बनायी थी। १९३३ में एक फर्जी किसान सभा का अधिवेशन भी वे कर रहे थे, जिसमें अचानक स्वामी सहजानन्द के पहुँच जाने से उनकी साजिश नाकाम हो गयी।

१९३४ में बिहार सोशलिस्ट पार्टी और किसान सभा ने मिल कर काम करने का फैसला किया। गाँधी जी के रास्ते से स्वामीजी का मोह-भंग हो चुका था। वे इस राय के हो गये कि किसानों को उग्र संघर्ष के लिए तैयार होना चाहिए और आर्थिक स्वार्थ के अतिरिक्त राजनीतिक उद्देश्य से भी लड़ना चाहिए, ताकि राजसत्ता पर भी उनका अधिकार हो सके। उन्होंने महसूस किया कि सुधारवादी ढंग के आन्दोलन का दौर समाप्त हो गया। उनके शब्द हैं—"किसानों को अपनी सुरक्षा का पूरा अधिकार है, उन्हें संगठन करने का अधिकार है। वे अपनी दशा सुधारना चाहते हैं तथा हिंसा से बचना चाहते हैं। पर उनके लिए कुछ नहीं किया गया, तो किसान बेसब्र हो जाएँगे, जैसा रूस में हुआ। रूस में किसान जाग उठे और वहाँ सरकार किसानों और मजदूरों के हाथों में है।"

स्वामीजी अपने अनुभव से ही उस समझ तक पहुँचे थे। सोवियत संघ का उदाहरण सामने था ही, उसने समझ को बल पहुँचाया। लेकिन महात्मा गाँधी उस समझ तक नहीं पहुँचे। इसलिए गाँधीजी से उनका मतभेद हो गया। स्वामीजी ने लिखा है—"इस बात ने मुझे गहरा धक्का पहुँचाया, मेरी आँखें खुल गयीं। गाँधीजी का यह सुझाव कि जमींदार किसानों की शिकायतों को दूर कर देंगे......महाराजा का कांग्रेसी मैनेजर उनकी तकलीफों को दूर कर देगा, उससे पता चलता है कि जमीन्दारी की क्रूर व्यवस्था की कार्य-पद्धति से गाँधीजी अनभिज्ञ थे। गाँधीजी के प्रति मेरी सारी श्रद्धा समाप्त हो गयी और उस दिन से मैं सदा के लिए गांधी जी से अलग हो गया, यह दूसरा मानसिक भूकम्प है।"

यह स्पष्ट है कि स्वामीजी के लिए सर्वोपरि था किसानों को शोषण से मुक्त करना और राष्ट्रीय स्वाधीनता को वे किसानों की मुक्ति से अभिन्न मानते थे। कांग्रेस के लिए यह बात नहीं थी। आज यह समझना आसान है कि कांग्रेस की समझ कितनी गलत थी। आजादी किसके लिए? इस सवाल को जान-बूझकर टालने का नतीजा है कि आजादी का भोग शोषण करने वाले ही आज तक कर रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९३७ में अनेक प्रांतों में कांग्रेसी मंत्रिमंडल बना। बिहार में डा० श्रीकृष्ण सिंह मुख्यमंत्री बने थे, जो १९२९ में स्वामीजी के साथ किसान सभा के सचिव थे। लेकिन मुख्यमंत्री बनने के बाद उन्होंने कहा—"हमारा उद्देश्य जमींदारी व्यवस्था में सुधार करना है, न कि उसे समाप्त कर देना।" इतना ही नहीं, किसान नेताओं की गतिविधियों पर पाबंदी लगा दी गयी, यहाँ तक कि स्वामी सहजानन्द सरस्वती को भी सारण और चम्पारण जाने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इन घटनाओं से कांग्रेस से स्वामी जी का पूरी तरह मोह-भंग हो गया। उन्होंने समझ लिया कि कांग्रेस से किसानों का हित होने वाला नहीं है। इसलिए किसान-संघर्ष को जारी रखने के लिए वे कांग्रेस से अलग हो गये। इसी दरम्यान सोशलिस्टों की ढुल-मुल भूमिका से भी उनका परिचय हुआ। वे भी वर्ग-संघर्ष में उतरने को तैयार नहीं थे, इसलिए ७ नवम्बर १९३९ को उन्होंने सोशलिस्ट पार्टी से भी सम्बन्ध-विच्छेद कर लिया। २६ नवम्बर १९३९ को पटने में किसानों का विशाल प्रदर्शन किया गया। इसके बाद स्वामी जी ने अखिल-भारतीय दौरा किया। उन्होंने दूसरे राज्यों में किसानों की दशा और आन्दोलन की स्थिति का अध्ययन किया। इस दौरे में प्राप्त अनुभव के आधार पर उन्होंने कहा—"इन वर्षों के अनुभव से मुझे विश्वास हो गया है कि कम्युनिस्ट किसानों के कल्याण के लिए अधिक उत्सुक और प्रयत्नशील हैं—सोशलिस्टों से कहीं अधिक किसानों की दशा सुधारने में कम्युनिस्ट प्रयत्नशील हैं।" इसके बाद कम्युनिस्टों से स्वामी जी का सम्पर्क और बढ़ता गया। सन् १९४०-४८ के दरम्यान जेल में यह सम्पर्क घना बन गया। इसी दरम्यान उन्होंने मार्क्सवादी साहित्य का अध्ययन भी किया। मार्क्सवादी दृष्टिकोण की अनेक बुनियादी मान्यताओं का उनकी चिन्तन प्रणाली पर गहरा असर पड़ा। लेकिन इस असर का असली कारण यह था कि उनके अनुभवों से मार्क्सवाद की स्थापनाएँ मेल खाती थीं।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती के किसान-संघर्ष का पहला मुद्दा था किसानों के दिल से भय को निकाल बाहर करना। उन्होंने अनुभव किया था कि "किसान के कलेजे में भय का भूत इस कदर घर कर गया है और उसने उसे इतना दबा लिया है कि इन बातों के बारे में तो क्या, मामूली शिकायतों तक के सम्बन्ध में वे जबान खोल नहीं सकते।" (किसान क्या करें ?) "जो पैदावार का बारह आना हिस्सा तक और कभी-कभी सोलह आने भी जमीन्दार के हवाले इसी डर के मारे करने को तैयार हो जाते हैं और जबान भी हिला नहीं सकते, क्या वही यह थर्राने वाले उन्हीं शोषकों से हिसाब की मांग पेश करेंगे ? इसलिए असली चीज तो है भय का भूत। जब तक उसकी दवा नहीं होती, कुछ होने जाने का नहीं।" (वही)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(वही)। भय दूर करने लिए उन्होंने किसानों को उनकी महत्ता और भक्ति का एहसास कराने की कोशिश की। किसान यानी "खेती करने वाला" किसी से क्यों डरे ? वह यदि गेहूँ, बासमती; दूध, मलाई, घी आदि पैदा करना बन्द कर दें, तो अमीरों और हाकिम-हुक्कामों का काम कैसे चलेगा ?

किसानों को उनकी ताकत का एहसास कराने के लिए वे हाथी का उदाहरण अक्सर देते थे। इतना बड़ा और शक्तिशाली जानवर हाथी एक कमजोर फीलवान के इशारे पर उठता-बैठता और चलता-फिरता है। जब उसे अपनी ताकत का एहसास होता है, तो स्वच्छन्द होकर चल पड़ता है। ऐसे स्वच्छन्द हाथी को पागल कहा जाता है, लेकिन असल उसी समय उसका दिमाग दुरुस्त रहता है, क्योंकि उसे अपना ज्ञान रहता है। स्वामी जी ने किसानों का आह्वान किया कि अपनी शक्ति को पहचानें और जमीन्दारों को अपनी छाती पर से उठा कर फेंक दें, जैसे हाथी ताकत का बोध होने पर पीलवान को पीठ पर से फेंक देता है।

स्वामी जी इस लड़ाई में विचारों की भूमिका का सवाल भी उठाते हैं। वे कहते हैं कि "कमाने वाली जनता" अपनी अपार शक्ति को महसूस करने के बाद "उन लोगों का जादू उतार फेंकती है, जो धर्म तथा विवेक के नाम पर, भाग्य और भगवान् के नाम पर, 'जो इस जन्म में तकलीफ भोगेगा, उसे अगले जन्म में आराम मिलेगा' इस प्रकार के ख्याली और दिमागी भविष्य के नाम पर, उसे आगे बढ़ाने से रोकते और भ्रम में डाल रखते हैं।" (किसान क्या करें ?) आगे चल कर वे कहते हैं—"गुरु, पंडित, पीर और मौलवी भी अमीरों की ही वकालत करते हैं और कहते हैं कि उनसे दबना चाहिए, डरना चाहिए। उन्हें भगवान ने बड़ा और तुम्हें छोटा बनाया है।" (वही) उन्होंने साफ-साफ कहा कि यह दकियानूसी ख्याल खुराफात की जड़ है। इसलिए उससे मुक्ति शोषण से मुक्ति के लिए अनिवार्य है।

शोषण से मुक्ति के संघर्ष के रूप के बारे में भी उन्होंने स्पष्ट कहा कि "शठे शाठ्यम् समाचरेत्"। वे जमीन्दार शठ हैं, इसलिए वे प्रार्थना करने से मानते नहीं। उनके शब्द देखिए—"हांड़ी, घड़ा, दिया वगैरह जिस चाक (चक्र) पर कुम्हार बनाता है, उस पर मिट्टी रख के यदि हाथ जोड़े और प्रार्थना करे—माँगे—तो एक भी दिया नहीं मिलता। एक हड़िया नहीं बनती। एक फूटा घड़ा भी तैयार नहीं होता। मगर छिद्र में डंटा घुसेड़ के खूब जोर से घुमाइए और हाथ लगाइए। फिर जो चाहिए बना लीजिए। यही दुनिया का तरीका है, यही संसार का नियम है।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११ जनवरी १९४८ में किसानों की विशाल सभा को गया गिरिजा मैदान में सम्बोधित करते हुए स्वामी सहजानन्द सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी अपने अनुभव से यहाँ तक पहुँचे थे कि किसान-मजदूर राज कायम करना होगा, तभी मेहनत करने वाले शोषण से मुक्त हो सकेंगे। ध्यान देने की बात है कि ये बातें वे न केवल अंगरेजों के जमाने में, बल्कि आजादी मिलने के बाद भी कह रहे थे। इस तरह किसानों को सहूलियत दिलाने के संघर्ष को ऊँचे स्तर के राजनीतिक संघर्ष तक पहुँचाया। स्वामी जी के अनुभव आज भी काम के हैं। किसानों से बात करने की उनकी भाषा और लहजे को आज भी किसान कार्य-कर्त्ताओं एवं नेताओं को सीखना चाहिए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द—एक संस्मरण

— रतन राय

जब १९३८ में मैं मुंगेर कॉलेज में दाखिल हुआ तो राजनीति के साथ मेरी भी ताक-झाँक शुरू हो गई। जाहिर है उम्र के लिहाज से उग्र (Militant) और वामपंथी बातें बहुत पसन्द आती थीं।

उस समय बिहार में अँगरेजी शासन के मातहत कांग्रेसी मंत्रिमंडल डॉ० श्रीकृष्ण सिंह के मुख्य-मंत्रित्व में चल रहा था। किसान आन्दोलन का जोर था। बड़हिया के किसानों का आन्दोलन चल रहा था जिसे जिला कलक्टर के सामने धरना के रूप में सम्पादित किया गया।

हमारे राजनैतिक दादा लोग भी धरना में शामिल थे। एक डॉ० अनिल मित्रा गिरफ्तार होकर जेल गए तथा का० विनोद मुखर्जी पुलिस की लाठी खाकर घायल हुए। शहर में इस घटना से कुछ गर्मी पैदा होने लगी।

इसी समय स्वामी सहजानन्द सरस्वती के मुंगेर आगमन का ऐलान हुआ। मुझे बड़ी उत्सुकता हुई कौन हैं यह स्वामी जी। बंकिम चन्द्र के आनन्द-मठ में भी आजादी का आन्दोलन चलाने वाले स्वामी जी लोग ही थे। फिर मिटिंग हुई। रामलीला मैदान में लोगों की भीड़ थी। चौकियों से मंच बनाया गया था। स्वामी जी भाषण के लिए खड़ा हुए। गेरुआ वस्त्र था जरूर लेकिन बदन बिल्कुल खाली। गेरुआ चादर और गेरुआ लुंगी। सिर के बाल बिल्कुल छिले हुए। भवें बिल्कुल खिची हुई, मानों आँखों से ही डांट रहे हैं। रामायण, महाभारत में मुनियों के बारे में पढ़ा था उसमें कुछ तो बहुत ही क्रोध सम्पन्न होते थे। लगता था उस समय का कोई मुनि आज आ गए हैं। उन्होंने अपने भाषण में डांट-डांट कर बातों को रखा।

स्वामी जी का प्रथम दर्शन मुझपर एक अमिट छाप रख गया। मैंने राजनीति के उन शुरुआती दिनों में जब राजनीति काफी रंगीन मालूम पड़ रही थी, स्वामी जी को "आनन्द मठ" का नायक जो उस अवसर पर आ धमके हों अथवा रामायण-महाभारत काल के कोई मुनि का अवतरण के रूप देखा था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust, Funding IKS-MoE-Grant-2

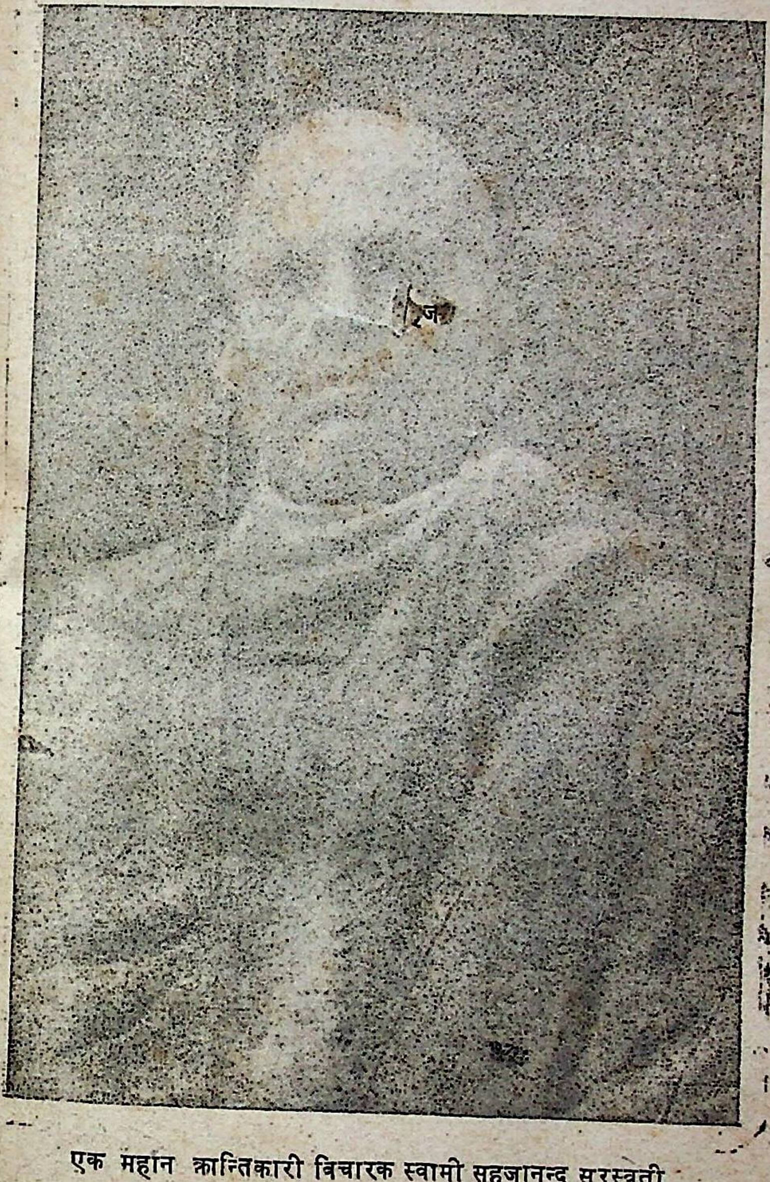

एक महान क्रान्तिकारी विचारक स्वामी सहजानन्द सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब १९४० ई० में मैं भारत सुरक्षा कानून के तहत गिरफ्तार होकर हजारी-बाग जेल पहुँचा तो स्वामी जी भी युद्ध-विरोधी अपने विचारों को भाषण में व्यक्त करने की सजा पाकर वहीं थे। सुनील मुखर्जी भी राजनैतिक बन्दी बनकर वहीं नजरबन्द थे। स्वामी जी जब सुनील मुखर्जी आदि साथियों से बात-चीत करते थे तो उनके व्यंग्य और कटाक्ष का मैं साश्चर्य मजा लिया करता था। वहाँ मुझे आश्चर्य और तब हुआ जब उन्हें धारा प्रवाह अँगरेजी बोलते तथा अँगरेजी की किताबें उठाकर पढ़ने के लिए ले जाते देखा। मैं समझ गया कि स्वामीजी ध्यान से नहीं अध्ययन से स्वामी जी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसानों के लोकप्रिय नेता स्वामी सहजानन्द

—भोगेन्द्र झा

"मैं ईश्वर को ढूँढ़ने चला था। मैं ने उसे जंगलों और पहाड़ों में ढूँढ़ा। ग्रन्थों और पुस्तकों में भी कम नहीं ढूँढ़ा, मगर मैं उसे नहीं पा सका। अगर वह कहीं मुझे मिला तो किसानों में। किसान ही मेरे भगवान हैं और उन्हीं की पूजा किया करता हूँ। और यह तो मैं वर्दाश्त नहीं कर सकता कि कोई मेरे भगवान का अपमान करे"। किसानों के बारे में यह मार्मिक उद्गार—एक क्रान्तिकारी उद्घोष, १९३८ ई० के मार्च महीने में मधुबनी के एक विशाल सम्मेलन में मैंने सुना। ये उद्गार थे किसान नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती के।

स्वामी जी के भाषण सुनने का यह मेरा पहला अवसर था। उस समय मैं नवम् वर्ग का छात्र था। "किसान-रूपी भगवान का अपमान बर्दाश्त नहीं कर सकता" इस कथन के साथ ही स्वामी जी का समस्त रोष अबाध गति के साथ जमींदारी-प्रथा, विभिन्न रूपों में सामन्ती जुल्म और भूस्वामियों के अत्याचारों के विरुद्ध धारा-प्रवाह भाषण के रूप में अपार जन-समूह को उद्वेलित करता रहा। अन्य श्रोताओं पर; किसान नहीं भगवान हैं" इस उक्ति का कितना असर पड़ा मैं नहीं कह सकता, मगर प्राचीन भारतीय दर्शन पर आधारित परिपक्व होती हुई मेरी अनीश्वरवादी भावना आह्लादित हो उठी। भारतीय दर्शन के मूल सूत्रों में व्यक्तिगत ईश्वर (God) के लिए स्थान नहीं।

ऐश्वर्यपूर्णता प्रदर्शित करने के लिए, श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए भगवान शब्द के प्रयोगों से संस्कृत साहित्य भरा पड़ा है। पिता, गुरु, राजा एवं अन्य श्रेष्ठ व्यक्तियों के लिए भगवान शब्द का प्रयोग सर्वविदित है। ऐसी पृष्ठभूमि में अन्न उपजाने वाला, अन्नदाता वास्तविक पालन-कर्त्ता के लिए, किसान के लिए भगवान शब्द का प्रयोग मैंने स्वामी जी का सिर्फ व्यक्तिगत उद्गार नहीं समझा। इसे मैंने अत्यन्त ही समुचित और प्राचीनतम भारतीय दार्शनिक और सांस्कृतिक परम्परा के पूर्णतः अनुकूल माना।

अन्नदाता किसान ही भगवान है, इसी समझ ने गेरुआ-वस्त्र-धारी स्वामी सहजानन्द सरस्वती को क्रान्तिकारी लहर की अगली कतार में लाकर खड़ा कर दिया। इसी भगवान के 'अपमान' को हमेशा के लिए निर्मूल करने की उत्कट अभिलाषा ने गेरुआ वस्त्रधारी संन्यासी को विश्व क्रान्ति के प्रतीक लाल झंडे के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नीचे लाकर खड़ा कर दिया था। सूई से लेकर विमान, झोपड़ी से महल, कल-कारखाने, खान, बगान तक के निर्माता, रचयिता और चालक मजदूर वर्ग के साथ अन्नदाता किसान की एकता के प्रतीक हँसुआ और हथौड़ा के क्रान्तिकारी प्रतीक को उनके हृदय का प्यारा बना दिया था।

स्वामी जी का ठिगना वदन, कठोर संयमित आहार और नियमित व्यवहार पर आधारित हल्का वजन, ताम्रवर्ण की त्वचाओं के रोम-रोम की दमक और कांतिपूर्ण ललाट पर तथा चेहरे पर की बिजली सी चमक, सब कुछ किसानों के शोषण के समूल नाश के लिए ही न्योछावर था। साधारण बोल-चाल और भाषण में भी तत्काल शोषण के खात्मे के लिए उनकी व्यग्रता ही प्रदर्शित करती थी।

१९४२ ई० के पूर्वार्द्ध की बात है। स्वामीजी जेल से बाहर आ गए थे। अपने जन्म-काल से ही गैरकानूनी स्थिति में रहती आयी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी यथास्मरण कानूनी स्थिति में नहीं आ सकी थी। ऐसे ही समय में भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के महामंत्री—पी० सी० जोशी से स्वामी जी की मुलाकात का प्रबंध किया गया। मैं भी उस बात-चीत में उपस्थित था। महामंत्री जोशी के चले जाने पर स्वामीजी ने उनके साधारण हॉफ पैंट और हॉफ शर्ट के लिवास, तेल-विहीन बाल आदि का हवाला देते हुए मुझसे कहा—"देखा, तुम्हारी पार्टी का देश भर का महामंत्री कितना सादा रहता है।" मैंने स्वामी जी से पूछा—"स्वामी जी! क्या मैं भी हॉफ पैंट और हॉफ शर्ट पहनना शुरू कर दूँ?" स्वामी जी ने कहा—"अरे तुम तो सादा हो ही। अब क्या जुल्हऊ धोती भी छोड़कर नंगे हो जाओगे? और स्नेहवश एक हल्का तमाचा दिया।

१९४४ ई० में मैं जेल से बाहर आया। स्वामी जी कमला-कोशी बाढ़-पीड़ित क्षेत्रों के निरीक्षण हेतु दरभंगा-मधुबनी क्षेत्र में पधारे थे। उत्तर विहार सहायता समिति के अध्यक्ष स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद एवं महामंत्री स्व० डा० अनुग्रह नारायण सिंह थे। मुझे उक्त सहायता समिति की ओर से दरभंगा जिला एवं सीतामढ़ी अनुमण्डल का प्रभारी बनाया गया था। स्वामी जी बाढ़ में डूबे एवं महामारियों से आक्रांत गाँवों का नाव पर मेरे तथा मेरे अन्य साथियों के साथ निरीक्षण कर रहे थे। एक तरफ गांव के आक्रान्त ग्रामीणों तथा दूसरी ओर कुछ सौ कम्युनिस्ट कार्यकर्त्ताओं द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों को देखकर स्वामी जी काफी प्रभावित हुए। उन्होंने पूछा—"क्या जी, तुम्हें फिर जेल भेज दिया गया था और जमानत पर आए हो? इस साहाय्य कार्य से सरकार का क्या बिगड़ा है?" मैं ने कहा, यह सरकार से पूछिए "वही बतावेगी।"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुछ देर मौन रहने के बाद उन्होंने स्व० अनुग्रह बाबू का हवाला देते हुए पूछा—"अच्छा यह बताओ, तुम्हारे जैसे कट्टर कम्युनिस्ट को इस साहाय्य कार्य का प्रभारी कैसे बना दिया गया।" मैंने फिर वही उत्तर दिया— "बनाने वाले से पूछिए, वही बताएँगे।" स्वामी जी ने हँसते हुए कहा—"तुम्हारा लड़कपन नहीं गया है, गिरफ्तारी के बारे में सरकार से पूछूँ और इस प्रभारी के बारे में कांग्रेस से पूछूँ।"

१९४६ ई० में स्वामीजी किसान सभा के कार्य-क्रम के अनुसार मेरे साथ विभिन्न स्थानों का दौरा कर रहे थे। मथुरापुर थाने के उनके एक भक्त के यहाँ हमलोग ठहरे थे। वे डेढ़ सौ बीघे के एक खुशहाल किसान थे। भोर में मैदान की तरफ से स्वामी जी लौटे। उनके एक हाथ में लोटा और दूसरे में एक बैगन था। तमतमाते हुए चेहरे से रोषपूर्ण आवाज निकली—"इस बैगन का इतिहास बताओ।" उनके भक्त ने दोनों हाथ जोड़कर विनीत भाव से स्वामी जी के रोष को कम करने का प्रयास किया। कुछ देर बाद स्वामी जी ने स्वयं कहा—"तुमने एक गरीब का घर उजाड़ कर, उसकी वास की जमीन पर तुमने बैगन रोपा है। यही इस बैगन का इतिहास है।" मैदान जाते समय रास्ते में श्री बुनियादी महतो ने स्वामी जी को सारी बातें बतायी थीं। फिर स्वामी जी ने मुझसे कहा—"तुम तो खरे आदमी हो, फिर तुम इसके यहाँ कैसे ठहर गए, जो गरीबों की घरारी पर बैगन उपजाता है। मैंने कहा—'स्वामीजी अभी मैं किसान-नेता का मामूली सहायक हूँ, आप जहाँ पहुँचेंगे मैं साथ रहूँगा'।

स्वामी जी ने कहा—"इस बैगन वाली जमीन पर चाहे इनकी मर्जी से या लड़कर उस गरीब का पुनः घर बनवाओ।"

स्वामीजी ने सम्पूर्ण भारत में ख्याति प्राप्त की थी। अभी भी बिहटा आश्रम का समाचार पूछने वाले लोग हैं और स्वामीजी के सम्बन्ध में सम्पूर्ण भारत में याद करने वाले लोग मुझे मिलते रहते हैं। हमारा कर्त्तव्य होगा स्वामीजी के बचे कामों को पूरा करें। किसानों, मजदूरों एवं सामन्ती अवशेषों से कुचले गरीबों को,........मुक्ति दिलावें। यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी की विरासत

— योगेन्द्र श

पिछले कुछ समय से बिहार में बेलछी, पारसबीघा, दहिया, पिपरा जै अमानुषिक वर्बर काण्डों से बरबस स्वामीजी की याद आ जाती है। यदि आ वे जीवित होते तो इन जघन्य सामंती नरमेधों की आग में हाथ सेंकनेवाले नराध जातिवादी राजनीतिज्ञों की कुटिल चालों को विफल कर सभी जातियों औ सम्प्रदायों के शोषित-पीड़ित जनता को एकताबद्ध करने तथा पूरे ग्रामीण समा के जनवादीकरण के हमारे संघर्ष को अद्वितीय रूप से प्रेरित और अनुप्रा करते। ऐसा हमारा दृढ़ विश्वास है, क्योंकि स्वामीजी ने अपने जीवन-काल ऐसा ही किया था।

स्वामीजी संस्कृत व्याकरण, सांख्य, मीमांसा, योग और वेदान्त के प्रका पण्डित थे। इसलिए सहज ही उनमें हिन्दू पुनरुत्थानवादी प्रवृत्ति पैदा हु फलस्वरूप वे भूमिहार महासभा में पहुँच गये। लेकिन जब उन्होंने देखा भूमिहार महासभा सामंतों का हथकंडा है तो उसको तोड़ डालने में भी उनको हिचकिचाहट नहीं हुई। भूमिहार महासभा को तोड़कर वे गाँधीजी के असहयो आन्दोलन में कूद पड़े। गांधीजी के साथ लम्बी वार्त्ता के बाद वे गांधीवादी गये। लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन, विशेषकर किसान आन्दोलन के अपने अनुभवों प्रेरित होकर वे मार्क्सवाद की ओर उन्मुख हुए। स्वामीजी ने अनवरत संघर्षों अपने अथक जीवन में वर्गसंघर्ष के सत्य को स्वीकार किया। वर्गसंघर्ष ही अमानुषिक वर्णसंघर्षों का इलाज है जिनसे आज बिहार में दानवता का नंगा हो रहा है।

राष्ट्रीय स्वतंत्रता के तैंतीस वर्षों के कटु अनुभवों ने इस सत्य को उजागर दिया है कि पूँजीवादी पार्टियाँ देश की सामाजिक, आर्थिक और राजनी समस्याओं के समाधान करने की क्षमता खो चुकी हैं। इसके लिए वामप जनवादी विकल्प ही एकमात्र उपाय है। दूरदर्शी स्वामीजी १९३९ में ही नतीजे पर पहुँच गये थे। तब से लेकर अपने जीवन की आखिरी साँस त वामपक्षी पार्टियों की एकता के लिये प्रयत्नशील रहे। उनकी यह सीख वाम और जनवादी विकल्प को सार्थक करने के राष्ट्रीय कर्त्तव्य को प्रेरणा और प्रखु प्रदान करती है।

RajGuru Math, Shivala Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी की सबसे बड़ी विरासत है किसानों के आन्दोलन और संगठन। यदि इस विरासत को आगे बढ़ाया गया होता तो आज देश में मजदूर-किसान एकता के आधार पर ऐसा राष्ट्रीय जनतांत्रिक मोर्चा तैयार हो गया होता और राष्ट्रीय जनतांत्रिक क्रान्ति सम्पन्न हो गयी होती जिसके फलस्वरूप मँहगाई, बेकारी, पृथकतावाद और भ्रष्टाचार से पीड़ित भारतीय जनसमुदाय को राहत मिल गयी होती। देश समृद्धि और समाजवाद की सुखद और विषमताहीन दिशा की ओर तेज रफ्तार से अग्रसर होता।

स्वामीजी भारत-सोवियत मैत्री के प्रवल समर्थक थे। वे समझते थे कि सोवियत संघ की मैत्री न केवल स्वतन्त्र भारत की राष्ट्रीय स्वतंत्रता और भौगोलिक अखंडता के लिये, बल्कि भारत की आर्थिक स्वतंत्रता और सम्पन्नता के लिये भी आवश्यक है। इसीलिये जब जून १९४१ में हिटलरी फासिस्टों ने सोवियत संघ पर हमला बोल दिया तब स्वामीजी हजारीबाग के केन्द्रीय कारावास में भी व्याकुल और बेचैन हो उठे थे। आज अफगानिस्तान की घटना को लेकर साम्राज्यवादी अमरीका, विस्तारवादी चेंगपंथी चीन तथा उनके प्रतिक्रियावादी पिछलगुओं ने सोवियत-विरोधी प्रचार का तूफान खड़ा कर रखा है। उनका नापाक इरादा है भारत-सोवियत मैत्री को तोड़कर न केवल भारतीय महाद्वीप में अपना प्रभुत्व स्थापित करना बल्कि अफगानिस्तान की जनवादी क्रान्ति का भी गला घोंट देना। स्वामीजी की क्रान्तिकारी स्मृति को श्रद्धांजलि अर्पित करने का तकाजा है कि इस साम्राज्यवादी-प्रतिक्रियावादी कुचक्र को नाकाम कर दिया जाय।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसानों का सच्चा नेता स्वामी सहजानन्द

— किशोरी प्रसन्न सिंह

स्वामी सहजानन्द स्मृति ग्रन्थ ऐसे अवसर पर प्रकाशित हो रहा है जब यह देश एक अभूतपूर्व संकट से गुजर रहा है। यह संकट बहुमुखी है—आर्थिक, राजनीतिक सामाजिक, सांस्कृतिक, एक ही साथ सब। लगता है, पूरी व्यवस्था ही—सामाजिक हो अथवा प्रशासनिक—गहरे संकट में फँस गयी है। आजादी के आन्दोलन से लेकर आजादी काल की सारी उपलब्धियाँ खतरे में हैं।

आज की सबसे बड़ी आवश्यकता उन सभी शक्तियों और तत्त्वों को एकजुट करने, उनकी तरफ से बोलनेवाले तमाम लोगों को किसी एक न्यूनतम कार्यक्रम पर इकट्ठा करने का है, जो इस देश को इस संकट से निकाल कर आगे ले जाना चाहते हैं, एक खुशहाल समाज का निर्माण करना चाहते हैं।

इस देश में किसान समुदाय अभी भी आबादी का बहुत बड़ा भाग है। गाँधीजी कहा करते थे, स्वामीजी भी यही कहते थे; हमारा देश गाँवों में बसता है। स्वामीजी किसानों के नेता थे—विहार के किसानों के ही नहीं, पूरे भारत के। और नेता भी ऐसे कि जिनके उठ जाने के बाद उनकी कमर तक भी अभी तक कोई दूसरा नेता नहीं आ सका। किसानों के शोषण और उत्पीड़न के खिलाफ तो स्वामीजी जिन्दगी भर लड़ते ही रहे, सबसे बड़ी बात यह कि अपने जीवन के आखिरी सालों में वह देखने लगे थे कि आखिर किसान समुदाय का भविष्य किस व्यवस्था में है और इसलिये उनके आज के संघर्षों की दिशा क्या होनी चाहिये।

एक ओर जहाँ देश का आन्तरिक संकट समाज के विभिन्न हिस्सों को संगठित होने को मजबूर कर रहा है, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में घट रही घटनाएँ उन्हें आगे बढ़ने को प्रेरित भी कर रही हैं। ऐसे समय में किसान समुदाय ही सबसे पिछड़ गया लगता है। जीवन की वास्तविकताओं से आँखें मूँदना, उनको कबूल करने से इनकार करना शुतुर्मुर्ग की नीति का शिकार होना है। ऐसे मौके पर जब हम किसानों को संगठित करने की समस्याओं पर विचार करने बैठते हैं, स्वामीजी की अनुपस्थिति खलती तो है ही, उनके जीवन के दो पहलू सहसा सामने आ जाते हैं। स्वामीजी की चिंतन प्रक्रिया अत्यन्त ही गतिशील थी। और दूसरे निहित स्वार्थों या स्वार्थपरता के प्रति वह अत्यन्त ही तीक्ष्ण ढंग से असहिष्णु थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी के साथ हमारा परिचय एक विचित्र ढंग से हुआ। जबतक उनके साथ साक्षात्कार नहीं हुआ था; गह के बातें नहीं हुई थीं, हमारा उनका सम्बन्ध द्वन्द्वात्मक अवस्था में था। हमारी राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों के बारे में जो कुछ इन्होंने सुना था, वह मुझको अपने साथ करना चाहते थे। दूसरी ओर मैंने उनके बारे में जो कुछ सुना था, उनके बारे में गलतफहमियों का शिकार तो था ही, उनसे टक्कर लेने का अवसर भी ढूँढ़ रहा था। उनसे लड़ने को मैं इतना 'आतुर' और 'व्याकुल' था कि इसी मनोदशा में एक दिन वहाँ पहुँच गया। जहाँ जाने या जो करने के लिये मैं उनका विरोधी बना बैठा था।

१९२६ (या १९२७) में भूमिहार ब्राह्मण महासभा का अधिवेशन पटना शहर के भँवरपोखर महल्ले में होने वाला था। मैं वहाँ पहुँचा; महज स्वामीजी से लड़ने के लिए, पर लड़ाई हो न सकी। प्रणाम-पाँती तक तो हुई; पर मेरे पट्टे में दर्द उठा; और चूँकि प्लेग के इलाके से आया था, लोगों को आशंका हुई कि मैं प्लेग से आक्रान्त हो गया हूँ। स्वामीजी कुछ चिन्तित हुए। तुरत उन्होंने मुझको पटना अस्पताल भेजवाया। स्वयं सर गणेश दत्त सिंह मुझको लेकर अस्पताल पहुँचा आये। हमारा उनका टकराव तो टल गया, पर न मेरे लिये उन्होंने अपना प्रयास छोड़ा और न मैंने उनके प्रति अपना ख्याल।

संयोग ऐसा हुआ कि सन् १९३४ में एक दिन स्वामीजी, हम और हमारी पत्नी स्व० सुनीति, एक ही साथ छोटी पनसुहिया नाव पर हाजीपुर से पटना के लिये चले। सुनीति नाविक के समीप नौका के एक छोर पर बैठी थी, मैं स्वामीजी के साथ नौका के दूसरे छोर पर। वातों-ही-बातों में स्वामीजी ने मुझ से पूछ दिया—"अच्छाजी, तुम यह तो बताओ कि तुम मेरे पीछे लाठी लिये क्यों फिरते हो?" बात शुरू ही होनेवाली थी कि नाव किनारे पहुँच गई। नाव से उतर कर स्वामीजी ने मुझ से पूछा—"इसको (सुनीति की ओर इशारा कर) कहाँ रखोगे?" स्थान बताने पर फिर उन्होंने कहा, "तो अच्छा एक काम करो। इसको वहाँ पहुँचाकर तुम पटना लौन (गाँधी मैदान) में आओ। "मैं वहीं रहूँगा, यहाँ से चलकर।" अपने मिलने का स्थान उन्होंने मैदान का दाहिना भाग बताया था; संभवतः जिसके सामने ही दक्षिण आज रिजर्व बैंक है। सुनीति को कदमकुआँ महल्ले में श्री गणेश प्रसाद शाही, अधिवक्ता के घर पहुँचाकर मैं तुरत लौन पहुँचा।

मुझको तो स्वामीजी के इस प्रश्न का उत्तर देना ही था कि तुम मेरे पीछे लाठी लिये क्यों फिर रहे हो। मैंने कहा—"स्वामीजी, मेरे दो प्रश्न हैं। लोग कहते हैं, कि हजारीबाग जेल में आप अण्डा खानेवालों से रंज हुआ करते थे। और दूसरा, कि आप भूमिहारों को संगठित करते हैं। स्वामीजी ने अत्यंत ही धैर्य के साथ सारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बातों की सफाई की। दो घंटे की वार्ता को यहाँ देना संभव नहीं है, पर जो कुछ उनने कहा, उसका सारांश यही था कि—"तुम बिलकुल ही गलतफहमी के शिकार हो। भला बताओ तो कौन क्या खाता है या खायेगा, उससे हमको क्या मतलब ? रहा दूसरा प्रश्न, तो सुनो। मैं भूमिहारों का संगठन नहीं करता, पुरोहिती पाखंड के शिकंजे के खिलाफ विद्रोह की भावना फैलाता हूँ।" अपने पिता के श्राद्ध (१९३२) में पुरोहिती शिकंजे का अनुभव मुझको हो चुका था, इसलिये जब स्वामीजी ने विद्रोह की बात कही; लगा कोई माथे पर हथौड़ा ठोक रहा हो।

फिर स्वामीजी ने इस बार कुछ जोर देकर कहा—"तुम भूमिहार जाति को संगठित करने की बात कहते हो ? अरे, मेरे मन में तो इस समय यह संघर्ष चल रहा है कि हिन्दू समाज में वर्णाश्रम धर्म की व्यवस्था ठीक है कि नहीं।' मैंने कहा—"स्वामीजी, हमारे सभी प्रश्नों का उत्तर मिल गया, सारी सफाई हो गई। लगे हाथ स्वामीजी ने पूछ दिया—"अब तुम किसान सभा बनाने में मदद करेगा ?" मैंने उत्तर दिया—"मदद ही नहीं करूँगा स्वामीजी, आप के साथ रहूँगा।"

कुछ ही सप्ताह बाद स्वामीजी ने बिहार प्रान्तीय किसान सभा की कार्यकारिणी की बैठक बुलाई। इस बैठक में उन्होंने उन लोगों को भी आमंत्रित किया जो सोशलिस्ट विचारों के थे। मुझको जिनके नाम याद हैं वे थे—सर्वश्री जयप्रकाश नारायण, गंगा शरण सिंह, अवधेश्वर प्रसाद सिंह, रामवृक्ष बेनीपुरी, श्यामनन्दन सिंह। जहाँ तक मेरी बात थी, १९३० के चौकीदारी टैक्सबन्दी आन्दोलन अथवा उसके बाद की घटनाओं में जो अनुभव प्राप्त हुए थे मैं इस नतीजे पर पहुँच चुका था कि देहाती जीवन में यदि परिवर्त्तन लाना है, या राष्ट्रीय आन्दोलन को यदि सशक्त बनाना है तो किसानों का किसान सभाओं में संगठित करना अनिवार्य शर्त्त है।

स्वामीजी ने इस बैठक में ही किसान सभा की कार्यकारिणी को पुनर्गठित किया। हम सभी उस कमिटी में आ गये। तारीफ यह कि स्वामीजी ने जानबूझ कर बहुमत उन लोगों का बना दिया, जो सोशलिस्ट विचारों को अपना चुके थे। किसान सभा को मजबूत बनाने की दिशा में हमारे कुछ विचार थे। मैंने उस बैठक में ही यह सुझाव रखा कि किसान सभा के लक्ष्यों में बिना मुआवजे के ही जमीन्दारी प्रथा के उन्मूलन को शामिल किया जाना चाहिये, पर स्वामीजी इस राय के नहीं थे। इसलिये उन्होंने हमारे इस प्रस्ताव का विरोध किया। प्रस्ताव एक के बहुमत से स्वीकृत हो गया। चूँकि स्वामीजी इस प्रस्ताव को बहुत गलत समझते थे, उनने किसान सभा के अध्यक्ष पद से इस्तीफा दे दिया। जय प्रकाशजी ने इस संकट में कमिटी की मदद की। उन्होंने साफ कहा कि स्वामीजी को बाद

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर के हमलोग अभी किसान सभा के संगठन को चलाने की स्थिति में नहीं हैं; इसलिये इस प्रस्ताव को आज की कार्यवाही से निकाल दिया जाय। कमिटी ने उनके सुझाव को मान लिया और संकट टल गया।

पर एक ही साल बाद १९३५ के दिसम्बर महीने में, किसान सभा का सम्मेलन हाजीपुर में हुआ। स्वामीजी ही अध्यक्ष थे और मुझ पर ही स्वागत की जवाबदेही थी। इस सालभर की अवधि में अनकों किसान संघर्ष हुए। इन संघर्षों में प्राप्त अनुभवों के आधार पर स्वामीजी स्वयं इस नतीजे पर पहुँचे थे कि किसान संगठन को व्यापक और शक्तिशाली बनाने के लिये यह आवश्यक है कि किसान सभा के उद्देश्यों में जमीन्दारी प्रथा का अन्त भी शामिल किया जाय। इसलिये हाजीपुर के इस सम्मेलन में स्वामीजी ने स्वयं ही इस प्रस्ताव को पेश किया। यह थी स्वामीजी की महानता। राजनीतिक सामाजिक क्षेत्रों में स्वामीजी हठधर्मी के कभी शिकार नहीं हुए। समय का तकाजा, परिस्थिति की आवश्यकताओं की कसौटी पर ही वह अपने विचारों को आधारित करते रहे।

समाजवादी सोवियत देश पर नाजियों के हमले से दूसरे विश्वयुद्ध के चरित्र में जो परिवर्त्तन हुए, स्वामीजी ने बहुत पहले देखा। वह यह समझने लगे थे कि नाजीवाद की हार और समाजवादी सोवियत की जीत विश्व में एक नई परिस्थिति पैदा करेगी। प्रगति की शक्तियां मजबूत होंगी, और क्रांति की लहर उठेगी। पर उनको दुःख इस बात का था कि युद्ध के चरित्र-परिवर्त्तन के कारण जो पेचीदगियां पैदा हुईं, उलझनें पैदा हुईं, किसान सभा में फूट पड़ गया। किसान सभा में फूट से पैदा इस खाई को पाटना चाहते थे। फूट के सभी कारणों में जाना यहाँ संभव नहीं है, पर स्वामीजी यह चाहते थे कि तर्क के आधार पर किसान आन्दोलन और संगठन में उत्पन्न इस खाई को जैसे हो पाटा जाय—कुछ उठा न रखा जाय।

भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी इस आवश्यकता को साफ-साफ देख रही थी कि किसान-हित साधन के लिये किसान संगठन में फिर से एकता स्थापित करना कितना जरूरी है। इसलिये पार्टी ने मुझ को स्वामीजी से बातें करने को बिहटा उनके आश्रम में भेजा। फूट और एकता के सारे पहलुओं पर स्वामीजी के साथ विशद वार्ता हुई। जब स्वामीजी ने देख लिया कि किसान संगठन में एकता स्थापित करने के लिये कम्युनिस्ट पार्टी उनसे कम इच्छुक और उत्सुक नहीं है वह इसके लिये कुछ भी करने को तैयार हो गये। इस अवसर पर वह अत्यन्त ही प्रसन्न दीखे। और इसीलिये, चूँकि मैं उनके अत्यंत ही समीप हो चुका था, एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हल्की मुद्रा में मुझ से पूछा—"और यह कहो, तुम गारंटर बनेगा ?" मुझको देर नहीं लगी। मैंने कहा—"स्वामीजी; मैं बनूँगा"।

अन्तिम पंक्तियों को लिखते समय मैं भावुक हो उठा हूँ। अपने इन प्रयासों को मूर्त्तरूप देने के लिये स्वामीजी रहे नहीं। सदा के लिये जाते रहे।

आज किसान समुदाय भिन्न-भिन्न संगठनों में बँटा हुआ है। नतीजा यह है कि सचमुच किसानों का कहीं कोई संगठन नहीं है। इस स्मृति-ग्रन्थ के प्रकाशन से यदि स्वामीजी की इच्छा की पूर्ति, किसान सभा के संगठन को प्रभावशाली बनाने के प्रयासों को थोड़ा भी बल पहुँचावे, तो स्मृति-ग्रन्थ का प्रकाशन सफल होगा।

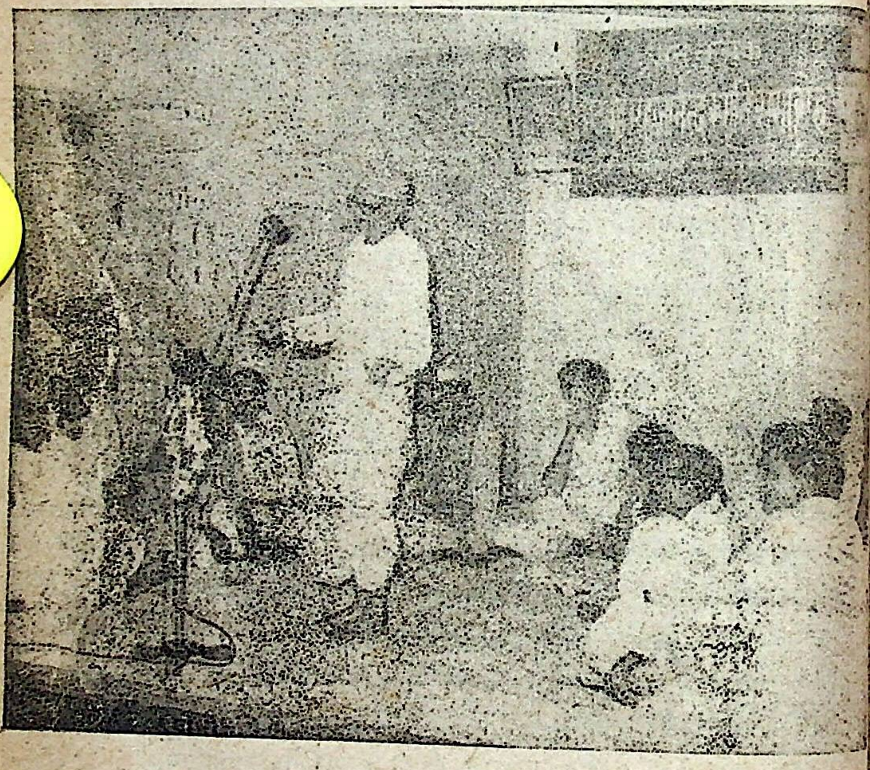

जवाहर टाउन हॉल गया में २६ जून १९७६ को स्वामी सहजानन्द स्मृति समारोह में भाषण करते हुए—श्री किशोरी प्रसन्न सिंह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचारक, लेखक एवं पत्रकार – सहजानन्द

—राजनन्दन सिंह, 'राजन'

सहजानन्द एक संघर्षशील, विचारक, लेखक एवं पत्रकार थे। उनकी विचारधाराएँ उत्तरोत्तर विकसित होती जा रही हैं; लेखकीय, कृतियाँ अमर हैं तथा पत्रकारिता के अनुभव अनुकरणीय हैं। सचमुच, मानवता के सच्चे उद्धारक अपनी कृतियों एवं विचारधाराओं के फलस्वरूप सदा जीवित रहते हैं। किन्तु, वर्ग-विभक्त समाज में मानवता के पक्षधर, प्रगति के पृष्ठपोषक, वर्ग-विहीन समाज के स्रष्टा एवं द्रष्टा, जीवन पर्यन्त घोर यातनाओं के शिकार भी होते हैं। सहजानन्द ने स्वयं उन यातनाओं को झेला है। फिर भी अपनी विचारधाराओं पर वे अडिग रहे।

यह भी कैसी विडंबना है कि, जिस शासन काल में सहजानन्द आजीवन यातनाएँ झेलते रहे, उसी शासनकाल में मरणोपरांत उनकी जयंतियाँ मनायी जाती हैं; मंत्रीगण लंबे-चौड़े व्याख्यान देते हैं; उनका गुणगान करते हैं तथा उनकी दुहाई देते हैं। पूँजीवादी शासक वर्ग प्रगतिवादी विचारकों की जीवन-यात्रा को अगर एक तरफ संकट जाल में फांसते हैं तो दूसरी तरफ मरणोपरांत उनकी विचारधाराओं की भी लिपापुती करते हैं तथा अपनी घिनौनी काली छाया पसारे रहते हैं। यह तो उनके वर्ग चरित्र के अनुरूप ही है—क्योंकि; पूँजीवादी वर्ग दोहरा चरित्रवाला होता है। स्वयं सहजानन्द ने वार-बार इनके दोहरे चरित्र से सावधान किया है। उनकी विचारधाराओं को 'ब्लैक मेल' करनेवाली शक्तियों से उनकी रक्षा करना प्रगतिशील आन्दोलन का एक प्रमुख कर्त्तव्य है।

आइये; हम उनकी लेखकीय कृतियों के अन्तर्गत उनकी विचारधाराओं पर विचार करें। इस छोटे से निबंध में मैं, उनकी तीन पुस्तकों—"मेरा जीवन संघर्ष", "किसान कैसे लड़ते हैं" तथा "गीता-हृदय" पर विचार करने तथा उनकी विचारधाराओं की मूल-भावनाओं की ओर ध्यान आकृष्ट करने का प्रयास करना चाहूँगा।

सहजानन्द आजीवन एक संघर्षशील योद्धा के रूप में प्रस्तुत होते हैं। अपने जीवनकाल में; सामाजिक रूढ़िगत परंपराओं से जूझते रहे तथा उनकी धज्जियाँ उड़ाते रहे। सामाजिक जीवन के विकास को कुंठित करने वाली रूढ़ियों के खिलाफ उनका संघर्ष काफी सशक्त था। परिणामस्वरूप, उन्हें तिरस्कार एवं घृणा का भी सामना करना पड़ा। फिर भी, वे अपने निर्भीक स्वाभिमानी एवं-दूरदर्शी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चरित्र के बल पर किसी चीज की परवाह नहीं की। पारिवारिक गुरुओं की धज्जियाँ उड़ाते हुए वे कहते हैं, 'इस वंश-परंपरागत गुरुआई ने इन गुरुओं को निरक्षर और दुराचारी बना दिया है। क्योंकि: उनकी पूजा, प्रतिष्ठा और आमदनी तो रुकने वाली नहीं। फिर, वे पढ़ने या सच्चरित्रता की परवाह क्यों करें?" रूढ़िगत परंपराओं पर चोट करते हुए सहजानन्द कहते हैं, 'गुरुजी चाहे जूते पहनकर आयें या नंगे पाँव गंदी चीजें तलवे में लगाये हुए आएँ, मगर यह विधान हर-हालत में जरूरी था कि उनके पाँव धोकर चेला लोग पान करते थे। यह कितनी गंदी और नादानी की बात है।' यह उक्ति 'मेरा जीवन संघर्ष' में विद्यमान है। सचमुच कितनी व्यावहारिकता भरी हुई है इस उक्ति में। तभी तो इस पुस्तक के प्रति लोगों की अभिरुचि काफी जाग्रत है। वस्तुतः इस पुस्तक का प्रकाशन व्यापक पैमाने पर करने की आवश्यकता है। क्योंकि आज भी मानव-समूह का एक विशाल हिस्सा रूढ़ियों से जकड़ा हुआ है। इन रूढ़ियों को बरकरार रखने से शोषक वर्ग को लाभ मिलता है।

सहजानन्द स्वभाव के इतने दृढ़ थे कि विघ्न-बाधाओं से कभी घबड़ाते नहीं थे। वे कहते हैं, "जिस बात में मैं पड़ता हूँ, उनमें विघ्न-बाधाएँ आने पर मुझे उससे विमुख करने के बजाय और भी उसमें संलग्न कर देती हैं। मैंने दबाव के सामने कभी झुकना जाना ही नहीं। इसे मैं अपनी एक अपूर्व शक्ति समझता हूँ और इस पर गर्व करता हूँ।" वे स्वाभिमान के साक्षात् मूर्ति थे।

पूरी आबादी का आधा भाग आज भी कूप-मंडूक सदृश जीवन गुजार रहा है। पूँजीवादी विचारक आधुनिक युग के मुक्त वातावरण में भी इस विचार-धारा का पृष्ठपोषण कर रहे हैं कि औरतें भोग-विलास की वस्तु हैं तथा चूल्हे एवं पलंग की दासी हैं।' किन्तु वर्षों पूर्व सहजानन्द औरतों के प्रति अपनी जवाबदेही का निर्वाह करते हुए कहते हैं कि, "मेरा सदा से विचार रहा है कि माता और स्त्री, इन दो की जवाबदेही हर आदमी पर रहती है। इन दोनों को कष्ट देने वालों का कभी भला नहीं होता।" तात्पर्य यह कि मर्दों के समान औरतों को भी विकास करने का पर्याप्त अवसर प्राप्त होना चाहिए ताकि, उनके व्यक्तित्व का समुचित विकास हो सके तथा वे स्वतंत्र रूप से अपने विकास का रास्ता अख्तियार कर सकें।

सहजानन्द सिन्सीयरीटो (Sincerity) और ऑनेस्टी (Honesty) को ही अपना मार्ग-दर्शक मानते थे।

अपने विचारों के प्रति उनकी अटूट आस्था थी; उसकी परख इन पंक्तियों में होती है—"असल में ध्येय और स्वार्थ दुनिया में सबसे बड़ी चीज है और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसकी वेदी पर बड़े-से-बड़े पदार्थ जाने या अनजाने में बलिदान हो ही जाते हैं या कर दिये जाते हैं।" इस पर उन्होंने आजीवन अमल भी किया। उनके ध्येय एवं स्वार्थ का संकेत व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक है, क्योंकि उन्होने एक सुखी समाज के निर्माणार्थ अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया।

सहजानन्द को एक विचारक के रूप में हम इसलिए याद करते हैं चूंकि, वे निरंतर विकासशील रहे। वे कभी भी प्रतिगामी नहीं हुए। वे भोगे हुए यथार्थ से अनुभव प्राप्त करते थे; उसके आधार पर नयी विचारधाराओं का प्रतिपादन करते थे तथा उनके विकास का पथ-प्रदर्शन करते थे।

सहजानन्द अपने जीवन के प्रारंभिक काल में, एक संन्यासी के रूप में पूरे भारत का भ्रमण करते रहे। उनका भ्रमण तथाकथित संन्यासियों की तरह पेट भरने या प्रतिष्ठा अर्जित करने के लिए नहीं हुआ। भ्रमण-काल के दौरान उन्होंने समाज की बहुत सारी वास्तविकता को समझा-बूझा। उनके भ्रमण का उद्देश्य ज्ञान अर्जन था।

जीवन के प्रारंभिक-काल में सहजानन्द राजनीतिक वातावरण के प्रभाव से बिल्कुल अछूता थे। किन्तु, धीरे-धीरे सामाजिक परिस्थितियों की वास्तविकता से परिचित होते गये और विशाल जन-समुदाय की कठिनाइयों के उन्मूलनार्थ राजनीतिक कार्यवाहियों में खुलकर भाग लेने लगे। यह है उनके जीवन की वस्तुगत विकासशीलता।

मठों, संन्यासियों तथा साधुओं के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश जिस रोचक ढंग से सहजानन्द ने इस पुस्तक में लिखा है वस्तुतः, बार-बार पठनीय एवं शिक्षा-ग्रहण करने योग्य है। भ्रमण के दौरान प्राप्त अनुभवों की चर्चा से संबंधित अनुसूया के एक वैष्णव साधु का उल्लेख "मेरा जीवन संघर्ष" का एक महत्त्वपूर्ण अंश है। उसकी चर्चा इस प्रकार की गयी है—"उस साधु के पास २० हजार रुपये थे। चोरों को रुपये का पता चल गया। चोरों ने उनकी हत्या करके रुपये लूट लिए।" इस घटना की प्रतिक्रिया सहजानन्द पर बुरी तरह हुई और उन्होंने कहा कि "ऐसे रुपयों का तो कुछ ऐसा ही अन्त होना चाहिए।" साधु लोग भी इस प्रकार पैसे रखते हैं, इस प्रकार भ्रष्ट होते हैं, यह बात अनुसूया और कामदगिरि के मठों की बातें जानकर पहले-पहल ज्ञात हुई।" अर्थात् उनके कहने का तात्पर्य यह है कि साधु अगर भ्रष्ट नहीं होगा तो वह धन इकट्ठा कैसे कर सकता है।

यह पुस्तक कई बहुमूल्य अनुभवों का भंडार तो है ही, छिपे रहस्यों की जानकारी प्राप्त करने का एक मजबूत आधार भी हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे कहते हैं कि ऐसा कहा जाता है—शंकराचार्य और मंडन मिश्र का जो प्रसिद्ध शास्त्रार्थ हुआ था और जिसमें हारकर मंडन मिश्र; सुरेश्वराचार्य के नाम से शंकर के शिष्य हो गये थे वह महिष्मती पुरी में हुआ था। शंकर दिग्विजय में लिखा भी गया है कि "महिष्मतीं मण्डन मण्डितां सः।" उस विजय में लिखा भी गया है कि रेवा (नर्मदा) की लहरों से शीतल वायु महिष्मती में बहती थी। फिर समझ में नहीं आता कि मिथिला में क्योंकर मंडन मिश्र को घसीटने की कोशिश होती है। शायद 'मिश्र' उपाधि देखकर ही। परन्तु हजारों वर्ष पूर्व आजवाली वंश-परंपरागत मिश्रादि उपाधियों का तो नाम भी न था। तब तो (मिश्र) और (पाद) शब्द आदर और विद्वता के अर्थ में कभी-कभी प्रयुक्त होते थे।"

जैन साधुओं और साधुनियों के विषय में व्यापक जानकारी देते हुए उनका घिनौना चित्र, इस पुस्तक में उपस्थित किया गया है। सहजानन्द ने लिखा है कि, "जैन धर्म वाले कहते हैं कि, नहाने-धोने में देह, वस्त्रादि मलने-दलने से हिंसा होती है। फलतः शारीरिक गर्मी के कारण बाल गिर जाते हैं तथा चेहरे पीले पड़ जाते हैं।" सहजानन्द ने साफ-साफ कहा है कि वह धर्म किस काम का जिसमें जीते-जी ऐसी दुर्दशा हो ?"·····कम-से-कम सफाई तो आवश्यक है।

'गुरुडम की माया' नामक उपशीर्षक में एक बड़े ही रोचक प्रसंग का वर्णन है जिसमें; वैरागी साधु (ठड़ेसरी) की परिभाषा बतायी गई है। बारह वर्ष तक लगातार खड़े रहने वाले वैरागी साधु ठड़ेसरी कहे जाते हैं तथा किसी महन्थ के मठ में अधिकारी होने के हकदार हो जाते हैं। इस पर अपनी प्रतिक्रिया एवं अपना गुस्सा जाहिर करते हुए सहजानन्द कहते हैं कि, इस तपस्या से मुक्ति तो निकट हो ही जाती है। कैसी मूर्खता और अन्धभक्ति है ! धर्म के नाम पर क्या नहीं हो सकता है !

बद्रीनारायण की यात्रा का प्रसंग भी बहुत रोचक एवं दर्दनाक है। धर्म भी क्या गजबनाक चीज है ! आदमी की छाती पर चढ़ के चलना·······। यह निराली अन्धेरपुरी है।

सदाचार और धर्म पर अपना विचार प्रकट करते हुए सहजानन्द कहते हैं कि, हमारा धर्म, हमारा सदाचार और हमारी प्रतिष्ठा वस्तुतः इसी में है कि कमा के खायें और किसी काम को छोटा या नीच न मानें।

अन्धविश्वासों पर आधारित धर्म कितना बेअक्ल होता है; इसके भी कई प्रसंग आए हैं। सहजानन्द कहते हैं कि; धर्म के मामले में अक्ल और तर्क को लोग सटने तक नहीं देते हैं, ताकि उनका परजीवी संस्कार बरकरार रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपने संन्यासी जीवन के दौरान महन्थों के कुकर्मों की चर्चा करते हुए उनके जंजाल से सतर्क रहने की सीख भी उन्होंने दी है।

मठों की घृणात्मक कारंवाइयों से वे धीरे-धीरे ऊबने लगे और बाद में उन्होंने साधुकरी भिक्षा वृत्ति अपनायी। इस बीच उन्होंने बड़े-बड़े ग्रन्थों का अध्ययन बहुत ही मनोयोगपूर्वक किया।

कुछ दिनों के बाद उन्होंने दण्ड ग्रहण किया और वे दण्डी संन्यासी बने। तद्उपरांत उनका नाम स्वामी सहजानन्द सरस्वती पड़ा। यह बात सन् १९११ ई० की है।

इस पुस्तक में साधु और असाधु की परिभाषा बहुत ही सटीक ढंग से की गई है। साधु का यह काम है कि, दूसरों के गुणों को ही देखे। उनके हजार अवगुणों पर दृष्टि करे ही न। इसी प्रकार अपने सहस्र गुणों पर दृष्टि न रखे। यदि एक भी अवगुण हो तो बार-बार उसी पर दृष्टि लाये। विपरीत उसके असाधु वह है; जो गैर के हजार गुणों को छोड़कर उसके ऐब को ही देखता फिरे। पर अपने सहस्र छिद्रों को न देख एकाध गुण भी अपने में यदि पाया जाय तो उसकी प्रशंसा करता रहे।"

सहजानन्द अध्ययन के लिए सन् १९१५ ई० में दरभंगा आये और न्याय के ग्रन्थ एवं काव्य प्रकाश पढ़े। वे जिस काम में पड़ जाते थे, उसका अन्त लगाकर ही दम लेते थे। दरभंगे में महामहोपाध्याय पंडित चित्रधर मिश्र मीमांसक से हस्तलिखित तंत्र रत्न नामक बड़ी-सी पुस्तक लेकर सहजानन्द ने अपने हाथों नकल की। दो मास के लगातार परिश्रम के बाद उतनी बड़ी पुस्तक लिखी जा चुकी। वहीं पर उन्होंने पंडित रघुनाथ शिरोमणि की पुस्तक 'पदार्थ खण्डन' की भी प्रतिलिपि हाथों लिखीं।

मद्यपान से सहजानन्द काफी दूर थे। दो बार अनजाने भंग खाने के बाद, उन्होंने कभी भी किसी तरह का मद्यपान नहीं किया।

सन् १९१४ ई० की बात है। प्रथम विश्वयुद्ध छिड़ा हुआ था। सहजानन्द को भूमिहार ब्राह्मण सभा में ले जाया गया। उस सभा में उन्होंने जर्मनी की चर्चा जानबूझकर की तथा भूमिहार-ब्राह्मणों को धिक्कारा। सभा में जर्मनी की बड़ाई करने से उन्हें मनाही की गयी। उस सभा में राजभक्त जमींदारों एवं महाराजाओं का जमाव था। इसलिए वे इंगलैंड की शिकायत बर्दाश्त नहीं कर सकते थे। क्योंकि वे भूमिहार ब्राह्मणों के नाम पर समाज की ओर से राजभक्ति का आश्वासन दिया करते थे। *यह कदम उनका अनजाने राजनीति में प्रवेश का था।*

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस घटना के बाद धार्मिक कामों के अलावे सहजानन्द की रुचि सामाजिक कामों में जगी। सहजानन्द कहते हैं कि, "सामाजिक कामों की महत्ता, पोथियों, किताबों और मात्र व्याख्यानों से ठीक-ठीक नहीं समझी जाती। इसे हृदयंगम् करने के लिए घटनाओं को ठीक-ठीक समझना होगा जिसका प्रभाव मानसपटल पर पड़ता है तथा उसकी महत्ता, उसकी अहमियत, उसकी कर्त्तव्यता को अंकित करता है।"

फिर वे समाज-सेवा की ओर झुके। जनता की सेवा ही भगवान की सेवा है। इस बात की पुष्टि श्रीमद् भागवद् के कुछ वचनों से हुई। नरसिंह और प्रह्लाद के प्रसंग में एक श्लोक भागवत् में आता है जिसमें प्रह्लाद ने नरसिंह भगवान् को उत्तर देते हुए कहा है कि—

"प्रायेण देव मुनयः स्वविमुक्ति कामा
मौनं चरन्ति विजने न परार्थनिष्ठाः।
नैतान् विहाय कृपणान् विमुमुक्ष एको।
नान्यष्वदस्य शरणं भ्रमतोऽनुपश्चे।"

तात्पर्य यह कि ऋषि-मुनि लोग तो स्वार्थी बन के अपनी ही मुक्ति के लिए एकान्त वास करते हैं। उन्हें औरों की फिक्र नहीं होती लेकिन मैं हर्गिज ऐसा नहीं कर सकता। सभी दुखियों को छोड़ मुझे सिर्फ अपनी मुक्ति नहीं चाहिए। मैं तो इन्हीं के साथ रहूँगा, मरूँगा, जीऊँगा।

सहजानन्द का विचार यहाँ से बदला। उन्होंने लिखा है कि, "मैं योगी की धुन, प्राणायाम और समाधि की चाह को छोड़ परिस्थितिवश शास्त्र-मंथन में लगा कि ब्रह्मज्ञान में मस्त रहूँगा। लेकिन शास्त्र-मंथन समाप्त होते न होते जन सेवा की ओर जा झुका। मेरा स्वभाव है कि जिस काम में पड़ता हूँ उसमें सारी शक्ति लगाकर पड़ता हूँ। "आधा तीतर-आधा बटेर" मुझे पसन्द नहीं।"

आजादी का अर्थ सहजानन्द के अनुसार इस प्रकार है जो अक्षरशः उचित है— "आजादी की लड़ाई का आखिर मतलब ही क्या, अगर मुल्क को उठाना नहीं है जिसका हक छीना जाय या छीना गया हो, उसे तैयार करके उसे वापस दिलाना यही तो मेरे जानते आजादी की लड़ाई और असली समाज-सेवा का रहस्य है।"

यहाँ से सहजानन्द एक पूर्ण अनुसंधानकर्त्ता और लेखक के रूप में उदित होते हैं। उनकी पहली पुस्तक "भूमिहार-ब्राह्मण परिचय" सन् १९१६ ई० में प्रकाशित हुई। पुस्तक चार सौ पृष्ठों की थी। उसकी समालोचना में पंडित महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' में लिखा कि पुस्तक में कोई बात छूटने न पाई है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ठीक ही है। अलग-अलग प्रकरणों में सभी बातों का विस्तृत और प्रामाणिक विवेचन है।

उसी साल उन्होंनें दूसरी पुस्तिका "ब्राह्मण समाज की स्थिति" लिखी।

लेखन भी सहजानन्द के लिए एक संघर्षशील आन्दोलन ही रहा है। लगातार ग्रन्थों की रचना करना उन्होंने प्रारम्भ किया। जिस समय जिस आन्दोलन से जुड़े, जिस विचारधारा को अपनाये, उन्हें सिद्धान्त के रूप में हृदयंगम् किया और व्यवहार में हू-ब-हू लागू किया। यहाँ लेनिन द्वारा प्रतिपादित उस सिद्धान्त की शत-प्रतिशत छाप सहजानन्द पर दिखाई पड़ती है वह यह कि, "सिद्धान्त और व्यवहार में अभिन्न सम्बन्ध होना चाहिए।"

कुछ ही दिन बाद उन्होंने दूसरी पुस्तिका "झूठा भय और मिथ्याभिमान" लिखी जिसमें एक तरफ निर्भिकता की सीख है तथा दूसरी तरफ मिथ्याभिमान के कुपरिणामों से सचेत रहने की बात बतलायी गई है।

साथ ही सहजानन्द ने कर्मकाण्ड और ज्योतिष की बारह सौ पृष्ठों की पुस्तक "कर्मकलाप" हिन्दी में लिख डाली। इस पुस्तक में कर्मकाण्डी और ज्योतिषी के विषय में साफ-साफ एवं विद्वतापूर्ण बातें बतलायी गई हैं। इस पुस्तक में श्लोक केवल संस्कृत में हैं।

संस्कृत की पढ़ाई के प्रति उनकी अपार रुचि थी। लगभग आठ-दस वर्षों तक लगातार उन्होंने कई संस्कृत पाठशालायें खुलवायीं, छात्रों को वृत्ति देकर पढ़ाने की व्यवस्था की। यह था उनका शिक्षा-प्रेम।

बाद में राजनीतिक जीवन में प्रवेश करने पर उन्होंने अंग्रेजी की शिक्षा ग्रहण की। यह उक्ति सही ही है कि एक लेखक, विचारक या विद्वान को परिपूर्णता हासिल करने के लिए आजीवन छात्र बने रहना पड़ता है। तभी वह गहन अध्ययन कर सकता है तथा विचारों को समझ एवं लागू कर सकता है। इसे उन्होंने साकार करके दिखाया।

इस पुस्तक में सहजानन्द ने बड़े ही सुन्दर ढंग से यह बतलाया है कि मुसलमानों की देशभक्ति पर किसी को संदेह नहीं करना चाहिए। प्रसंग उस समय का है जबकि गांधीजी का असहयोग आन्दोलन चल रहा था, और यहाँ तक कि स्वयं गांधीजी भी मुसलमानों के प्रति उदासीन रहते थे तथा उनपर संदेह करते थे।

राजनीति की परिभाषा एवं उसका अर्थ बतलाते हुए सहजानन्द ने लिखा है कि, "मैं राजनीति में इसलिए नहीं कूद रहा हूँ कि देश का उपकार होगा। बल्कि इसलिए कि तभी मैं सच्चा संन्यासी बन सकूँगा।" वे वैसे संन्यासी नहीं थे जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मात्र परजीवि होते हैं तथा व्यक्तिगत स्वार्थ की पूर्ति में रत रहते हैं। उनकी राजनीति कांग्रेस के मंच से शुरू हुई और वे राष्ट्रीय आन्दोलन के एक प्रमुख हस्ताक्षर बने रहे।

राजा-महाराजाओं तथा समाज के शोषक वर्गों के प्रति सहजानन्द बचपन से ही घृणा का दृष्टिकोण अपनाए रहे तथा सारी शक्ति लगाकर लड़ते रहे।

सहजानन्द शुरू में कट्टर गाँधीवादी थे। जब देश में साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद और ब्रिटिश शोषकों के प्रति घृणा जाहिर करने का आन्दोलन तीव्र हुआ और 'चरखा' आन्दोलन चला तो सहजानन्द जी जान से इसमें लग गए। विदेशी कपड़ों की होली जलवायी। आगे उन्होंने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के प्रति नरम रूख बरतने वालों को फटकारते हुए लिखा है कि; "उस समय तो गाँधीजी इस होली के बड़े ही हामी थे। उन्हें या उनके अनुयायियों को ऐसी-बातों में हिंसा की गंध बिल्कुल ही नहीं मालूम पड़ती थी। मगर आज तो जमाने ने ऐसा पल्टा खाया है कि साम्राज्यवाद के नाश, पूँजीवाद के नाश तथा जमीन्दारी प्रथा के नाश में और इनके पुतले जलाने में भी उनलोगों को हिंसा की बू आने लगी है।' मालूम होता है, आजकल उनलोगों की नासिका बहुत ही तेज हो गयी है। पहले ऐसी न थी। संसार परिवर्त्तनशील है।"

असहयोग आन्दोलन की चर्चा के संदर्भ में ही उनलोगों पर तीखा प्रहार किया है, जो हवा के अनुसार पीठ घुमा लेते हैं और माकूल वातावरण से लाभ उठाने की कोशिश करते हैं। दूसरी तरफ यह भी सही है कि व्यापक जन-आन्दोलन की भी यह खूबी है कि वह अपना प्रभाव डालता ही है। किन्तु सहजानन्द ने हवा की रुख के अनुरूप पीठ घुमाने वालों के दोहरे चरित्र से सावधान रहने की आवश्यकता पर बल दिया है।

जब भी सार्वजनिक चन्दे की बात उठती थी, वे जी-जान से लग जाते थे। किन्तु कांग्रेसियों को तथा उनके चेले-चटियों को पैसा गोल-माल करने की आदत से वे क्षुब्ध रहते थे तथा यह बात उनके बर्दाश्त के बाहर की थी। "मैं तो सार्वजनिक पैसे को सबसे अधिक पवित्र चीज मानता हूँ," सहजानन्द ने साफ-साफ लिखा है।

गोरक्षा के नाम पर साम्प्रदायिक उन्माद पैदा करने वाले हिन्दुओं पर तीख प्रहार करते हुए लिखा है कि, "मात्र पैसे के लोभ में, दिन-रात भ्रष्टाचार लिप्त रहनेवाले, आदमी के खून पीनेवाले ही गोरक्षा के नाम पर अपनी बरकरार रखना चाहते हैं। "आध्यात्म झूठ है, भौतिकता सत्य है। धर्म का प्र बाहरी और दिखावटी है। यह धोखे की चीज है। हिन्दुओं के गोरक्षा का प्र

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ढोंग और फरेब है, दिखाऊ और बनावटी है। अतः इसमें कभी साथ नहीं देना चाहिए।" (पेज २०९)।

धर्म के बारे में सहजानन्द ने ठीक ही लिखा है कि, "धर्म सार्वजनिक वस्तु नहीं है और न वह सबके लिए है भी। यह अपवाद है, कोई सर्वमान्य नियम नहीं।" (पेज—२१०)।

सहजानन्द कितने सूक्ष्मदर्शी थे इसका प्रमाण देखिए—"स्वाधीनता आन्दोलन में अहमदाबाद कांग्रेस के बाद सन् १९३० तक जेल यात्रा के अनुभव के आधार पर देश के प्रमुख नेताओं ने गाँधीजी द्वारा बनाए गए जेल नियमों का उल्लंघन किया। १९३० ई० में हजारीबाग जेल में भी यही बात देखकर उन्होंने अनुभव किया कि, एक दिन 'गाँधीजी की जय' बोलकर उनकी हत्या लोग ठीक इसी प्रकार कर सकते हैं यदि जरूरत समझें, जिस तरह आज उनके आदेशों की हत्या कर रहे हैं। "महावीर की जय" बोलकर लूट-पाट करने वाले, आग लगाने या मुसलमानों के साथ मारपीट करने की बात का भी उन्हें उसी समय अनुभव हुआ।"

आज भी यह बात बिल्कुल ही ठीक लगती है, जैसा कि देखा जाता है, गाँधीजी की विचारधाराओं की हत्या करने वाले तो गाँधीजी का नाम जपते ही रहते हैं; किन्तु खूबी की बात यह है कि जिन लोगों ने गाँधीजी की हत्या की; वे लोग भी अब गाँधी की दुहाई देकर; राष्ट्रीय विचारधारा की हत्या करने तथा लूट मचाने में लग गए हैं।

वंश परम्परागत संस्कार और दकियानूसी मंडली का ही प्रभाव है कि लोगों को सोचने-समझने का अवसर नहीं मिलता है और मात्र भाग्यवादी बनकर कष्ट भोगने को तैयार रहते हैं।

राजनीति में आम आदमी के दिल को जीतने के लिए यह आवश्यक है कि उनकी जिन्दगी से मिल जुलकर चला जाय, ऐशो-आराम की दिखावटी बातों से दूर रहा जाय। सहजानन्द ने बड़े ही अच्छे ढंग से इसकी ओर इंगित किया है कि, *"अमीरी तो हमारी राजनीति के लिए प्लेग है।"* इतना ही नहीं, राजनीति में धर्म का प्रवेश कतई नहीं होना चाहिए।

"जब चौरा-चौरी की घटना हुई तो गाँधी जी ने बारदोली में सत्याग्रह स्थगित करने की घोषणा कर दी। यह बात किसी को अच्छी नहीं लगी। अहिंसा के बाल की खाल गाँधी जी की तरह खींचना कोई जानता न था। अतः जन-साधारण के और देशबन्धु तथा नेहरू जैसे नेताओं के भी समझ में यह बात नहीं आ सकी। इसीलिए वे लोग क्षुब्ध थे और लड़ाई को ऐसा रूप देना चाहते थे जिसमें आन्तरिक प्रेरणा या दैवी पुकार जैसी किसी चीज की जरूरत न हो। वह निरा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भौतिक हो।" (पेज—२५५)। आज भी इन बातों पर अगर गौर किया जाय तो यह देखा जाता है कि धर्म, भगवान, दैवी शक्ति, आन्तरिक प्रेरणा की दुहाई देकर ही राजनीति की जाती है। इसका एकमात्र उद्देश्य यह बात होता है कि जनता को उल्लू बनाये रखा जाय और यह जानने से बंचित रखा जाय कि शोषित-पीड़ित जनता को सेवा ही नहीं, उससे प्राप्त मेवा पर भी उसी का अधिकार है। ताज्जुब है कि देश के सोशलिस्ट मित्र भी (जो आज सरकार में हैं) इसी रास्ते पर चलने की हामी भर रहे हैं।

छुआछूत के विषय में सहजानन्द ने वैज्ञानिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया है जो सर्वथा उचित है। उन्होंने खान-पान में छुआछूत की बात को सिद्धांततः एवं व्यावहारतः गलत बताया है। उन्होंने लिखा है; "मैं जाति या वर्ण के नाते नीच-ऊँच या स्पृश्य-अस्पृश्य किसी को नहीं मानता। धर्म के आधार पर भी छूआछूत की बात नादानी है।" सहजानन्द अछूत उसे मानते हैं जिसमें वैचारिक भ्रष्टता हो तथा चारित्रिक दोष हों।

मैंने प्रारंभ में ही कहा है कि सहजानन्द निरंतर आगे बढ़ने वाले व्यक्ति थे। अनुभव के आधार पर वे सदा व्यवहार तथा विचार में आगे बढ़ते गए। उन्होंने खुद भी इसी पुस्तक में इसे स्वीकारा है। उनकी यह प्रक्रिया बराबर जारी रही। बिहार के एक अखबार ने (जो उनका कट्टर विरोधी था) एक बार उद्धृत करते हुए लिखा कि, "स्वामी जी चाहे और कुछ हों या नहीं, मगर निरंतर आगे बढ़ने वाले जरूर हैं (Swami is nothing, if he is not progressive.)।"

बिहटा आश्रम के निर्माण में जमींदारों के चन्दे के पीछे जो रहस्य था, उसका भी भंडाफोड़ सहजानन्द ने किया और किसानों को सचेत करते हुए *"किसानों के फंसाने की तैयारियाँ"* नामक पुस्तिका लिखी। जमीन्दारों के चन्दे को अस्वीकार करते हुए, उनके खिलाफ लड़ाई जारी रखते हुए अपनी चार-पांच पुस्तकों की बिक्री के पैसे से बिहटा आश्रम का बाकी काम उन्होंने पूरा किया। पैसे के सामने कभी भी सहजानन्द ने असलियत की तिलांजली नहीं दी तथा कभी भी आत्मसमर्पण नहीं किया। धनियों के विषय में उनके विचार देखिए—"इन धनियों की खोपड़ी अजीब होती है। यह सबों को एक ही तराजू पर तौलना चाहते हैं। और है वह तराजू पैसे का।"

सन् १९२६ ई० में समस्तीपुर में वे रहने लगे। समस्तीपुर (बिहार) से उन्होंने "लोक संग्रह" नामक साप्ताहिक हिन्दी पत्र का प्रकाशन किया। प्रकाशन तथा सम्पादन १९२७ से शुरू हुआ। मगर कुछ कठिनाइयों के चलते थोड़े ही दिनों में प्रेस को पटना लाना पड़ा। बाद में वह प्रेस बिक गया। कुछ लोगों ने उनकी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खिल्लियां उड़ाईं। फिर वे कलकत्ता जाकर प्रेस के सामान ले आए तथा पुनः समस्तीपुर पहुँच गए। पत्र निकालने की कठिनाई का अनुभव इसके पूर्व सन् १९१५ ई० में भी उन्हें हो चुका था। काशी से उन्होंने "भूमिहार-ब्राह्मण" नामक मासिक पत्र निकाल कर बहुत से अनुभव हासिल किए थे।

पत्र-पत्रिकाओं के बारे में उनका कितना क्रांतिकारी दृष्टिकोण था; देखा जा सकता है—"मैं तो मानता हूँ कि हमलोग पत्रों की और सार्वजनिक कार्यों की जवाबदेही ठीक-ठीक महसूस ही नहीं करते। सार्वजनिक पैसे के साथ तो हम एक प्रकार का खेलवाड़ करते हैं। यही कारण है, 'पत्रों' के दिवालियेपन का। 'पत्र' न तो लीडर के साधन हैं; और न पैसे कमाने या कुछ लोगों के गुजर के लिए। ये तो लड़ाई के अस्त्र हैं।"

सन् १९२७ ई० के उत्तरार्द्ध से किसान आन्दोलन से जुड़ गए जो आज पूरे देश में फैला हुआ है। किसान आन्दोलन की शुरूआत उन्होंने पटने से की। अनुभव के आधार पर जमीन्दारों के जुल्म की आग उनके भीतर धधक रही थी। एक विचारक के रूप में जमींदारों को सहजानन्द ने "अस्मत का लुटेरा" माना है। पश्चिम पटना किसान सभा का बाजाब्ता गठन ४ मार्च १९२८ को किया गया।

सहजानन्द ने छोटी-सी-छोटी बातों की खोज गहन ढंग से की थी। चोटी (शिखा) रखने वालों पर भी उन्होंने तीखा प्रहार किया है।

धीरे-धीरे बिहार प्रान्तीय किसान सभा का गठन हुआ। सहजानन्द को अध्यक्ष बनाया गया। वे आगे बढ़ते गए।

सहजानन्द दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति थे जो सिद्धांतों को अमली रूप देने में कोई कसर उठा नहीं रखते थे। जेल में ही उन्होंने इस विचार का प्रतिपादन किया कि "केवल आदर्शवादी बनने से इस भौतिक दुनिया का काम कभी नहीं चल सकता। ....। गाँधीवाद का भूत और आदर्शवाद की सनक ये दोनों बातें अब उनके सर से उतर गईं।"

आजादी की लड़ाई के प्रारंभिक दिनों में सहजानन्द पक्के गाँधीवादी थे। किन्तु धीरे-धीरे गाँधी जी के साथ काम करते-करते उनके विषय में इनकी धारणा बदलने लगी। उन दिनों वे गाँधी जी को क्रांतिकारी मानते थे। अनुभव के आधार पर उन्होंने यह स्पष्ट समझ लिया कि गाँधी जी किसी भी लड़ाई को निर्णायक दौर तक नहीं ले जा सकते। वे समझौतावादी एवं सुधारवादी थे। सहजानन्द यह समझते थे कि जो आजादी हम चाहते हैं, वह तो बिना मुड़े, झुके और समझौता किए ही लड़ाई जारी रखने से ही मिल सकती है।" आज उसके कुपरिणामों का इजहार प्रत्यक्ष रूप से हो रहा है, जिसे भारतवासी भुगत रहे हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"गांधी-इरविन समझौता" के बारे में यह साफ हो गया है कि वह एक भारी भूल थी।"

संघर्ष के विषय में सहजानन्द के विचार कितने क्रांतिकारी हैं, देखा जाय—"गैर राजनीतिक लड़ाई कभी नहीं लड़ी जानी चाहिए। इसमें सदा खतरा है।"

गांधीजी के जमींदारों के प्रति नरम रूख बरतने के चलते सहजानन्द सदा के लिए उनसे अलग हो गए और पूरे बिहार में घूम-घूम कर जमींदारी के खिलाफ आन्दोलन चलाने में लीन रहे।

शोषण, लूट, अत्याचार के प्रति सहजानन्द के भीतर कितनी घृणा; कितना द्वेष था; कुछ घटनाओं से सिद्ध होता है। इन घटनाओं का जिक्र, जमींदारों की लूट और गांधीजी के सत्य की पुकार के प्रसंग में किया गया है। पहली घटना १९१७ की है जब वे गाजीपुर में थे। एक ६०-७० वर्ष का बूढ़ा; जाड़े के दिन में एक फटे बोरे में पूरे बदन को लपेटे पड़ा-पड़ा मर गया। दूसरी घटना मुंगेर जिले चकमा थाने की है। वहाँ परिश्रमी किसानों की दुर्दशा से मर्मान्त हो गए। तीसरी घटना में बेगूसराय में उन्होंने टूटी खाट पर एक मुर्दे को जाते देखा। इन घटनाओं की छाप उनके हृदय पर गहरी पड़ी। उन्होंने कहा, "इस समाज को मिटाना होगा, जिस समाज में कमाने वाले ही भूखों मरते हों। यही सबसे बड़ा धर्म, सबसे बड़ी अहिंसा, सबसे बड़ा सत्य है। इन्हें छोड़ मेरे दिल में भगवान कहाँ? मेरे भगवान तो यही हैं।"

आजादी के पूर्व ही कांग्रेस के विषय में सहजानन्द ने जो भविष्यवाणियाँ की थीं वे शतप्रतिशत सही निकलीं। उन्होंने कहा था, "आज तो कांग्रेस उन्हीं के हाथों की चीज है जो न क्रान्ति चाहते, न किसान सभा को फूटी आँखों देख सकते और न मजदूर सभा को बर्दाश्त कर सकते। हां, नकली किसान-मजदूर सभाएँ अवश्य चाहते हैं, क्योंकि समय की पुकार जो ठहरी। इससे जनता आसानी से भुलावे में पड़ सकती है। वही हुआ भी।" आज भी इसका प्रमाण है।

जमींदारों के प्रति, उनके जुल्मों और अत्याचारों के खिलाफ उनकी विचारधारा क्या थी, देखा जाय—'मैं इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि जमीन्दार नाम की चीज ही बुरी है। वह रहने लायक नहीं। उसे खत्म करना चाहिए।............मेरी धारणा है कि यदि मिट्टी का भी जमीन्दार हो तो वह भी उतना ही खतरनाक होगा।"

धर्म के विषय में सहजानन्द ने अनुभव के आधार पर क्रान्तिकारी विचारधारा का प्रतिपादन किया। अन्धविश्वासों पर आधारित धर्म की तो धज्जियाँ उन्होंने उड़ायी ही है, धर्म को कोरा व्यक्तिगत भी माना है। (पेज—४४६)। इस प्रसंग में उन्होंने स्पष्ट घोषित किया है कि धर्म के सम्बन्ध में पहले की धारणा वे बदल चुके हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सहजानन्द जनता की संस्थाओं को पूर्णतः जन संस्थाएँ एवं स्वावलंबी बनाने के पक्षधर थे।

कांग्रेस की नीतियां जब गरीबों के विपरीत जाने लगीं तो सहजानन्द ने गाँधी जी तथा अन्य बड़े-बड़े कांग्रेसी नेताओं को फटकारा था। इस पर अपनी प्रतिक्रिया जाहिर करते हुए पट्टाभि सीतारमैया ने सहजानन्द को *एक भयंकर स्वामी* की संज्ञा दी थी। इतना तो स्पष्ट ही है कि सहजानन्द ने दुश्मनों और कठिनाइयों से संघर्ष के बजाय कभी भी समझौता नहीं किया। इसीसे इनका जीवन संघर्षशीलता की जीवंत तस्वीर है।

सन् १९३७ में जब कांग्रेसी मंत्री पद संभाले तो सबसे अधिक राष्ट्रीय झंडे का अपमान उन्हीं के शासन काल में हुआ। बम्बई और कानपुर के मजदूरों की हड़तालों पर गोलियां चलीं, हड़ताल तोड़ने, विफल करने के लिए बम्बई में सारी ताकत लगायी गयी। इसके बावजूद उनकी हड़तालें सफल हुईं। किसानों की क्या हालत हुई इससे सम्बन्धित सहजानन्द ने दो पुस्तिकाएँ अँगरेजी में लिखीं—

(1) "The other side of the shield".

(2) Rent Reduction in Bihar. How it works."

किसानों के कुछ बड़े-बड़े प्रदर्शन पटने में हुए। कांग्रेसी मंत्रियों ने सहजानन्द को उनसे सचेत रहने को कहा। सहजानन्द की तीखी प्रतिक्रिया हुई। उन्होंने साफ कहा है कि, "जिस जनता के बल पर गद्दी मिली है, अब वही जनता फूटी आँखें भी नहीं सुहाती।" यह अजीब विडंबना है। ठीक आज की भी जनता पार्टी की सरकार का यही चरित्र है। जिन नौजवान छात्रों ने इसे गद्दी पर बिठाया; उन्हीं के ऊपर अब इस सरकार की निगाह गड़ी हुयी है। अन्धाधुन्ध गोलियाँ चलवा रही है, महीनों से शिक्षण-संस्थाएँ बन्द कर दी गयी हैं। ऐसा हो भी क्यों नहीं, यह भी सरकार उसी वर्ग की है, जिस वर्ग की कांग्रेसी सरकार है।

जमींदारों के जुल्म के खिलाफ किसानों को जाग्रत करने में सहजानन्द की भूमिका बहुत ही महत्वपूर्ण रही है। किसानों को डंडे का जवाब डंडा से देने की सीख सिखलायी उन्होंने। किसान आन्दोलन में उन्होंने *"डंडावाद"* के सिद्धांत का प्रतिपादन करके शैतानों की शैतानियत ठंढी की।

किसान आन्दोलन जहाँ उभरता था, संघर्ष तीव्र होता था; उस भूमि को सहजानन्द तीर्थभूमि की संज्ञा देकर किसानों को संगठित करते थे। इन आन्दोलनों के जरिए उन्होंने वर्ग चेतना जगायी।

किसान सभा के लाल झंडे की रक्षा सहजानन्द ने बड़ी बुलंदी से की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस पुस्तक में बिहार के अँगरेजी दैनिक पत्र "सर्चलाइट" की एक झूठी खबर का भी भंडाफोड़ सहजानन्द ने बहुत ही रोचक ढंग से किया है।

सहजानन्द शनैः शनैः वामपन्थी-आन्दोलन के समर्थक और सहयोगी हो गए। सहजानन्द ने राष्ट्रीय सग्राम के वारे में लिखते हुए स्पष्ट लिखा है कि सभी वामपंथियों ने संयुक्त वामपक्षी कमिटी के नेतृत्व में, सन् १९३९ ई० में ३१ अगस्त से ६ सितम्बर तक राष्ट्रीय-संग्राम-सप्ताह मनाने का आह्वान किया। किन्तु सोशलिष्टों ने बिहार में कहीं भी इसके तहत भाग नहीं लिया। यहाँ यह देखने योग्य बात है कि सहजानन्द किसी भी वामपंथी पार्टी के वाजाब्ता सदस्य नहीं थे। किन्तु वामपंथी आन्दोलन की सार्थकता से वे पूर्णतः आश्वस्त थे। किन्तु, जो सोशलिस्ट भाई हैं, उस समय तो उनकी भूमिका ऐसी रही कि वे आन्दोलन से कटकर चलते रहते थे। किन्तु आज वे ही इस देश पर शासन करने में शामिल हैं, जो दिन-रात जनविरोधी कार्रवाइयों में संलग्न हैं।

"उसी साल यूरोपीय युद्ध छिड़ने पर अक्तूबर में नागपुर में साम्राज्य विरोधी सम्मेलन सभी दलवालों से पूछकर हुआ मगर सोशलिस्ट उसमें नहीं आए। हालाँकि, यह सम्मेलन जयप्रकाश नारायण से भी पूछकर आयोजित हुआ था। सहजानन्द जब लौटकर ११-१२ अक्तूबर को पुनः लखनऊ आए तो देखा कि सोशलिस्ट लोग चुप्पी-साधे अपनी डेढ़ ईंट की मस्जिद अलग हीं बनायेंगे। पटना लौटने पर समाजवादियों ने साथ-साथ लड़ने की स्वीकृति दी। किन्तु, संघर्ष में चुप्पी साधे रहे।" *(पेज—५४८)* आज वही सोशलिस्ट, सहजानन्द की जयन्ती में मालाएँ पहन रहे हैं, और उनके सच्चे अनुयायी साबित कर रहे हैं, जिन्होंने कभी भी सहजानन्द का साथ नहीं दिया; उन्हें धोखा दिया। इसी पीड़ा से उन्होंने राजनीति छोड़ दी। यही है इन सोशलिस्टों का दोहरा चरित्र।

सहजानन्द किस विचारधारा के प्रवर्तक थे, देखा जाय,—"मैं कमाने वाली जनता के हाथ में ही सारा शासन-सूत्र औरों से छीनकर, देने का पक्षपाती हूँ। उनसे लेकर या उन पर दबाव डालकर देने-दिलवाने की बात मैं गलत मानता हूँ। हमें लड़कर छीनना होगा। तभी हम उसे रख सकेंगे। यों आसानी से मिलने पर फिर छिन जायेगा, यह ध्रुव सत्य है। यों मिले हुए को मैं सपने की सम्पत्ति मानता हूँ।

कोरा किताबी ज्ञान निरर्थक है। उसे व्यावहार में उतारकर नये कार्यकर्त्ताओं और नये नेताओं के नेतृत्व मे संघर्ष करना चाहिए। मजबूत संगठन के आधार पर ही लड़ाई में जीत हासिल हो सकती है और फिर उसकी उपलब्धियों की सुरक्षा भी की जा सकती है। मैं आर्थिक लड़ाई को छोड़कर नहीं चलना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चाहता हूँ। मैं सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्रान्ति चाहता हूँ। यह केवल संघर्ष से ही हो सकता है किसी दूसरे तरह से नहीं।" एक संघर्षशील विचारक के रूप में सहजानन्द को समझने के लिए उनकी विचारधाराओं से जुड़कर चलना होगा। क्योंकि उनके विचार किसी शीशमहल से नहीं, बल्कि जन संघर्षों से पैदा हुए हैं।

लेखक के रूप में सहजानन्दजी की लगभग छोटी-बड़ी १४ पुस्तकें हैं। किन्तु उनमें से तीन ही पुस्तकें मुझे प्राप्त हो सकी हैं। 'मेरा जीवन संघर्ष' के सिवाय "किसान कैसे लड़ते हैं?" "क्रांति और संयुक्त मोर्चा"; "किसान सभा के संस्मरण"; "खेत-मजजूर", "झारखण्ड के किसान", और "गीता हृदय" नामक पुस्तकें उन्होंने लिखीं।

"मेरा जीवन-संघर्ष" में सहजानन्द ने रूसी क्रान्ति की प्रशंसा करते हुए किसानों और मजदूरों की भूमिका की भूरि-भूरि प्रशंसा की है।

हिटलर के नेतृत्व में रूस पर फासिस्टों के हमले की खबर से सहजानन्द काफी व्यथित और व्याकुल थे। किन्तु उन्हें विश्वास था कि रूस की जनता हिटलर को हराकर दुनिया को त्राण दिलायेगी ही। ऐसा हुआ भी। उस युद्ध में सोवियत रूस की सहायता करने का भी फैसला किसान सभा में लिया गया।

आइये! अब हम सहजानन्द की दूसरी पुस्तक "किसान कैसे लड़ते हैं?" पर जरा एक नजर डालें। यह छोटी-सी पुस्तक मात्र सौ पृष्ठों की है। किन्तु पढ़ने से ऐसा महसूस होता है कि हम किताब के पन्नों में नहीं, बल्कि संघर्ष के क्षेत्र में हैं। किसान आन्दोलन की जीती-जागती तस्वीर है यह पुस्तक। सबसे पहले मेरी यह धारणा है कि आज किसान आन्दोलन को संगठित करने, तीव्र करने तथा उसकी कारगरता हासिल करने के लिए यह आवश्यक है कि इस पुस्तक की प्रतियाँ हर किसान के हाथ में एक सबल अस्त्र की भाँति हों।

पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर लेखक कहता है कि, "अपने आपको बरकरार रखने के लिए लड़ी जाने वाली लड़ाई के अलावा कोई रास्ता किसानों के लिए है नहीं। इसीलिए उन्हें लड़ना ही होगा।"

पुस्तक की प्रस्तावना में लेखक कहता है कि, "कोई यह समझने की भूल न करें कि इस पुस्तिका में लिखी बातें निजी कहानियाँ हैं और मैंने उनका संग्रह कर दिया है। यों तो सैकड़ों लड़ाइयाँ लड़ी गई हैं, किन्तु यहाँ वैसी ही लड़ाइयों की चर्चा है जो बिहार में, विशेष रूप से किसान सभा की देख-रेख में ही लड़ी गयी हैं। मगर उनमें जिनसे या जिनके जिन अंशों से किसानों और किसान कार्यकर्त्ताओं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को भविष्य में अपना संग्राम चलाने मे सहायता मिल सकती है, केवल उन्हीं को उद्धृत किया गया गया है। यह पुस्तक किसानों के संघर्ष में जीत हासिल करने के लिए पथ प्रदर्शक का काम कर सकती है।" यह बात लेखक द्वारा कही गयी शतप्रतिशत सही जान पड़ती है।

अँगरेजों के प्रति सहजानन्द की धारणा बिल्कुल पक्की थी कि वे दैत्य होते हैं और खून पीकर ही जिन्दा रहते हैं तथा जमींदार भी वैसे ही घृणात्मक हैं। अँगरेजी हुकूमत के पिट्ठू जमींदारों के बारे में क्या कहना ? पुस्तक के प्रारम्भ में ही भागलपुर के एक अँग्रेज जमीन्दार के बारे में लेखक कहते हैं—"एक तो अँगरेज, दूसरे जमीन्दार। फिर तो करैला नीम पर चढ़ गया।" सचमुच बड़ो सटीक बात है।

इनके राज में जमींदारों से जुल्म इतने बढ़ गए थे कि, "न तड़पने की इजाजत थी न फरियाद की थी। घुट के मर जायँ, मर्जी यही सैयाद की थी।" सचमुच कितनी दारुण स्थिति थी !

इससे त्राण पाने का एक ही उपाय लेखक बतलाता है कि, "किसानों का तो एक ही बल है संगठन।" उन्हें वर्ग दृष्टिकोण के आधार पर संगठित होना पड़ेगा, तभी उनके दुख दूर हो सकते हैं।

सहजानन्द चूँकि व्यावहारिक अनुभव के आधार पर पुस्तकों की रचना करते और विचारों का प्रतिपादन करते थे, इसलिए जनता की अजस्र शक्ति स्रोत पर उनका दृढ़ विश्वास था। इसलिए वे कहते हैं कि, "जुल्म की टहनी सदा फलती नहीं। इसे समाप्त होना ही है। क्योंकि जुल्म की आँच में तपकर लोग इस्पात बन जाते हैं।"

इस पुस्तक में कानून के विषय में लेखक ने बड़ो ही सही बात कही है। कहते हैं कि, "इस व्यवस्था में गरीबों को आखिर कानून मदद ही क्या करेगा ? वह तो अमीरों और धनियों के लिए है। कचहरियाँ उन्हीं की, हाकिम उन्हीं के, बड़े-बड़े वकील बैरिस्टर उन्हीं के तथा पुलिस और फौज उन्हीं की मदद करती है।" इस व्यवस्था में रुपया प्रधान होता है। इसलिए कहते हैं कि, "रुपया कानून की छाती पर कोदो दलता है।"

लेखक ने किसानों को निर्भय होने का पाठ पढ़ाया है। भूखों मरने से तो अच्छा है कि हक के लिए लड़कर समरक्षेत्र में गोलियाँ खाकर शान से मरें। असल में हमारा शत्रु मन ही है। और इसे ही मार भगाना हमारा पहला फर्ज है।

आन्दोलन के दौर में सहजानन्द नेतृत्व के बारे में कितनी स्पष्ट धारणा रखते हैं। कहते हैं कि "शोषितों और मजलूमों की जरूरतों ने ही नेताओं को पैदा किया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है न कि नेताओं ने जरूरतें पैदा की हैं। इसीलिए बाहरी नेताओं पर रोक लग जाने पर मजलूमों के भीतर से ही उनके नेता पैदा होते हैं। वही धुँआधार लड़ाई चलाते भी हैं............. । वे तो एक ही बात जानते ही हैं कि या तो पीड़ित और शोषित ही रहेंगे या उनके लूटने वाले ही। दोनों तो रह नहीं सकते।" यह तो बिल्कुल ठोस बुनियादी एवं वैज्ञानिक बात है। अगर मजदूरों की लड़ाई में मजदूर, किसानों की लड़ाई में किसान नेता न हो और जिस वर्ग की लड़ाई हो, वह वर्ग नेतृत्वकारी भूमिका अदा नहीं करे तो आन्दोलन की महत्ता खतम हो जाती है।

जमीन्दारी के विषय में सहजानन्द कितनी स्पष्ट राय रखते थे; उसकी बुराइयों को कितनी गहराई तक देखते थे। अगर उनकी दृष्टि उस गहराई तक नहीं पहुँचती तो शायद जमीन्दारों के खिलाफ इतनी बड़ी लड़ाई ठान कर जीतें हासिल नहीं कर पाये होते। कहते हैं, "जमीन्दारी की जड़ ही बेईमानी और मुल्क के साथ गद्दारी है। यह कायम ही हुई इसी तरह............ । इसलिए किसानों को उनपर भरोसा नहीं करना चाहिए।"

जमीन्दारों की जाति और धर्म के विषय में सहजानन्द कहते हैं कि "जमीन्दारों की जाति जोर जुल्म रुपया-पैसा है और यही उनका धर्म है।" अर्थात् शोषक वर्ण के आधार पर विभाजित नहीं हो सकते, उनका विभाजन वर्ग चरित्र के आधार पर ही होना चाहिए। शोषकों की जाति और उनका धर्म एक होता है।

छोटे-छोटे जमीन्दार भी कम जहरीले नहीं होते, व्यवहार में तो और भी दुष्ट होते हैं। इनके विषय में सहजानन्द कहते हैं कि "असल में छोटी लाल मिर्च जितनी कड़वी होती है उतनी बड़ी नहीं। जितना तेज कुटकी या पिल्लू काटता है; उतना तेज मच्छड़ नहीं।"

पुलिस जुल्म का एक उदाहरण बड़ा ही मार्मिक है। जमीन्दार के खिलाफ आन्दोलन तेज हो गया था। पुलिस के सहारे आन्दोलन को कुचलने का प्रयत्न किया गया। पुलिस का अत्याचार औरतों के खिलाफ शुरू हुआ। "पुलिस ने मजदूर औरतों की झोपड़ियाँ उजाड़ दीं। कोशिश करने पर भी फिर बनाने नहीं दिया। जाड़े के दिन। आफत आ गयी............ । मगर वाह रे हिम्मत! आखिर सीताराम के नेतृत्व ने कमाल किया। और उन औरत बच्चों ने ऐसा किया जो किसान आन्दोलन के इतिहास में अमर रहेगा। उन्होंने सब कुछ सहा। मगर वहाँ से हटने का नाम लिया नहीं, पुरानी पुस्तकों में लिखा है कि मर्दों की अपेक्षा स्त्रियों में दोगुनी मर्दानगी और छःगुनी तत्परता रहती है। पुलिस दंग

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थी। पिट्ठू हक्का-बक्का थे।" औरतों की भूमिका उस समय किसान आन्दोलन में बहुत महत्त्वपूर्ण रही है।

जमीन्दारी कितनी भयानक होती है, सहजानन्द के विचार से स्पष्ट है। "जमींन्दारी ऐसी जोंक और ऐसी पिशाची है कि किसानों का रक्त बूँद-बूँद करके चूस लेती है और उन्हें मरणासन्न छोड़ देती है। जमीन्दारों के अमले प्लेग के कीटाणुओं की तरह जहाँ पहुँचे कि उसे उजाड़ छोड़ा। इनके नाम पर किसानों का कलेजा काँपता है।"

कानून तोड़ने का इलजाम भी गरीबों पर ही लगाया जाता है। किन्तु यह जिम्मेदारी तो उनपर जाती है जो अत्याचार करके क्रांति की भूमि तैयार करते हैं। शोषित-पीड़ित जनता तो मर ही रही है। अतः सहजानन्द कहते हैं, "मरता क्या नहीं करता ?" अतिशय रगड़ करै जो कोई। अनल प्रगट चन्दन ते होई।" सूखी घास और आग एक जगह रख देना और फिर उम्मीद करना कि आग न जले, सबसे बड़ी नादानी है।

किसान आन्दोलन में औरतों की अहम् भूमिका निभाने का कारण बताते हुए सहजानन्द ने लिखा है कि "वे औरतें गर्म लेक्चर सुनकर आन्दोलन में नहीं कूदी थीं। यहाँ तो अपनी रोटी का सवाल उन्हें खुद-ब-खुद हल करने की सूझी।"

जमींदारों से सचेत रहने तथा उनकी ईमानदारी पर भरोसा नहीं करना ही अपने को जिन्दा रखना है। क्योंकि, अगर वे ईमानदार हो जाय तो धीरे-धीरे उनकी जमीन्दारी ही खत्म हो जाय। क्योंकि वह बिना जुल्म के टिक नहीं सकती।" यानि बेईमानी उनका मूल चरित्र है। यहाँ एक बात कहना मैं उचित समझता हूँ कि आजकल भी कुछ लोग शोषकों तथा बदमाशों के हृदय परिवर्त्तन की बात करते हैं। यह मात्र पागलों का प्रलाप ही कहा जा सकता है। क्योंकि उनका हृदय परिवर्त्तन बात से नहीं बल्कि, उनके मूल चरित्र पर प्रहार करके ही संभव हो सकता है। इस भुलावे में डालना संघर्ष की हत्या करना है।

किसान आन्दोलन पर ऊपर से किसी बात को थोपना सहजानन्द ने कभी भी उचित नहीं समझा। लेनिन ने भी ऐसा ही विचार व्यक्त किया है। सहजानन्द लेनिन को उद्धृत करते हुए लिखते हैं कि, "यह सही है कि किसानों और जनता से अनेक बातें सीखकर औरों को सिखाना चाहिए और इसी प्रकार उनकी लड़ाई चलानी चाहिए।" लेनिन ने सच ही कहा है कि अनुभव की सीख पक्की होती है।

खुशफहमी के कारण गलती का शिकार होना पड़ता है। एक प्रसंग में इसकी चर्चा बहुत ही अच्छे ढंग से आयी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गया जिले के सहबाजपुर के जमींदारों ने जब यह साबित करना चाहा कि लगान वसूली उनका कानूनी हक है तो सहजानन्द कहते हैं, "जिस प्रकार गैरों की कमाई से ऐश उड़ाने का हक अपने लिए वे लोग समझते हैं क्या उसी प्रकार यह भी सोंचते हैं कि उन किसानों को भी आदमी की तरह जीने का हक है ? अगर उन्हें लगान वसूली का कानूनी हक है तो किसानों को भी इन्सान की तरह जिंदा रहने का कानूनी और नैतिक दोनों ही हक हैं।..............। उन्हें याद रखना चाहिए कि मनुष्य की तरह जीवन यापन करने का हक सभी कानूनी नैतिक या लाठी के हकों से कहीं वड़ा है। मौका आने पर उन हकों को मिटाकर भी इसे कायम रखना जरूरी है।"

इस पुस्तक में कई ऐसे प्रसंग हैं; जिनमें इस बात की चर्चा है कि कभी-कभी किसानों में किस तरह निम्न-पूँजीवादी प्रवृत्ति घुस जाती है और वे संघर्ष से कटकर ही आराम से अपनी समस्याओं का निदान चाहने लगते हैं। ऐसी प्रवृत्ति से भी सहजानन्द लड़ते रहे तथा उन्हें फटकारते भी रहे।

गुजरात और महाराष्ट्र के सूदखोर, साहुकार महाजनों के विषय में सहजानन्द लिखते हैं कि, "साहुकारों ने तो इस प्रकार तबाही मचा रखी थी कि मौजे का मौजा तबाह था। एक रुपये का दस रुपये सूद लिए फिर भी उनके हिसाब में बीस बाकी रहे। शैतान की अंतड़ी की तरह वह हिसाब कभी खत्म होती ही नहीं।" इस आन्दोलन में भी किसान सभा ने अहम् भूमिका का निर्वाह किया।

इस पुस्तक में 'रैयान' कहलाने वालों की वीरता का अद्भूत प्रसंग है। बड़हिया टाल में इन 'रैयानों' ने ही किसान सभा को अजर-अमर बनाया और कार्यानन्द शर्मा को बड़हिया का योद्धा बना दिया।

किसानों को निर्भयतापूर्वक संघर्ष करने की सीख सहजानन्द और किसान सभा ने सिखायी। उन्होंने लिखा है कि, जब तक किसान इसी प्रकार मौत का भय छोड़ उससे प्रेम करने को तैयार न हो जायेगें तब तक न तो जमींदारी मिटेगी; न किसान राज्य कायम होगा और न उनके कष्ट दूर होगें। उन्होंने अमली तौर से बता दिया कि; "जीना है तो मरना सीखो।"

अत: पुस्तक में मशहूर खेड़ा संघर्ष की विजय के कारणों का विश्लेषण बहुत ही साफ-साफ एवं सुन्दर ढंग से किया गया है। इस जीत में भी औरतों की ही भूमिका प्रमुख थी। पुलिस को बार-बार मात खाकर वहाँ से जाना पड़ा था।

सहजानन्द जनता की लड़ाइयों में जीत के लिए लिखते हैं कि "जनता की लड़ाइयों में वही जीतते हैं जिन्हें न केवल अपने में पूरा विश्वास है, किन्तु अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लक्ष्य और जनता में भी। बिना इन तीन विश्वासों के विजय असंभव है और अगर ये विश्वास हों तो उसे कोई रोक सकता भी नहीं।"

सहजानन्द ने पीड़ित जनता के गुस्से का वर्णन बहुत सूक्ष्म दृष्टिकोण से किया है—"ठीक ही है पीड़ित जनता उग्रतम नेताओं से भी हजार गुना उग्र होती है।"

सहाजानन्द वस्तुगत परिस्थिति का मूल्यांकन भी सही-सही कर पाने में माहिर थे। इसका साक्षात् प्रमाण भी उन्होंने पेश किया है। देकुली (दरभंगा) के किसानों के मनोबल को देखकर सहजानन्द लिखते हैं; "लोग कहते हैं कि खूब आन्दोलन होने से और सभा का काम बराबर होने से ही किसान और मजदूर तैयार हो सकते हैं। मगर जुल्म और तबाही ऐसी पाठशालाएँ हैं जो पीड़ितों को आंच में तपाकर पक्के बना देती हैं। वास्तविक स्थिति यों ही तैयार होती है।" देकुली में ऐसा ही हुआ।

उक्त पुस्तक में सामूहिक शक्ति की महत्ता पर भी काफी प्रकाश डाला गया है।

"किसान कैसे लड़ते हैं ?" पुस्तक की आज भी और भविष्य के लिए भी कितनी सार्थकता है, शब्दों में व्यक्त करना असंभव प्रतीत होता है।

सहजानन्द की लेखकीय क्षमता व्यावहारिकता से पैदा हुई है। अतः उनकी पुस्तकें सिद्धान्त और व्यावहार की जीती-जागती तस्वीर हैं। लगता है, पढ़ते समय आदमी उस प्रसंग में जूझ रहा हो, जिसकी चर्चा है। सहज भाषा का भी प्रयोग इस पुस्तक में हुआ है। लिखावट में कोई आडंबर नहीं दिखता। साधारण जन की भाषा है, इसलिए भी इस पुस्तक को एक पाठशाला समझ कर इससे शिक्षा ग्रहण करने की जरूरत है। आजकल तो ऐसा हो रहा है कि लेखक किसान मजदूर की बात इस कदर पेश करते हैं, जो उन बेचारों के पल्ले पड़ता ही नहीं है।

मुझे जिस तीसरी पुस्तक का अध्ययन करने का तथा उसपर कुछ लिखने का अवसर प्राप्त हुआ, वह है; 'गीता हृदय।" यह एक महान संग्रहणीय ग्रन्थ है। इसका अध्ययन एक-दो बार करने योग्य नहीं है बल्कि; बार बार करने लायक है। जितनी बार इसे पढ़ा जाय; उतनी बातें समझ में आयेंगी। यह लगभग साढ़े नौ सौ पृष्ठों का ग्रन्थ है। इसका प्रकाशन किताब महल, इलाहाबाद से हुआ है।

आइए ! अब हम इस पुस्तक के ऊपर एक सांगोपांग नजर डालें। सहजानन्द गीता को अपना हृदय मानते हैं। जितने भी ग्रन्थों का अध्ययन उन्होंने किया उनमें सबसे प्रिय ग्रन्थ गीता ही था। गीता के गहन अध्ययन के बाद उन्होंने "गीता हृदय" नामक पुस्तक लिखी। पुस्तक के प्रारंभ में ही उन्होंने लिखा है कि गीता को जिस तरह वे पहले समझते थे, आज उससे भिन्न समझते हैं। इसमें

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भौतिकता की कहीं कोई गुंजाइश नहीं है। वे गीता को मार्क्सवाद का विरोधी मानते थे। किन्तु उन्होंने बताया कि ज्यों-ज्यों समय गुजरता गया मेरे विचारों में मूल-भूत परिवर्त्तन होते गए। गीता के विषय में भी उनका ख्याल बदला। उन्होंने लिखा है कि "आज मैं न सिर्फ यही मानता हूँ कि गीता धर्म का मार्क्सवाद के साथ विरोध नहीं है; किन्तु मेरे जानते गीता-धर्म मार्क्सवाद का पोषक है। मेरे ख्याल से गीता के "सर्व भूतात्म भूतात्मा" और "सर्वभूत हितेरताः" सिवाय सच्चे मार्क्सवादियों के और कौन हो सकते हैं ? वही तो समस्त मानव समाज का नव-निर्माण इस तरह करना चाहते हैं कि एक भी आदमी दुखी, पराधीन, समुन्नति के सभी साधनों से वंचित न रहने पाये।"

सहजानन्द. अपने पुराने विचारों को दकियानूस मानते हैं और स्वयं लिखते हैं कि अच्छा हुआ, उससे पिंड छुट गया।

प्रस्तुत ग्रन्थ में गीता के श्लोकों एवं गीता का सांगोपांग विवेचन बड़े ही सहज ढंग से किया गया है। इस ग्रन्थ का पूर्ण विवेचन भी एक सद्ग्रन्थ हो सकता है। अतः मैं इसके कुछ अंशों पर ही विवेचन कर सकूँगा।

"मरने-मारने तथा हिंसा-अहिंसा का ख्याल के ही ख्याल से तो अर्जुन स्वकर्म से विचलित हो रहा था। कृष्ण ने शुरू में ही उसकी जड़ ही काट दी।

उन्होंने कह दिया कि मरने-मारने तथा हिंसा-अहिंसा का ख्याल तो महज नादानी है। क्योंकि आत्मा अविनाशी और निर्विकार है। फिर हिंसा-अहिंसा की बात ही कहाँ रही ?" बात बहुत सही है। क्योंकि, आत्मा या शरीर भी भौतिक है। अतः उनका लोप नहीं होता; केवल स्वरूप बदलता रहता है। केवल मरने में अन्तर है। कायर की तरह मर जाना निरर्थक है। अतः लेखक गीता के आधार पर समर-क्षेत्र में मरना ही वास्तविक मरना समझता है जो बहादुरी, सम्मान; और यश प्रदान करता है।

"समर मरण अरु सुरसरि तीरा
राम काज क्षण भंगु शरीरा।"

आत्मा के स्वरूप के विषय में, गीता-में प्रतिपादित विचारों को सहजानन्द ने वैज्ञानिक आधार पर सिद्ध करते हुए एंगेल्स की बातों से जोड़ा है। अतः बहुत सारी बातें ऐसी हैं जो मार्क्सवाद के वैज्ञानिक समाजवादी कौम से जुड़ी हुई हैं। सचमुच इन चीजों की खोज करके और उनके बीच सम्बन्ध स्थापित करके सहजानन्द ने बहुत बड़ा काम किया है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

"सांख्य और योग में अन्तर" नामक उप-शीर्षक में लेखक ने विद्वतापूर्ण ढं से हार-जीत की मूल बातों को स्पष्ट किया है। इसमें कहा गया है संघर्ष जह है। उसकी 'जीत या हार' तो प्रक्रिया है। न जीत में खुशफहमी का शिका होना चाहिए और न हार में कायरों की तरह पछताना चाहिए।

गीता धर्म और मार्क्सवाद शीर्षक में सहजानन्द कहते हैं कि, गीता का ए अपूर्व पहलू है। जिस पर अभी तक किसी भी विद्वान ने उस तरह दृष्टि न डाली है अर्थात् गीता को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से नहीं देखा गया है। गी धर्म की व्यावहारिकता और मार्क्सवाद में बहुत हद तक समता है।

इस अध्याय में धर्म के विषय में, गीता के आधार पर सहजानन्द ने बिल्‌ दो-टूक शब्दों में कह दिया है कि, "जिस प्रकार किसी की निजी चीज होती अपनी समझ तथा योग्यता होती है, अपना शरीर और स्वास्थ्य होता है.......... उसी प्रकार धर्म की भी बात है। वह भी हरेक आदमी का अपना निजी औ व्यक्तिगत पदार्थ है। उसमें किसी का साझा या हिस्सा नहीं है। धर्म सामूहि समूह की चीज न होकर व्यक्तिगत है, हर व्यक्ति का जुदा-जुदा है। यह ब गीता ने निर्विवाद सिद्ध कर दी है। अगर यही बात, यही मन्तव्य संसार व्यापक हो जाय, अगर यह गीता-धर्म (गीता का बताया धर्म) संसार मान तो धर्म के झगड़े रहने ही न पायें। इनके जीते जी हमारा देश आज नरक ब रहा है और गजब की बला में आ फँसा है, वह तो न रहे। आज जो भाई का ग भाई और पड़ोसी का पड़ोसी धर्म की वेदी पर चढ़ाने को आमादा है, वह तो न हो धर्म की यह नापाकी-जंगी तो मिट जाय।"

इसी के चलते ही राजनीति भी पनाह माँगती है। पंडित, मौलवी औ पादरी हजारों लोगों को योंही मूँड़ के जानें क्या-क्या अंट-संट सिखाते रहते हैं वे लोग कमाने वाली जनता को मजदूरों-किसानों को अपने पाँव पर खड़े होने देना नहीं चाहते हैं। जब वर्ग-चेतना मजदूरों के बीच जगती है तो ये तिल मिलाने लगते हैं.................... । जब भी वर्ग संघर्ष चालू होता है तो ये धर्माचा कहे जाने वाले पादरी, पंडित, मुल्ला और पुरोहित अपने को धर्म के ठेकेदा कह के नियमतः धनियों और मालदारों का ही साथ देते हैं और शोषितों एवं पीड़ि को छोड़ देते हैं, हालाँकि वही इनके चेले होते हैं और उन्हीं से इनकी गुज होती है।

दूसरे अध्याय में सहजानन्द ने पाण्डित्यपूर्ण ढंग से मार्क्सवाद और धर्म प प्रकाश डाला है। उन्होंने इस अध्याय की शुरुआत स्तालिन की बात से कि है—"धर्म को रोका नहीं जा सकता। अन्तरात्मा या हृदय को दबाया नहीं जा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सकता। धर्म तो हृदय की चीज है और हृदय है स्वतंत्र। इसीलिए पूजा और धर्म स्वतंत्र हैं।"

सहजानन्द कहते हैं कि इसीलिए मार्क्सवाद में धर्म का विरोध पाया जाता है। लेनिन ने धर्म सम्बन्धी अपने एक लेख में कहा है कि "मार्क्सवाद तो भौतिकवाद है। इसीलिए वह बेमुरव्वती के साथ धर्म का विरोध करता है।" किन्तु सहजानन्द कहते हैं कि इससे घबराने की जरूरत नहीं है। क्योंकि इस सिद्धान्त के पीछे भी अन्य सिद्धान्तों की तरह प्रतिपादन में कुछ खास परिस्थितियों का हाथ है।

मार्क्सवाद का मूल सिद्धान्त द्वन्द्ववाद है। वह निरन्तर विकास में निहित है। अगर विकास के क्रम में कहीं ईश्वरवाद मिल जाय तो कौन नहीं मानेगा? किन्तु, यों ही मान लेने का ही अर्थ है, बुद्धि को तिलांजली दे देना और विकास की प्रक्रिया को ठप कर देना। अतः आज ईश्वर नाम विकास में बाधक हैं। इसीलिए वैज्ञानिक मार्क्सवाद में धर्म को स्थान नहीं दिया गया है। बात सही ही है। इस लम्बे और विस्तृत अध्याय में बड़े ही सुन्दर ढंग से इस बात पर प्रकाश डाला गया है।

सहजानन्द ने साफ-साफ लेनिन के उद्धरणों के आधार पर साबित किया है कि, धर्म की बुनियाद तो पूँजीवाद और उसकी अनेक शकलें हैं। वह तो पूँजीवाद के आधार पर बनी सामाजिक व्यवस्था को ही वर्तमान धर्म और ईश्वरवाद की जड़ मानता है। फलतः मुख्य काम है उसकी जड़ को खोद डालना। पत्ता और शाखा तोड़ने से पेड़ तो रह ही जायेगा। यह बात बिल्कुल साफ है।

फिर सहजानन्द कहते हैं कि, "जब पादरी और पुरोहितों तक को अपनी पार्टी में लेने की राय वह देता है, बशर्ते कि उनका प्रधान काम धर्म-प्रचार न होके पार्टी के कार्यक्रम को पूरा करना ही हो, तो फिर निरीश्वरता के इलजाम के कुछ मानी रह ही नहीं जाते।"

धर्म को शोषण के अस्त्र के रूप में उपयोग में लाया जाता है। इसके द्वारा आम लोगों का दिमाग मूल समस्या से हटा दिया जाता है और उनका दिमाग खराब करके अपना काम साधा जाता है।

एंगेल्स कहते हैं कि, "श्रेणीविहीन समाज में जो लोग धर्म का नामोनिशान मिटाने का स्वप्न देखा करते हैं वह नकली क्रान्तिकारी और रंगे सियार हैं।"

सहजानन्द साफ कहते हैं कि मार्क्सवाद वर्गविहीन समाज की स्थापना चाहता है न कि धर्मविहीन समाज का।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद और धर्म के अध्याय में लेखक ने द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद की व्याख्या काफी सुन्दर ढंग से की है। साधारण जन-मानस के लिए यह अध्याय काफी उपयोगी है।

इस प्रकार इस पुस्तक के प्रथम भाग में कई ऐसी मूल बातों का विवेचन एवं विश्लेषण स्पष्ट तौर पर किया गया है। यह ग्रन्थ दार्शनिक मान्यताओं पर आधारित है। दूसरे भाग में गीता के अठारहो अध्याय के श्लोकों का हिन्दी में पाण्डित्यपूर्ण विवेचन किया गया है।

इस प्रकार मुझे ऐसा लगता है कि धर्म, ईश्वरवाद, कर्म, आत्मा, महात्मा और दुरात्मा, तथा कई अन्य चीजों की स्पष्ट एवं सही जानकारी हासिल करने तथा उन्हें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने के लिए सहजानन्द की यह पुस्तक बहुत ही लाभकारी है।

अन्त में मैं अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करके इस अध्याय को समाप्त करना चाहूँगा।

सहजानन्द की पुस्तकें पढ़ने तथा उन पर कुछ लिखने का जो अवसर मुझे मिला, उससे यह बात साफ हो गयी कि वह न केवल निरा संन्यासी थे, न भक्त और न मात्र काल्पनिक दुनिया में विचरण करने वाले, ख्वाबों को देखने वाले व्यक्ति थे। वे तो आजीवन संघर्षशील रहे और संघर्ष के बीच जितनी बाधाएं आईं उनसे साहसपूर्वक जूझते हुए विचारों का प्रतिपादन किया। विचार-धाराओं के संघर्ष में व्यावहारिकता का सहारा लेते रहे। तात्पर्य यह कि सिद्धान्त और व्यवहार में एकरूपता स्थापित करके चलते रहे। सदा विकासशील रहे। कभी पीछे नहीं मुड़े। अतः उनकी अनुभवसिद्ध विचारधाराएँ ही उन्हें एक विचारक के रूप में स्थापित करती हैं। यह उक्ति सही ही जान पड़ती है कि कोई भी व्यक्ति मेहनतकश जनता की भलाई चाहता है तो सिद्धान्त और व्यवहार में उसे उसकी विचार-धारा को अपना, वर्ग दृष्टिकोण को अपनाना जरूरी है। ऐसा सहजानन्द ने किया।

लेखक के रूप में जब उनकी पुस्तकों को पढ़ने का मौका मिला तो मेरे मन में लेनिन की याद हमेशा आती रही। कभी-कभी ऐसा लगता है कि जो व्यक्ति सारी जिन्दगी संघर्षों में जूझता रहा, उसके लिए पढ़ना तो आसान है, परन्तु इतने सारे लेख या इतनी सारी पुस्तकों की रचना कैसे कर डालता है। इसकी पुष्टि लेनिन के ग्रन्थों से होती है कि संघर्षशील व्यक्ति सदा अपनी पुस्तकों में अपने संघर्षों की तस्वीर उपस्थित कर देता है। इसके लिए उसे किसी तैयारी या अलग से मूड बनाने की या लेखकीय कसरत या दण्ड-बैठक करने की जरूरत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नहीं होती है। ऐसी ही विभूति थे सहजानन्द तथा महापंडित राहुल सांकृत्यायन। संघर्षशील योद्धा अपने संघर्षों की तस्वीर कागज पर कलम द्वारा खींचते हैं; वही होता है भविष्य के लिए कारगर अस्त्र। अतः जनता के बीच संघर्ष करने वाला व्यक्ति लेखक के रूप में भी जब उपस्थित होता है तो वह जन-लेखक बनकर आता है। यह खूबी सहजानन्द में पायी जाती है।

पुस्तकों की भाषा का क्या कहना? इतनी सहज भाषा है, लगता है आम आदमी के संघर्ष से निकली हुई अमृत वाणी है।

सहजानन्द के लेखन में मुझे एक और खूबी यह मिली कि लोकोक्तियों और मुहावरों का प्रयोग उन्होंने खुलकर किया है जिससे बातों को समझने में काफी आसानी होती है। वह भी आम जनगण के बीच प्रचलित लोकोक्तियाँ और मुहावरे।

पत्रकार के रूप में भी उन्होंने जहाँ भी कार्यारंभ किया, वह भी कठिन संघर्षों का इतिहास ही है। या पत्रों और पत्रकारिता के महत्त्व को जिस ढंग से उन्होंने पेश किया है, वह केवल जनता का वास्तविक सिपाही ही कर सकता है।

पुस्तकें तो अभी सामान्य ढंग से उपलब्ध नहीं हो पा रही हैं। किन्तु कई एक मित्रों ने सहजानन्द की पुस्तकों के विषय में अपनी रुचि दिखलाई। इसका एक मात्र कारण यही हो सकता है कि जिन विचारधाराओं तथा जिस समाज की स्थापना की चाह उनमें थी, जिनके लिए उन्होंने सारी कठिनाइयों को सहते हुए संघर्ष किया, वह अब स्थापित होनेवाली है। अतः मेरा सुझाव है कि उनकी पुस्तकों को, जिन्हें उन्होंने स्वयं "भविष्य के संघर्ष के अस्त्र" की संज्ञा दी है; छपवा कर लोगों के बीच पहुँचाने की व्यवस्था करनी चाहिए। इससे एक यह भी लाभ होगा कि उनके विचारों को तोड़-मरोड़ कर पेश करने वालों तथा "ब्लैक मेल" करने वालों को करारा जवाब भी दिया जा सकता है। चाहे जिस रूप में भी हो, यह काम अनिवार्य है, जनता की आवाज है।

यह बात सही है कि बहुत सारी धारणाएँ हमें मान्य नहीं भी हो सकती हैं, किन्तु जो मान्य हैं, उनके प्रति सकारात्मक रुख अख्तियार करना होगा और जो हमारे भविष्य के संघर्षों में योगदान दे सकें, उन्हें अपनाकर चलना होगा।

मुझे तो ऐसा लगता है कि किसान सभा या किसान आन्दोलन के माध्यम से; या विचारधाओं के माध्यम से जितना लाभ सहजानन्द से वामपंथी आन्दोलन को उठाना चाहिए था और चाहिए, वह अभी तक नहीं हो पाया है।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब स्वामीजी ने साम्यवाद अपनाया

—पं० कामेश्वर शर्मा 'नयन', एम० ए० (आचार्य)

हर महान् व्यक्ति के जीवन में ऐसी कुछ घटनाएँ असामान्य रूप ले लेती हैं जिन पर साधारण लोगों की दृष्टि तो पड़ती है, किन्तु उससे मर्माहत होने की सुध नहीं रह जाती। यहीं पर असाधारण व्यक्तित्व अपने तीव्रतम प्रभाव से समाज को एक ऐसा धक्का देता है, जिससे सदियों से चली आ रही रूढ़िवादिता के प्रासाद चूर-चूर होकर सदा-सदा के लिए धूलिसात हो जाते हैं, मिट जाते हैं। एक नये भवन का सृजन होता है।

सम्भवतः महाभारत युग के बाद प्राचीन भारतीय धर्म-प्रणाली की भी यही स्थिति हो गयी थी। बुद्ध ने वैदिक धर्म के साथ विद्रोह किया। भारत ही नहीं अपितु एशिया महादेश के हर भाग में बौद्ध-धर्म फैल गया। जिस प्रकार बुद्धदेव के जीवन में इस नये धर्म को उत्प्रेरित करनेवाली उनके जीवन की तीन प्रमुख घटनाएँ थीं, उसी प्रकार स्वामीजी के संन्यस्त जीवन को भी साम्यवाद के पथ पर ले जानेवाली, उनके जीवन की तीन महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं। इन्हीं के चलते उन्होंने जीवन के अंतिम क्षण तक साम्यवाद के माध्यम से दीन-हीन संतप्त मानव की सेवा करना ही भगवत्-प्राप्ति माना है।

यद्यपि उनका प्रारम्भिक जीवन सन् १९०१ ई० से सन् १९२० ई० तक स्वाध्याय, शास्त्र-चर्चा, शास्त्रार्थ, धर्म-चर्चा, समाजोद्धार, वर्ण-व्यवस्था आदि विचारों के गूढ़तम व्याख्यानों में व्यतीत हुआ, फिर भी सन् १९३० ई० से उन्होंने देश-सेवा का जो व्रत लिया, वह उनके जीवन के अन्त-अन्त तक अव्याघात होकर चलता रहा। अनेक विघ्न-बाधाओं के वात्याचक्र में रहकर भी उन्होंने 'परित्राणाय साधूनाम्, विनाशायच दुष्कृताम्' के सिद्धान्त से इंच मात्र भी अपने को पृथक् नहीं किया। १९३९ ई० तक कांग्रेस में महात्मा गांधी के सत्य एवं अहिंसा-व्रत पर चलकर उन्होंने देश की सेवा की। वर्षों जेल की यातनाएँ सहीं। अनेक संस्थाओं, सभाओं और संगठनों का सृजन तथा संचालन किया। इन तमाम संस्थाओं के माध्यम से उन्होंने मानवता के त्राण का मार्ग खोजा। इतने सारे संगठनों में सर्वाधिक महत्त्व उन्होंने जिस संस्था को दिया, वह किसान सभा है।

यद्यपि किसान-सभा का पहला संगठन प्रान्तीय स्तर पर ही हुआ, पर पीछे चलकर यह किसान सभा इतनी प्रशस्त हुई कि उसका स्वरूप अखिल भारतीय-स्तर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का हो गया। न केवल बिहार में बल्कि सम्पूर्ण देश में कांग्रेस की भी जड़ गाँव-गाँव तक इसके साथ ही जम गई। सारे राष्ट्र के किसानों का यह संगठन इतना महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ कि इसी की सीढ़ी पर चढ़कर कांग्रेस शक्तिशाली संस्था बन गई। किसान-सभा के द्वारा जमीन्दारी उन्मूलन की भीष्म-प्रतिज्ञा करके स्वामीजी ने सारे देश में तहलका मचा दिया था। देश के सारे राजे, रजवाड़े एवं जमीन्दार इनके विरुद्ध हो गये थे। स्वामीजी ने इनकी जरा भी परवाह न की। अन्ततोगत्वा स्वयं कांग्रेस वाले भी इस सभा से खूब खार खाने लगे। तब स्वामीजी ने इन कांग्रेसियों से भी अपने को दूर किया और सन् १९४० से ही ये कांग्रेस से अलग होकर किसान सभा चलाते रहे। और, तबतक चलाते रहे, जब तक ये परमब्रह्म में लीन नहीं हो गए।

गरीब किसानों की दयनीय दशा उनसे देखी न गयी और अन्त में वही हुआ जो उन्होंने कहा था। सन् १९४७ ई० की आजादी-प्राप्ति के बाद ही पहले बिहार से और क्रमशः देश के सारे प्रदेश से जमीन्दारी प्रथा का अभिशाप इस देश की धरती से सब दिन के लिए मिट गया। आज वस्तुतः जमीन्दारी के जमाने के भारत और वर्त्तमान भारत में जमीन और आसमान का अंतर हो चुका हैं। अन्य अनेक कारण भी हो सकते हैं, किन्तु जमीन्दारी के अभिशाप से मुक्त होकर जनता स्वाधीन हो सकी है इस बात को कोई इनकार नहीं कर सकता। देश को स्वाधीन करने के पूर्व जनता की मौलिक व्यवस्था को सुन्दर बनाने के लिए जमींदारी का उन्मूलन अत्यावश्यक हो गया था।

इस संबंध में स्वामीजी ने स्वय अपने 'मेरा जीवन-संघर्ष' नामक पुस्तक में तीन घटनाओं की चर्चा की है। निम्नलिखित तीन घटनाओं ने उनके संन्यासी जीवन को विद्रोही बना दिया था। संसार से सब कुछ छोड़कर, संन्यस्त होकर भी उस महात्मा ने जो विद्रोहात्मक रूप अख्तियार किया, उसका प्रधान कारण वे ही तीन घटनाएँ हैं, इनके सम्बन्ध में स्वामीजी ने कहा है :—

"जमीन्दारी की लूट और गाँधी के सत्य की पुकार के प्रसंग में मैं यहाँ अपने जीवन की तीन महत्त्वपूर्ण घटनाएँ लिख देना चाहता हूँ, जिन्होंने मेरे हृदय पर अमिट छाप डाली, बहुत अंशों में मेरे जीवन को पलटा और मुझे उग्र-पन्थी बनाया।

पहली घटना सन् १९१७ ई० की है जब मैं गाजीपुर जिले के विश्वम्भरपुर गाँव में था। वहाँ सुखी जमीन्दार रहते थे। उनके मौजे—'मौरा' में जो वहाँ से ३-४ मील पर है, मैंने जाड़ों में एक हलवाहे को मरा देखा। ६०-७० साल का रहा होगा। टूटी झोपड़ी में जमीन पर पड़ा था। इन्फ्लुएंजा से मौत हुई थी। यह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बीमारी और जाड़े का दिन, मगर तन पर सिर्फ एक लंगोटी थी। ओढ़ने को कुछ नहीं। कहीं से एक फटा बोरा मिला था। उसी में सिर और पैर टांग डालकर पड़ा-पड़ा मर गया। पीठ और चूतर खुले ही थे। बिस्तर, चारपाई, दवा वगैरह की तो बात ही नदारद। मेरा दिल रो पड़ा। मैंने सोचा इन साठ-सत्तर वर्षों में लाखों आदमियों की खुराक का गेहूँ, चावल, दूध, घी, पैदा किया होगा इसने और अपार धन कमाया होगा। मगर दुनिया कैसी जल्लाद और लुटेरी है कि इसने शायद ही जीवन भर में कभी गेहूँ, घी खाया हो और अच्छा कपड़ा पहना हो और मरने के समय नंगा ही रह गया, सो भी जाड़े में। टूटी खाट भी नहीं। अब इसे कफन भी देनेवाला कोई नहीं। यह दुनियाँ डूब जाय। ऐसा घोर अन्याय! अंधेर, ऐसी निर्दयता!

दूसरी घटना सन् १९३६ ई० की है। मुंगेर जिले में चकाय थाना है, ठट्ट पहाड़ों से भरा संताल परगना और हजारीबाग जिले के निकट है। वहाँ देहातों में काले-काले प्रायः नंगे और बिस्टी पहने पहाड़ी संथाल वगैरह रहते हैं। वहीं एक-दो दिन रहना पड़ा। शाम को देहातों में टहलने जाया करता था। जब उन नग्न-प्राय गरीब और परिश्रमी किसानों की दशा की पूछताछ की तो पता चला कि ये पहाड़ और जंगल काट कर खेत बनाते और धान उपजाते हैं। मगर कभी एक आना पैसा और कभी एक सेर भर चावल देकर दो ही चार साल में सारे खेत बनिये लिखवा लेते हैं। फलतः वे या तो बनियों के हलवाहे बन जाते या कहीं और जाकर उसी तरह खेत बनाते जिन्हें पुनरपि बनिये ले लेते हैं। यही क्रिया सैकड़ों वर्षों से चालू है। ये परिश्रमी, सच्चे और सीधे होते हैं। इसी से लूटे जाते हैं और बराबर नंगे ही रहते हैं। मेरे दिल से आवाज आयी कि इस दुनियाँ में सत्य और न्याय कहाँ है? अहिंसा कहाँ है? दयामय दीन-बन्धु-भगवान कहाँ है? इनसे बढ़कर दीन कौन है? इनका सत्य इन्हें लुटवाता है और बनिये का जाल और छल उसे हलवाहा बना देता है। क्या भगवान्, सत्य, न्याय, नाम की वस्तु सचमुच है?

तीसरी घटना मुंगेर के बेगूसराय इलाके की सन् १९३७ ई० की है। मैंने रास्ते में देखा कि एक मुर्दे को टूटी खाट में सुलाये और चिथड़ा ओढ़ाये कुछ लोग गंगा की ओर लिये जा रहे हैं। उनके पास न तो मुर्दा जलाने के लिए लकड़ी और न ही दूसरा सामान है। एक मुट्ठी या मामूली-सी लकड़ी थी। मेरे दिल ने पुकारा कि ओह, यह जुल्म, यह लूट! यह हृदयहीनता! जिसने जीवन में बनियों तथा सत्ताधारियों के लिए भोग-विलास का सामान और लाखों के खाने के लिए गेहूँ, मलाई पैदा की उसकी ही यह दशा कि कफन तक नदारत! ऐसा तपस्वी और त्यागी कि दूध, गेहूँ पैदा करके भी स्वयं न खाया, किन्तु मदमत्तों को दिया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्हीं का इसके प्रति ऐसा व्यवहार ! इस समाज को मिटाना होगा। यही सबसे बड़ा धर्म; सबसे बड़ी अहिंसा; सबसे बड़ा सत्य है। इन्हीं गरीबों की सेवा करते हुए मरना होगा। इन्हें छोड़ मेरे दिल में भगवान कहाँ ?'' इन्हीं उपर्युक्त घटनाओं को लेकर स्वामी जी किसान-सभा में आये। जबतक जीवित रहे, दीन-बन्धुओं की सेवा, किसान सभा का संगठन और निःशुल्क विद्या-दान करना ही उनके जीवन का व्रत रहा। उनके जीवन से मानवता के त्राण की शिक्षा तो मिलती ही है, साथ-ही-साथ धनी और अत्याचारी के विरुद्ध भी इतनी बड़ी निर्भीकता का शंख-वाद फूँकनेवाले संसार में विरले ही जन होते हैं यह ज्ञात होता है। आश्चर्य है इतने निष्काम कर्मयोगी, जन-नायक संन्यासी-व्यक्ति के विरुद्ध भी दो अल्पज्ञों ने सम्भवतः अपनी पी०-एच० डी० की उपाधि के शोध-प्रबन्ध में उल्टा-सीधा लिखा है और विश्वविद्यालय ने उन्हें योग्य तक ठहरा दिया है। जिसने उस जमाने के सुप्रसिद्ध किसान-सभा नेता पं० यदुनन्दन शर्मा के बारे में लिखते हुए जातीयता-ग्रस्तता का दोषारोपण स्वामीजी पर किया है, उन्हें मालूम होना चाहिए कि पं० यदुनन्दन शर्मा एक शाकद्वीपी ब्राह्मण थे। ये अभी कुछ वर्ष पहले तक जीवित थे। अनुसन्धित्सुओं को चाहिए था कि वे उनसे किसान-सभा के कार्यालय में जाकर स्वयं मिल लेते। जिन व्यक्तियों को इतिहास एवं राजनीति के गत २५ वर्षों पूर्व पुरुष के बारे में भी सम्यक् ज्ञान नहीं है; विश्वविद्यालय के अधिकारियों ने उन्हें उपाधि कैसे दे दी ?

इतने बड़े जन-सेवी, मानवता के रक्षक के लिए जातीय संगठनों का नायक कहना एक अनुसंधायक की अल्पज्ञता के सिवा कुछ दूसरा भी अर्थ रखता है ? मैं उन युवा-तुर्क विद्यार्थियों को अपनी सलाह देता हूँ कि कम-से-कम भारत के वर्त्तमान राजनीति, इतिहास का पुनः अध्ययन कर लें ताकि भविष्य उन पर अंगुली न उठाये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संन्यासी की जीवन-यात्रा

—व्रजकिशोर सिंह

जननायक स्वामी सहजानन्द का जन्म पूर्वी उत्तरप्रदेश में हुआ, परन्तु उनकी कर्मभूमि बिहार रही। किशोरावस्था में ही उनके त्याग, अदम्य उत्साह, अपूर्व लगन तथा अनौचित्य के प्रतिकार की भावना का जनता को परिचय मिला। स्वामीजी ने आद्यशंकराचार्य द्वारा स्थापित दशनामी संन्यासी सम्प्रदाय में दीक्षित होना चाहा, परन्तु मानवता को "अहम् ब्रह्मास्मि" के मन्त्र से पवित्र करनेवाले शङ्कर द्वारा स्थापित इस सम्प्रदाय में काल के प्रवाह से विकृति आ गई थी। स्वामीजी ने अपनी लगन, विद्वत्ता तथा बुद्धि के सुनियोजित प्रयत्न से दीर्घकाल से खड़ी उस असहिष्णुता की दीवार को जो मनुष्य को जन्म के आधार पर मनुष्य से अलग करता था तोड़ा। तत्कालीन आचार्यों को उन्हे दीक्षा देनी पड़ी। संन्यासी सहजानन्द की जीवन-यात्रा शुरु हुई।

मानव जीवन एक यात्रा ही है; लम्बी या कम दूरी की। इस यात्रा का ध्येय होता है अपनी खोज। अधिकांश मनुष्यों की यात्रा थोड़े ही समय में खत्म हो जाती है। खोज का अन्त हो जाता है। अपने को पाकर, विना जाने या जान बूझकर इन्सान बची हुई जिन्दगी उसी 'अपने' की सहज प्रवृत्ति के अनुसार, उसकी तुष्टि में बिताता है। संसार बदलता है, वह नहीं बदलता। जमाना आगे बढ़ता है वह जहाँ का तहाँ खड़ा रह जाता है। परन्तु कुछ इन्सान ऐसे होते हैं जिनकी खोज का कभी अन्त नहीं होता। वे एक मंजिल पर पहुँचते हैं समसामयिक परिप्रेक्ष्य में परन्तु समय का प्रवाह रुकता नहीं। जमाना आगे बढ़ता है। उन्हें अपने अन्दर एक शून्य का अनुभव होता है—बेचैनी, असन्तोष, तज्जनित जिज्ञासा। यह उन्हें एक नये मंजिल की ओर ले चलती है। ऐसे ही मनुष्य सतत प्रगतिशील होते हैं, इन्हें युगद्रष्टा भी कह सकते हैं। स्वामीजी ऐसे ही इन्सान थे।

स्वामीजी की जीवन-यात्रा का प्रारम्भ एक विशिष्ट परिप्रेक्ष्य में हुआ। उनके आत्मसम्मान को जोर का धक्का लगा। संन्यासी आगे बढ़ा। जाति की छोटी समष्टि सामने खड़ी थी। तन मन से उसी की सेवा में लग गया। मैंने अपने जीवन में पहली बार स्वामीजी को इसी दौर में देखा। जातीय महासभा की बैठक में, बड़े-बड़े श्रीमान, विद्वान तथा श्री गणेशदत्त सिंह जैसे महान त्यागी वहाँ एकत्रित थे। फिर भी एकत्रित जनसमूह एक अकिंचन दण्डी संन्यासी की बात सुनकर ही किसी अहम सवाल पर फैसला करना था। वे थे दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैंने कांग्रेस की सभा में और महासभा में भी देखी थी। चौदह पन्द्रह साल की उमर से ही उन बैठकों में स्वयंसेवक बनकर जाता। देश की महान विभूतियों के सान्निध्य में खड़े रहने का सौभाग्य प्राप्त होता था, महा-मानवों का जमघट होता था। परन्तु उनमें एक महामहामानव था। तब का महात्मा गांधी भविष्य का राष्ट्रपिता बापू। उसकी आवाज ही केवल कांग्रेस की आवाज नहीं, बल्कि देश की आवाज थी। जो स्थान इस महान देश के स्तर पर मैंने उस महामहामानव का पाया वही स्थान मैंने देखा स्वामीजी का उस काल में जाति की अतिसीमित परिधि में था। दोनों के प्रभाव का रहस्य था निष्काम सेवा की प्रवृत्ति। तुलसीदास के शब्दों में :—

'परहित बस जिनके मन मांही।
तिनकँह जग दुर्लभ कछु नांही।।'

कुछ छिछले समालोचक स्वामीजी के जीवन के इस अध्याय को आधार बनाकर उनकी कटु आलोचना करते हैं। वे आज के मूल्यों के मापदण्ड से पचासों साल पीछे की कार्रवाइयों का अवमूल्यन करते हैं। ऐसी स्थिति में दृष्टिदोष स्वाभाविक हैं। वे भूल जाते हैं कि राष्ट्रीय चेतना का भी क्रमविकास होता है। राष्ट्रीय चेतना का विकास साधारणतया धार्मिक, जातीय तथा सामाजिक चेतना के जागृत होने के बाद होता है। यह सार्वभौम सत्य है। आज के विकसित देशों का मध्यकालीन इतिहास यही बतलाता है। ज्ञानेश्वर, तुकाराम समर्थ गुरु रामदास की पृष्ठभूमि में ही महाराष्ट्र के जीवन-प्रभात में शिवाजी का आविर्भाव सम्भव हुआ। चैतन्य महाप्रभु, राममोहन राय, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, केशव चन्द्र सेन, रामकृष्ण देव और विवेकानन्द ने जब बंङ्गाल के जन-मानस को झँझोरा तभी देशबन्धु दास, नेताजी सुभाष, खुदीरामबोस, प्रफुल्ल चाकी जैसे देशसेवक 'वन्देमातरम्' का उद्घोष करते हुए देश के लिये सर्वस्व बलिदान करने में समर्थ हुए। बारदोली सत्याग्रह में जाति पंचायतों ने जो किया वह स्तुत्य हैं। यह उस सत्याग्रह की कहानी से साफ हो जाता है। अतएव स्वामीजी की तत्कालीन गतिविधि भी निन्दनीय नहीं, वह विकास की एक सीढ़ी थी; आवश्यक सीढ़ी। और आवश्यक निन्दनीय नहीं हो सकता।

संन्यासी कुछ और आगे बढ़े। बढ़ना था, स्वभाव प्रेरित कर रहा था, क्योंकि संन्यासी सहजानन्द या जातिसेवक सहजानन्द वास्तविक सहजानन्द नहीं थे। बाद की दो घटनाओं से यह साफ हो जाता है। मैं एक बार स्वामीजी के साथ आज के नवादा जिले के वारसलीगंज क्षेत्र से जा रहा था। स्वामीजी को देखकर कुछ लोगों ने आवाज दी; पास आये, अभ्यर्थना की, कुछ खाने-पीने का सामान दिया, उन्हें स्वामीजी ने बड़े सौहार्द और प्रेम से गले लगाया। जब हम चले तो स्वामीजी ने कहा—"देखा, इन मुसलमानों को, देखा इनका अपनापा का भाव? इनका सौहार्द

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और प्रेम ? इन्हें हम क्यों दूसरी जगहों की घटनाओं के लिये जिम्मेदार समझें ? ये हमारे हैं, हमारे रहेंगे। यह घटना उस काल की है जब कि सारे देश का धार्मिक वातावरण विषाक्त हो गया था। देश में और पास के देशों में जहाँ-तहाँ धार्मिक दंगे हो रहे थे। ऐसे समय में अकस्मात ऐसे भावों की अभिव्यक्ति से साफ हो जाता है कि स्वामीजी धार्मिक असहिष्णुता और सङ्कीर्णता से ऊपर उठकर परवर्ती जीवन में आगे बढ़े थे।

दूसरी घटना दो-एक साल बाद की है। १९४७-१९४८ में जिला बोर्डों के चुनाव हो रहे थे। एक क्षेत्र में एक शक्तिशाली स्वतंत्र उम्मीदवार उसी जाति का था जिस जाति का नेतृत्व स्वामीजी ने कई साल तक किया था। कांग्रेस का उम्मीदवार दूसरी जाति का था। मैं स्वामीजी के साथ कांग्रेस के समर्थन में यात्रा कर रहा था। घूमते-घूमते मतदान का दिन आ गया। उस दिन जब हम एक चौराहे पर पहुँचे तो देखा कि स्वतन्त्र उम्मीदवार कई ट्रक भरकर मतदाताओं को साथ लिये आ रहा है; ट्रक चौरास्ते पर रुक गये। स्वामीजी ने मतदाताओं को कांग्रेस उम्मीदवार को वोट देने के लिये कहा। इतनी सी ही बात से स्वतन्त्र उम्मीदवार की इमारत ढह गयी।

दोनों घटनाओं में स्वामीजी की प्रतिक्रिया आकस्मिक थी, समझ-बूझकर नहीं। एकाएक। स्वभावजन्य। अतएव दोनों घटनाएँ वास्तविकता की द्योतक हैं। ऐसे ही अवसरों पर मनुष्य की वास्तविकता की झलक मिलती है।

संन्यासी अभी भी अपने को पा नहीं सका था। अतएव संन्यासी आगे बढ़ा। एक बड़ी समष्टि सामने खड़ी थी। त्रस्त और आर्त्त किसानों की। संन्यासी अपनी स्वाभाविक लगन से उनकी सेवा में लग गया। इस शताब्दी के तृतीय और चतुर्थ दशक में किसान सभाओं का जोरदार संगठन उत्तर प्रदेश, बिहार, आन्ध्रप्रदेश आदि राज्यों में प्रारम्भ हुआ। ये संस्थाएँ राष्ट्रीय नवचेतना तथा तज्जनित राष्ट्रीय संग्राम की मुख्य धाराओं की पूरक धाराओं के रूप में आगे आईं। इन्होंने सदियों से संतप्त फिर भी मूक और बधिर ग्रामीणों में एक नया आत्मविश्वास पैदा किया। उन्हें अपनी शक्ति का ज्ञान कराया। इन संस्थाओं का ध्येय था राष्ट्र का विदेशी सत्ता से मुक्ति और उस परिप्रेक्ष्य में वर्गीय समस्याओं का समाधान।

स्वामीजी देश में और विशेषतया बिहार में इस किसान जागृति के नायक और अग्रणी के रूप में सामने आये। उन्होंने ग्रामों का दौरा किया। उनकी समस्याओं का गहन अध्ययन किया। उनके समाधान का भगीरथ प्रयत्न किया। संन्यासी सहजानन्द 'दीनबन्धु सहजानन्द' बन गये। किसान शक्ति और सहजानन्द पर्यायवाची हो गये। स्वामीजी और उनके पटु सहयोगी पण्डित यदुनन्दन शर्मा के शङ्खनाद पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

एक लाख किसानों का जमा हो जाना मामूली सी बात थी। आगे-आगे भगीरथ सहजानन्द पीछे-पीछे लाखों-लाख जनता की उमड़ती गङ्गधारा। आश्चर्यमय दृश्य !

कुछ समालोचक संन्यास-धर्म की दुहाई देकर स्वामीजी के जीवन के इस जन-कल्याणकारी अध्याय की भी कटु आलोचना करते हैं। उनके विचार में सार्वजनिक कार्यों में पड़कर, चाहे वे कितने भी लोक-कल्याणकारी हों, स्वामीजी संन्यास-धर्म से च्युत हो गये। परन्तु यह भ्रान्तिमूलक धारणा है। परिवार से, समाज से, संसार से विरक्त होकर एकान्तिक अध्यात्म साधना में जीवन यापन करना ही संन्यास धर्म नहीं है। ऊँचे पहाड़ों की कन्दराओं में जाकर रहने पर भी संसार साथ लगा ही रहता है। जीवन यापन के लिये ही सही। वासनाओं का त्याग ही संन्यास है कर्मों का त्याग नहीं, चाहे वे सांसारिक कर्म ही क्यों न हो। बल्कि कर्मों के फल में आसक्ति का त्याग ही संन्यास है। संन्यास है बापू के अनासक्तियोग की साधना। फिर संन्यास-धर्म जड़ और अचल नहीं। चिन्तनशील मानव की दूसरी प्रवृत्तियों की तरह यह भी विकासशील है।

भगवान बुद्ध सम्यक-सम्बोधि ज्ञान की प्राप्ति के बाद एकान्तिक आनन्द का लोभ संवरण कर "बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' चालीस साल तक मध्यदेश के नगरों, वनों और बीहड़ों में घूमकर जन-समुदाय को उस ज्ञान और आनन्द का भागीदार बनाते रहे। आदि शंकर ने इस देश के ओर से छोर तक घूमकर अनिष्टकारी सिद्धान्तों, रूढ़िओं, विचारों और कर्मों का विरोध किया। महान मानवतावादी वेदान्त दर्शन की पुनर्स्थापना की, प्रचार किया। मानव के सांसारिक जीवन को भी फलस्वरूप एक और स्तर ऊँचा उठाया। आधुनिक युग में रामकृष्ण परमहंस और विवेकानन्द ने संन्यास धर्म को एक नयी दिशा दी। दरिद्र ही नारायण है। त्रस्त मानवता की सेवा ही नारायण की सेवा है। इस नारायण की सेवा ही आज की परिस्थिति में संन्यासी का एक मुख्य धर्म है और आज इसी भावना से प्रेरित होकर रामकृष्ण संघ के संन्यासी जनकल्याणकारी कार्यों में लगे रहते हैं।

विवेकानन्द ने कन्याकुमारी की सागरशिला से सिंहनाद किया था—"देशवासियो ! भूखे भजन नहीं करते, कर नहीं सकते। उन्हें धर्म और अध्यात्म की शिक्षा देना उनके साथ एक तीखा मजाक है। भौतिक कल्याण और समृद्धि की नींव पर ही धर्म और अध्यात्म की दीवार खड़ी हो सकती है।" स्वामी सहजानन्द ने उस सिंहघोष को सुना था। उन्होंने समझा इस प्रेरणादायक सन्देश को मूर्त्तरूप देना ही संन्यासी का परम धर्म था। यह युग के परिप्रेक्ष्य में ही हो सकता था। बीसवीं सदी समष्टि का युग था, व्यष्टि का नहीं। व्यक्ति के स्तर पर चेष्टाएँ अपर्याप्त होतीं। जनता की संघबद्ध शक्ति से ही जनकल्याण और देशकल्याण सम्भव था। जागृत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जनसमुदाय ही अपनी संघबद्ध चेष्टाओं से, कार्यकलापों से अपना और देश का कल्याण कर सकता था। दूसरा विकल्प नहीं था। अतएव स्वामीजी राष्ट्रीय, वर्गीय, आर्थिक संगठनों की स्थापना और संचालन में लग गये। यह संन्यास धर्म का चरमोत्कर्ष था, अवनति नहीं।

संन्यासी सतत प्रगतिशील था। जाति-सेवा से ऊपर उठकर किसान-सेवा में लगा। किसानों का सबसे लगनवाला सेवक अतएव उनका मूर्धन्य नेता। अनुभव हुआ किसानों की समस्याओं का समाधान केवल उनके वर्गीय संगठन से सम्भव नहीं। देश के अन्य पीड़ित और त्रस्त वर्गों की समस्याओं के परिप्रेक्ष्य में ही इनका भी समाधान हो सकता था। किसानों, मजदूरों, खेतिहर मजदूरों, छोटे-मोटे व्यवसायियों आदि की एकत्रित शक्ति से ही सबों की समस्याओं का समाधान सम्भव था। एक नये समाज और अर्थव्यवस्था की आवश्यकता थी। अतएव संन्यासी ने समाजवाद, साम्यवाद की दुन्दुभि बजाई। किसान-सेवक जनसेवक बन गया। सेवा ही नायकत्व का अधिकार देती है। संन्यासी सहजानन्द 'जननायक सहजानन्द' बन गये। यात्रा का वस्तुतः अन्त हुआ। खोज का अन्त हुआ। आत्मतुष्टि आत्मसंतोष।

परन्तु समाजवादी, साम्यवादी शक्तियाँ छोटी-छोटी इकाइयों में बँटती जा रही थीं। बटवारा बढ़ ही रहा था। सभी दो दाल की खिचड़ी पकाने में लगे थे। ऐसी परिस्थिति में शक्ति का ह्रास अवश्यम्भावी था। सुनहरे भारत की जिस तस्वीर ने हजारों, लाखों को सर्वस्व न्योछावर करने का उत्साह और सामर्थ्य दिया था वह दूर भागती जा रही थी। ऐसे समय में जननायक सहजानन्द ने वामपक्षी एकता का आह्वान किया। पच्चीसों साल पहले परिस्थिति अनुकूल नहीं थी। नयी आजादी के नशे ने लोगों की दृष्टि धूमिल कर दी थी। फिर युगद्रष्टा जितनी दूर देखता है दूसरे उतनी दूर नहीं देख सकते। अतएव वामपक्षी एकता मृगमरीचिका बन कर रह गई और जननायक के ऐहिक जीवन की यात्रा पूरी हो गई। योगी ब्रह्मलीन हो गया। दिवगंत पण्डित यदुनन्दन शर्मा ने मुझे बताया था। कि अन्तिम समय में जननायक का सर रामाश्रय ब्रह्मचारी की गोद में था। एक हल्की आवाज हुई। जननायक का ब्रह्माण्ड फटा। प्राण महाप्राण में विलीन हो गया।

जननायक नहीं रहे परन्तु आज उनका वामपक्षी एकता का नारा उत्तरोत्तर बलवान होता हुआ भारत के राजनैतिक क्षितिज को कम्पायमान कर रहा है। जननायक जीवन से मृत्यु में अधिक बलशाली बन गये। हमें आजाद हुए तीस साल से अधिक बीते। देश में राजनैतिक उलट-फेर हुए। हमने कुछ अंशों में, कुछ क्षेत्रों में तरक्की भी की। जहाँ-तहाँ कदम बढ़े लेकिन देश के स्तर पर गरीबी बढ़ती ही गई हम अन्य प्रगतिशील देशों की तुलना में पिछड़ते ही चले गये। गत वर्ष एक निरंकुश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

त्रासदायी युग का अन्त हुआ। राजसत्ता कुछ अच्छे ईमानदार लोगों के हाथ में आई परन्तु दुनिया केवल ईमानदारी से ही नहीं चलती। साथ-साथ आवश्यकता है सही विचार की और विचार को मूर्त्तरूप देने की क्षमता और प्रवृत्ति की। नया समाज चाहिये, नया ढाँचा चाहिये, पुरानी बोतलों में पुरानी शराबों को, चाहे वे नये रङ्ग के क्यों न हो, भरने से काम चलने का नहीं। आज भी हम समाज और उसकी विभिन्न इकाइयों के बदलने की बात नहीं सोचते। पुराने ढांचे की लौह परिधि के अन्दर ही काम करना चाहते हैं। केवल कुछ मांसपेशियों, स्नायुओं तथा तन्तुओं को इधर-से-उधर करने की सोचते हैं। आधुनिक इतिहास साक्षी है कि इस आधार पर किसी अविकसित देश ने तरक्की नहीं की। तरक्की की उन्होंने ही जिन्होंने समाज और उसकी इकाइयों को बदला। राष्ट्र को एक नयी मोड़ दी। अतएव आवश्यक है एक नयी चेतना। यह वामपक्षी एकता द्वारा ही सम्भव है। तानाशाही विचारधारा और प्रवृत्तियाँ, तानाशाही शक्तियाँ पीछे हटी हैं, मरी नहीं। वे छिपकर घात में बैठी हैं। यदि देश की पर्याप्त प्रगति नहीं हुई तो किसी दूसरे राजनैतिक विकल्प के न रहने पर ये शक्तियाँ उभर कर फिर एक बार सारे देश पर छा जायेंगी। वामपक्षी एकता ही एक बलवती विकल्प के रूप में सामने आकर इस अवांछनीय सम्भावना को दूर रख सकती हैं।

काश, आज जननायक जिन्दा होते!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी सहजानन्द और किसान

— पशुपति सिंह

स्वामी सहजानन्द सरस्वती एक महान पुरुष थे। उनका हृदय विशाल था। दीन-दुखियों की पुकार उनकी रगों में था। दलितों के वे कष्टत्राता थे। वे दीनबन्धु थे। उनके बारे में कुछ भी कहा जाय वह बहुत थोड़ा है। मेरे जैसा अल्प ज्ञानी को उनके संबंध में कहने का भार दिया है तो मैं कह ही कितना सकता हूँ, फिर भी जो भी कहूँ वह श्रद्धा के पुष्प के अलावे कुछ नहीं।

स्वामीजी का जन्म उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले के देव नामक ग्राम में सन् १८८९ में महाशिवरात्रि के दिन हुआ था। उनका बचपन का नाम नवरंग राय था। पढ़ने में वे बड़े मेधावी थे। एक ही साल में उन्होंने दो-दो कक्षाओं की पढ़ाई समाप्त की थी। बराबर उनकी इच्छा संन्यासी बनने की ही रही थी और मैट्रिक परीक्षा न देकर वे काशी में जाकर संन्यासी हो गये। वहाँ रहकर वे धार्मिक पुस्तकें, जैसे—वेद, पुराण, उपनिषद, दर्शन, न्याय, मीमांसा इत्यादि—का अध्ययन किया था। अखबारों के संसर्ग में आते रहने से उनकी रुचि राजनीति में होने लगी। १९२० ई० के दिसम्बर में गाँधीजी पटना पधारे थे। उनकी मुलाकात गाँधीजी से पहली बार वहीं हुई और देश की राजनीति पर उनसे बातें हुईं। १९२१ में इन्होंने कांग्रेस की सदस्यता स्वीकार कर ली और तब से कांग्रेस का कार्य सक्रिय होकर करने लगे। इस तरह कांग्रेस में करीब सोलह-सतरह साल तक उसके सभी कार्यक्रमों में उन्होंने भाग लिया। इस दौरान उन्हें कितनी बार जेल की सजाएँ हुईं। वे कांग्रेस कार्यकारिणी समिति के सदस्य भी चुने गए।

कांग्रेस में रहते हुए १९२७ ई० में उन्होंने पश्चिमी पटना जिला किसान सभा की स्थापना की। उन्होंने अपना आश्रम बिहटा में बनाया। किसानों पर जमींदारों के जुल्म का कुछ ब्योरा उन्हें तब तक मिला था। उन्होंने सर्वप्रथम यह चाहा कि जमींदारों से सुलह-समझौता करवाकर किसानों को राहत दिलवायी जाय। इसी उद्देश्य से उन्होंने किसान सभा की स्थापना की। उन्होंने मुजफ्फरपुर के रामदयाल सिंहजी के प्रयत्न से प्रान्तीय किसान सभा की स्थापना १९२९ के नवम्बर में की। इस प्रान्तीय किसान सभा की प्रथम समिति का जेनरल सेक्रेट्री भूतपूर्व मुख्यमंत्री डॉ० श्रीकृष्ण सिंहजी को चुना गया और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी सभापति हुए। इसका प्रथम सम्मेलन सोनपुर में हुआ। भूतपूर्व राष्ट्रपति डॉ० राजेन्द्र प्रसाद कार्यकारिणी के सदस्य बने। पाँच-छः वर्षों तक कांग्रेस के महाप्रमुखों ने किसान सभा की पूरी मदद की लेकिन फिर धीरे-धीरे वे लोग इसके विरोधी बन गये। इस बीच किसान सभा बहुत आगे बढ़ चुकी थी।

इसी बीच एक नकली किसान सभा जमींदारों की साठ-गाँठ से टैनेन्सी कानूनों में संशोधन का बहाना लगाकर की गई। इस बहाने से असली किसान सभा को खत्म करना लक्ष्य था। उस समय कांग्रेस पर अँग्रेजों का दमन चल रहा था। सभी नेता पकड़े जा रहे थे। इसको खत्म करने के लिए समय भी उपयुक्त था। लेकिन स्वामीजी को जब मालूम हुआ तो उन्होंने उसका पर्दाफाश किया। और इस प्रकार नकली किसान सभा खाक होकर रह गयी। जमीन्दार इस नकली किसान सभा के समझौते के बहाने लगान की वसूली सर्टिफिकेट के जरिये करना चाहते थे। ऐसा करने से वे कोर्ट में नालिश करने से बच जाते। खैर, यह होते-होते रुका। स्वामीजी ने अपनी आत्मकथा 'मेरा जीवन संघर्ष' में कुछ किसानों पर किये जा रहे जमीन्दारों के जुलम का हवाला दिया है। गया जिले के सरौती गाँव के किसानों को एक कटहल के वास्ते बर्बाद कर दिया। वहाँ पर कांग्रेस की मीटिंग तक न होने दी। जमीन्दार का बराहिल जिसके घर शाम को बेगारी के लिए डंडा रख देता उसको सवेरे जाना ही था। एक बार डंडे वाले के घर में एक व्यक्ति की मृत्यु हो गई जिसके चलते वह वहाँ नहीं जा सका तो जमीन्दार ने सारे गाँव को तहस-नहस कर दिया। जमीन्दार खलिहान में फसल के ढेर पर गोबर का छापा देते थे। जब तक जमीन्दार का हुक्म न हो तब तक फसल की दौनी नहीं की जा सकती थी। पटना जिले के मसौढ़ा परगना के अन्तर्गत पैपरा गाँव की सारी फसल बरसात में सड़ गई तथा कुछ में आग लगा दिये जाने से जल गई। दरभंगा जिले के जमीन्दार ने मालगुजारी वसूलने में एक किसान की पतोहू को बुलवाया और हुक्म दिया कि ससुर की टाँग में बाँध दिया जाय। किसानों का जीना जमीन्दारों की मरजी पर था। कोई चूँ तक नहीं कर सकता था। फसल किसान उपजाता था और उस पर मौज जमीन्दार करते थे।

किसानों की ऐसी दशा देख स्वामी जी बिल्कुल विचलित हो गये। गया में १५ अगस्त १९३३ को किसानों का एक विशाल प्रदर्शन हुआ जिसकी संख्या करीब एक लाख थी। १९३६ से लेकर १९३९ तक बिहार में किसानों ने कई महत्त्वपूर्ण लड़ाइयाँ लड़ीं जिनमें बड़हिया; रेवड़ा और मझियावाँ की लड़ाई विशेष महत्त्वपूर्ण है। बड़हिया टाल की बकाश्त जमीन का सत्याग्रह छिड़ा। स्वामीजी ने पंडित कार्यानंद शर्मा को वहाँ के नेतृत्व का भार सौंपा। शर्मा जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ने एक स्वयंसेवक दस्ता कायम किया था जिसका नाम लालवर्दी दल था। इस सत्याग्रह में जमीन्दारों ने बहुत जुल्म किया। बहुत से स्वयंसेवक पीटे गये और जेल गये। शर्मा जी को दो बार जेल जाना पड़ा। इस संघर्ष में स्वामीजी के नेतृत्व में ही स्वर्गीय राहुल सांकृत्यायन को भी जेल जाना पड़ा और अनशन करना पड़ा। जमीन्दारों की नादिरशाही एवं सरकार से मिलीभगत होने के कारण इसमें आंशिक सफलता मिली। करीब २८०० बीघे जमीन पर किसानों का हक़ मिल सका।

पुराने गया जिला (वर्त्तमान नवादा जिला) का रेवड़ा ग्राम का सत्याग्रह भी अभूतपूर्व था। जमींदारों ने वहाँ के किसानों की डेढ़ हजार बीघे जमीन नीलाम करवा ली थी। ब्राह्मणों की लड़कियों को बेचवाकर पैसा वसूल किया था। पंडित यदुनन्दन शर्मा के नेतृत्व में रेवड़ा के किसानों ने सत्याग्रह कर दिया। वहाँ जब स्वामी जी की सभा हुई तो करीब पच्चीस हजार किसान जमा हुए। कुलीन घर की औरतों ने परदा हटा कर हल और लाठा चलाना शुरू किया। पुलिस रोकते-रोकते हार गयी। रेवड़ा में किसानों की भारी विजय हुई। हजारो बीघा जमीन में केवल डेढ़ सौ बीघा जमीन जमीन्दारों को मिली और शेष किसानों को। स्वामी जी के किसान सत्याग्रह में औरतों ने भी कसकर भाग लिया। मंझियावां गाँव में वहाँ की औरतों के अलावे आसपास की औरतें भी मदद में गयीं। जमीन्दार के लठैत गुण्डे जब गये तो उनका मुकाबला उन औरतों ने किया और उन्होंने बुरी तरह से पछाड़ा। पटना जिले के दरमपुरा की औरतों और बच्चों ने लड़ाई जीती। सांडा गाँव की औरतों ने पुलिस का घेरा तोड़कर हल जोता। इस तरह से किसान-सत्याग्रह ने उत्तरी बिहार के कई जिले तथा दक्खिनी बिहार के शाहाबाद, पटना, गया, मुंगेर में खूब जोर पकड़ा और किसानों को अच्छी सफलता मिली। छपरा जिले के अमवारी में राहुल जी एवं श्री रामवृक्ष ब्रह्मचारी ने ऐसा संगठन किया कि वह अभूतपूर्व था। अमवारी से सीवान तक के प्रदर्शन में औरतें लाल कपड़ों में सजी थीं। रामवृक्ष ब्रह्मचारी को गिरफ्तार करने में औरतों ने ऐसा घेरा डाला कि पुलिस बहुत मुश्किल में पड़ गयी और औरतों को बहुत समझाने-बुझाने से उनको गिरफ्तार किया जा सका।

१९३६ में लखनऊ में कांग्रेस का अधिवेशन था। वहीं पर आँल इण्डिया किसान सभा का जन्म दिया गया। इसके जेनरल सेक्रेट्री स्वामीजी ने प्रोफेसर रंगाश्री गौतम को बनाया। १९३८-३९ में औल इंडिया किसान सभा का सम्मेलन कोमिल्ला में हुआ जिसमें स्वामी जी सभापति चुने गये। १९३६ में फैजपुर में कांग्रेस का अधिवेशन था। वहाँ औल इण्डिया किसान सभा का अधिवेशन हुआ उसके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अध्यक्ष प्रो० रंगा थे। कांग्रेस की कार्यसमिति में स्वामी जी ने किसान जाँच कमीटी का प्रस्ताव पास करवाया। इन्होंने कार्यसमिति में गरीबों की खासी वकालत की। स्व० डा० पट्टाभी सीतारमैया ने इन्हें कहा था कि "आप तो भयंकर स्वामी हैं।"

पहले उन्होंने कई बार प्रयत्न किया कि किसानों का काम जमीन्दारों से सुलह-समझौता करके करवाया जाय, लेकिन इसमें विफलता देख इन्होंने समझौता का भी पूर्ण विरोध किया। जमीन्दारों के गुण्डे जब किसानों को तरह-तरह से सताने लगे तो इन्होंने नारा दिया कि किसान भी आत्मरक्षा के लिए लठ्ठ का प्रयोग करें। यही नारा लगता—"लठ्ठ हमारा जिन्दाबाद!" बिहटा में चीनी मिल किसानों से सस्ते दर पर ऊख की खरीद करती थी। इन्होंने उसका दाम बढ़ाने के लिये किसानों की हड़ताल करवायी। फलस्वरूप मिल मालिक को दाम बढ़ाना पड़ा। आम गरीब जनता में इनकी आवाज ने एक दृढ़ता और जोश ला दिया था। जमीन्दार बहुत सहमने लगे थे। कहीं इनकी मिटिंग होती तो जमीन्दार इनका कसकर विरोध करते। कांग्रेस में जमीन्दार तबके के लोग भी अधिकांश घुसे हुए थे। वहाँ भी इनलोगों ने इनका विरोध करना शुरु किया।

इन्होंने अब तय कर लिया कि इस जमींदारी प्रथा को हटना जरूरी है और जमीन्दारों की एक भी न चली। चुनाव में जहाँ जमीन्दार खड़े होते उनका विरोध स्वामी जी एक साधारण गरीब किसान से करा देते। फल यह होता कि जमींदार की जमानत भी जप्त हो जाती। गया के रामेश्वर बाबू तथा पटना के बिहटा से बाबू रजनधारी सिंह की भयंकर हार उल्लेखनीय है। जमीन्दार लोग मतदाताओं को खूब पूड़ी मिठाई खिलाकर वोट के लिए भेजते थे उस समय यही नारा था—"पूड़ी कचौड़ी खा लीजिये और कोठरी में जाकर बदल जाइये।" और सच में यही मतदाताओं ने किया भी।

स्वामी जी ने किसानों का अलग झण्डा बनाया जिसका रंग लाल था। उसपर हँसियाँ-हथौड़ा का चिन्ह था। इस सम्बन्ध का प्रस्ताव १९३७ में ऑल इण्डिया किसान सभा की बैठक जो नियामतपुर आश्रम में हुई उसमें पास किया गया। १९३९ में गया किसान सभा का वार्षिक सम्मेलन हुआ जिसका सभापतित्व आचार्य नरेन्द्रदेव ने किया। इस में जिले के लाखों किसानों ने भाग लिया। पाँचवाँ अधिवेशन आन्ध्र प्रदेश के पलाशा में हुआ जिसके सभापति राहुल जी मनोनीत थे लेकिन वे अधिवेशन के पहले ही गिरफ्तार कर लिए गये। फलस्वरूप पंजाब के बाबा सोहन सिंह मकना को सभापति बनाया गया। १९३९ में श्री सुभाष चन्द्र बोस से उनकी जान पहचान हुई। उनके सहयोग से वामपक्षी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दलों की एक संयुक्त वामपक्षी कमिटी बनी, जिसमें स्वामीजी एवं प्रो० रंगा किसान सभा की ओर से सदस्य हुए। यह कमिटी अधिक दिनों तक नहीं चल सकी क्योंकि इसके समाजवादी सदस्य अपनी अलग खिचड़ी पकाने लगे।

स्वामी जी कमाने वाली जनता के हाथ में सारा शासन-सूत्र औरों से छीनकर देने के पक्षपाती थे। वे मेल-जोल से कुछ भी प्राप्त करना गलत मानते थे। वे संघर्ष से कुछ प्राप्त करने में विश्वास करते थे। उनका कहना था कि मैं आर्थिक युद्ध को भी आजादी के युद्ध में परिणत करना चाहता हूँ। मैं आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक क्रान्ति चाहता हूँ और मैं वैसे ही लोगों का साथ दूँगा। धर्म को राजनीति में लाने के वे पक्के विरोधी थे। समाजवाद में उनका पक्का विश्वास था। वे गरीबी और शोषण से मानवता को मुक्त देखना चाहते थे। कृष्ण द्वारा गीता में दिये गये उपदेशों में उन्हें समाजवाद की झलक मिली थी। शोषण के विरोध में वे बिना समझौता के लड़ाई चाहते थे। अपनी पुस्तक "क्रान्ति और संयुक्त मोर्चा" में उन्होंने मार्क्स, लेनिन, एन्जिल्स का उदाहरण देते हुए यह सिद्ध करने की चेष्टा की है कि सर्वहारा का संघर्ष बिना किसानों का साथ लिए नहीं चल सकता। वे किसानों और मजदूरों को सशस्त्र सैनिक दस्ता बनाने के पक्षपाती थे। बिना किसानों को साथ लिये सर्वहारा दल संघर्ष में विजयी नहीं हो सकता, ऐसा उनका अटूट विश्वास था। इसके उदाहरणस्वरूप उन्होंने रूस की क्रान्ति एवं माओ त्से तुंग द्वारा चलायी गयी चीनी क्रान्ति का उल्लेख किया है।

स्वामीजी जीवन पर्यन्त किसानों के लिये लड़ते रहे। स० २००७ में इन्होंने अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। तब से आजतक किसान नेतृत्वविहीन हो गये हैं। काश, जो फिर वैसा कोई नेता होता! उनके सम्बन्ध में वही एक शेर मैं आपके सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ जो लोकमान्य तिलक की मृत्यु पर "दैनिक प्रताप" में प्रकाशित हुआ था, जिसे स्वामी सहजानन्द ने अपनी पुस्तक "मेरा जीवन संघर्ष" में उल्लेख किया है—

मुद्दतें काट दीं असीरी में
था जवानी का रंग पीरी में
अब कहाँ मुल्क की फिदाई हाय
मौत न उस मौत को आयी हाय!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वैज्ञानिक समाजवादी स्वामी सहजानन्द

—शीलभद्र याजी

भारतवर्ष ने अनेक साधु, संत, महन्थ, ऋषि; मुनि तथा संन्यासी पैदा किए परन्तु संन्यासी होते हुए जिस प्रकार जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती कट्टर मार्क्सवादी एवं वैज्ञानिक समाजवादी नेता हुए उसका उदाहरण मिलना मुश्किल है। हम भारतीय उन्हें जननायक कहकर पुकारते हैं। स्वामी सहजानन्द सरस्वतीजी का सारा जीवन संघर्ष में लगा रहा। बचपन में ही वे असमानता तथा अन्याय के खिलाफ सिर्फ नारे ही नहीं लगाये वरन् संघर्ष द्वारा इनको हटाने के प्रयत्न में भी लगे रहे।

स्वामी सहजानन्द सरस्वती का यह दृढ़ विश्वास था कि साम्राज्यवाद सामंतवाद तथा पूंजीवाद से संघर्ष करने में अवधि के विभाजन का मापदण्ड नहीं होना चाहिए। इसलिए १९२१ ई० में जब भारत के कोने-कोने में ब्रिटिश साम्राज्यवाद से कांग्रेस के नेतृत्व में स्वतंत्रता संग्राम शुरू हुआ तो स्वामीजी उस लड़ाई में कूद पड़े तथा उत्तर प्रदेश से जेल गये और पं० जवाहर लाल नेहरूजी के साथ देहरादून जेल में जिन्दगी बिताई।

जेल से रिहा होने पर सामाजिक कुरीतियों एवं सामंतवाद; जमीन्दारी प्रथाओं को जड़ से उखाड़ने के प्रयत्न में लग गये। इस बीच १९३० ई० में नमक कानून तोड़ने तथा सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू हुआ तो फिर पटना जिला के डिक्टेटर बन कर स्वतंत्रता संग्राम की रहनुमाई की तथा हजारीबाग सेण्ट्रल जेल में रहे। हजारीबाग सेण्ट्रल जेल से रिहा होने पर उन्होंने देश की ८५ प्रतिशत जनसंख्या किसानों को जगाने तथा जमीन्दारी प्रथा के खिलाफ संघर्ष चलाने के लिए सर्वप्रथम पश्चिमी पटना जिला में तथा इसके बाद सारे बिहार में किसान सभा की स्थापना कर सैकड़ों बकास्त संघर्ष का संचालन किया। बिहार में सर्वप्रथम किसान सभा का संगठन कर किसानों के वर्ग-संघर्ष को तीव्र करने के ख्याल से उन्होंने स्वर्गीय इन्दु लाल याज्ञिक तथा किसान-बन्धु आचार्य एन० जी० रंगाजी के सहयोग से अखिल भारतीय किसान सभा का संगठन किया। पक्के तथा कट्टर वैज्ञानिक समाजवादी होने के नाते स्वामी सहजानन्द सरस्वती का दृढ़ विश्वास था कि किसान एवं मजदूर वर्ग-संघर्ष के जरिये से ही आगे बढ़ सकते हैं; अपने अधिकारों को पा सकते हैं तथा अन्त में स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद किसान-मजदूर राज एवं समाजवाद की स्थापना कर सकते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब १९३६ ई० में अखिल भारतीय कांग्रेस कमिटी की कार्यकारिणी समिति ने अपने प्रस्ताव द्वारा सभी किसान एवं मजदूरों के वर्ग-संघर्ष पर पाबन्दी लगा दी। उस समय स्वामी सहजानन्द सरस्वती, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, श्री के० एफ० नारीमैन, श्री किशोरी प्रसन्न सिंह तथा लेखक आदि ने ९ जुलाई १९३६ में कांग्रेस के इस किसान-मजदूर विरोधी फैसले के खिलाफ सारे भारतवर्ष में प्रतिवाद मनाकर विरोध किया। कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति ने इन किसान-मजदूर नेताओं को प्रतिवाद दिवस मनाने के अपराध में तीन-तीन वर्ष तक कांग्रेस संस्था में कोई भी पदाधिकारी नहीं बनने के लिए अनुशासन की कार्रवाई की। परन्तु स्वामीजी तथा नेताजी वर्ग-संघर्ष के रास्ते से नहीं हटे। उस समय बहुत-से नामधारी समाजवादी नेता जैसे श्री एम० एन० राय, श्री जयप्रकाश नारायण आदि अनुशासन की कार्रवाई के भय से प्रतिवाद-दिवस में शामिल नहीं हुए।

आज बिहार में जो किसानों को सभी हक मिले, जमीन्दारी प्रथा खत्म हुई तथा काश्तकारी कानून में मौलिक परिवर्त्तन या संशोधन हुए, इन सब का सारा श्रेय दण्डीधारी संन्यासी वैज्ञानिक समाजवादी नेता स्वामी सहजानन्द सरस्वती तथा उनके पक्के अनुयायियों को है।

इस बीच जब द्वितीय विश्व-युद्ध शुरू हुआ तो जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती ने नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का साथ दिया तथा रामगढ़ में जो समझौता विरोधी सम्मेलन नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के सभापतित्व में हुआ उसके वे स्वागताध्यक्ष हुए तथा इसी सम्मेलन में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ जंग करने के हेतु राष्ट्रीय संग्राम शुरू कर देने के बिगुल बजाये। सारे बिहार में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तथा लेखक के साथ २७ दिनों में ४३८ आम-सभाओं में भाषण देकर बिहार की जनता को ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खिलाफ जंग करने को तैयार किया तथा इसी जुर्म में फिर तीन वर्ष की सख्त सजा पाकर हजारीबाग सेण्ट्रल जेल में बन्द कर दिए गये।

१५ अगस्त १९४७ ई० को जब भारत स्वतंत्र हुआ तो स्वामीजी ने कांग्रेस से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर देश में समाजवाद की स्थापना के उद्देश्य से पटने में भारत की सभी वामपक्षी पार्टियों एवं वर्ग-संस्थाओं के प्रतिनिधियों का सम्मेलन किया। पटना के उस वामपक्षी सम्मेलन में अखिल भारतीय फॉरवर्ड ब्लॉक, अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी, अखिल भारतीय संयुक्त किसान सभा, अखिल भारतीय किसान सभा, ऑल इण्डिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस, अखिल भारतीय सोशलिस्ट पार्टी भारतीय क्रांतिकारी समाजवादी पार्टी, अखिल भारतीय क्रांतिकारी साम्यवादी पार्टी, अखिल भारतीय क्रांतिकारी वर्कर्स पार्टी, बॉलशेविक पार्टी ऑफ इण्डिया,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

डिमोक्रेटिक वैनगार्ड, कम्युनिस्ट वर्कर्स लीग ऑफ इण्डिया, अखिल भारतीय मजदूर सभा, सोशलिस्ट युनिटी सेण्टर, कम्युनिस्ट वर्कर्स पार्टी आदि अठारह वामपक्षी संस्थाओं के प्रतिनिधि हजारों की तादाद में शामिल हुए। इस वामपक्षी मोर्चा सम्मेलन का सभापतित्व स्वामीजी ने किया। इस सम्मेलन में सदा की भाँति बिना पेन्दे के लोटे की श्री जयप्रकाश नारायण की पी० एस० पी० शामिल नहीं हुई, क्योंकि आजादी की प्राप्ति के बाद श्री जयप्रकाश नारायण की सोशलिस्ट पार्टी वैज्ञानिक समाजवाद को छोड़कर सुधारवादी समाजवादी पार्टी बन गई।

जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती सिर्फ राजनैतिक आजादी से खुश नहीं थे, इसलिए इन्होंने इन १८ वैज्ञानिक समाजवादी पार्टियों तथा वर्ग संस्थाओं को बुलाकर भारतवर्ष में जल्द से जल्द समाजवादी गणतंत्र की स्थापना के लिए संयुक्त वामपक्षी मोर्चा बनाया तथा उनका एक घोषणा-पत्र तैयार हुआ जिस पर उपर्युक्त १८ वैज्ञानिक समाजवादी पार्टियों एवं किसान-मजदूर वर्ग-संस्थाओं के नेताओं के हस्ताक्षर हुए। उस संयुक्त वामपक्षी मोर्चा घोषणा-पत्र का देश तथा विदेश के सभी वैज्ञानिक समाजवादी पार्टियों एवं कम्युनिस्ट पार्टियों ने स्वागत किया तथा प्रशंसा की। अभी तक संसार में थर्ड तथा फोर्थ इन्टरनेशनल के मानने वालों में कभी भी किसी संयुक्त घोषणा-पत्र पर संयुक्त हस्ताक्षर नहीं हुए परन्तु यह जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती ही एक ऐसे वैज्ञानिक समाजवादी नेता हुए कि उन्होंने पटने में इन दोनों इंटरनेशनल के माननेवालों को एक ही संयुक्त वामपक्षी मोर्चा घोषणा-पत्र पर सबसे हस्ताक्षर कराकर इन सब को एक ही संयुक्त वामपक्षी मोर्चा का संयोजक एवं सेक्रेटरी जनरल इस लेखक को बनाया तथा वे स्वयं सभी किसान सभाओं को एक संयुक्त किसान सभा बनाने के संयोजक हुए।

देश का दुर्भाग्य है कि इस संयुक्त वामपक्षी मोर्चा बनाने के बाद जननायक स्वामीजी हमारे बीच नहीं रहे। यदि इस देश में नेताजी सुभाषचन्द्र बोस तथा जननायक वैज्ञानिक समाजवादी संन्यासी स्वामी सहजानन्द सरस्वती जीवित रहते तो आज से पच्चीस साल पूर्व ही भारत एक सोशलिस्ट रिपब्लिक हो जाता तथा इस देश से गरीबी, बेकारी तथा शोषण मिट जाता।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

किसानों की वाणी : स्वामी जी

— डा० रामसुभग सिंह

पग में खड़ाऊँ, गेरुआ वस्त्र, हाथ में संन्यास का दण्ड, मझोला कद; दिव्य व्यक्तित्व, झुकी भृकुटी, चुभती वाणी, विशाल हृदय, स्वभावत: कृषक-प्रेमी, कृषि-समस्या के सही हल के लिए दिल में उद्विग्नता; मस्तिष्क में चिंतन और कार्य-क्षेत्र में हर क्षण तत्पर वे थे। इस बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध के भारत के महान कृषक नेता स्वर्गीय स्वामी सहजानंद सरस्वती, जिनका जीवन किसानों के लिए था और जिनकी वाणी सच्चे अर्थ में भारत के लिए थी और जिनकी वाणी सच्चे अर्थ में भारत के किसानों की वाणी थी।

बिहटा (पटना) का 'श्री सीताराम आश्रम' देश के कोने-कोने से किसान नेताओं को आकृष्ट करता था, जो वहाँ स्वामी जी से किसान-समस्याओं पर प्रेरणा पाकर अपने-अपने प्रदेशों में किसान आन्दोलन चलाते थे। स्वामी जी का वह आश्रम किसानों का जमघट था। वहाँ छोटी-बड़ी किसान सभाएँ बराबर होती रहती थीं। अखिल भारतीय किसान सभा का अधिवेशन भी बिहटा में प्रो० एन० जी रंगा की अध्यक्षता में हुआ था। आज बिहटा, वहाँ का श्री सीताराम आश्रम और सारा भारत स्वामीजी के स्वर्गारोहण से सूना है। पर कृषक वैसे ही दुखी हैं जैसे वे थे। उनके कष्टों का निदान तथा उनकी समस्याओं का हल किया जाना अत्यावश्यक है।

समस्त मानव-समाज का जीवन-यापन कृषकों पर निर्भर करता है, क्योंकि कृषक ही अन्न, कपास, ऊन, दूध-घी, गुड़-चीनी, फल-सब्जी आदि पदार्थों को कड़ाके के जाड़े तथा चिल-चिलाती धूप में काम करके पैदा करता है। कृषकों में किसान व कृषक-मजदूर दोनों ही शामिल हैं। दोनों की समस्याएँ बहुत कुछ एक सरीखी हैं। अगली पंक्तियों में सुविधा के लिहाज से इनको "किसान" के नाम से संबोधित किया जायगा।

देश जानता है कि भारतीय किसान के पग में पनही नहीं होती, डाँड़ में बेतरह फटी धोती, बदन पर वैसी ही एक गमछी जिसके सहारे कंधे पर जुआठ सहित हल रखकर आधा पेट खाये पैने से बैलों को हाँकते हुए वह खेत जोतने जाता है। दोपहर को लंच में उसे सूखा सत्तू मिल जाय तो वह अपने को भाग्यवान मानता है। सोने के लिए जाड़े में पुआल और गर्मी में एक टूटी खाट मिल जाय तो किसान आनन्दित रहता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यदि कभी उसे सरकारी दफ्तरों में जाना पड़ता है तो बिना अनुनय-विनय के उससे कोई बात नहीं करता। उसे अलग-अलग रखा जाता है। किसी भी दफ्तर में बैठने के लिए कुर्सी उसे नसीब नहीं होती। किसी कागज की नकल अथवा खाद आदि कोई सामान जायज रीति से उसे उपलब्ध नहीं होता। हर जगह उसे दर-दर का भिखारी बनना पड़ता है।

किसान की कमाई व सम्पत्ति की कोई कीमत नहीं। देश भर में किसानों के श्रम का कोई मूल्यांकन नहीं है। उसका घर भर मिलकर कार्य करता है। और तो और, पांच वर्ष की उम्र का छोटा बच्चा भी मवेशी चराता है। पर क्या किसी आम किसान परिवार की आय छः हजार रुपये वार्षिक है ? कतई नहीं। उसकी कमाई का अन्न न्यूनतम कीमत पर ले लिया जाता है। पर उपभोक्ता की हैसियत से यदि वही किसान अन्न खरीदने जाता है तो उसे वही अन्न दुगुनी कीमत पर उपलब्ध होता है। कपड़ा, लोहा, तेल, खाद आदि वस्तुओं की कीमत तो आसमान छूती है।

किसानों की अचल सम्पत्ति के बारे में भी कोई स्थिरता नहीं। चकबंदी भी शीघ्र नहीं हो पाती। मालगुजारी, पनिवट, बिजली-कर व विभिन्न प्रकार के सेसों की दनादन वृद्धि होती जा रही है। उस वृद्धि का सरकारी सेवाओं की निपुणता की वृद्धि से कोई अनुपात नहीं। अमन-चैन की स्थिति भी वैसी नहीं जिसमें किसान निश्चित रहे। उसकी फसलें व मवेशी सुरक्षित नहीं हैं। स्वयं उसकी जान खतरे से खाली नहीं रहती।

चिथड़ों में लिपटे किसानों के बाल-बच्चे रुखा-सूखा खाकर दिन व्यतीत करते हैं। उनके पढ़ने-लिखने व दवा आदि का कोई सुप्रबन्ध नहीं है।

पचहत्तर प्रतिशत किसानों को कृषि से कोई आमदनी नहीं होती। बाढ़ आने अथवा सूखा पड़ने पर वे बेहाल हो जाते हैं। सैकड़ों किसानों व उनके मवेशियों की ऐसी प्राकृतिक विपत्तियों के कारण मृत्यु होती है। कभी-कभी खेत की मेड़ बनाते, रात को खेत की रखवाली करते और रात को बिजली मिलने के चलते सिंचाई कराते सर्प-दंशन के कारण भी किसान को अकाल ही काल कवलित हो जाना पड़ता है। वैसे किसानों के अनाथ बच्चे बिलखते रह जाते हैं। उनके पालन-पोषण का कोई साधन नहीं होता, क्योंकि किसान को न तो कोई पेंशन कहीं से मिलती और न उसकी जीवन बीमा हुई होती है।

इस दयनीय स्थिति में भी बेपनाह किसान का हृदय चट्टान की तरह सुदृढ़ रहता है। कमर कसकर वह अपने कार्य में जुट जाता है ताकि अगली फसल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसकी अच्छी होवे। वह अन्य वर्ग के लोगों की तरह कार्य नहीं करता और न अपनी विपत्ति के लिए किसी को कोसता। केवल अपने बाहुबल पर वह भरोसा रखता है। उसका लड़का देश की सरहदों की सुरक्षा का और किसान सम्पूर्ण देशवासियों को खिलाने का दायित्व मजबूती से सम्हाले हुए हैं। सफलता के सेहरा भी इनके सर पर इसीलिए बांधा गया है। यदि असमानता एवं उपेक्षा के सांकल, जिनसे किसान जकड़े हुए हैं, तोड़ दिए जायँ, उत्पादन करने के उपकरण उचित मूल्य पर उपलब्ध किये जायँ और कृषिजन्य पदार्थों के मूल्य लागत-खर्च के आधार पर निर्धारित किये जायँ तो भारतीय किसान कृषि की उपज पाँचवीं योजना में साढ़े बारह करोड़ टन कर सकता है।

किसानों की उपलब्धियाँ एवं कार्य-निष्ठा स्वर्गीय स्वामी सहजानन्द सरस्वती की प्रेरणा के प्रतीक हैं। स्वामी जी ने मुसीबतों से जूझने की शिक्षा किसानों को दी थी। किसानों ने वैसा ही किया। न केवल किसानों ने अन्नोत्पादन आजादी के दिनों में दुगुना से अधिक बढ़ा दिया वरन् अटूट देश-प्रेम एवं कर्त्तव्य-परायणता का परिचय दिया। आगे भी वे स्वामी जी के आदर्शों को अपनाये रख कर उनके स्वप्नों को साकार करने का दिलोजान से प्रयास करेंगे। किसानों की सक्रियता से ही स्वामी जी की दिवंगत आत्मा को स्वर्ग में सुख व संतोष होगा।

●

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गरीबों के नेता स्वामीजी

—श्री चन्द्रिका राम

हाल ही, जब स्वामीजी आखिरी बार मुजफ्फरपुर जा रहे थे, संयोगवश मैंने उन्हें जहाज पर देखा। वे महीनों से बीमार थे। शरीर गल चुका था, देह में खून एकदम नहीं था, पर आवाज में जोश, वाणी में तेज एवं ललाट पर चमक अवश्य थी।

मैं पहली बार तो पहचान नहीं सका; दूसरी तरफ कार्याजी से भेंट हो गई। कुशल समाचार के बाद आपने स्वामीजी के विषय में बहुत-कुछ कहा, पर कौन जानता था कि स्वामीजी हमारे बीच से इतना जल्द छीन लिए जायेंगे।

स्वामीजी संन्यासी थे, परोपकारी थे। मानवता की सेवा में उन्होंने आज से ४५ वर्ष पहले अपना सब कुछ त्याग दिया था, पर जंगलों में जाकर अपनी मुक्ति के लिए तप करना, मर मिटना उनका लक्ष्य नहीं था। वे तो संसार से गरीबी को, गुलामी को और अज्ञान को दूर कर मानवता की मुक्ति चाहने वाले व्यक्ति थे। उनके आदर्श एकदेशीय एवं एकजातीय नहीं थे, बल्कि उनके हृदय में तो सभी के लिए आह थी, सभी के लिए दर्द था। वे सबको उन्नत करना चाहते थे।

एक हिन्दू संन्यासी के नाते उन्होंने सारे हिन्दू शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया था। उनके इस अध्ययन से, उनके विचार कहीं भी संकीर्ण न बने, बल्कि उनके सिद्धान्त में सभी मनुष्य बराबर थे। वे गरीब एवं अमीर के भेद-भाव को खुद मिटाकर एक ऐसा समाज कायम करना चाहते थे, जिसमें कमानेवाला खाए और सभी को समान अवसर प्राप्त होवे, जिससे सभी जातियों एवं समुदायों के लोग उन्नत होकर अपनी कमाई का, अपने परिश्रम का उपभोग कर सकें।

इसी विचार से प्रेरित होकर १९३२ में बिहार में कांग्रेस नेताओं से मिलकर आपने किसान सभा का सर्वप्रथम जन्म दिया, और उस दिन से मरते समय तक वे बराबर किसानों के नेता बने रहे। इस सम्बन्ध में इतना ही कहना थोड़ा होगा कि देश की किसान-समस्या एवं भूमि-कर सम्बन्धी बातों की जानकारी में आज भी हिन्दुस्तान में उनका सामना करनेवाले केवल एक-ही-दो आदमी हैं। जब देश में अंगरेजों से सुलह की बात चलने पर हुई, उस समय आप १९४० में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री सुभाषचन्द्र बोस का साथ देकर देश में प्रगतिशील शक्तियों को कायम रखने में समर्थ हो सके थे।

हालांकि बीच-बीच में कांग्रेस के नेताओं एवं कांग्रेस की सामयिक नीति को लेकर आपसे मनमुटाव हो जाता और आप उन्हें कभी-कभी छोड़कर अलग भी हो जाते, पर आपने बराबर कांग्रेस का साथ उसके आन्दोलनों में देकर कई बार जेल की यात्रा की थी; कांग्रेस के रचनात्मक कार्यों में आप जी-जान से पड़ जाते; और बराबर मरते दम तक आपने नियमित रूप से खादी पहनना, चरखा चलाना जारी रखा था।

आपने हाल ही, केवल दो साल पहले, देश के उन सभी दलों का संगठन करना शुरू किया था, जो एक साथ होकर इस देश से पूंजीवाद, जमींदारी एवं सामंतशाही को खतम कर दें। इस सिलसिले में आपने सारे देश का भ्रमण कर सभी जगह किसानों एवं मजदूरों का संगठन करने में काफी सफलता पाई थी और संभव था, अगर आप कुछ दिन और जिन्दा रह जाते, तो इस दिशा में वह कर दिखाते, जिसे आजतक कोई भी दल या व्यक्ति नहीं कर सका है। खेतिहर मजदूर एवं हरिजन आपके खास प्रिय पात्र थे। आपकी नीति इनके विषय में बड़ी ही उदार थी—आप छुआछूत के भूत को जल्द मार भगाना चाहते थे। आप हरिजनों की शिक्षा एवं माली हालत सुधारने में काफी दिलचस्पी लेते रहे। आपने हाल ही में खेतिहर-मजदूरों के विषय में एक गवेषणापूर्ण किताब लिखी, जो बहुत कारणों से प्रेस में नहीं जा सकी है। खेतिहर-मजदूर एवं किसानों की समस्या की बारीकी को आप समझते थे और दोनों के ही मित्र थे। दोनों ही का वे नेतृत्व कर सकते थे। इसी का सबूत है कि गत २५ फरवरी को देश के किसानों ने उन्हें १ लाख की थैली, उनकी हीरक जयंती के अवसर पर प्रदान की थी। भगवान उनकी आत्मा को शान्ति दें!

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वह आणविक व्यक्तित्व

—श्री मथुरा प्रसाद मिश्र

'अगर हमारी चले, तो हम पलक में किसानों को जमीन का मालिक बना दें।'—ऐसा महान् स्वप्न; इतनी बड़ी बेकली जिस महाप्राण में लिपटी थी, वह अचानक २६ जून, १९५० ई० को ढलती, बरसाती रात के अँधेरे में इस संसार से उठ गया।

और, वह बेकली भी शायद वह अपने साथ लिए गया, यद्यपि उसका अधूरा स्वप्न यहीं पड़ा जमीन पर लोट रहा है।

जिसके प्राणों में करोड़ों की आशा और बल हुँकार करते थे, वह इतना जल्द, झटपट चल देगा, ऐसा किसने सोचा होगा ? लेकिन, हत्यारे की दो ही गोलियों ने महात्मा को ढेर कर दिया था, पक्षाघात के एक ही झकोरे ने स्वामी को सुला दिया।

किसी-किसी को बचपन में बहुत तेज, चंचल और उत्पाती पाकर हम कह बैठते हैं—'इसकी बोटी-बोटी चमकती है।' ऐसे बच्चे हमने और आपने बहुत देखे होंगे। लेकिन, उम्र की सीढ़ियाँ चढ़ते, जिन्दगी के थपेड़े खाते, कोटियों की चमक मंद पड़ जाती है, चंचल प्राण निस्पंद हो जाते हैं। किन्तु, स्वामीजी एक व्यक्ति थे, जिनकी, ६३ वर्ष की उम्र में भी बोटियाँ वैसी ही चमकती रहीं, वृद्ध प्राण वैसे ही चंचल, विकल और कर्मरत रहे। मृत्यु में ही पहली बार लोगों ने उनके शव को शान्त और निस्पंद देखा।

छोटा, किन्तु मांसल शरीर, गेहुँआ रंग, मुंडित मस्तक, गेरुआ वस्त्र—वह भी कमर के नीचे ही, हाथ में संन्यासी का दंड या किसानों का डंडा; और अपने प्रचंड तेज से आस-पास के वातावरण को आक्रांत और आहृत करता हुआ जो व्यक्ति एक युग से बिहार क्या, देश भर के किसान-आन्दोलन का पिता और नेता रहा, वह जननायक स्वामी सहजानन्द सरस्वती थे। जन्म से किसान, कार्य से संन्यासी, कर्म से विद्रोही और मृत्यु से जो मृत्युंजय हुआ, उसे ही हम प्यार से 'स्वामीजी' कहते थे।

बचपन में ही घर-बार छोड़कर संन्यास लिया, गुफाओं और कंदराओं में भगवान ढूंढ़ने निकले, ज्ञान की खोज में काशी से मिथिला की दौड़ लगाया किए, ज्ञान प्राप्त कर जीवन की खोज करने चले, ब्राह्मणों के पाखंड को ललकारा, देश

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की मुक्ति के लिए अंगरेजी राज से लोहा लिया और अन्त में धरती के सपूत; करोड़ों-करोड़ भूखे-नंगे किसानों में अपने भगवान को पा लिया, ऐसे थे हमारे स्वामीजी। युगों के उत्पीड़ित किसान का सारा क्रोध, सारी घृणा उनकी भौं पर लदी थी, उसकी आशा-आकांक्षा उनके कंठ में साँस-साँस जा बैठी थी, उसका बल और विश्वास उनके कर्ममय जीवन में समा गया था। इसलिए औरों की और चिन्ताएँ भी हो सकती थीं परन्तु उन्हें सिर्फ किसान की फिक्र थी—सोते-जागते, उठते-बैठते, दिन-रात, महीना-बरस।

और, नेता कहते किसे हैं? जो जनता के छोटे या बड़े समूह की आशा-आकांक्षा को, उसके स्वप्न और मनोपश्न को जिस मात्रा में अपने जीवन के माध्यम से व्यक्त और प्राप्त करता है, वह उसी मात्रा में, छोटा या बड़ा जन-नायक होता है। जो तनहा अपनी सोचते हैं, अपने लिए जीते हैं, वे नेता होने की ख्वाहिश छोड़ दें। और, स्वामीजी के पास चिन्ता के लिए अपनी क्या थी—दो टूक गैरिक वस्त्र और एक दंड। इसलिए जिस निर्लिप्त भावना से वह सार्वजनिक जीवन में रहे, वह दूसरों के लिए अलभ्य हैं। सार्वजनिक धन की पाई-पाई का हिसाब रखनेवाला दूसरा और कौन होगा? चलती गाड़ी में एक तीन पैसे का कार्ड लिखा और उसका हिसाब भी तुरत वही में टाँक लिया।

एक घटना मुझे याद आती है। १९४२ ई० में स्वामीजी जेल से छूटकर आये थे और बिहटा आश्रम में थे। इधर वह मुझसे जितना ही नाराज थे, उन दिनों उससे भी अधिक खुश थे। दिल्ली जाना था। उन्होंने टिकट आदि खरीदने के लिए मुझे ४० रु० दिए और सब खर्च करके मेरे पास दो आने पैसे बच रहे। मैं संकोच में था कि ये दो आने उन्हें क्या लौटा दूँ और उन्होंने गाड़ी खुलने के ठीक एक मिनट पहले मुझसे हिसाब माँगा, दो आने पैसे वापिस लिए।

महात्माजी को कुछ दिन निकट से देखने का सौभाग्य मुझे नहीं मिला, किन्तु स्वामीजी को खूब देखा। सार्वजनिक जीवन बड़ा अस्त-व्यस्त होता है, विशेष-कर हमारे देश में। यहाँ कोई रूटीन नहीं चल सकती, व्यक्तिगत जीवन के नियम-निषेध नहीं पाये जा सकते। लेकिन, गाँधीजी और स्वामीजी इसके अपवाद थे। खूँटे से बँधा हुआ उनका समय रहता था। रात में नौ बजे और प्रलय भी सामने हो, तो स्वामीजी सो जाते थे। और, रात में ही दो बजे बिस्तर से उठ बैठते थे। आँधी-वर्षा में भी नित्य मीलों टहलना उनका ही काम था। बम्बई और कलकत्ते में भी रहे, तो कुएँ का ही पानी पीते। तीस वर्षों तक कभी न तो नमक खाया, न तेल और न कभी चीनी ही खाई। आत्मसंयम का ऐसा जीवन, जिसके किनारे न कभी कोई नारी आई और न कोई ममता-ममत्व ही, मैंने और नहीं देखा है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके सामने जो आदमी आया, कभी जो चीज आई, उसका आवरण हटाकर, छिलके नोंचकर उनने उसको देखा-परखा और उसी रूप में फिर संसार के सामने पेश कर दिया। इसीलिये उनकी वाणी नग्न होती थी, उनका काम खुला होता था। तभी तो उनके भाषण में इतना बल और प्रभाव था, जो हजारों-लाखों में प्राण फूँकता था, करोड़ों को अपने साथ ले चलता था। जन-जीवन को उसकी गहराई में, और व्यापक पैमाने पर, उद्वेलित करने में जितना समर्थ गांधीजी और स्वामीजी हुए, फिर कोई दूसरा नेता नहीं हुआ। किन्तु, गांधीजी के बल में जो संयम था, वह स्वामीजी को न मिला। काश, उन्हें किसी हत्यारे ने संखिया न खिलाई होती, उनका आक्रोश कुछ कम रहा होता।

बहुतों का ख्याल होगा कि स्वामीजी के मस्तिष्क ही मस्तिष्क था, हृदय नहीं। निःसंदेह, उच्च कोटि का उनका मस्तिष्क था, विलक्षण उनकी स्मरण-शक्ति थी, तभी तो सार्वजनिक जीवन की आवश्यकता से, काफी उम्र बीतने पर भी उन्होंने अँगरेजी सीखी, उस पर आधिपत्य किया। लोग कहते हैं, संस्कृत का इतना बड़ा पंडित इस युग में नहीं हुआ।

लेकिन, यह कैसे हो सकता था कि स्वामीजी हृदयहीन होते? गरीब किसान की आर्त्त पुकार क्या कोई हृदयहीन सुन सकता था? जिनने स्वामीजी को नजदीक से देखा, उनने देखा कि स्वामीजी अंतःसलिला फल्गु की तरह थे। ऊपर-ऊपर सूखे गर्म उड़ते बालू के ढेर, नीचे-नीचे स्रोतस्विनी बहती हुई।

जब स्वामीजी खाली होते; या हल्का होना चाहते, तो कालिदास के कुछ सरस श्लोक गुनगुनाते भी लोगों ने उन्हें देखा होगा। फारसी और उर्दू के, जिन पर उनका कब्जा था, शेर तो उन्हें सैकड़ों याद थे, और विश्वास करेगा कि उनके कुछ प्रिय शेरों में ये भी थे :—

फना के बाद हमसे बेकसों को कौन पूछेगा?
मगर ए बेकसी! रोया करेगी तू हमें बरसों
करेगी याद ए गम, तू हमें बाद-ए-फना बरसों
खिलाया है जिगर, बरसों पिलाया है लहू बरसों

मनुष्य को कवियों ने दुर्बल और लाचार की संज्ञा दी है, उसकी असहायता पर आँसू बरसाए हैं। लेकिन, उसका व्यक्तित्व बिना कोई सहारा ढूँढ़े किन ऊँचाइयों को छू सकता है, इसका प्रमाण स्वामीजी थे। न किसी स्कूल-कॉलिज में जिन्हें शिक्षा मिली, न बड़ों का सहारा मिला और न विदेशों का भ्रमण जिन्होंने किया, उन्होंने अपने तप और कर्म-बल से समाज में भूचाल पैदा किया, पीड़कों को आतंक में डाल रखा और करोड़ों बेकसों को भरोसा बँधाया। भगवान में आस्था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रखता हुआ भी जो एक बार उसको भी चुनौती दे आए, ऐसा व्यक्तित्व था स्वामीजी का। अणु के अनदेखे कण में जो विराट् शक्ति छिपी है, मनुष्य भी उसका उत्तराधिकारी हो सकता है—स्वामीजी ऐसों का जीवन उसका आश्वासन देता है। तभी तो मैंने उनको 'आणविक व्यक्तित्व' कहने का साहस किया है। प्रसंग बदलकर लेनिन के प्रति कहे गये ट्राट्स्की के इन शब्दों को दुहराने का लोभ मैं यहाँ संवरण नहीं कर सकता—"किसी रोग के लिए स्वामीजी को कुछ घंटों में मार डालना आसान था, किन्तु प्रकृति के लिए भी फिर वैसा स्वामीजी गढ़ देना कठिन होगा"।

१९३२ ई० में देश में मुर्दनी छाई थी। सरकार के लाड़ले जमींदारों की तूती बोलती थी। और, वैसे समय में स्वामीजी ने, अकेले, किसान-आन्दोलन का एक तूफान खड़ा कर दिया। फिर '३७-'३८ में उनके नेतृत्व में किसानों ने विहार में जैसी अँगड़ाई ली, क्या उसका नजारा फिर देखने को मिलेगा ?

स्वामीजी के साथ मतभेद किसी को रह सकता है। बहुतों की उनके साथ न निभी। किन्तु, क्या कोई उँगली है, जो उनके ईमान पर उठ सके ? सार्वजनिक जीवन का धरातल जिस वेग से आज लुढ़कता नजर आता है, काश, उसमें स्वामीजी का आदर्श रखने वाले कुछ और भी होते !

किसी के मरने पर उसके दुखी परिवार के साथ संवेदना प्रकट की जाती है। स्वामीजी का अपना परिवार तो कब का छूट चुका। उन्होंने जो नया परिवार बना लिया था, वह झोपड़ी में रहनेवाले करोड़ों किसानों का परिवार था; जिनको वह राजा बनाने का सपना देखते सो गये। और, स्वामीजी के निधन से सचमुच उन्हीं का सर्वस्व लुट गया है। उनको ही आज मेरी हार्दिक संवेदना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी के व्यक्तित्व की एक झाँकी

— अवधेश्वर प्रसाद सिंह

कौन जानता था कि श्रद्धेय स्वामीजी से जहाज पर दीघा के पास, जहाँ १९२९ में पहली बार मुलाकात हुई थी, फिर १९५० में वहीं दीघाघाट की जेटी पर उनकी पवित्र लाश के अन्तिम दर्शन होंगे ? इतना ही नहीं, बिहटा आश्रम में जहाँ मैं उनसे परामर्श करने और आशीष लेने बार-बार जाया करता था, उस आश्रम के जिस स्थान पर १९४९ में अंतिम बार बैठकर संध्याकाल में उनसे बातें हुई, उसी स्थान पर उनकी समाधि 1950 में, संध्याकाल ही, खोदी जायगी और मैं अपनी आँखों से उन्हें जमींदोज होते देखूँगा, इसकी कल्पना भी क्या मैं कर सकता था ? खैर, वास्तविकता तो यही है कि स्वामीजी स्वर्गवासी हो गए और हमलोगों का पार्थिव साथ उन्होंने छोड़ दिया।

स्वामीजी का नाम स्मरण आते ही बहुत सारी घटनाएँ सामने आ जाती हैं। उनके विषय में यह कहना कि वे एक व्यक्ति नहीं, बल्कि एक संस्था थे, पर्याप्त नहीं। उनके विषय में तो यह कहना पड़ेगा कि वे घटनाओं और संस्थाओं की एक विलक्षण प्रेरक शक्ति थे। कहाँ १९३० के स्वराज्य का असहयोगात्मक आन्दोलन, कहाँ चर्खे-कर्घे आदि का रचनात्मक कार्य, कहाँ भूमिहार ब्राह्मणों के लिए अन्य ब्राह्मणों के साथ समानता का आन्दोलन, कहाँ बिहटा आश्रम तथा कर्मकांड के शिक्षण की व्यवस्था, कहाँ किसान-मजदूर-आन्दोलन, कहाँ जमींदारी प्रथा के विध्वंस की तैयारी ! कहाँ अंगरेजी साम्राज्यवाद के विनाश का आन्दोलन, कहाँ समाजवाद की रणभेरी। जिस व्यक्तित्व की इतनी विविधता तथा व्यापकता है, उस पर एक लेख में कुछ लिख देने की हिम्मत और हिमाकत मैं कैसे करूँ ?

फिर भी, श्रद्धांजलि के रूप में अपने टूटे-फूटे शब्दों को पंक्तिबद्ध करना वांछनीय है। अतः दो-तीन विषयों पर प्रकाश डालने की चेष्टा की जाती है।

× × ×

१९३५ में, जब वे बिहार प्रांतीय किसान सभा के सभापति हुए और मैं अपने मित्र श्री श्यामनन्दन सिंहजी के साथ मंत्री बना, तो उस समय से स्वामीजी के साथ बहुत-से विषयों पर बातें करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। एक समय मेरे मन में यह सवाल उठा कि भूमिहार ब्राह्मण-आन्दोलन के चलाने में स्वामीजी को किस आधारभूत प्रेरणा ने उस ओर अग्रसर किया। फिर भी, मन में भय होता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था कि स्वामीजी को कहीं मेरा सवाल अच्छा न लगे, तो गलतफहमी हो सकती है; और मेरे मन में उनके लिए इतनी अगाध श्रद्धा थी कि मैं उनके और अपने बीच किसी भी तरह की भ्रांति को फटकने देना नहीं चाहता था। फिर भी, इस सवाल ने मुझे इतना उद्विग्न कर दिया कि मैं श्यामनन्दन बाबू के साथ उनके पास गया और मैंने यह सवाल पूछ ही डाला। स्वामीजी बहुत जोर से हँसे और अपना दाहिना हाथ मेरी पीठ पर रखते हुए उन्होंने बहुत ही गंभीरता और स्नेह के साथ कहना शुरू किया—"अवधेश्वर जी, यह सवाल पूछकर आपने बहुत बड़ा फायदा किया। मैं इस विषय में आपलोगों से अपना स्पष्टीकरण करना ही चाहता था। मुझे बचपन ही से अपने में दूसरे मनुष्यों के साथ समानता का भाव रहा है और जब मैंने यह देखा है कि एक मनुष्य या मनुष्यों का एक समुदाय दूसरे मनुष्य या मनुष्यों के अन्य समुदाय के साथ तिरस्कार का व्यवहार करता है और अपने को ऊँचा समझता है, तो मुझे यह सदा असह्य रहा है। इस संबंध की बहुत-सी घटनाएँ मेरी जिंदगी में घटीं, उन्हें तो मैं अभी नहीं कह पाऊँगा परन्तु जब मैं सन्यासी हुआ, तो उस समय की घटना मैं आपको सुना देना चाहता हूँ। संन्यासी होने पर ऐसा ख्याल था कि सभी संन्यासी मेरे साथ समानता के साथ भाईचारे का व्यवहार करेंगे। परन्तु मैंने कुछ उलटा ही पाया। ब्राह्मण संन्यासियों ने भूमिहार ब्राह्मण होने के कारण मेरे साथ तिरस्कारपूर्ण व्यवहार करना शुरू कर दिया। मैंने तो यह समझा था कि सभी संन्यासी, चाहे वे किसी जाति के हों, बराबर हैं, परन्तु जब मैंने यह पाया कि सभी जातियों की बात तो दूर रहे, संन्यासियों में भी भूमिहार ब्राह्मण और गैर भूमिहार ब्राह्मणों का पचड़ा लगा हुआ है, तो मैंने इस असमानता के विरुद्ध नारा बुलंद कर दिया। परन्तु चूँकि यह बीमारी समाज में भी फैली हुई थी, अत: संन्यासियों के दायरे के बाहर समाज में भी अपने को बड़े समझनेवाले और भूमिहारों को निम्न समझनेवाले अन्य ब्राह्मणों के बीच विवश होकर आन्दोलन शुरू करना पड़ा। मुझे खुशी इस बात की है कि थोड़े दिनों की कटुता के बाद अपने को बड़े समझने वालों ने अपनी गलती अब मान-सी ली है, और भूमिहार ब्राह्मणों ने भी अब समानता के स्तर पर अपने को दृढ़ता और नम्रता के साथ ला रखा है। अब तो मैं नहीं समझता कि मेरे उक्त आन्दोलन को लोग जातीय आंदोलन क्यों कहते हैं। यह मेरे साथ, सरासर अन्याय है। ब्राह्मणों के संकुचित क्षेत्र में ही सही, मेरा आन्दोलन समानता का आन्दोलन था, जातीय आन्दोलन नहीं। अगर मैं जातीय आन्दोलन का प्रवर्तक रहता, तो आपलोग मुझे आज बड़े-बड़े भूमिहार जमींदारों के विरुद्ध विभिन्न जातीय किसान समुदाय को प्रेरित करते नहीं पाते। आज भी किसान आन्दोलन में मैं इसीलिए हूँ कि जमींदार और किसानों के बीच

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

असमानता मैं बर्दाश्त नहीं कर सकता। मुझे उम्मीद है, इन थोड़े शब्दों में मैंने हृदयगत भावों को समझा दिया।

स्वामीजी के इस जवाब से और विशेष कर इस जवाब के देने के समय उनके चेहरे में जो दृढ़ता नजर आती थी और जो साफगोई मालूम पड़ती थी, उससे श्यामनन्दन बाबू और मैं बहुत ही प्रभावित हुए। आज भी मुझपर उन शब्दों के वे ही प्रभाव अमिट रूप से मौजूद हैं।

× ※ ×

दूसरी बात जमींदारी प्रथा के खातमे से संबंध रखनेवाली है। हाजीपुर में १९३५ में बिहार प्रांतीय किसान-सम्मेलन के अवसर पर विषय-समिति की बैठक हो रही थी। स्वामीजी जमींदारी प्रथा से तबतक ऊब गए थे और इसका शीघ्रातिशीघ्र खातमा करना चाहते थे। हमारे समाजवादी दल के मित्र लोग भी यही चाहते थे।

१९३१ में बिहार के किसानों की दुर्दशा की कांग्रेस की ओर से जाँच हुई। नेताओं ने लम्बे-लम्बे व्याख्यान दिए। लेकिन उसके परिणामस्वरूप जो परिवर्त्तन करने पड़ते, उनपर बिहार के कांग्रेसी नेता, जो कि खुद जमींदार थे, अभी दूर तक सोच नहीं सके थे।

स्वामीजी की पहली सफलता :

अब उस काश्तकारी बिल को लेकर सारे बिहार में वह स्मरणीय आँधी चली, जिसने सदियों से सारे किसानों की आंखों को खोल दिया। जमींदारों और सरकार के स्नेह-भाजन गुरुसहाय लाल और शिवशंकर झा सभा करके किसानों को समझाने की कोशिश करते; मगर स्वामी जी की सभाओं और उनके प्रचार के सामने कौन टिकता। स्वामी जी बवंडर की तरह बिहार में घूमते हुए किसानों के दिलों में आग लगा रहे थे और बतला रहे थे कि कैसे पीठ-पीछे गला काटने की कोशिश की जा रही है। जमींदार इस कानून के पास कराने के लिए बहुत उत्सुक थे। उसमें जमीन्दारी में १०० एकड़ पर १० एकड़ अपनी खास जिरात में लाने का अधिकार दिया गया था। आन्दोलन का फल यह हुआ कि उस १० सैकड़ा जिरातवाली बात को निकाल देना पड़ा। कानून पास कर दिया गया और कुछ छोटे-मोटे अधिकार किसानों को मिले। सबसे बड़ा फायदा यह हुआ कि किसानों को भ्रम में नहीं डाला जा सका। स्वामी जी और किसान सभा की यह पहली सफलता थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गांधीवाद को सलाम :

१९३४ में बिहार में भूकम्प आया। कांग्रेस नेता जेलों से छूटकर बाहर चले आए। सभी पीड़ित-सहायता के काम में लग गए। गांधी जी भी पटने आए थे। स्वामी जी ने फिर उनसे राजनीति सम्बन्धी कुछ सवाल पूछे, जिनका जवाब स्वामी जी को इतना असंतोषजनक मालूम हुआ कि वहीं उन्होंने गांधी जी के सामने गांधीवाद को आखरी सलाम किया।

जमीन्दारी प्रथा नाश हो :

अमावाँ राज्य की जमीन्दारी के ५० गाँवों में किसानों पर होते अत्याचारों की स्वामी जी ने जो जाँच की, उसे उन्होंने अमावाँ के राजा के सामने रखा। हटा देने का वचन मिला। मैनेजर से ३॥ घंटे बात करने के बाद भी जवाब गोल-मटोल रहा। स्वामी जी अनुभव को अपना गुरु मानते हैं। इन ५० गाँवों के किसानों के ऊपर होते अत्याचारों को आँख से देखकर सुलह-समझौता के साथ उसको हटाने के लिए विफल प्रयत्न होने के बाद उनकी समझ में आ गया कि जमीन्दारी प्रथा को हटाना होगा। नवम्बर, १९३५ में हाजीपुर की प्रान्तीय कांफरेंस में उन्होंने खुद जमींदारी प्रथा हटा देने के लिए प्रस्ताव पास कराया।

प्रथम अ० भा० किसान सम्मेलन :

१९३६ में लखनऊ कांग्रेस के वक्त पहिला अ० भा० किसान-सम्मेलन हुआ और स्वामीजी उसके पहले सभापति थे। यहीं किसानों का चार्टर तैयार हुआ, जिसके कारण अगले साल फ़ैजपुर-कांग्रेस को कितनी ही बातें स्वीकार करनी पड़ीं। सिकनों की जाँच का सवाल भी स्वामीजी कांग्रेस के सामने लाए। कितने ही लोग विरोध कर रहे थे। जवाहरलाल ने कहा—"जल्द लाना चाहिए। हम इसके लिए स्वामीजी को धन्यवाद देते हैं"। लखनऊ में किसान जाँच-कमिटी का प्रस्ताव पास हुआ। उसके अनुसार कितने ही प्रान्तों में जाँच हुई। रिपोर्ट भी तैयार हुई। मगर, बिहार के कांग्रेस नेता किसान-आन्दोलन को कुछ नजदीक से देख चुके थे, इसलिए वह कान में तेल डाल लेना चाहते थे। फैजपुर में फिर पूछताछ हुई, अब क्या करते? जाँच कमिटी के लिए स्वामीजी का भी नाम पेश किया गया, तो प्रान्तीय कार्यकारिणी के दूसरे मेम्बरों ने यह कहकर विरोध किया कि रिपोर्ट में हम एकमत चाहते हैं।

अ० भा० किसान सभा के नेता :

फैजपुर कांग्रेस के समय (१९३६ में) भारतीय किसान सभा की दूसरी कांफ़रेंस हुई। अबकी स्वामीजी जेनरल सेक्रेटरी हुए। तबसे स्वामीजी (जब कभी अ० भा० कि० स० के सभापति नहीं हुए) जेनरल सेक्रेटरी बराबर बने रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भारत में किसान-आंदोलन अब स्वामीजी के जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया। तीसरी कांफरेंस (कुमिल्ला) में स्वामीजी सभापति हुए।

किसान-संघर्षों में :

किसानों की जिन-जिन लड़ाइयों में स्वामीजी ने भाग लिया, उनमें से एक-एक के लिए एक-एक पोथी लिखी जा सकती है, और वह लेख-विषय नहीं हो सकता। बड़हिया-टाल (मुंगेर) के किसान-संघर्ष में स्वामीजी साथी कार्यावन्द की सहायता में पहुँचे रहते। दरमपुर (बिहारशरीफ) के किसानों के संकट में स्वामीजी मौजूद थे। सोलहडा को लीजिए या रेवड़ा को, मझियावां को लीजिए या अमवारी को, सभी जगह स्वामीजी पहुँचकर किसानों का उत्साह बढ़ाते थे। ये लड़ाइयाँ अब कांग्रेस मिनिस्टरी के जमाने में हो रही थीं। कांग्रेस मिनिस्टर और कांग्रेसी बड़े नेता अब अपने असली रूप में सामने आ रहे थे। उन्होंने स्वामीजी को गिरफ्तार कराके अपने को बदनाम करना पसंद नहीं किया, लेकिन और तरह से स्वामीजी को नीचा दिखाने की कोई कसर उठा नहीं रखी। उन्हें अनुशासन के नाम पर कांग्रेस से सालों के लिए बाहर कर दिया गया। कांग्रेसी अखबार स्वामीजी के खिलाफ जो कुछ भी, अनाप-शनाप बोलने के लिए स्वतंत्र थे, लेकिन स्वामीजी ने कभी इसकी परवाह न की। उन्होंने किसानों के लिए, मजदूरों के लिए अपना जीवन अर्पण किया है। उनकी रण-गर्जना को सुनकर किसानों के दिल बल्लियों उछलने लगते। वे कर्ममय थे। साक्षात् देखने पर चुप रहते समय भी उनकी आँखें बोलती मालूम होती हैं, गालों पर उछलती हँसी परन्तु; किसान सभा के हमारे कुछ साथी इतना आगे बढ़ने से हिचकिचा रहे थे। स्वामीजी की यह चेष्टा थी कि किसान सभा में हम सब सम्मिलित रूप से काम करें, न कि इस सवाल पर मतभेद खड़ाकर आपस में फूट पैदा करें। मेरे मित्र श्री रामवृक्ष बेनीपुरीजी ने इस सम्मेलन के पहले से ही, 'सरकार और किसान के बीच वाले शोषक वर्गों को खत्म किया जाने' का नारा बुलंद कर दिया था। स्वामीजी ने एक व्यावहारिक नेता की तरह बहुत धैर्य के साथ आहिस्ता-आहिस्ता कदम चलनेवालों के साथ बहस-मुबाहिसा करके बेनीपुरीजी के ही नारे पर सभी को राजी कर लिया। इस काम में जयप्रकाश बाबू ने भी उनकी पूरी मदद की, हालांकि वे स्वयं इस पक्ष में थे कि जमीन्दारी प्रथा खत्म करनेवाला नारा साफ-साफ बुलंद किया जाय। स्वामीजी को अत्याचारियों का परिहास करती, रोएं-रोएं सजग हो कुछ आवाज-सी निकालते दिखाई पड़ते।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन साल की सजा :

महायुद्ध आया। स्वामीजी ने साम्राज्यवादी युद्ध के बारे में हर तरह के समझौते का विरोध किया। रामगढ़ में (अप्रील, १९४०) दिए हुए व्याख्यान के लिए उनपर मुकदमा चलाया गया और तीन साल की सजा हुई।

और, इसके बाद की घटनाएँ तो अभी ताजा ही हैं। इस बार जिसने नजदीक से देखा, उसने मुक्त कंठ से इस बात की प्रशंसा की कि स्वामीजी एकता कायम रखने के लिए किस दूर तक जाकर समझौता करने को तैयार रहते थे। हाँ, यह बात भी है कि जब स्वामीजी यह देख लेते थे कि अब एक साथ चलने में काम नहीं होने को, तो फौरन उत्तर से दक्षिण ध्रुव की यात्रा कर देते थे। यह उनके व्यक्तित्व की विशेषता थी, जो कभी मुझे पसंद और कभी नापसंद भी मालूम होती थी।

सुनते हैं, रामकृष्ण परमहंस के शरीर से सुप्तावस्था में भी कामिनी और कंचन का स्पर्श करा दिया जाता, तो उनका सारा शरीर सिहर जाता था। जहाँ तक स्वामीजी का सवाल है, १५ वर्षों से मैं उन्हें बहुत नजदीक से जानने का दावा रखता हूँ। इस लंबे अरसे से मैंने उन्हें नजदीक से जो कुछ देखा, उससे यही पाया कि वे इन दोनों की माया के परे थे। इन दोनों क्षेत्रों में वे पूरे रूप से स्थित-प्रज्ञ थे, इसमें मुझे थोड़ा भी संदेह नहीं। आजकल के जमाने में ऐसे संत विरले ही होते हैं।

स्वामीजी ने देश की, समाज की और विशेषकर किसानों की जो सेवाएँ की हैं, वे इतिहास के पृष्ठों पर अपना अमिट स्थान रखेंगी, इसमें मुझे पूरा विश्वास है। इसी से मैं दृढ़ता के साथ कहता हूँ कि स्वामीजी का शरीर भले ही मर गया हो, परन्तु उनकी कीर्ति, कला इतिहास की शाश्वत दीवारों पर सदा लहराती रहेगी। कीर्तिर्यस्य स जीवति।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अंत के वे चिरस्मरणीय दिन

स्वामीजी के साथ

—आचार्य श्रुतिदेव शास्त्री

यद्यपि पूज्य स्वामीजी के साथ मेरा व्यक्तिगत संबंध कम-से-कम २० वर्षों का है, जबकि मैं बहुत छोटा—प्रायः ८-९ वर्ष का ही रहा होऊँगा, और उन्हें बहुत समीप से देखने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ है, फिर भी उनके विविध गुणों के संबंध की चर्चा नहीं कर, अभी मैं उनके अंतिम दिनों की झांकी ही दे रहा हूँ।

मेरे मित्र पं० विष्णु शर्मा चतुर्वेद १ जून १९५० को पूज्य स्वामीजी से मिलने मुजफ्फरपुर गए थे, और स्वामीजी के स्वास्थ्य में सुधार देखकर उन्हें काफी प्रसन्नता हुई थी। फिर उन्होंने इच्छा प्रकट की थी कि आपकी (स्वामीजी की) सेवा में, यदि आवश्यकता हो तो, मैं रहूँ। स्वामीजी ने तब उनसे कहा था—"तुम श्री सरस्वती-मंदिरम् के काम को और आगे बढ़ाओ, और उसी में अभी लगो, तबतक श्रुतिदेव को भेज दो। और, चतुर्वेदजी से यह संवाद पाकर स्वामीजी की सेवा में, उसी दिन करीब १ बजे, पहुँच गया। स्वामीजी खाट पर लेटे थे, मैंने चरण छुए। उन्होंने 'नारायण' कहकर बताया कि मेरा अनुमान था कि आज तुम आ ही जाओगे और मैंने यह बात ब्रह्मचारीजी (श्री ब्रह्मचारी रामाश्रय विशारद) को बता दी थी। फिर, स्वामीजी अपनी गाथा सुनाने लगे: "मैं तो मृत्यु-मुख से बाल-बाल बच गया हूँ। जाने को था डुमराँव और चला आया मुजफ्फपुर। यहाँ डा० नायरे ने इतनी सुन्दर चिकित्सा की कि मैं तो इतनी शक्ति अनुभव करता हूँ, मानो मेरा कायाकल्प हो गया हो। लोगों को आश्चर्य होगा, मेरी अंतड़ियों से ३० सेर से अधिक मल निकला है। मैं प्राकृतिक चिकित्सा का पहले से ही समर्थक था, अब तो और भी आस्था हो गई है।

स्वामीजी १३ मई को मुजफ्फरपुर पहुँचे थे और १४ तारीख से उनकी चिकित्सा आरंभ हुई। प्रथम सात दिनों तक केवल खीरे और तरबूजे के रस पर ही निर्भर रहकर एनिमा, मिट्टी और जल-चिकित्सा से पेट की सफाई शुरू हुई थी। सात दिनों के बाद उन्हें ताजा दही का मट्ठा आधा सेर, लौकी की तरकारी पाँच छटांक और आम का रस तीन छटांक के करीब दिन में तीन बार—सवेरे साढ़े छः बजे, दोपहर को बारह बजे और शाम को साढ़े छः बजे—दिए जाने लगे। इसी नियत भोजन पर वे अंत तक रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुजफ्फरपुर में स्वामीजी के लिए पढ़ने की अथवा कुछ यों भी काम करने की मनाही थी। अतः वे पड़े अथवा बैठे रहते थे। कभी उन्हें देखा कि वे रूस का 'न्यूटाइम्स' देख लिया करते थे। उनकी नित्य दैनिक परिचर्या इस प्रकार थी :—सवेरे चार बजे उठकर पानी पीकर मिट्टी की पट्टी पेट पर बीस मिनट तक रखना। तत्पश्चात् शौच जाना अथवा अनुभव न होने पर एनिमा लेकर शौच जाना। हाथ-मुँह धोकर घूमने के लिए निकल जाना। दो मील घूमकर आते थे तो दस मिनट तक उतान पड़े रहते थे और तत्पश्चात् देह की मालिश सरसों के तेल से प्रकृति-चिकित्सा के विधान के अनुसार की जाती थी। अतः गरम जल से स्नान करके जलचिकित्सा लेकर आधे घंटे तक कम्बल ओढ़कर लेट जाते थे। इस प्रकार साढ़े छः बजे दही और आम का रस लेते थे। दही के साथ-साथ डेढ़ चम्मच ईसफगोल की भूसी होती थी। अनंतर पुनः कोई आया, तो कुछ हल्की-फुलकी बातचीत करते रहे, अन्यथा यों पड़े रहे, या कभी कोई पेपर देख लिया। डाक्टर ने राजनीतिक चर्चा से दूर रहने को कहा था। किन्तु वे कहते थे कि क्या मेरे लिए यह संभव है? फिर भी वे अपने बताए नियमों का कड़ाई से पालन करते थे। मध्याह्न में ठीक बारह बजे दही, आम का रस और तरकारी लेते थे। तरकारी केवल जल में उबाली होती थी, जरा विश्राम के अनन्तर तीन बजे जल-चिकित्सा लेकर यदि समय ठीक रहा तो, उसी समय घूम आए, अन्यथा खाट पर पड़े रहे। पाँच बजे पुनः मिट्टी की पट्टी लेकर एनिमा लेते, शौच जाते, स्नान करते और तत्पश्चात् पुनः सायं काल मध्याह्नवाला ही भोजन लेते। फिर तलवे में तेल मालिश के बाद सो जाते या कभी जगे भी रहते। ठीक नौ बजे पुनः मिट्टी की पट्टी लेते और सो जाते। यही उनकी नित्य की प्रक्रिया थी। इसमें कोई परिवर्तन नहीं। घड़ी की सूई की तरह सब काम होता था।

स्वामीजी से मिलने-जुलने को बहुत से व्यक्ति आ ही जाया करते थे। एक दिन श्रीमहेश प्रसाद सिंह और श्री रत्नेश्वरी नंदन सिंह आए। उनलोगों से बातचीत के सिलसिले में स्वामीजी ने कहा कि आपलोग इस प्रकृति-चिकित्सागृह को आगे बढ़ावें और उन्नत करें। जबतक आप जैसे लोग इधर हाथ नहीं बटाते, तब- तक इसकी प्रगति संभव नहीं। उनलोगों ने इसे स्वीकार किया और दूसरे दिन आकर रत्नेश्वरी बाबू सारे नियमादि के ड्राफ्ट बनाकर दिखा भी गए। स्वामीजी उससे प्रसन्न हुए। उसी तरह कभी मनियारी के महंतजी भी आए, तो उनसे भी स्वामीजीने इसकी चर्चा की और वे भी इसकी सहायता पर उतारू हो गए। डा० शंकरन् की कार्य-कुशलता से स्वामीजी खूब प्रभावित थे। मुजफ्फरपुर में तीन व्यक्तियों की निष्काम सेवा सराहनीय थी—प्रथम थे पं० मुचुकुंद शर्मा; वकील; जो श्री स्वामीजी के लिए प्रत्येक आवश्यक वस्तु पहुँचाया करते थे, दूसरे थे मूकसेवी ग्राम-उद्योगसंघ के अधिकारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री बनारसी प्रसाद शर्मा, जो हर मौके पर सेवार्थ तत्पर रहते थे, और तीसरे व्यक्ति थे कन्हौली ग्राम के ही एक गरीब किसान जिनका नाम मैं अभी भूल रहा हूँ—ये अपने पास से रोज स्वामीजी के लिए एक कदुआ और एक सेर दूध दे जाया करते थे। स्वामी जी पूसा के लिए रवाना होने के ठीक एक दिन पहले किसान की झोपड़ी से भी हो आए। वहाँ पर भी उसके छोटे से पोते ने २ रु० उनके चरणों पर चढ़ा दिए। जबतक स्वामीजी प्रकृति-चिकित्सागृह में रहे, तबतक वहाँ के कर्मचारी तथा रोगी सब प्रसन्न थे और एक परिवार के सदस्य-जैसे रहते थे।

१० जून की रात विशेष कार्य से मैं पटने चला आया और स्वामीजी ११ जून के सवेरे ही हुंकार के प्रधान संपादक तथा संचालक पं० यमुना कार्यी के निमंत्रणानुसार देवपार, पूसा के लिए रवाना हुए। मैं तीन-चार दिनों के बाद फिर स्वामीजी के चरणों में उपस्थित हुआ। स्वामीजी की फिर वही शब्दावली थी कि मैं कह रहा था कि आज श्रुतिदेव अवश्य पहुँचेगा। प्रणाम करते ही उन्होंने पटने के समाचार पूछे। श्री सरस्वती मंदिर की बातें पूछीं तथा पं० विष्णुशर्मा चतुर्वेद का कुशल पूछा। चूँकि मैं विहटा आश्रम भी गया था और उनकी चादरें ले आया था, अतः आश्रम का हाल-समाचार भी पूछने लगे। स्वामीजी की एक काली गाय, जो डेढ़ वर्ष से लगातार करीब दो-दो सेर दोनों शाम दूध देती है, उसे पूछना कभी नहीं भूले।

१७ जून को ब्रह्मचारीजी स्वामीजी की चिट्ठी लेकर मुजफ्फरपुर डा० शंकरन के पास गए। यहाँ से अपनी सारी हालत स्वामीजी ने चिट्ठी में लिख दी थी। इस समय वे स्वस्थ तथा पूर्ण प्रसन्न थे। एनिमा लेना छोड़ दिया, अन्न खाना चाहते थे, टहलने के लिए समय और दूरी दोनों की वृद्धि करना चाहते थे, दाँत बनवाने का भी प्रश्न था। ये ही बातें लिखी गई थीं, और परामर्श माँगा गया था। दूसरे दिन डाक्टर साहब स्वयं आए; उन्होंने अच्छी तरह देख-रेख की, और उन्हें पूर्ण स्वस्थ पाया। स्वामीजी का वजन भी लिया। उनका वजन ११७½ पौंड था और शक्ति १२६ पौंड। मुजफ्फरपुर में स्वामीजी ११६ पौंड थे।

डा० नायर शाम को स्वामीजी के लिए अनेक प्रकार की भोजन-सामग्री नोट कराकर चले गये।

पं० हरिवल्लभ मिश्र ने आकर स्वामीजी से अपने गाँव बघनगरी ले चलने का निवेदन किया और स्वामीजी भी कहीं अन्यत्र जाना चाहते थे। उन्हें जीवन की एकरूपता और एकरसता नहीं भाती थी। वे कहते थे कि मैं तो इस तरह होस्पिटल के रोगी की भाँति बँधा-बँधा ऊब गया हूँ। मैं अवश्य बघनगरी चलूँगा, किन्तु कार्यीजी को आने दो। उस समय कार्यीजी पटना गये हुए थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यद्यपि स्वामीजी के खाने-पीने आदि की पूरी चिन्ता रहती थी, उनकी लड़कियाँ तथा छोटे-छोटे बच्चे सदा इनकी सेवा के लिए प्रस्तुत रहते थे। मैंने देखा कि अन्तःपुर में रहकर भी श्रीमती कार्यीजी प्रबन्ध में अति कुशल हैं। कभी किसी वस्तु की कमी नहीं हुई। यदि किसी चीज की भनक उन्हें लगी तो वे फौरन ही अपने छोटे से आठ-नौ वर्ष के बच्चों—उमेश और महेश—को भी मूसलधार वर्षा में भी भेजने से नहीं हिचकती थी। एक दिन की बात है कि दिन-रात खूब वर्षा हो रही थी। सवेरे के लिए लौकी नहीं थी, किन्तु वहाँ से जवाब मिला कि नहीं है। श्रीमती कार्यीजी ने तुरन्त दो-तीन नौकर इधर-उधर भेजे और अन्त में अपने दोनों छोटे बच्चों को भी भेज दिया। अन्त में लौकी आकर ही रही। स्वामीजी ने एक दिन कार्यीजी से कहा—"कार्यीजी, ये बच्चे आपके बड़े होनहार हैं। इनमें कार्य-कुशलता तथा सेवा-वृत्ति है। आपका बड़ा लड़का महेश विद्वान होगा, मध्यम उमेश किसान होगा और छोटा अखिलेश (जो साढ़े चार वर्ष का है) भक्त बनेगा"। यह श्री स्वामीजी के हृदय का आर्शीवाद था, जो अवश्य फलीभूत होगा—ऋषीणां पुनराद्यानां वाचमर्थोनुधावति।

कार्यीजी के घर हम पार्श्ववर्तियों के भी स्वागत-सत्कार में कोई कमी नहीं होती थी। सब वस्तुएँ समय पर उपस्थित रहती थीं। मुझे स्मरण है कि एक दिन अत्यंत व्यस्त रहने के कारण बना-बनाया जलपान मेरे पास नहीं पहुँच सका। बाद में गृहिणी को पता लगा। अब तो उन्हें हार्दिक कष्ट हुआ। लड़के से क्षमारूप में संवाद भिजवाया, कार्य-कर्त्ताओं से भेजवाया और अन्त में स्वयं कार्यीजी से भी संवाद मिला कि गलती हुई, अब-जब कभी आपके पास जलपान न आवे, आप लड़कों से मँगा लिया करें। यही कारण है कि स्वामीजी प्रबन्ध-कुशलता तथा परिवार भर की भक्ति देखकर अत्यन्त प्रसन्न थे। कार्यीजी ने हर साल दो महीने विश्राम के लिए कह रखा था, किन्तु कौन जानता था यह अन्तिम विश्राम है और ये आशीर्वाद अन्तिम ही हैं।

१८ जून को श्री स्वामीजी ने मेरा लिखा झंझावातम्, संस्कृत का खंड-काव्य सुना। अगस्त क्रांति की स्मृति में लिखा गया यह काव्य अमृतसर में १९४३ ई० के ९ अगस्त को पूरा हुआ था। इसे सुनकर स्वामीजी बहुत प्रसन्न हुए। उस दिन पहला अध्याय समाप्त हुआ। उत्कंठा बढ़ने पर उन्होंने स्वयं लेकर देखा। पुनः २४ तथा २५ को भी तीसरे अध्याय के क्रमशः सारे श्लोक सुने। सुनकर अत्यंत प्रसन्न थे। २५ जून की शाम को भी ये बातें उन्होंने की, जबकि आश्रम में पड़े हुए मेरे कुछ सामान के देने की बातें कर रहे थे। चूँकि २६ को मैं पटने आने-वाला था, अतएव ये हो रही थीं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी के मुख से दो-तीन दिन पहले निम्नलिखित श्लोक बार-बार सुनने को मिला—'नीर-क्षीर-विवेके हंसालस्यं त्वमेव कुरुषेचेत् विश्वस्मिन्नधुनान्याः कुलव्रतं पालयिस्यति कः ।' स्वामीजी के मुख से कोई बात यों ही नहीं निकलती थी, उसमें कोई न कोई गूढ़ार्थ छिपा रहता था और जिससे कि उनका अपना खास मतलब रहता था। बिहटा आश्रम के १३ अप्रिल, १९४८ ई० को पुनः उद्घाटित होने पर आश्रम में रहते हुए प्रायः कहा करते थे—'चमन को दिल से बागवाँ यह दुआ देता है, मैं रहूं या न रहूं, यह चमन आबाद रहे।'

एक दिन उन्होंने स्वयं कहा कि "सुना है, तुम सरस्वती मंदिर के लिए पटने में जमीन चाहते हो ?" मैंने कहा—'जी हाँ'। तब उन्होने चार प्लाटें बतलाईं कि खास महाल की हैं, कानूनगो का निर्देश करके उससे नम्बर लेकर दरखास्त देने को कहा और कहा कि सार्वजनिक संस्था के लिए तो अवश्य मिल जायगी। तुम प्रयत्न करो, मैं भी कह दे सकता हूँ। राजनीति, समाज, साहित्य आदि के सम्बन्ध में भी तरह-तरह की बातें होती रहीं। इसी दिन पं० यदुनन्दन शर्मा का स्मरण करते हुए उन्होंने कहा—"देखो, अभी तक वे नहीं आये। कई एक बार संवाद भिजवाए। पता नहीं, कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं।"

तीन दिन पहले से मेरी बाँई आंख फड़कने लगी। पहले दिन मैंने स्वामीजी से कहा, तो उन्होंने कहा कि कोई अनिष्ट होगा। मैंने कहा कि पता नहीं, क्या अनिष्ट होगा। दूसरे दिन पुनः मैं उनकी देह की मालिश कर रहा था, तो आँख फड़कने लगी। उन्होंने पूछा कि क्या आज भी फड़कती है ? मैंने कहा—जी हाँ, पुनः इसी तरह २६ के सवेरे भी पूछा और मैंने कहा—जी हाँ। आज भी फड़कती है। उन्होंने यही उत्तर दिया। मुझे इस फड़कने का अर्थ नहीं लग रहा था। मैंने समझा था कि पटने में कोई बड़ा अनिष्ट हो। किन्तु, क्या पता था कि मेरी आँखों के नीचे ही इतना बड़ा अनिष्ट होने जा रहा है। काश, मैं भविष्यदर्शी होता !

२६ जून का वह मनहूस प्रातःकाल। क्या पता था कि आज जो सूर्योदय के बाद रात्रि आयेगी, वह महाकाल रात्रि होगी। किसानों का सूर्य, जनता का नायक आज अन्तिम क्रिया करके सर्वदा के लिए सो जाएगा !

हाँ, तो आज स्वामीजी सवा तीन बजे ही उठे, मेरी भी नींद खुली, उठते ही हाथ-मुँह धोकर नींबू का एक गिलास जल पी लिया। फिर चले गए शौचार्थ। पुनः मिट्टी की पट्टी ली, किन्तु आज उनका पेट साफ नहीं था। अतः वे एनिमा लेकर पुनः शौच गये। फिर भी सफाई नहीं हुई और वायु-विकार बना ही रहा। वे घूमकर आये, तो मैं मालिश करने लगा। आज जब पेट की मालिश कर रहा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था; तो उन्हें दर्द का अनुभव हुआ, इसी तरह पीठ में मालिश करने पर भी। तब उन्होंने मालिश छोड़ देने को कहा। तत्पश्चात् नहाकर जल-चिकित्सा करके आकर लेट गये। उन्होंने सवेरे का आम का रस और दूध नहीं लिया। थोड़ी देर में पटने से ब्रह्मचारीजी आये। उन्हें पहले ही पता लगा था कि पत्रों में किसी पार्टी में उनके सम्मिलित होने का समाचार छपा था। उसके लिए उन्होंने अपना एक वक्तव्य भी कार्यीजी से लिखवाया था। वे स्वयं डिक्टेट कराते जाते थे। उनका अभिप्राय था, वे किसी भी पार्टी में सम्मिलित नहीं हुए। यही बात उन्होंने ब्रह्मचारीजी के आने पर भी कही। तत्पश्चात् जाने को तैयार हुए। आज उन्हें दांत बनवाने के लिए मुजफ्फरपुर जाना था और पहले का प्रोग्राम था कि उधर से ही बघनगरी भी जाएँगे। किन्तु मौसम की खराबी के कारण बघनगरी जाना स्थगित हो गया था। खन्ना साहब मोटर लेकर आए, कार्यीजी के साथ वे तैयार हो गए। मेरा कार्यक्रम भी साथ ही चलने को था; किन्तु ऐन मौके पर चलते समय स्वामीजी ने कहा—'श्रुतिदेव, तुम यहीं रहो। पता नहीं, तबीयत कैसी हो जाए। १२ बजे तक लौट आऊँगा।' मैं तो रुक गया, किन्तु हमारे स्वामीजी नहीं लौटे। सदा के लिए चले गये। मुजफ्फरपुर जाते हुए रास्ते में ही उन्हें मोटर की यात्रा ने परिश्रान्त कर दिया। उनकी दुर्बलता बढ़ गई और तापमान भी ९९ हो गया। श्री कार्यीजी ने तथा श्री खन्ना ने भी वहाँ जाने से मना किया था, किन्तु उन्होंने किसी की नहीं सुनी— 'हरीच्छा बलीयसी।' उस दिन ३ बजे तक तापमान बढ़ती पर था। दो बजकर बीस मिनट पर कार्यीजी को राँची जाने की अनुमति दी। तीन बजे के बाद ही तापमान घटने लगा और रक्तचाप बढ़ने लगा। तब व्याकुलता हुई। डाक्टर आए, सिविल सर्जन आए और ? और, तबतक डाक्टरों के कथनानुसार पक्षाघात हो गया था।

हमें पूसा में साढ़े चार बजे चिट्ठी मिली कि स्वामीजी को बुखार हो गया है, आपलोग आ जाएँ। हम लोग किसी तरह भींगते-भींगते वैनी स्टेशन आये; साढ़े आठ बजे की गाड़ी से मुजफ्फरपुर पहुँचे। श्री स्वामीजी की जीभ बन्द थी। डा० नायरे और पं० मुचुकुन्द शर्मा उदास बैठे थे। उनका कहना था कि अच्छा हुआ, आ गये, अन्यथा दर्शन भी दुर्लभ थे। हम तो काठ हो गये। हमें क्या पता था कि इतनी दूर तक नौबत आ गई। हम देखने गए। देखा, मुख पर शान्ति विराज रही है। दोनों हाथ छाती पर हैं। कभी-कभी हाथ को मुँह तक ले जाते और पुनः अपनी जगह पर रख देते। मुझे तो मालूम पड़ा कि स्वामीजी ध्यानस्थ हैं, किसी गहरी विचारणा में पड़े हुए हैं। वे बेहोश कभी न हुए। अन्त तक होश था। जब कभी उन्हें आवश्यकता होती, वे उठो-उठो कहते और उठाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

का संकेत करते। वह भी मैं समझता हूँ कि संभवतः समाधि-रूप में बैठने के लिए ही संकेत था, पर हम उसे नहीं समझ सके। हम स्वामीजी से अन्तिम बार कुछ पूछ नहीं सके, क्योंकि मेरे सामने यह पहली मृत्यु थी, मेरे मस्तिष्क में कुछ आया ही नहीं कि क्या किया जाय। मैं तो किंकर्तव्य-विमूढ़ था। अन्त तक मुझे बना रहा कि जो अभी दाँत बनवाने आये थे और जो अभी ६० वर्ष जीने की घोषणा करते थे, वह कैसे मरेंगे ? क्या वह हमलोगों को बहलाकर धोखा देते थे ? वस्तुतः धोखा ही तो था। उनकी कोई इच्छा नहीं थी, कोई व्याकुलता नहीं थी, मस्तक पर शिकन न थी। पौने दो बजे एक बार मुँह बन्द किया और धीरे-धीरे श्वास ऊपर चढ़ाया और प्राण ब्रह्मरंध्र से बाहर हो गये। हम देखते रह गये। डाक्टर ने कहा—इतिश्री। मैंने कहा—अभी नहीं, किन्तु ? वह तो चले गये और सर्वदा के लिए चले गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी की याद में

— गंगाधर दास

स्वामी सहजानन्द सरस्वती से अलग हुए तीस वर्ष हो गये। भारत गणतंत्र के जीवन की यही आयु भी है। इस अवधि में हम न सिर्फ अपने राष्ट्र के उत्थान और विकास के आन्दोलनों में जूझते रहे हैं, बल्कि स्वाधीनता-प्राप्ति के पहले के नेताओं की कला-कृतियों, रचनाओं, एवं राष्ट्रीय संग्राम में उनकी देन के पन्ने भी उलटते रहे हैं।

स्वामीजी उस युग के मनीषी थे जब राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम उत्ताल तरंग पर था। इसकी दिशा विजय की ओर मुड़ चुकी थी और विशेष तौर से तीन दशकों के झकोरे खाते हुए राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष १९४७ में विजय की मंजिल पर पहुँच गया। यही दौर था जब स्वामी सहजानंद के किसान संघर्ष भी अपने सुनहरे पृष्ठ बना रहे थे और स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद, गणतंत्र दिवस की घोषणा के कुछ ही दिन बाद और गणतंत्र की घोषणा के साल ही अपनी कृतियों को संजोने का उत्तरदायित्व अपने बाद की पीढ़ी पर देकर वे चले गये।

महात्मा गाँधी यदि राष्ट्रीय संग्राम के समग्र नेता थे तो स्वामीजी कृषि प्रधान देश के शोषित-पीड़ित, अंग्रेजी राज और सामंतशाही से प्रताड़ित किसान समुदाय के पथ-प्रदर्शक, किसान आन्दोलन के शीर्ष नेता, किसानों के प्राण माने जाते थे।

स्वामीजी को जिन दृष्टियों से देखना समीचीन होगा वे हैं :—स्वामीजी अंग्रेजी राज का खात्मा चाहते थे, स्वामीजी किसान आन्दोलन के प्रणेता थे, स्वामीजी सामंतवाद के खिलाफ थे; जमींदारी प्रथा का खात्मा चाहते थे, और भारत में किसानों का राज कायम करना चाहते थे।

अँग्रेजों ने १७९३ में दमामी बंदोबस्ती चिरस्थायी प्रबन्ध कानून लागू किया था। इस कानून ने हिन्दुस्तान में अंग्रेजी राज का नया पाया कायम कर दिया। इसी कानून का सहारा लेकर जमींदार किसानों का मनमाना शोषण-दोहन किया करते थे। जमींदारों का अपना इलाका होता था और उस इलाके में वे जैसा चाहते किसानों को लूटते-खसोटते थे। शायद ही कोई साल गुजरता जब कोई-न-कोई नया कर किसानों पर लाद न दिया जाता। उसके लिए न असेम्बली या पार्लियामेंट में विधेयक पारित कराने की जरूरत पड़ती और न लाट साहब के आर्डिनेंस की। जमींदारों के कानूनदाँ की सलाह पर उनके मनेजर साहब का हुक्मनामा जारी हो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जाता। चिरस्थायी प्रबंध वाले इलाकों में जारी कानूनों की सूची तैयार की जाय तो वह मोटी पोथी बन जा सकती है।

हिन्दुस्तान के निवासियों को इस बात के लिए कोसा नहीं जा सकता कि वे अँग्रेजी राज और जमींदारी जुल्म को बर्दाश्त कर लेते थे। उनका आक्रोश विभिन्न रूपों में फूटता रहा। कभी वह भील विद्रोह के रूप में फूटा तो कभी आदिवासियों का मोर्चा लगा (१८२०-२१), कभी वह मैसूर के रैयतों का विद्रोह (१९३०) कहलाया तो कभी संथाल विद्रोह (१८५५-५६)। उसी क्रम में महाराष्ट्र के किसानों का मोर्चा लगा (१८७५) तो बिरसा विद्रोह (१८९९-१९००) ने अँग्रेजी राज के खिलाफ संघर्ष का इतिहास बनाया। उन्नीसवीं सदी के उपर्युक्त चंद संघर्ष किसानों की मनोदशा और संघर्षशीलता के परिचायक हैं। बीसवीं सदी में जब स्वामीजी जैसे नेता किसानों के रहनुमा बने तो किसान आन्दोलन की पृष्ठभूमि कोई कम उजागर नहीं थी।

चम्पारण का महात्मा गाँधी के नेतृत्व वाला साठी संघर्ष बकाश्त आन्दोलन से पुराना और बीसवीं सदी के प्रारंभ का बिहार में अनोखा किसान संघर्ष है। यही कारण था कि १९२०-२१ या १९३०-३१ के गाँधी जी के नेतृत्व वाले आजादी के संघर्षों में किसानों का प्रचुर योगदान हुआ था। अँग्रेजी राज के अत्याचार को लोग बखूबी जमींदारी शोषण के रूप में देखते थे। उनके सामने कोई गोरा साहब हो या न हो, जमींदार साहब उनके खाँटी प्रतीक के रूप में मौजूद थे।

इसी संदर्भ में बिहार में १९२९ में किसान आंदोलन को संगठित रूप प्राप्त हुआ। बिहार किसान सभा की स्थापना हुई। अ० भा० किसान सभा की स्थापना बाद को १९३६ में हुई। स्वामी सहजानन्द सरस्वती किसान सभा के अध्यक्ष ही नहीं, मान्यताप्राप्त नेता बन गये। बिहार में किसान आन्दोलन के उनके सहकर्मियों में महामहोपाध्याय राहुल सांकृत्यायन, पं० कार्यानन्द शर्मा, जैसे उद्भट योद्धा थे। बकाश्त की लड़ाई बिहार के किसानों का इतिहास-प्रसिद्ध संघर्ष है। चानन, बड़हिया-टाल, हुसेनगंज, अमवारी रेवड़ा, मझियावाँ, गरज कि सारे बिहार में बकाश्त संघर्ष की लपट फैल गयी। स्वामीजी भले ही सब जगह सदेह उपस्थित न हों, कहलाता था वह स्वामीजी का संघर्ष ही।

१९३५ का चुनाव राष्ट्रीय आन्दोलन तथा किसान-जमींदार संघर्ष का एक हिस्सा इसलिए बन गया कि राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रत्याशी किसानों के प्रत्याशी के रूप में माने जाने लगे और अँग्रेजी राज के आशीर्वादप्राप्त अधिकांश प्रत्याशी जमींदार अथवा जमींदारों के फर्माबरदार थे। दरभंगा जिले में लग रहा एक नारा याद है—"हरियर बकस सुगा पंख सन छुरा पिजा रांज रखने छऽ हो बंधु. भाई"।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नारा मैथिली में है। अर्थ है—'हरे रंग का बक्सा सुग्गे के पंख जैसा है और राज दरभंगा छुरा पिजा कर रखे हुआ है।' अर्थात् किसानों के सुग्गे को कत्ल करने के लिए राज अपना छुरा चमका रहा है। यह बकाश्त लड़ाई का दौर था और इस रूप में राष्ट्रीय आन्दोलन और किसान आन्दोलन दोनों एक साथ हो गये।

अ० भा० किसान सभा की स्थापना के बाद ही उसके जो उद्देश्य निर्धारित हुए उसमें बिना मुआवजा जमींदारी प्रथा का खात्मा सर्वप्रमुख बन गया।

कम्युनिस्ट लोग स्वामीजी के किसान आन्दोलन के दृढ़ समर्थक थे। स्वामीजी सोवियत संघ के रूप में किसानों का असली राज मानते थे। और यह भी समझते थे कि इस समाजवादी व्यवस्था को लाने वाले कम्युनिस्ट हैं। किसान आन्दोलन और किसान सभा के संगठन के कार्यों में कम्युनिस्ट और गैर-कम्युनिस्ट किसान समार्थी दोनों साथ-साथ काम करते थे। साप्ताहिक 'हुँकार' इस तरह के संयुक्त और संगठित कार्य का अच्छा मंच बना। स्वामीजी का यह पत्र था, उनके अनन्य सहयोगी यमुना कार्यी के प्रेस से इसका प्रकाशन होता था और इसमें काम करने वाले थे राहुल सांकृत्यायन, इन्द्रदीप सिंह, अली अशरफ, रामदयाल पांडे आदि।

'क्रांति और संयुक्त मोर्चा' नामक पुस्तक में स्वामीजी ने लेनिन की रचनाओं के जितने उद्धरण लिये हैं वे मुख्यतः किसानों की समस्याएँ, किसान आन्दोलन और इस आन्दोलन में व्यापक संयुक्त मोर्चे से सम्बन्ध रखते हैं। स्वामीजी सोवियत संघ के साथ-साथ अन्य देशों के किसान आंदोलन का भी अध्ययन करते और अपनी रचनाओं में बताते कि अमुक देश के किसानों की समस्याएँ क्या हैं, कैसे उनसे त्राण पाने के लिए उन्होंने अपना आंदोलन चलाया। इस कार्य में राहुलजी अच्छे मित्र और सहकर्मी थे—जेल के बाहर और जेल के भीतर भी।

इसी दौर में १९४१ के २६ जून को जर्मनी के तानाशाह हिटलर ने समाजवादी देश सोवियत संघ पर हमला कर दिया। उस समय किसान-मजदूरों का एक मात्र अपना समाजवादी व्यवस्था का देश सोवियत संघ खतरे में पड़ गया। साम्राज्यवाद की गुलामी से मुक्ति पाने के संघर्ष में जूझने वाले हर देश के जनगण के लिए चिन्ता का विषय था कि एक देश जो सामन्ती पूँजीवादी शोषण से मुक्त हो चुका है, जहाँ किसान-मजदूरों का अपने राज का सपना साकार हो चुका है; उसे क्या तानाशाही के हवाले कर दिया जायगा? 'लोकयुद्ध' (पीपुल्स वार) की घोषणा में इसी का सबल और सशक्त जवाब था। प्रगतिशील, देशभक्ति और भावना से प्रेरित लोगों का संकल्प था एकमात्र समाजवादी देश को यदि फिर गुलामी के जंजीरों से जकड़ दिया गया तो अन्य गुलाम देशों की आजादी भी सशंकित हो जायगी। सोवियत समाजवादी व्यवस्था ने किसान-मजदूरों में जो

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सुनिश्चित सुनहरे भविष्य का विश्वास जगाया था वह हिल जायगा। स्वामी जी समाजवादी व्यवस्था के देश को बचाना चाहते थे। किन्तु 'पीपुल्स वार' का नारा उन्हें पसन्द नहीं था। वह इस बारे में अपने देश की आजादी की लड़ाई का कमजोर होना मानते थे। इस सवाल पर कम्युनिस्टों और स्वामी जी के बीच कुछ मनमुटाव अवश्य पैदा हुआ।

१९४३ में बिहार किसान सभा का दसवाँ अधिवेशन सोनपुर (सारण) में आयोजित था। सुबह-सुबह जब स्वामी जी देश के सबसे बड़े प्लाटफारम वाले स्टेशन सोनपुर में उतरे तो उनका भव्य स्वागत हुआ। पश्चिम की ओर स्टेशन से बाहर जाने वाले तहखाना वाले रास्ते के दोनों ओर वालंटियर लाल झंडों के मेहराब बनाये स्वामी जी का स्वागत कर रहे थे। जैसे-जैसे छोटे कद के ये संन्यासी आगे बढ़ते जाते दोनों ओर से दो झंडे मिलकर उनका अभिनंदन करते। उनके पीछे-पीछे चलता हुआ सड़क पर आकर मैंने स्वामी जी की एक टिप्पणी सुनी, यह सब कम्युनिस्टों का शो है। बातों का खुलासा कुछ और हुआ जब भोजन के समय उनकी सेवा में संलग्न मुझे सुनने को मिला—"कहाँ है स्वागत मन्त्री? कहाँ हैं बच्चन और शर्माजी (शिवबचन सिंह और कार्यानन्द शर्मा)? इनलोगों से दूध भी नहीं जुट पाया, दही और केला लाकर रख दिया"। स्वभाव का परिचय पाकर मैं संयमित और शांतभाव से सेवा में जुटा रहा। एक और दृश्य उपस्थित हुआ जब आम सभा में पन्नी वाली माला पहनायी गयी और स्वागत गान में 'परिछावन' शब्द का प्रयोग हुआ। जैसे तमतमाकर उन्होंने कहा—"यह बारात के दुलहे का स्वागत है क्या?........" तब भी मैं संन्यासी के गुस्सावर स्वभाव को ही परखता रहा। भाषण की तह में कोई गहरी राजनीति हो सकती है, इस पर गौर नहीं किया।

दूसरे साल १९४४ में बिहार किसान सभा का ११वाँ अधिवेशन लखीसराय (मुंगेर) में आयोजित था। कम्युनिस्टों के साथ मनमुटाव का एक दूसरा उदाहरण यहीं मिला। स्वामी जी किसान सभा के किसी भी नेता या कार्यकर्त्ता का बगैर उनकी अनुमति के स्थानांतरण नहीं चाहते थे। जीवेन्द्र ब्रह्मचारी सोनपुर में किसान सभा के नेता थे। वहाँ से वह हजारीबाग जिले में किसान सभा का संगठन करने गये थे। लखीसराय सम्मेलन में ब्रह्मचारी जी हजारीबाग जिले के प्रतिनिधियों को लेकर आये थे।

पहले-पहल उसी जिले में किसान सभा का संगठन बना था। इधर स्वामी जी नाराज थे कि कम्युनिस्ट पार्टी के लोगों ने बिना उनसे अनुमति लिये ब्रह्मचारी जी को सोनपुर क्षेत्र से हजारीबाग भेज दिया था। तमाम नेताओं के आरजू-मिन्नत

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

करने के बाद भी स्वामी जी ने उन्हें प्रतिनिधि की मान्यता नहीं दी। तर्क था कि समय पर सदस्यता शुल्क नहीं प्राप्त हो सका था। आखिर वे प्रतिनिधि दर्शक दीर्घा में बैठे। पहले-पहल ऐसे समारोह में भाग लेना ही उनके लिए संतोष का विषय था। एक दूसरी घटना घटी। खुले अधिवेशन में मंच पर नेता और मैदान में प्रतिनिधि, दर्शक सब जुटे थे। सरदार पृथ्वी सिंह आजाद भी मंच पर थे। स्वामी जी की नजर ऊपर झंडे पर गयी और वह तड़प उठे। "क्या हो रहा है? यह कम्युनिस्टों का सम्मेलन है या किसान सभा? मैं यहां नहीं बैठता"। वह नीचे उतर गये। देखा गया कि जो झंडा फहरा रहा था उसमें हँसिया-हथौड़ा के साथ पचकोरा तारा भी अंकित था। उस समय तक कम्युनिस्ट पार्टी का झंडा कहीं सितारे के साथ, कहीं केवल हँसिया-हथौड़ा वाला होता था। किसान सभा का झंडा केवल हँसिया-हथौड़ा वाला था। (आज किसान सभा का झंडा केवल हँसिया वाला है।) सरदार पृथ्वी सिंह आए और कार्यानन्द शर्मा ने स्वामी जी को समझाया कि गलती हो गयी है। आदर के साथ उस झंडे को उतारा गया। किसान सभा का झंडा फहराया गया और तब स्वामी जी कुछ शांत हुए।

स्वामी जी जहाँ भी जाते अपने सहयोगियों, सहकर्मियों से उस इलाके के जमींदार का नाम और करनी जान लेते। फिर भाषण के क्रम में उसके शोषण और जुल्म का तीखे शब्दों में बखिया उधेड़ कर रख देते। जमींदार बौखला कर पुलिस का संरक्षण माँगने दौड़ पड़ता तो किसानों का डर भागता। वे निर्भीक होकर आन्दोलन के मैदान में उतरने को तैयार हो जाते।

स्वामी जी के व्यक्तित्व को कुछ और गहरे से देखना चाहिए। तत्कालीन शाहाबाद जिले में (आज इसके दो जिले बन गये हैं—भोजपुर और रोहतास) एक गाँव है साती सिमरी। अभी भी स्वामीजी की गूंज इस गाँव में सुनायी पड़ती है। १९५३-५४ के आसपास श्री रामसुभग पांडे इस क्षेत्र में स्वामीजी के बाद दूसरे नम्बर के ही नेता थे। स्वामी जी का तबतक देहांत हो चुका था। पांडेजी स्वामी जी की सीख दुहराते थे। किसानों के सवाल को लेकर कम्युनिस्ट या कोई भी आन्दोलन करे उसका साथ अवश्य देना चाहिए। उन्होंने कई जगहों पर जाकर दिखलाया कि स्वामी जी ने उस गाँव में कैसे किसान सभा बनायी, कैसे जीवन बिताया। वहाँ एक बगीचे में बरे कुंज और उसके घेरे में एक मांद दिखायी पड़ा। कभी स्वामी जी वहाँ जमीन के नीचे बैठकर अध्ययन किया करते थे। तपस्वियों के बारे में बहुत कुछ पढ़ा-सुना किन्तु यहाँ एक से साक्षात्कार हुआ। स्वामी जी का डुमरांव थाने में एक दूसरा केन्द्र था ढकाइच। राघो दूबे इस गाँव में, इलाके में स्वामी जी का दाहिने हाथ थे। अभी भी इस गाँव में स्वामी जी का स्मारक किसान आन्दोलन का प्रतीक बना है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामीजी अपने वचन के इतने पक्के थे कि एक बार तय कर लेने पर उसको नहीं निभाना उनके लिए मौत का सामना करना जैसा लगता। शाहाबाद जिले का ही धनसोई गांव किसान आन्दोलन का एक केन्द्र था। स्वामी जी को बक्सर से इटाढ़ी होते इस गांव में आयोजित एक सभा में भाषण करना था। इटाढ़ी से एक टमटम पर चले। जल्दी थी। घोड़े पर चाबुक पड़ी तो वह उछल पड़ा। स्वामी जी गिर पड़े, कंकरीट पर उनकी देह छिल गयी, काफी चोटें आईं। साथियों ने सलाह दी कि पहले अस्पताल चलकर मरहम पट्टी कर लें। "नहीं", स्वामी जी ने कहा, "मेरी लाश भी हो तो पहले धनसाई की सभा में पहुँचा दो। लोग इंतजार कर रहे होंगे।" कुछ देर जरूर हो गयी किन्तु लोगों ने जैसे-तैसे उन्हें पहुँचाया। सभा में वह बोल नहीं सके। दर्शकों को बताया गया कि क्या हालत है।

स्वामी जी का सीताराम आश्रम लगभग अखिल भारतीय किसान सभा का केन्द्र था। १९४५-४६ का साल था। स्वामी जी को अखिल भारतीय किसान सम्मेलन के अधिवेशन में जाना था। शक था कि वह जायगे। श्री निवास गणेश सरदेसाई का एक पत्र लेकर मैं बिहटा सीताराम आश्रम में गया। छोटे-से बरामदे पर रखी एक चौकी पर स्वामी जी बैठे थे। पत्र मिला, रख दिया। न कोई जवाब; न चेहरे पर कोई प्रतिक्रिया। खड़ा-खड़ा मैं देखता रहा। वहीं बगल में सुमन जी (अवध बिहारी सुमन) संन्यासी के दंड पर कुश-रज्जु चढ़ा रहे थे। एक-दो बार डांट पड़ी कि देर क्यों हो रही है। डांट का फल उल्टा पड़ता, सुमन जी तिल-मिला उठते। दंड हाथ से गिरते-गिरते बचता। बहरहाल, दंड तैयार हुआ, नीम के दतवनों की पुल्ली बनकर आ गयी। फिर एक टमटम पर सभी सामान रखे गये। स्वामी जी उसपर सवार हो गये। दो-तीन और उनके साथ चल दिये। मगर मुझे जवाब नहीं मिला। जो लोग वहां बचे उनलोगों से पूछताछ की कि आखिर स्वामी जी कहां जा रहे हैं तो पता चला कि वह अ० भा० किसान सम्मेलन में जा रहे हैं। जवाब इस रूप में मिला। श्री निवास गणेश सरदेसाई इसी की प्रतीक्षा में पटने में बैठे थे।

उपर्युक्त सम्मेलन के बाद कम्युनिस्ट पार्टी से कुछ-कुछ उनकी अनबन चलती रही। फिर उनके गैर कम्युनिस्ट किसान नेताओं से यही पता चलता रहा कि स्वामी जी किसान आन्दोलन में कोई दुराव करना नहीं चाहते किन्तु किसान सभा को राजनीतिक दल भी बनाना नहीं चाहते। १९४७ में स्वाधीनता-प्राप्ति के बाद एक नया वातावरण बना और १९४८ के प्रारंभ में स्वामी जी और कम्युनिस्ट पार्टी के नेताओं के प्रयास से पटने में एक ऐसी बैठक बुलायी गयी जिसमें २२ दलों

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के नेता शामिल थे। संयुक्त आंदोलन का नये सिरे से श्रीगणेश होने वाला था। इसी बीच भारत सरकार भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी पर बरस पड़ी।

१९४८ में प० बंगाल और हैदराबाद में कम्युनिस्ट पार्टी गैर कानूनी घोषित कर दी गयी। बाकी क्षेत्रों में प्रतिबंध न होने पर भी खुले रूप में पार्टी का कोई काम नहीं हो सकता था। बिहार में चाहे कम्युनिस्ट पार्टी का दफ्तर हो अथवा जन-संगठन का, सब पर छापामारी हुई। बहुत से नेता गिरफ्तार हो गये। नेतृत्व को फरारी जीवन बिताने को बाध्य होना पड़ा। यह १९४८-१९५० तक चला। इसी बीच १९५० में स्वामी जी बीमार पड़ गये। मुजफ्फरपुर में उनका इलाज चल रहा था। इधर कार्यानन्द शर्मा पर ५ हजार का इनाम घोषित हो चुका था। वह पुलिस की आंखों से बचकर काम कर रहे थे। स्वामी जी का संदेश लेकर पं० यदुनन्दन शर्मा कार्यानन्द शर्मा से मिलने कई जगह गये। पता चलने पर दोनों की भेंट हुई। संयोग से कार्यानन्द शर्मा के साथ मैं भी था। स्वामी जी की बीमारी का हाल सुनकर शर्मा जी ने सलाह दी कि उन्हें किसी तरह पटना जनरल अस्पताल में लाकर इलाज कराया जाय। यदुनन्दन शर्मा ने बताया कि स्वामी जी कार्यानंद शर्मा से मिलना चाहते हैं। उन्होंने खुद को (यदुनन्दन शर्मा को) स्वामी जी से मिली सीख भी बतायी, स्वामीजी कह रहे थे कि "कम्युनिस्टों से मिल कर काम करो, बिगाड़ पैदा न करो। कम्युनिस्ट लोग दिन-रात चींटी की तरह बिन-बिन कर काम करते रहते हैं। अपने सिद्धांत के प्रति निष्ठावान और काम के प्रति हमेशा सचेत और सक्रिय रहते हैं।" शर्मा जी की दोनों आँखें सजल हो गयीं। स्वामी जी और कार्यानन्द शर्मा की वह भेंट नहीं हो सकी। स्वामी जी पटना जनरल अस्पताल नहीं आये। शर्माजी मुजफ्फरपुर जा नहीं सके। कुछ दिनों बाद ही स्वामी जी के निधन की सूचना मिली। हमलोगों ने उनकी पवित्र याद में श्रद्धांजलि अर्पित की।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रांति और संयुक्त मोर्चा

—सुरेन्द्र चौधरी

"क्रांति और संयुक्त मोर्चा" भारतीय किसानों और जनगण के एक क्रांतिकारी नेता की रचना होने के कारण कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। यह पुस्तक क्रांतिकारी प्रक्रिया की तेजी और उसके संदर्भ में, क्रांतिकारी शक्तियों की एकता की आवश्यकता पर बल देनेवाली चिन्तन-धारा का एक अनिवार्य परिणाम है। सन् १९४१ ई० में लिखी गई यह पुस्तक यद्यपि आज़ से लगभग ४० वर्ष पुरानी हो गई है और उस समय से आज की क्रांतिकारी प्रक्रिया में प्रत्यक्ष अन्तर आ गया है; पर इससे इस पुस्तक के ऐतिहासिक महत्त्व पर कोई आँच नहीं आती।

सन् १९३० के पश्चात् विश्व स्तर पर क्रांतिकारी प्रक्रिया की तेजी और विश्व साम्राज्यवाद से उसके संघर्ष की परिस्थितियों के विकास के संदर्भ में यह आश्चर्य की बात नहीं है कि संयुक्त मोर्चे का सवाल नये सिरे से उठ खड़ा होता। दिमित्रोव, ट्राट्स्की और भारत में लिखी गई इस पुस्तक का महत्त्व भी इसीलिये है। दिमित्रोव विश्व कम्युनिस्ट आन्दोलन के संदर्भ में संयुक्त मोर्चे की रणनीति के क्रांतिकारी प्रवक्ता रहे हैं। ट्राट्स्की अपने ढंग से संयुक्त मोर्चे के व्याख्याता रहे हैं। "क्रांति और संयुक्त मोर्चा" भारतीय किसान नेता की एक ऐसी कृति है जिसमें पूँजीवादी क्रांति और सर्वहारा क्रांति के संदर्भ में किसानों-मजदूरों के साथ-साथ अन्य वर्गों की एकता और उससे निश्चित क्रांतिकारी प्रक्रिया की चर्चा की गई है। क्रांति के लिए इस चर्चा का दुहरा महत्त्व है। जहाँ इसमें एक ओर राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ में सर्वहारा क्रांति की शक्तियों के विकास का ध्यान रखते हुए यहाँ लेनिन के श्रमजीवी वर्गों ने संयुक्त मोर्चे की समझ को आगे बढ़ाया है वहीं दूसरी ओर इसमें औपनिवेशिक संदर्भ में किसान-मजदूरों के विस्तारित संयुक्त मोर्चे की समझ ने अन्य वर्गों के साथ भी जोड़ा है।

यह पुस्तक १९४० तक के घटना-क्रमों को क्रांतिकारी प्रक्रिया की अनिवार्यता के संदर्भ में प्रस्तुत करती है और इसीलिए वह पूँजीवादी क्रांति और सर्वहारा क्रांति के अन्तर पर बल देती है। बूर्जुआ क्रांति, जनवादी क्रांति और सर्वहारा क्रांति के अन्तर को इस पुस्तक में प्रारम्भ में ही स्पष्ट किया गया है (अध्याय–१), फिर विस्तार के साथ क्रांति की दिशा और प्रकृति का विवेचन किया गया है। (अ०–२)। इन दो अध्यायों का विषय क्रांति की प्रकृति और उसके स्वरूप का निश्चय करते हुए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रांतिकारी प्रक्रिया की बढ़ती हुई गतियों का क्रांतिकारी कार्यकलाप के संदर्भ में विवेचन है। अवश्य ही आज के संदर्भ में इस विश्लेषण की कुछ सीमाएँ दिखाई पड़ेंगी पर इसका कारण समय का बदलाव ही है। आज के संदर्भ में संयुक्त मोर्चे का सवाल कतिपय वर्ग-सीमाओं का अतिक्रमण करता है। मगर इसके मूल चिन्तन का महत्त्व नहीं कमता।

पूँजीवादी क्रांति किस प्रकार भारत में अपूर्ण रही, इस पुस्तक में विस्तार से दिखाया गया है। पूँजीवादी क्रांति को पीछे ठेलकर सर्वहारा शक्तियाँ क्रान्तिकारी परिवर्त्तन के लिए इन पूँजीवादी देशों में भी आगे आ रही हैं। भारतीय संदर्भ में भी यह बात उसी तरह लागू होती है जिस तरह अन्य पूँजीवादी देशों पर लागू होती हैं, अन्तर मात्र यह है कि भारत औपनिवेशिक व्यवस्था के कारण स्वतन्त्र चरित्र भी रखता है। संयुक्त मोर्चे के संदर्भ में राष्ट्रीय बूर्जुआजी से एकता और संघर्ष की दुहरी नीति इसी संदर्भ में सार्थक होती थी।

सर्वहारा, किसान, निम्न मध्यवर्ग और पूँजीपति के सामाजिक संस्थान में क्रांतिकारी प्रक्रिया के विस्तार के लिए जिस क्रांतिकारी सहयोग की आवश्यकता है उसका निश्चय किसी क्रांतिकारी कार्यक्रम की सफलता के लिए बहुत अधिक महत्त्व रखता है। स्वामीजी ने क्रांति और क्रांतिकारी कार्यक्रम के संदर्भ में ही अपना यह विश्लेषण प्रस्तुत किया है। हमारे लिए यह एक महत्त्वपूर्ण प्रस्तावना है।

भारत में आधुनिक पूँजी का रूपांतरण सीधे न होना सामंती और दलाल पूँजी के प्राक्-पूँजीवादी संचयन से होता है। इस कारण उससे वे तमाम जटिलताएँ हैं जो उसकी विचारधारा और कार्यपद्धति में दिखाई पड़ती हैं। सामंती-महाजनी के चरित्र पर कृषि-क्रांति की पृष्ठभूमि में इसीलिए स्वामीजी ने विस्तार से विचार किया है। पूँजी के हाथ में राजसत्ता सौंपने से क्रांतियाँ समाप्त नहीं हो जातीं, गरचे पश्चिम के अधिकांश देशों में ऐसा ही हुआ था। सन् १९४०-४५ के पहले तक यूरोप की स्थिति ऐसी ही थी पर दूसरे विश्वयुद्ध में फासीवाद की पराजय के बाद ऐसा ही हुआ।

विश्व साम्राज्यवाद के फासीवादी रूपान्तरण के साथ क्रान्तिकारी प्रक्रिया की द्वन्द्वात्मकता और स्पष्ट हो गई। इस पर दिमित्रोव ने विस्तार से लिखा। इस पर समय-समय पर बाहर से ट्राट्स्की ने भी बहुत कुछ लिखा। स्वामीजी ने लिखा—इधर '३४ में नात्सीवाद और फासिज्म के बहुत ज्यादा जोर पकड़ने पर सभी मुल्कों के पूँजीपतियों में, जो एकतंत्र को पसन्द नहीं करते और लोकमत पर आधारित दलीय—शासन के हामी हैं, मजदूरों-किसानों और निम्न-मध्यवर्गियों में आतंक छा गया कि संसार में तानाशाही शासन की तूती बोलने लगेगी— फ्रांस और स्पेन में यह बात कुछ हद तक अमल में लाई गई।" (पृ०-२५१)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

राष्ट्रवादी शक्तियों के इस संयुक्त मोर्चे के साथ एक नई समझ पेश हुई। वर्कर्स फ्रन्ट की जगह इस संयुक्त मोर्चे की समझ ने ले ली। यों यह समझ चीन के संदर्भ में पहले भी पैदा हुई थी (सन् '२७ में)। कम्युनिस्ट लीग ने कार्यक्रमों में संयुक्त मोर्चे के लिए पहल किया था, पर इसके बाद की परिस्थितियाँ और उन पर आधारित संयुक्त मोर्चे की समझ का मूल्यांकन अन्तरलक्षित किया जा सकता है।

संयुक्त मोर्चे की प्रस्तावना करते हुए स्वामीजी ने व्यापक कार्यनीति की बात उठाई। उन्होंने लिखा—"इसीलिए संयुक्त मोर्चे की बात उठाने तथा सोचने के पहले हमें अपनी लड़ाई के सभी कदमों, दौरों, रास्तों और सभी (संभावित) परिस्थितियों पर पूरा-पूरा गौर कर लेना होगा"। (पृ०-३५३)। नेतृत्व के प्रश्न को लेकर कई प्रकार की जटिलताएँ उत्पन्न हुई। उन्होंने क्रांतिकारी अनुभवों के संदर्भ में इनका हल निकाला। इस प्रकरण में भारतीय राष्ट्रीय पूँजीपति वर्ग की दुरंगी नीतियों की ओर से स्वामीजी ने हमें सावधान किया। उन्होंने लक्षित किया कि किसान-मजदूरों की सीधी लड़ाई को राष्ट्रीय नेतृत्व भारत में दबाने की चेष्टा करता है। उन्होंने इस बात की खुली मुखालफत की कि वर्त्तमान शक्ल में कांग्रेस ही संयुक्त मोर्चा है। उन्होंने कांग्रेस के चरित्र और कार्यनीतियों का खुलासा विस्तार से किया है। नकली और असली संयुक्त मोर्चे की शक्लों को साफ करते हुए उन्होंने राष्ट्रीय बुर्जुआजी के दुहरे चरित्र पर प्रकाश डाला है (पृ०-३७३)। सन् '३० के संदर्भ में यह बात और भी महत्त्वपूर्ण है।

सन् '४० के बाद अन्तर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आन्दोलन और ट्राट्स्काइट क्षेत्रों में संयुक्त मोर्चे के सम्बन्ध में काफी चिन्तन हुआ दिखाई पड़ता है। इस चिन्तन के सार में अन्तर और काफी विविधता है। इस विस्तार में न जाकर हम भारतीय संदर्भ में स्वामीजी के चिन्तन की धारा को लक्षित करना चाहेंगे। संयुक्त मोर्चे की शक्ल तात्कालिक जन-मोर्चा की शकल से भिन्न होती है—दोनों के संघटन और लक्ष्य में व्यापक अन्तर होता है। स्वामीजी ने जन-मोर्चो से संयुक्त मोर्चे को अलगाते हुए लिखा है—"हमें इस संयुक्त मोर्चे के सम्बन्ध में एक खास बात याद रखनी चाहिए। संयुक्त मोर्चा और तत्काल काम चलाने के लिए कोई बातचीत या समझौता इन दोनों में फर्क है। (पृ०-३६२)। सन् '४१ के बाद जन-मोर्चा का निर्माण एक विशेष उद्देश्य से हुआ था। यह साम्राज्यवाद के फासीवादी संघर्ष का परिणाम था। मगर संयुक्त मोर्चे की बातें इससे बाहर भी तय होनी थी। इसलिए इन जन-मोर्चों से संयुक्त मोर्चे की समझ को अलगाना क्रान्ति के हित में आवश्यक है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् '३६ के अनुभवों के प्रकाश में स्वामीजी ने लिखा है कि जब किसान-मजदूर संगठनों के कार्यक्रम के साथ राष्ट्रीय स्वतंत्रता के कार्यक्रम को विस्तारित करने की बात आई तो भारत के राष्ट्रवादी जनवादी नेतृत्व ने इस राष्ट्रीय लड़ाई को कमजोर करने का प्रयत्न कहा। वे अपने से बाहर संयुक्त मोर्चे की समझ नहीं रखते थे ऐसा नहीं था, वे केवल अपने कार्यक्रम और नेतृत्व के भीतर उसे सीमित रखना आवश्यक मानते थे। राष्ट्रवादी चीन के अनुभव भी हमारे सामने थे जिससे हमने लक्षित किया था कि राष्ट्रीय नेतृत्व ने किस प्रकार किसान-मजदूर शक्तियों और उसके नेतृत्व को धोखा दिया था।

निश्चय ही स्वामीजी वर्ग शक्तियों के संदर्भ में जनता के वामपक्षी और जनवादी तत्वों की एकता को महत्वपूर्ण मानते थे, पर तब ऐसे संयुक्त मोर्चे की अकेली सफलता का कोई प्रश्न न था। फिर भी स्वामीजी केवल वर्ग सहयोग की कार्यनीति तक संयुक्त मोर्चे की शक्ल के पक्षपाती न थे। किसान-मजदूर की एकता कम्युनिस्ट पार्टी का सांगठनिक आधार होती है, ऐसी स्थिति में संयुक्त मोर्चे का प्रश्न भारतीय संदर्भ में जटिल था। उसके बहुसंरचनात्मक ढाँचे में संयुक्त मोर्चे की दो ही शक्ल हो सकती थी—बुर्जुआ नेतृत्व के वाम तत्वों द्वारा प्रस्तावित राष्ट्रीय मोर्चा या वामपंथी जनवादी एकता के तहत कम्युनिस्ट नेतृत्व द्वारा संचालित संयुक्त मोर्चा। इन दोनों को लेकर सन् '४५ से '५१ तक जो विवाद चला उसकी पृष्ठभूमि से हम परिचित हैं। इस पुस्तक से वह विवाद एकदम बाहर तो नहीं है मगर समय की दृष्टि से अवश्य असली परिस्थिति से जुड़ा हुआ विवाद है।

इस प्रकार राष्ट्रीय मुक्ति और विश्व क्रांतिकारी प्रक्रिया के विकास, पूँजीवाद के विश्व संकट और साम्राज्यवाद के लम्बित संकट के संदर्भ में स्वामीजी के विचार संयुक्त मोर्चा के वर्गीय और राजनीतिक आधार को लाक्षणिकता और वैज्ञानिक सार्थकता के साथ प्रकट करते हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon